श्रीः



अथ

पं॰ शिवसहाय कृत॰

# वेदांत रामायण॰

यह पुस्तक॰

मुंबईमैं॰

चित्रप्रभाळा॰ छाप्यो॰

मिति ज्येष्ठ शुक्ल १ संवत् १९५५.
शके १८२०.

## अथ मयास्वकुलप्रस्तावः क्रियते.

श्लोक.- श्रीब्रह्मसरय्वुत्तोत्तरतटेयेसन्तिवैब्राह्मणास्तेषाम्पादरजोभि गाहनरतम्मे भूत्कुलंनिर्म्मलम्॥ औपाध्यायमितीरितंक्षितितलेतस्मिन्प्रजातोबुधोटीकारामइतिप्रवृद्धिविभवस्तस्यात्मजो बुद्धिमान्॥१॥ अर्थ॥ बहुत सुंदर मानसरोवरसें निकसी जो सरयूनदी तिसके उत्तरदेशमेंयोद्विजबसते हैं जिन्होंकों देशभाषामे सरवरियाब्राह्मण कहतेहें उनसबको चरण रजकी सेवामें निपुण मेरा कुल होताभया. भूमितलमें मेरेकुलको उपाध्याय कहतेहें तिसउपाध्याय कुलमें बडे पंडित और बडाहें ऐश्वर्य जिन्हूका ऐसे टीकारामजीजन्मते भये. तिनके पुत्र बडे बुद्धिमान् १ ॥श्लोक.॥ इच्छारामेतिविख्यातो बुधस्तस्यात्मजः सुधीः॥ हीरारामेतिमति मान्बुधश्चैवतदात्मजः॥२॥ ॥अर्थ॥ ॥इच्छारामजी पंडित ऐसे नामसें विख्यात भए. तिसकेपुत्र सुंदरहें बुद्धि जिनोकी बडे ऐश्वर्यमान् पं॰ हीरारामजीभए: तिसकेपुत्र ॥२॥ श्लोक. विश्वरामश्चतस्यासन्सुतानिर्म्मलचेतसः॥शिवनारायणश्श्रेष्ठस्ततश्चाहंममानुजः॥ श्रीदत्तश्चत्रयाणान्तोषट्पुत्राःपितृवल्लभाः॥३॥ ॥अर्थ॥ ॥ पंडितविश्वारामभए उनके तीनपुत्र भए. बडे प॰ शिवनारायणजीतिन्होंकोकिंकर छोटाभाई मेंहुं. मेराछोटा भाई श्रीदत्त हे. मेरे तीन भाइयोंके छपुत्रहे. कैसेपुत्रहे पिताके प्यारेहें॥३॥ ॥श्लोक ॥ यालक्ष्मणस्यनगरीतत्पूर्वे सुलतापुरम्॥ तस्यदक्षिणदिग्भागेक्रोशेयुग्ममितेमम॥ वासग्रामोतिविमलो लोदीपुरमितीरितम्॥४॥ ॥अर्थ॥ ॥ लक्ष्मणकीनगरी जिस्कूं लखनौ कहतेहें तिसके पूर्वतरफ सुलतापुरहे तिस्के दक्षिणदिशामें दोकोसपर मेराबास करनेवाला ग्रामहे उसका. लोदीपुरनामहें. ॥४॥ इतिममकुलप्रस्तावः॥

वेदान्तरामायणरचनेका कारण. ॥ श्लो॰ ॥ वेदांतार्थानिगूढानिशीघ्रंसर्वैर्नज्ञायते॥ अतस्सर्वार्थमात्रत्यजीवानांमोक्षहेतवे॥१॥ अर्थ. वेदान्तको अर्थ बहुत कठिणहे सबजीवोंसें जलदी नहीमालूम होवेगा. जो जीवअनेकजन्मसे अभ्यासकियाहोगा उसकोतोकिंचित मालूम भी पडेगा. औरकूं कुछ नही मालूम पडेगा. इस कारणसें सबग्रंथोंको अर्थलेके आपनी बुद्धि माफिक मोक्षहोनेवास्ते॥ श्लोक. रचितोयंमयाग्रंथोरामरावणकारणात्॥ टीकाज्ञानार्णवीयुक्तःसर्वस्मान्मुक्तिदायकः॥२॥ अर्थ. रामरावणकेकारणसे यह ग्रंथको मैंने बनायाहे. श्री रामचरित्रकी कथा सबकों मालूमहे इस्से यह ग्रंथसबकोंसमजमें आवेगा.

श्री

# अथ वेदांत रामायण प्रारंभः

श्रीचंद्रशेखरंनुमः

सन्नम्यविश्वेशतनुंस्वमानसेसुखाकरंज्ञानविवे
कसत्तरुम्॥ कामादिवैश्वानरशुद्धवारिदंवेदान्त
रामायणमादिशास्त्रजम्॥१॥

भाषाटीका - निर्विघ्न पूर्वक ग्रंथकी समाप्ति होने वास्ते ग्रन्थकार आदिमे जगदीश्वरको नमस्कार रूप मंगल कर्ताहै· शिवसहाय पंडित मैं जोहों सो वेदान्त रामायणकौं करताहूं क्याकरिकै जगतके ईश भगवानकी मूर्त्तिको अपने मनमें नमस्कार करिकै· कैसा वेदान्तरामायणहै मोक्षरूप सुखकौ करनेवाला ग्यान विवेकके दुःखकों नाश करनेमे कल्पवृक्षहै काम, क्रोध लोभ आदि जो अग्निहै तिसको बुझानेवास्ते सुन्दर मेघहै, आदिशास्त्रजो महासांख्य तिस्से उत्पन्नहै ॥१॥

श्लोकः कुर्वेजगच्चेतनकारकम्प्रभुं शुद्धंसदानन्द
मयन्निरंजनम्॥ यदीहयाविश्वमिदञ्चराचरम्प्र
फुल्लितं वारिकणोर्म्मिचञ्चलम्॥२॥

भाषाटीका· जडरूप संसारकूं चेतन करनेवाले प्रभूकों इंद्रियके रोगोंसे शुद्धकों नित्य आनंदरूपकों प्रपंच रहितकों नमस्कार करके वेदान्त रामायण करताहूं जिस भगवानकी छायासें यह संसार प्रफुल्लित होरहाहै कैसा संसारहै जलबिंदुकी लहरि सरीके चंचलहे ॥२॥

श्लोक॥ तम्वैनमस्कृत्यविभुम्निजाश्रयं सच्चित्

समानन्दमयंगुणारणिम् ॥ गतानचायान्तिपुन
र्भवन्नरायत्तत्स्वरूपम्पतितावतारकम् ॥ ३ ॥

भा. टी. - बहुत शोभायमान आपने आधीनजीव देह दोनूको संभाल करनेमें आनंद रूप रजोगुण तमोगुण सतोगुणकों जलाने वास्ते अग्नि स्वरूप ऐसे भगवानकों नमस्कार करिके वेदान्त रामायण कों कर्ताहूं जिस प्रभूके रूपकों प्राप्ति हुवाजोजीव सो संसारको कभी नही आता कैसारूपहै पतितजीवोंकों उद्धार करनेवाला ॥ ३ ॥

श्लोक. निर्द्वन्द्वमत्यद्भुतमुज्ज्वलंशुभं वेदाद्यग
म्यम्मुनियोगिभिर्नुतं ॥ स्वेच्छारमन्तन्तनुभावनि
र्गमं स्वानन्द तुष्टं समवारिधिंहरिम् ॥ ४ ॥

भा. टी. - सुख दुःखसे हीन बहुत अद्भुत असंख्य सूर्यसे दीप्तिमान् शुभरूप चारिहु वेदोंसे नही प्राप्ति होवेजोग्य मुनियोगीजनोंसें नमस्कारयोग्य अपनी इच्छामे रमित देहके लक्षणसे रहित अपने आनंदमें संतोष समको समुद्र जन्म बाधा हरणेवाला ऐसे भगवानकों नमस्कार करिके वेदान्त रामायण करताहूं ॥ ४ ॥

श्लोक. विद्वांच्छिवसहायोऽहंसच्चिदानन्दमद्व
यम् ॥ निराकारंनिराधारन्निरुपाधिन्निराश्रयं ५

भा. टी. - जीव देहको चैतन्यरूप आनंद देनेवाले आकारसें रहित आधारसे वर्जित संसारके प्रपंच से हीन आसासेहीन ऐसे भगवान्कों नमस्कारहै ॥ ५ ॥

श्लोक. ( पञ्चभिःकुलकं ) इतिहासपुराणानांस्वे
दवेदान्तयोरपि ॥ सर्वशास्त्रमतंगृह्यकुर्वेऽह

मिदमुत्तमम् ॥ ६ ॥

भा·टी· इतिहासको पुराणको वेदको वेदान्तको सब शास्त्रको मत ग्रहण करिके यह बेदान्तरामायणकों मै करताहूं ॥ ६ ॥

श्लोक· वेदान्तरामायणमेतदुज्वलं संसारतापापहमद्भुतंशिवम् ॥ प्रयान्तियच्छ्रुत्य मुमुक्षवः ऽप दून्तधस्स्वयंज्योतिमकल्मषशुभम् ॥ ७ ॥

भा·टी· - कैसावेदान्त रामायणहै बहुत शोभित संसारके ताप- को नास करनेवाला अद्भुतहै कल्याणको वृद्धि कर्ताहै जिसवेदान्तरामायणको सुनके संसारसे मोक्षकी इच्छा करनेवाले जो जीव है सो उस स्वरूपमे मिलैगे कि जोस्वरूप आपसे प्रकास होताहै सब पापोंसे रहितहै शुभहै ॥ ७ ॥

श्लोक· गत्वानचायान्ति कदापियोगिनोयद्ध्यान शून्यंगहनं सुदुस्तरम् ॥ अनेकजन्मार्जितचिन्त नापरैस्तदप्यगम्यम्मुनिवृंद सन्नुतम् ॥ ८ ॥

भा·टी· - कैसा स्वरूपहै कि ध्यानमें नही आसक्ता बहुत जन्म- से एकठा कियाजो बिचार जिसमे चतुरजोप्राणी तिनसेभीन ही प्राप्ति होवे योग्य बहुत मुनियों करिके नमस्कार कियाहै ऐसे· स्वरूपको गयेहुये योगीजन हैसो संसार कों कभी नही आवैंगे ८

श्लोक· पुनर्भवम्मोहजलाभिपूरितं तृष्णोर्म्मिणा चंचलमूहयान्वितम् ॥ वितर्कयुक्तंबहुमानगर्व्वितं प्रचंडमायार्णवदुस्तरं घनम् ॥ ९ ॥

भा·टी· - कैसा संसारहै मोहरूपजलसे भराहै तृष्णाकी लहरि करके चलायमानहै तर्क वितर्कसें युक्तहै· बहुत अभिमान अहंकार करिरहाहै· बडी जबर्दस्त माया के प्रभाव समुद्र करिके·

दुःखसे पार जावे जोग्य हैं बड़ा कठिण है ॥ ९ ॥

श्लोकः ब्रह्मावर्त्तैकरम्येविधिकृतविभवेब्रह्मयज्ञोबभूव तत्रागुर्भूमिसंस्थावितलतलगतानाकलोकाश्रिताद्याः ॥ ब्रह्मर्ष्याद्यामुनीशाःसुरपतिःसहितास्सुत्तदेव र्षयोवैराजर्षीशारमेशोविधिपवनभुजोपार्वतीमाणलग्नः ॥ १० ॥

भा॰टी॰ - बहुत रमणीय ब्रह्मकी बनाए ऐश्वर्य संयुक्त ऐसे ब्रह्मावर्त क्षेत्रमें सत्संगियोने ब्रह्म निरूपण यज्ञ करतेहुए जिसयज्ञ मे तीन लोक चौदा भुवन के वसनेवालेजो ब्रह्म ऋषी मुनीशः बडेबडे ग्यानीजो देवर्षि राजर्षि इंद्र आदि देवतासहित भगवान् विधि शेष महादेव येसव आतेहुये ॥ १० ॥

श्लोकः एतेचान्येसमायाताबहवोधर्म्मलिप्सवः ॥ पूजितादानमानाभ्यांसत्कृताब्रह्मतत्परैः ॥ ११

भा॰टी॰ - इनसबसे औरभीबहुत धर्मके ग्रहण करणेवाले सज्जन आतेहुए ब्रह्मके जाननेवाले मुनियोंने दान मान आदरसें सबको पूजन करतेहुए ॥ ११ ॥

श्लोकः ब्रह्मविज्ञानकुशलाःसर्वेभूपाःसमाययुः ॥ आजगाममहाबुद्धिर्विदेहोमिथिलापतिः ॥ १२

भा॰टी॰ जो भूमितलमे ब्रह्मके जाननेवाले राजाहैं सोभीसब आतेहुए बडे बुद्धिमान जनकभी आए कैसे जनकहैं देहके अभिमानसे रहितहे ॥ १२ ॥

श्लोकः यथायोग्यंस्थितास्तत्रसमाजेब्रह्मनिर्मिते ॥ परस्परंकथाश्चक्रुर्विविधाधर्मतत्पराः १३

भा॰टी॰ - ब्रह्मग्यानसे बनाई हुई समाजमे यथा योग्य सबबैठते

हुए. अपने अपने धर्ममे बहुत पुष्ट सब होकरके बहुत प्रकारकी कथा कर्ने लगे ॥१३॥

श्लोक. पौराणिकाः पुराणज्ञा वैदिका वेदपाठिनः धार्म्मिका धर्मशास्त्रज्ञा वेदान्तज्ञास्सदुद्भवाः ॥१४

भा. टी. - पुराणी लोगोने पुराणकी कथा वेदपाठी वेदकी कथा धर्मशास्त्रवाले धर्म्मशास्त्रकी कथा वेदांतवाले सत्‌ज्ञानसें उत्पन्न कथा इस प्रकारसें सब कथा करते हुए ॥१४॥

श्लोक. एवं समेधमाने तु महानन्देस्फविस्तरे ॥ मुनिः प्रप्रच्छ सम्वर्तो वरतन्तुम्महामतिम् ॥१५॥

भा. टी. - इसप्रकासें बडा आनंदकी वृद्धि होरहीहै. बहुत प्रकारसें ऐसी समयमे संवर्त नाम मुनि जोहै सो बडीहै बुद्धि जिनकी सो वरतंतु मुनीसे पूंछते हुए. ॥१५॥

श्लोक. सम्वर्त उवाच कोरावणोतिप्रबलोरिहन्ता कः कुम्भकर्णो मदपानमत्तः ॥ किन्तन्मदं यस्तु सकृत्प्रपीत्वा भवन्ति मत्ताः खलु ज्ञानवर्जिताः ॥१६

भा. टी. - संवर्त मुनि बोलते भए. हे गुरु महाराज, बडा बलवान् बैरीका नास करनेवाला रावण कौनहै. मदको पीके रातिदिन मस्त रहना ऐसा कुंभकर्ण कौनहै जिस मदको एकदफे पीकर दैत्यलोग निश्चय करके ज्ञानसे रहित और मस्त होजाते है. सो मद क्या है सो कहो ॥१६॥

श्लोक. विभीषणः कश्च सुरेशजेता का केकसी कश्च मुनिर्मरीचिः ॥ कोवै पुलस्त्यः समचित्तवर्त्ती कोविश्रवा विश्वसमैकदृष्टिः ॥ खरादयः केत्वप्रचंडवीर्याः कासूर्पणखा भुवनत्रयस्वकिम् ॥१७॥

भा-टी- -बिभीषण क्याहे, इंद्रजित क्याहै, केकसी क्याहै, मरीच मुनि कौनहै, सुखदुःखमें बरोबरचित्त जिनको ऐसे पुलस्त्य मुनि कौनहै संसारको भगवान को रूप देषनेवाले विश्रवा मुनि कौनहै, खर आदि करिके संसारमे जितने राक्षसहै सो- कौनहै. शूर्पनखाक्याहै, तीनभुवनक्याहै ॥१७॥

श्लोक- मन्दोदरीरावणवल्लभाचका चान्याःस्त्रि- याश्चैवदशाननस्यकाः॥ किन्तच्छिरोयद्दशसंख्य यान्वितम्भुजाश्चकेविंशमितास्तुतस्यवै॥१८॥

भा-टी- -रावणकी प्यारी मंदोदरी क्याहै, और जो बहुत रावण की स्त्रीहै सो क्याहै, रावणको दस मस्तक क्याहै. रावणके वीस हाथ क्याहै ॥१८॥

श्लोक- लंकाचकातत्परिखाचसिन्धुःकः कोविरंचि र्वरदानदाता॥ कावस्त्रशस्त्रौविविधौरथःकिंके वाजिनोल्युत्तमगर्दभाश्चके॥१९॥

भा-टी०- लंकी क्याहै लंकाकीखांई क्याहै समुद्र कौनहै, रावणको वरदान देनेवाला ब्रह्मा कौनहै, रावणको बहुतप्रकारके अस्त्रशस्त्रक्याहै, रावणकी रथ घोडे खच्चर ये सबक्याहै ॥१९॥ ॥

श्लोक- शक्तिश्चकाकिंस्नमनोविमानं कोवैकुबेरो जननीचतस्यका॥ कःशंकरोयस्यकरोतिसेवनंद शाननःकानिमुखानितस्यवै॥२०॥

भा-टी- रावणकी सांग जिस्से लक्ष्मणकुं मारा सोक्याहै. पुष्पकविमान क्याहै. कुबेरकी माता क्याहै, कुबेरक्याहै, शंकरक्याहै जिनकीरावण नित्य सेवन करनाहै. रावणके दस मुखक्याहै२०

श्लोक- कःसारथिर्वाजिविचालनंचकिं किंवाजिर

होतिरजश्चकिम्मुने॥ कोद्वौरथाङ्गौरथकूबरंच
किंकिंरश्मिबन्धंगमनाश्रयन्चकिम्॥२०॥
भा·टी·- रावणको सारथी घोडोंकों हांकनेवाला, चाबुक, घोडोंकी दौड और धूलिहै मुनिराज, येसब क्याहै, रथके दो पैया रथमे बैठनेकी जगा रथकूं बांधनेकी रस्सी, रथकु चलाना येसबक्याहै २२
श्लोक· केरावणस्यैवसुतास्सुतानान्तत्पुत्रपौत्रा
गणनानयेषाम्॥ एषांस्त्रियः काभुवन त्रयार्द्र-
काः द्वयोरथान्येभुविराक्षसाश्चके॥२२॥
भा·टी· रावणके लडका लडकोंका लडका तिनोके पोता पडपोता आदि जिनोंकी गिनती नहीहै येसब क्याहै· इनसभोकीस्त्रियो क्याहै कुंभकर्णकी स्त्री पुत्रक्याहै और सब राक्षस जोरावणके कुलमेये इनकी स्त्री पुत्रक्याहै॥२२॥
श्लोक· किमामिषंतद्रुधिरंचतेषांकावारुणीतद्य
जनञ्चकिम्मुने॥ तेषांगुरुर्वैभृगुनन्दनश्चकोनि
कुंभिलाकाहवनस्थलंचकिम्॥२३॥
भा·टी· राक्षसोकों भोजन मांसरुधिरक्याहै, मदिराक्याहै, रावणका यज्ञक्याहै, राक्षसोंके गुरु शुक्राचार्य कौनहै निकुंभिलादेवी कौनहै होमको स्थान क्याहै॥२३॥
श्लोक· कःपावकोहव्यविलक्षणाश्चके कौदारु
मंत्रौविजयंचकिम्मुने॥ दासीश्वरीकात्रिजटाच
वाटिका काशोकवृक्षैःपरिवारितान्चया॥२४॥
भा·टी· अग्निहोमकी सामग्री क्याहै, लकडी, मंत्र, क्याहै रावणकी विजय क्याहै दासियोंमे मालक त्रिजटा क्याहै· अशोक नाम बगीचा अशोक वृक्षोंसहित क्याहै॥२४॥

श्लोक॰ सर्वानिचान्यानिचयानितेषांद्रव्याणि मेप्रश्नविवर्जितानि॥ वदस्वचित्तम्ममकौतुका कुलंश्रुत्वापुराणानिमुनीशतानिच॥२५॥

भा॰टी॰ - हेमुनीजी जोमैंपूंछ्ताहूं और मेरेपूंछनेसे बाकी जोप्रश्न रह्याहोवे॰ रावणादिराक्षसोंकी वार्ता सो बिस्तारकरके कहो हे गुरु पुराणोंमें रावणका चरित्र सुनके मेराचित्त घवराय रह्या है॥२५

इतिश्रीवेदांतरामायणेबालकांडेशिवसहाय बुधविरचितेसम्वर्तवरतंतुसंवादेरावणविभूति प्रश्नेप्रथमोमोक्षोपानः॥१॥

---

सम्वर्तउवाच॥ ॥केवेदशास्त्रावलिसंहिताद योयेपीडिताविंशतिबाहुनानिशम्॥ केब्राह्मणा ब्रह्मविदांवरिष्टगावश्चकावेदमखश्चकिम्मुने १

भा॰टी॰ संबर्त मुनिफेर पूंछतेहैं हेमुनिजी वेद, शास्त्र, पुराण संहिता बहुतसे बहुत कौनहै के जिन कूं वारंवार रावण दुःखदे ताथा हेमुनिजी ब्रह्मज्ञानियोमें आप बडेहो गो ब्राह्मण वेदयज्ञ क्याहै जिनको रावण नास करताथा॥१॥

श्लोक॰ केतेपुराणाहरिकीर्तिवर्धनायेनष्टभावं गमितानिवारिताः॥ दशाननेनातिप्रचंडतेजसा भूमिश्चकाकेस्फुरसत्तमाश्रये॥२॥

भा॰टी॰ भगवानकी कीर्ति बढानेवाले पुराणक्याहैं॰ जिन्होंकों व डातेजमान रावणने नाशकों प्राप्ति करदिया और भूमिदेवता क्या है जिन्होंको रावणने बहुत दुःखदिया॥२॥

श्लोक॰ गंगादयःके॰ सरितोमुनीशविष्णुश्चकोत्र

ह्यस्कृतो वसिष्ठः ॥ पुरीत्वयोध्यारविवंशरक्षिता कासाचकेतत्कुलसंभवान्नृपाः ॥ ३ ॥

भा॰टी॰ हे मुनिराज॰ गंगाआदि लेके नदी, विष्णु, ब्रह्माको पुत्र॰ वसिष्ठ सूर्य वंशी राजों करके रक्षित अयोध्यापुरी और सूर्यवंश मे जन्मे जो राजा ये सब कौनहैं ॥ ३ ॥

श्लोक॰ कश्चाजसूनुर्बहु कामुकोनृपः काकौशलाकामगधेशनन्दिनी ॥ काकैकयीकश्चविभांडकात्मजो यज्ञश्चकः कोहुतभुङ्मुनीश ॥ ४ ॥

भा॰टी॰ अजराजाको पुत्र बडा कामी राजा दशरथ क्याहै अर कौसल्या सुमित्रा, कैकयी और स्त्री दशरथकी क्याहैं॰ और शृंगीरिषि तथा यज्ञकी अग्नि कौनहै ॥ ४ ॥

श्लोक॰ कोदारुमन्त्रोहवनस्यद्रव्याः केयज्ञकुण्डंकिमुपावकार्चिः ॥ किंपावकेनापिनृपायदत्तंतद्भक्षणंदोहदलक्षणंचकिम् ॥ ५ ॥

भा॰टी॰ यज्ञकी लकडी, मंत्र, होम सामग्री यज्ञको कुंड अग्नि॰ ज्वाला ये सब क्याहैं॰ दशरथकों अग्निने प्रसन्न होके क्या वस्तु दिया उस वस्तुको भक्षण राणियोनें कियासो क्याहै और गर्भको लक्षण क्याहै ॥ ५ ॥

श्लोक॰ कासाप्रसूतिस्सुखदायिनीया कोरामचन्द्रः खलुलक्ष्मणश्चकः ॥ कोभ्रातरौ द्वौशुभलक्षणान्वितौ शत्रुघ्नकैकयिसुतौसुनिर्मलौ ॥ ६ ॥

भा॰टी॰ जो सुखकों देनेवाला जन्म उत्सव क्याहै॰ रामचंद्र अरु लक्ष्मण क्याहैं॰ सुंदर लक्षणयुक्त मलसें रहित दोभाई शत्रुघ्न और कैकयीका पुत्र भरत ये दोनू कौनहैं ॥ ६ ॥

श्लोक· रामस्याकिंक्रीडनकौतुकम्मुनेकश्श्वेतप्रा-
सादखगोऽजिरंचकिम्॥ काधूलिराशिः सरयूस-
रित्काकौतीरतोयौपुरवासिनश्चके॥७॥

भा·टी·- हे मुनि जी दसरथराजाकी सफेद महल आकाशको मा-
नो छूने चाहतीहै सो क्याहै· और रामको बालपनोका खेल तमा-
सा क्याहै· और धूलिकी समूह सरयूनदी तथा तटजल पुरवासी
प्रजाये सब क्याहै ॥७॥

श्लोक· किंरामचन्द्रस्यधनुश्चखड्गं केवैशराः कावि
षुधीसुपूर्णे॥ तल्लक्ष्मणस्यकमित्रातनयस्यसर्वं किंशस्त्र
वृंदंवदतन्मुनेमम॥८॥

भा·टी· राम लक्ष्मणका धनुष बाण तरकस खड्ग और अस्त्र क्याहै
मुनीजी कहो· ॥८॥

श्लोक· संस्कारश्चैषांमुनिनाकृताश्च मुनिश्चकोगा
धिसुतोमहामतिः॥ तस्यापिकोयज्ञसमुत्सवोमु
नेकाताडकायज्ञविनाशकारिणी॥९॥

भा·टी·- वसिष्ठजीने राजाके पुत्रोंका संस्कार क्याकिया और गाधि
पुत्र बडे बुद्धिमान् विश्वामित्र कौनहै· विश्वामित्रकी यज्ञको उत्स
वक्याहै और यज्ञकी नास करनेवाली ताडका क्याहै ॥९॥

श्लोक· कौराक्षसौद्वावतिदुर्मती मुने सुबाहुमा
रीचसमाख्यसंयुतौ॥ विद्याचसाकामुनिनाप्रद
त्तायारामचंद्राय प्रसन्नचेतसा॥१०॥

भा·टी·- हे मुनिजी, सुबाहु मारीच बडे दुष्टमती कौनहै विश्वामि
त्र मुनि प्रसन्नचित्तसें रामचंद्रको विद्या क्यादिया ॥१०॥

श्लो· कोगौतमः कागृहिणीचतस्यवैनाम्नाप्य-

हिल्यास्करनायकश्चकः ॥ कोजारिणीजारसमु
द्भवोरसोकिन्तद्रजोयेनविनिर्गताचसा ॥११॥

भा॰टी॰ - गौतम मुनि अरु उनकी स्त्री जिसका अहिल्यानाम येदो नो कौनहैं, इंद्र कौनहै, जारसे उत्पन्न भयाजोरस सो क्याहै वो धूलि क्याहै, जिसके छुएसें अहिल्या तरगई ॥११॥

श्लोक॰ कासाशिलायन्मिलिताचकामिनी कोमैथि
लेशोनगरीच तस्यका ॥ स्वयंवरंकिं नृपराश्चकेत
काजानकीतद्धनुरुत्तमञ्चकिम् ॥१२॥

भा॰टी॰ - जिस शिलामें अहिल्या मिलगईथी वोशिला क्याहै जनकराजा कौनहै, जनककी नगरीक्याहै, स्वयंवर क्याहै, जोराजा-स्वयंवरमे आयेथे वोसब कौनहै, और जानकी क्याहै, जो धनुष कीपण जनकने किया सो धनुष क्याहै ॥१२॥

श्लोक॰ किंत्रोटनंतद्धनुषो मुनीन्द्रभोकोभार्गव
स्तद्धनुरोपणञ्चकिम् ॥ कोवैविवाहोजनतासमा
गमंगजाश्वसेनादिस्फुरवासनञ्चकिम् ॥१३॥

भा॰टी॰ - हेमुनीद्रजी धनुष तोडना क्याहै परशुरामजी कौनहैं, परशुरामजीका धनुष रोपण क्याहै, और हाथी घोडा पालकी फोज इत्यादिबरात आई सो क्याहै ॥१३॥

श्लोक॰ काश्चोर्मिलाद्यास्तनुजाविदेहयो र्द्वयोः
स्कुकेत्वोर्जनकस्यचोर्मिला ॥ विवाहितारामस
होदराणांकास्ताश्शुभानन्दक्षमास्सुलोचनाः॥१४॥

भा॰टी॰ - जनक स्कुकेत येदोनो बिदेहोकी उर्मिला आदि कन्याक्या है, जोरामके भाइयोकों भरथ लक्ष्मण शत्रुघन-इनके संग विवाह भया ये कौनहैं, शुभ आनंद क्षमायुक्त ॥१४॥

श्लोक॰ मुनीन्द्र कोरामसहोदराणांविदेहजानांच विवाहकौतुकः ॥ रामस्यचैवम्पृथिवीसुताया विवाहहर्षोत्सवमंगलंचकिम् ॥ १५ ॥

भा॰ टी॰ हे मुनि राम के भाइयों समेत विवाह का तमासा क्या है। तथा रामजी के विवाह मे हर्ष उत्सव मंगल भया सो क्या है ॥ १५ ॥

श्लोक॰ कानिप्रदत्तानिसुतनाविवाहेराज्ञाविदेहेन॰ विचक्षणेन ॥ किम्वैप्रयाणंचक्षितीश्वरस्य संगृह्य पुत्रान्छुभकन्यकाभिः ॥ १६ ॥

भा॰ टी॰ - कन्या विवाह मै जनकने दायज दियासो क्या है॰ पुत्र स॰ हित तथा शुभ जो पुत्रों की स्त्री तिनकुं ग्रहण करके दशरथने प्र याण किया सो क्या है ॥ १६ ॥

श्लोक - ससैन्ययुक्तस्यनृपोत्तमस्य पुनस्स्वभार्य्यै स्सुतैस्सुखान्वितैः ॥ मुनीश्वरैः किंगमनंस्वपुर्या श्चोत्कण्ठभावोमिथिलाधिपस्यकः ॥ १७ ॥

भा॰ टी॰ - फेर विवाह से बिदा होके सेना सहित राजो में उत्तम जो॰ दशरथ सो अपनी अपनी स्त्रियों सहित पुत्रों को सुखयुक्त मुनी॰ श्वर सहित पुरी अयोध्या को आए सो क्या है और जनक विव्हल॰ हुए सो क्या है ॥ १७ ॥

श्लोक: कः सौख्यवासोरघुनंन्दनस्य राज्ञोविचार श्चपदाभिषेकः ॥ कामन्थरान्तःविपरीतचारिणीक॰ लंकभावंचविचिक्षणञ्चकिम् ॥ १८ ॥

भा॰ टी॰ - अयोध्या मे रामचंद्र सुखसें रहे सो क्या है॰ दशरथ को वि चार तथा राजदेणा ये दोनो क्या है॰ रामके राजमे विघ्न करनेवाली मं थरा क्या है॰ कैकयीकों शिखाया ऐसा कलंक क्या है ॥ १८ ॥

श्लोक॰ कान्क्रूरबुद्धिर्भरतस्यमातुर्विलापसिन्धुर्नृप
तेर्मुनेकः॥ आज्ञाचकाभूपतिसम्प्रदत्ता किंकाननं
कश्चरथोहयाश्चके॥१९॥

भा॰टी॰ - भरथकी माताकी खोट बुद्धी क्याहै दशरथकों दुःखसमुद्र
सरीके क्याहै॰ दशरथने रामचंद्रको क्या आज्ञादिया बनजानेकी॰
जिसबनकूं रामचंद्रजी गये वो बन क्याहै, रामचंद्रके रथ घोडाक्याहै१९

श्लोक॰ कोवैसुमंतोरुदनंचकिंमुनेरथस्यद्रव्या॰
णिचकानिरंहः॥ एतत्समाब्रूहिद्विजेन्द्रनिश्चितं का
वैसरिद्यातमसेतिशब्दिता ॥२०॥

भा॰टी॰ हेमुनि सुमंत सारथी कौनहै, रामजीको बन याते देखके
रुदनहुया सो क्याहै, रथकी सामग्री क्याहै, रथकी वेगक्याहै, हे
मुनिजी यह संपूर्णवार्ता निश्चय करिके कहो तमसानदी क्याहै२०

श्लोक॰ तत्तीरवासोरघुनन्दनस्यकोहयाशनंकिम्पु
रवासिनश्चके॥ कातत्रनिद्रापुरवासिनाञ्चकिंराम
वाक्यंभ्रमणंरथस्य॥२१॥

भा॰टी॰ - तमसाके तीर रामचन्द्र बसेथे सोक्याहै, घोडोंकों क्याचा
राखिलाया, पुरवासी कौनहै॰ पुरवासियोके निद्रा आई सो क्याहै॰
रामकी वाक्य क्याहै, रथभ्रमण किया सो क्याहै ॥२१॥

श्लोक॰ भ्रान्त्वापुनस्तद्गमनंचकिम्मुनेनिवर्तनंकिम्पु
रवासिनाम्मुनः॥ पुरींसमागम्यविलापकारणंकिंवे
ददिग्वर्षकृतम्प्रमाणकम् ॥२२॥

भा॰टी॰ - रथकों भ्रमण करके रामजी चलेगए सो क्याहै॰ पुरवासीलो
गपीछे अयोध्यामे आए सोक्याहै, पुरवासीलोग अयोध्यामे आ
के विलापकिया सोक्याहै॰ और रामजीको बनवास चौदावर्ष प्रमा

ण किया सो क्या है ॥ २२ ॥

श्लोक॰ वनेचरः कोरघुवीरमित्रः किंशृंगवेरं द्विज॰ शिंशिपस्त्वकः ॥ किमासनंदर्भविनिर्मितम्मुने के ते कुशाः काचगुहस्य भावना ॥ २३ ॥

भा॰टी॰ – हे ब्राह्मणजी, बनमे भ्रमण करनेवाला रामजीको मित्र क्या है, शृंगवेरपुर शिंशिपा वृक्ष क्या है, गुहने रामजीकों कुशको आसन बनादिया सो क्या है॰ कुश क्या है, गुहकी भक्ती क्या है॰ २३

श्लोक॰ तिरस्कृतंयत्खलुलक्ष्मणेनवैकिम्भूषणम्भूमिनिपातितंतया ॥ केभूषणावस्त्रसमन्विनामुने त्यक्ताश्चयेराघवसूनुनावै ॥ २४ ॥

भा॰टी॰ जो गहना लक्ष्मणने अनादर करिके पृथिवी में रखदिया॰ सो क्या है, वो वस्त्र गहणा क्या है जिसकुं दशरथ के पुत्र रामजीने॰ त्यागदिया ॥ २४ ॥

श्लोक॰ कासाजटायान्निवबंधरामः काजान्हवी॰ पातकपुंजहारिणी ॥ कः स्वप्नभावो रघुनन्दनस्य वा विदेहजायास्सहितस्य भोमुने ॥ २५ ॥

भा॰टी॰ – हे मुनिजी वो जटा क्या है जिसकों रामजीने शिरपर बांधी बहुतसे पाप नाश करनेवाली गंगाजी क्या है, जानकीसहित रामजी सोए सो क्या है ॥ २५ ॥

श्लोक॰ सम्बादसंजागरणौद्वयोःकौ बभूवतुर्लक्ष्मणराममित्रयोः ॥ श्रीजान्हवीतोयतटोर्मयःकेका नौर्गुहस्यैवच वंशयष्टिः ॥ २६ ॥

भा॰टी॰ – लक्ष्मण तथा रामजीका मित्र गुह ये दोनो रातको जागे तथा बात किया सो क्या है॰ गंगाजी के तीर जल और लहर क्या है

नांवक्याहै गुहकी बाँस क्याहै खेवणेवाले क्याहै ॥२६॥

श्लोक॰ किंतारणंकिन्चप्रयागकाननं कासात्रिवेणी यमुनासरस्वती॥ एकत्रसंगंमिलितात्प्रयागेयालोकलोकेस्सततम्विसेव्यते॥२७॥

भा॰टी॰ -रामचंद्रको गुहने गंगाके पारलेगया सोक्याहै प्रयागजीको बन क्याहै यमुना स्वरस्वती गंगा प्रयागमे एकठांभई जिनकूं सबलोक सेवन नित्य प्रति करतेहै सो त्रिवेणी क्याहै॥२७॥

श्लोक वटश्चकोयः प्रलयेपिनाशंनयातिकश्चिन्मुनिवर्यमेश्रुतम्॥ मुनेभरद्वाजमुनिश्चकोवै संसेवितो येनविदेहजापतिः॥२८॥

भा॰टी॰ हे मुनिश्रेष्ट मैने ऐसा सुनाहूके प्रयागमे एकबटको वृक्षहै उसकीनाश प्रलयमेभी नहीहोती वहचट क्याहै भरद्वाज मुनी कौनहै जिनोने जानकी पतिका पूजन किया ॥२९॥

श्लोक॰ प्रीत्यास्वयंलक्ष्मणजानकीभ्यांयुतोऽति प्रेम्णामुनिभिस्समाहितः॥ कोवैमुनेस्नानविधिस्त्रिवेण्यांकृतस्त्रिभीरामप्रियासहोदरैः॥२९॥

भा॰टी॰ -प्रीतसे आपने हाथसें प्रेमकरके आदरसे मुनियोंकों संग लेके लक्ष्मण जानकी सहित रामजीको पूजन किया त्रिवेणीमें जानकी लक्ष्मणसहित रामचंद्रने स्नानकिया सोस्नानकी विधिक्या २९

श्लोक॰ वाल्मीकिनाम्नेतिमुनिर्महामतिर्भविष्यवक्तामुनिसत्तमश्चकः॥ मंदाकिनीकासरितांवरामुनेकश्चित्रकूटो मुनयश्चकेते॥३०॥

भा॰टी॰ अगाडी होनेवालीबात कहनेवाले बडे बुद्धिमान् मुनियोंमेंश्रेष्ठ ऐसे वाल्मीक मुनि कोणहै नदियोंमेंबडी मंदाकिनी नदी

चित्रकूट पर्वत क्याहै· मुनीलोग कौन हैं ।। ३० ।।

श्लोक· वनेचराः केरघुनन्दनप्रियाः कौतौकुटीरौव सन्निश्चतत्र का ।। किन्तत्रसौख्यंरघुनन्दनेनप्राप्तं· प्रियाभ्रातृसमन्वितेन ।। ३१ ।।

भा·टी· - जो मुनि बनमें विचरतेहैं, रामजी के बडे प्यारे रामचंद्र ल· क्ष्मणकी दो पर्णकुटी बनी सो क्याहै· इन् दोनोका बात क्याहै· ल· क्ष्मण जानकीसहित चित्रकूटपर वास करनेसे क्या सुख प्राप्ति हुवा ।। ३१ ।।

श्लोक· पुनस्सुमन्तागमनञ्चकिम्भो पुरीमयोध्यां सरयूसमन्विताम् ।। मृतेनृपे क प्रमदाविलापक्के दूतवर्यामुनिनासुप्रेरिता ।। ३२ ।।

भा·टी· - हे प्रभोजी रामजीकों विदाकरिके सुमंत अयोध्यापुरी कों आये सोक्याहै, कैसी अयोध्याहै सरयूनदी पास बहतीहै· दसरथके मरण हुएपर स्त्रियोंने रूदन किया सोक्याहै· वसिष्ठजीने· दूत भेजा सो दूत क्याहै ।। ३२ ।।

श्लोक· सद्योगताः केकयपत्तनंकिंकः केकयेशो व· चनंकिमूचुः ।। दूतंगृहीत्वाभरतस्सहानुजन्तौद्वौच· कौराजपुरीम्प्रयातौ ।। ३३ ।।

भा·टी· - दूतोंने जलदीकशमीरकों गए सो कशमीर नगर क्याहै· कशमीरकोराजा कौन है, राजासें दूत क्या बोले, जलदीसे भरथ शत्रु धनकों लेके अयोध्यामे आए सो भरथ शत्रुघन कौन है ।। ३३ ।।

श्लोक· आश्वासितौद्वौमुनिनाप्रचक्रतुर्विरोदनंकि ञ्चकिमाश्वसाशनम् ।। किमूचतुः कोशलनन्दिनीम्प्र निबिभर्त्सयामासकिमुत्स्वमातरम् ।। ३४ ।।

भा॰टी॰ वसिष्ठजीसे भरथ शत्रुघननै विश्वास पायके रोते भएसो॰ क्याहै॰ वसिष्ठजीने विश्वासदिया सोक्याहै॰ भरतशत्रुघन कौशल्यासें क्याबोले और आपनी जो माता कैकेयीउसकूं त्रासदिया॰ सो क्याहै,

श्लोक॰ किंचप्रयाणंभरतेनवैकृतंससैन्यमात्रानु
जबांधवैस्सह॥ गुहेनसम्वादनिवासनौचकोस्वसै
न्यविश्वासनमेवकिम्मुने॥ स्रवेनगंगोत्तरणंकिम
द्भुतंप्रयागराजेमुनिसादरंचकिम्॥३५॥

भा॰टी॰ - माता गुरु कुटुंबसेनासहित भरत रामके पासचले सो क्याहै गुहकेसंग भरतको संवाद हुवा तथा गुहने भरतकों डेरादिया भरतने आपनी सेनाकों विश्वासदिया स्रवसें गंगाके पारभये प्रयागमे भरद्वाज मुनिने सेनासहित भरतकी मिजमानीकिया ये सब क्याहै ३५

इतिश्रीवेदान्तरामायणेबालकांडे शिवसहायबुध
विरचितेसम्वर्तवरतंतुसम्वादेभरतागमनेभरद्वाजा
श्रमनिवासोनामद्वितीयोसोपानः॥२॥ ॥

सम्वर्तउवाच॥ ॥ किंचित्रकूटेचसमागमम्मुने
परस्परंकिम्वचनंचतेषाम्॥ केपादुकेपादतला
वरक्षितेश्रीरामदत्तेभरतायनिर्मले॥१॥

भा॰टी॰ - संवर्त मुनि पूंछतेभये हे मुनीजी चित्रकूटपर सबमंडलीको मिलाप राम आदिलेके भरत वसिष्ठ और जोआएथे जिन्होने आपुसमे बोले सोक्याहै॰ रामजीने आपणी पावडी दो भरतकूं दिया सोक्याहै कैसी पावडीहै पगके रक्षा करनेवाली सुंदरहै १

श्लोक॰ येधृत्वाशिरसाप्रेम्णाससैन्योगुरुणासह॥

शत्रुघ्नेनयुतश्शीघ्रंपुनरायात्पुरीम्प्रति ॥ २ ॥

भा०टी० जोपावडी भरतने प्रेमसे अपने शिरपर धरके वसिष्ठ शत्रुघन, फौज संगलेके फिर अयोध्या पुरीकों आए सोक्याहै ॥ २ ॥

श्लोक० भरतस्यचकासेनायामादायागतः पुनः ॥
नन्दिग्रामञ्चकिम्प्रोक्तंपादुकासेवनंचकिम् ॥ ३ ॥

भा०टी० -रामजीके पाससे फौजसंग लेके भरतजी फेर अयोध्यामै आए सो फौज क्याहै० नंदिग्राम क्याहै० पावडी सेवन भरतने किया सो क्याहै ॥ ३ ॥

श्लोक० किमयोध्यापुरीराज्यंचकारभरतस्सुधीः ॥
किम्प्रजारक्षणं विप्रकिंमृगाहरणंगिरौ ॥ ४ ॥

भा०टी० -बडे बुद्धिमान भरत अयोध्याको राज किया सो क्याहै हे मुनि जी भरतने प्रजाकी रक्षाकिया सोक्याहै ॥ ४ ॥

श्लोक० रामेणलक्ष्मणेनैवचित्रकूटेकृतम्मुने ॥ किं
जयन्तापराधंच जानकीचरणार्दनम् ॥ ५ ॥

भा०टी० -राम लक्ष्मण दोनो चित्रकूटपर नित्य मृग मारते रहे सोक्या है० जानकीके पगमे जयंतनाम काग चोच मार्या सो क्याहै ॥ ५ ॥

श्लोक० रामेणत्यक्तः को बाणः किमेकाक्षिनिपातनं
॥ किंजयंतस्यभ्रमणंराक्षसागमनंचकिम् ॥ ६ ॥

भा०टी० रामजीने जयंत कों मारनेके वास्ते बाण छोड्या सो क्याहै, जयंतकी एक आंख काणी करदिया सोक्याहै० काकने सब लोकों मे फिरता फिरा सोक्याहै० चित्रकूट पर बहुत राक्षस आनेकों लगे सो क्याहै ॥ ६ ॥

श्लोकः उद्वेगश्चमुनीनांकोयेनतत्याजराघवः ॥ चित्र
कूटस्यकिंत्यागः कोऽत्रिस्तस्याश्रमंचकिम् ॥ ७ ॥

भा॰टी॰ मुनि लोगोंकोंदुःखभयासो क्याहै॰ जिसदुःखसें चित्रकूट कूं रामजी त्याग तेभये सोक्याहै॰ अत्रिमुनि कौनहै॰ अत्रिको आश्रम क्याहै ॥७॥

श्लोक॰ अनुसूयाचकादेवीजानकीशिक्षितायया ॥
पूजनंरामचंद्रस्यकिमत्रिः कृतवान्मुने ॥८॥

भा॰टी॰ अत्रिकी स्त्री अनुसूया देवी जिन्हूने जानकीकों पतिव्रता धर्म शिखाया सोक्याहै, रामजीका पूजन अत्रिमुनिनें किया सो क्याहै ॥८॥

श्लोक॰ कोविराधोमहाक्रूरोजानकीयेनसंहृता ॥
शीघ्रंजघानयंरामो बाणैर्देहवि कृन्तनैः ॥९॥

भा॰टी॰ -विराधनाम राक्षस कौणहै॰ जिसनें जानकीकोंहर लेगया॰ जिसकों रामजीनें जलदी बाणोसें शरीर काटके मारडाला॰ ॥९॥

श्लोक॰ मोक्षंप्रापतदारक्षःशरभङ्गोमुनिश्चकः ॥
किंध्यानंस्तवनंकाचचितातस्यस्वमाश्रमे ॥१०॥

भा॰टी॰ - तब राक्षस मोक्षकूं गयासो क्याहै॰ शरभंग मुनीनें रामजीको ध्यानस्तुति करके अपने घरपर चिताबनायके स्वर्गकों गया सो कौनहै

श्लोक॰ कोग्निर्ददाहतंयस्तु कस्सुतीक्ष्णोमहामुनिः
॥तेनसंभाषणंकिञ्चकः कुंभजसहोदरः ॥११॥

भा॰टी॰ - शरभंगको जो अग्निनेजलाया सो अग्नि क्याहै॰ सुतीक्ष्ण मुनि कौनहै, सुतीक्ष्ण रामजीको संवाद भया सो क्याहै, अगस्त्य मुनीके भाई क्याहै ॥११॥

श्लो॰ कोऽगस्त्यःकाचतत्पत्नीलोपामुद्रामुनीश्वर ॥ किं
रामागस्त्यसम्वादंधनुरैन्द्रंचकिम्मुने ॥१२॥

भा॰टी॰ हे मुनिजी अगस्त्य मुनि कौन है, अगस्तिकी स्त्री लोपा मुद्रा जिसका नाम सो कौन है, हे मुनिजी, रामजीको अरु अगस्त्य मुनिको संवाद हुवा सो क्या है॰ इंद्रको धनुष क्या है ॥१२॥

श्लो॰ प्राप्तं रामेण तत्रैव सरिद्गोदावरी च का ॥ के तत्तीरजलेशभ्रे कुटीरौ कौ च तौ तयोः ॥१३॥

भा॰टी॰ - जो धनुष रामजीकों अगस्ति मुनिने दिया सो क्या है, गोदावरी नदी क्या है, गोदावरीको तट जल क्या है रामचंद्र लक्ष्मणकी दो॰ पर्णकुटी ये क्या है, ॥१३॥

श्लोक॰ ज्ञानस्य का कथा तत्र रामचंद्रेण वर्णिता ॥ लक्ष्मणं प्रति भो देव सुखेनवसताऽनिशम् ॥१४

भा॰टी॰ - हे मुनिजी सुख समे तठ्हरे जो राम है सो वारंवार लक्ष्मण कूं ज्ञान कथा कही सो क्या है॰ ॥१४॥

श्लोक॰ दुःखिता केन कामेन रावणस्य सहोदरा ॥ आगता स्वपतिं कर्तुं श्रीरामं रतिवल्लभा ॥१५॥

भा॰टी॰ - रावणकी बहिनी रतिकूं प्यारी मानिके रामचंद्रको आपको पती बनाने वास्ते आई कामसे दुःखित होके सो काम क्या है ॥१५॥

श्लोक॰ रामेण भ्रामिता तत्र साययौ लक्ष्मणान्तिकं ॥ का भ्रमिस्तस्य रामेण कृता तस्या निहास्यतः १६

भा॰टी॰ - रामजीके वचनकूं मानके लक्ष्मणके पास गई तिस राक्षसीके संग हांस्य करके इदर उदर भ्रमाने भये सो क्या है ॥१६॥

श्लोक॰ तस्याः के नासिका कर्णौ ये छिन्ने लक्ष्मणेन वै ॥ किं नद्रुधिरवृन्दं च रक्तांगी येन संकृता ॥१७॥

भा॰टी॰ - शूर्पनखाके नाक कान लक्ष्मणने काट लिये सो नाक कान क्या है॰ बहुत रक्त आया, जिस रक्तसें शूर्पनखा का देह लाल होगई

सोक्याहे ॥१७॥

श्लोक॰ तरसागमनंतेषांकिन्तयोक्तम्वचस्यकिम्॥
हतारामेणतेसर्वेससैन्याराघवेनवै॥१८॥

भा॰टी॰--खरदूषण त्रिशिरा इनोकुं शूर्पनखाक्या बचन कहती भई राक्षसलोग बहुतजलदी रामजीसें युद्धकरनेकों आए सोक्याहे, सेनासहित रामजीने सब राक्षसोंका नासकियासो क्याहे ॥१८॥

श्लोक॰ भयाद्यांजानकीप्राप्तासागुहाकामुनीश्वर॥
सहोदर्यासभांगत्वारावणस्यचसन्निधौ॥यत्त्वोक्तं
वचनंकिन्तद्यच्छ्रुत्वाराक्षसोत्तमः॥१९॥

भा॰टी॰--हेमुनिजी भयसे रामजीने जानकीको गुहामे भेजी सोगु॰ हाक्याहै, रावणकी बहिनीने रावणके सभामे जायके रावणके सामने खडीहोके जोवचन बोली सो क्याहे जिस बचनकू सुनके राक्षसोमे उत्तमजो रावण ॥१९॥

श्लोक॰ कः कामोमोहितोयेनमारीचान्तिकमाययौ॥
कःसम्वादोद्वयोस्तत्रकोमृगोयस्यरूपधृक्॥२०॥

भा॰टी॰-- तुरंत कामसें मोहित हुवा सो काम क्याहे, मारीचकेसामने रावण गया सोमारीचरावणसंवाद क्याहे, और मारीचने मृग को रूप ध॰ रयासो मृगक्याहे॥२०॥

श्लोक॰ किंविचित्रम्मृगतनोचंचलाकागतिर्मुने॥ को
मोहोरामचन्द्रस्यवैदेहीलोभनंचकिम्॥२१॥

भा॰टी॰ --हेमुनिजी मृगकीशरीरपर चित्रविचित्र क्यारहा॰ मृगका बहुत भागना क्याहे, मृगकों देखके रामजी मोहित भये सोमोह कौनहे और जानकीकों लोभ हुवा सोक्याहे॥२१॥

श्लोक॰ निवारणंचसौमित्रेःरामचन्द्रस्यकिम्मुने॥ह

नोरामेणतेनोक्तंकिंलक्ष्मणइतीरितम्॥२२॥

भा॰टी॰-रामचंद्रकों लक्ष्मणने मनाकिया मतजावो॰ये मृगनही॰ राक्षसहै सो क्याहै, रामजीने मारीच कों मार्या सो जमीनमेपडले बखत मारीचनै हालक्ष्मण ऐसा बोला सो क्याहै॥२२॥

श्लोक॰ जानकीलक्ष्मणस्यैव किंविवादंचनिष्ठुरम्॥

सौमित्रौविगतेदूरेकिंधृतंरावणेनवै॥२३॥

भा॰टी॰ जानकी लक्ष्मणको बहुत विवादभया सो क्याहै॰ लक्ष्मण कों दूर गया जाणके रावणनें रूपधारणकिया सो क्याहै॥२३॥

श्लोक॰ परिव्राजकवेषंचकिंतत्साहित्यमंडलम्॥ वै

देत्याकानिदत्तानिकंदमूलानिसाधवे॥२४॥

भा॰टी॰-संन्यासीको भेष रावण बनायके जानकी के पास आया गेरूका कपडा विभूत कमंडल आदि और जो संन्यासीलोग धारण करनेहै सो रावणने क्या धारणकिया॰ जानकीने साधूजानके कंद मूल फल दिया सो क्याहै॥२४॥

श्लोक॰ सम्वादःक्रूरवचसा कस्तत्रमुनिसत्तम॥ जान

कींस्वरथेस्थाप्य गन्तुकामस्स्वपत्तनम्॥२५॥

भा॰टी॰-हेमुनिजी जानकी कों खोटीबात रावणने कही रावणकुं खोटीबातजानकीने कही सो क्याहै, जानकीकों रावणने आपने रथ-पर बैठायके लंकाकों लेचला सोक्याहै॥२५॥

श्लोक॰ कोगृद्धस्तस्य कौतुंडौपक्षौचरावणार्दितौ॥

पातितोरावणेनैवजानकीत्द्दत्यसंगतः॥२६॥

भा॰टी॰-जिसगृद्धके पक्ष चूंचकों रावणने काटके जमीनमें गिराय के जानकीकों लेके लंकाकूं गया सो गीध कौनहै॥२६॥

श्लोक॰ कादासीस्तस्यदुष्टस्य यासांमध्येचजानकी॥

स्थापितारक्षणं तत्र किंकृतं राक्षसीगणैः ॥२७॥

भा॰टी॰ - रावणदुष्टकी दासी क्याहै जिन दासीयोंके बीच जानकी॰ कों बैठाया, राक्षसीयोंने जानकीकी क्या रक्षा किया ॥२७॥

श्लोक॰ जानकीहरणंदृष्ट्वा रामलक्ष्मणयोरपि ॥ को विलापो मुनिश्रेष्ठ गृध्रसन्तारणंचकिम् ॥२८॥

भा॰टी॰ - हे मुनिराज, जानकीको हरी देखके राम लक्ष्मणने विलापकिया तथा गीधको संसारसे तारते भए सो क्याहै ॥२८॥

श्लोक॰ कः कबंधो भुजौतस्य यौरामेणनिपातितौ ॥ काचितातस्य कोदाहः कबंधवचनंचकिम् ॥२९॥

भा॰टी॰ कबंधनाम राक्षस कौनहै कबंधकी भुजा क्याहै जिस भुजाकूं रामजी काटते भए और कबंध कों जलाने वास्ते रामजीने चिताबनाया सोक्याहै कंबंधने रामजीसे बचन बोला सोक्याहै २९

श्लो॰ येनोक्तो रामचन्द्रस्तु तत्क्षणे शबरीं द्रुतः ॥ का सा मुनिश्रेष्ठ यार्चित्वा रघुनन्दनम् ॥ कथित्वा कपि॰ सद्भावं कांगतिम्प्रापितासती ॥३०॥

भा॰टी॰ - जिस बचनकूं मानके रामजी उसी बखत सबरीके पास गए॰ हे मुनिजी सो सबरी क्याहै, जो सबरी रामजीको पूजन करिके तथा रामजीकों कहीआप सुग्रीवकूं मिलोगे तो सब काम हो॰ जायगा ऐसा कहिके किसलोककूं गई ॥३०॥

श्लो॰ कापंपानलिनीश्रेष्ठा कश्शरश्चतदुद्भवः ॥ का किष्किन्धापुरीख्याता केतेवैकपयस्स्मृताः ॥३१॥

भा॰टी॰ तलाइयोंमें बड़ी जो पंपानाम तलाई सो क्याहै॰ उसी पंपा॰ तलाईसे निकलाजो पंपानाम तलाव सोक्याहै॰ किष्किंधा पुरी॰ क्याहै जो कपियोंने रामजीकी सहायकिया येसब वांदर कौनहै सो

निश्चय करके कहो ॥ ३१ ॥

श्लो॰ कोवालिः कश्चसुग्रीवोयामवान्हनुमांस्तथा
नलनीलादयः सर्वेप्यंगदाद्याः कपीश्वराः ॥ ३२ ॥

भा॰टी॰- वालि सुग्रीव, यामवान्, हनुमान्, नल नील अंगद आदि बडे बडे बलवान् बंदर येसब कौनहैं ॥ ३२ ॥

श्लो॰ तारारुमेचकाख्यातेदुन्दुभिः कश्चराक्षसः ॥
कासागुहादुन्दुभेश्चसुग्रीवोयत्रसंस्थितः ॥ ३३ ॥

भा॰टी॰- - तारा रुमा येदोनो कौनहै, दुंदुभीनाम राक्षस कौनहै, दुंदुभीकी गुफा क्याहै, जिसके दरवज्जे सुग्रीव खडारहा ॥ ३३ ॥

श्लो॰ कोमासश्चकपेर्वासः किंमृतज्ञानमेवच ॥ का
राज्यप्राप्तिस्सुग्रीवेकिंसुखंप्रापितञ्चनत् ॥ ३४ ॥

भा॰टी॰ -एक महीना सुग्रीवने गुफाके द्वारपर खडारहा सो महीना क्याहै॰ बालि मरगया ऐसा सुग्रीवने जाना सोक्याहै, सुग्रीवकों राजमिला तिसका सुख भया सो क्याहै ॥ ३४ ॥

श्लो॰ कोदुन्दुभिवधश्चैव वालिनिर्य्यापणंचकिं ॥
सुग्रीवस्यप्रवासंचकृतंनद्वालिनाचकिम् ॥ ३५ ॥

भा॰टी॰- - दुंदुभीकों बालीने मारा मारके अपने घरकूं आयाये॰ दोनोक्याहै, सुग्रीवकों बालीने घरसें निकालदिया सोक्याहै ३५

श्लोक॰ किंसुग्रीवस्यभ्रमणंकोमत्तंगोमुनिस्तथा ॥
किंशिरोवालिनाक्षिप्तंसरक्तंमुनिमंडले ॥ ३६ ॥

भा॰टी॰- - सबदेस सुग्रीव फिरा सोक्याहै, मतंग मुनी कौनहै, मुनीके पर्नकुटीके सामने बालीने रक्तसहित राक्षसका शिरफेंका॰ वोशिर क्याहै ॥ ३६ ॥

श्लो॰ कोरक्तोरंजितंयेन मुनेराश्रममण्डलम् ॥ कः

शापोमुनिनादत्तोभूधरः कः प्रवर्षणः ॥ ३७॥

भा०टी० - जिस रक्तसे मुनीकी पर्णकुटी भ्रष्ट भई सो रक्त क्याहै मुनीनें बालीकों श्रापदिया सो क्याहै, प्रवर्षण नाम पर्वत है सो क्याहै ॥ ३७॥

श्लो० सुग्रीव स्यचकोवासोगिरौमंत्रिगणैः सह ॥
रामचन्द्रमिलापःकोभूषणंवसनंचकिम् ॥ ३८॥

भा०टी० - प्रवर्षण ऊपर सुग्रीव बसतेथे सोवास क्याहै० राम सुग्रीवकी मित्रताहुई सोक्याहै, गहना वस्त्र क्याहै ॥ ३८॥

श्लो० त्यक्तंमैथिलराजस्यकन्य याकिंप्रदर्शितम् ॥
काप्रतिज्ञावालिवधेरामचंद्रेणवैकृता ॥ ३९॥

भा०टी० - जो जानकीने सुग्रीवकूं देखके गहना वस्त्र त्यागदिया० वह गहना वस्त्र सुग्रीवने रामजीकों दिखाया सो क्याहै० वालीकों मारनेवास्ते रामजीनें पणकिया सोक्याहै ॥ ३९॥

श्लो० जानकीशोधनेचैवकपिनाकाकृतामुने ॥ केसप्ततालाः किंशुष्कं दुन्दुभेः शिरएवच ॥ ४०॥

भा०टी० - हे मुनिजी जानकीकु शोधनेवास्ते सुग्रीवनै पणकिया सोक्याहै, सात तालके वृक्ष तथा दुंदुभीका सूखाशिर क्याहै ४०

श्लो० किमंगुष्टंकिमदृश्यंयमाश्रित्यरघूत्तमः ॥ जघानकपिराजम्वैद्वंद्वयुद्धकरंशठम् ॥ ४१॥

भा०टी० - रघुवंशमें श्रेष्ठ रामजीने जिस् अँगुठेसे दुंदुभीके शिरको उठायके दूर फेंक दिया सो अंगुठा क्याहै जिस वृक्षके आडे होकर रामजीने दोके संग युद्ध करनेवाला शठ ऐसे वालीकों मार डाला वो वृक्ष कौनहै ॥ ४१॥

श्लोक० कापुष्पमालातत्रासीत्तच्चिन्हितोविहतोयया ॥

तारांगदविलापः कःकावालिदहनक्रिया॥४२॥

भा॰टी॰ - जिस फूलकी माला सुग्रीवकों पहराया पछानके वास्ते फेर रामजीने युद्ध करने कूं भेजा सो माला क्याहै॰ तारा अंगद को- विलाप तथा वालिकी दाह क्रियाक्याहै॥४२॥

श्लो॰ सुग्रीवराज्यप्राप्तिःकातस्यकिम्मदवर्द्धनम्॥ रामस्यगिरिवासःकोलक्ष्मणेनयुतस्यच॥४३॥

भा॰टी॰ - सुग्रीवकों राजमिला सो क्याहै॰ राजमिलनेसें अभिमान भया सो क्याहै॰ रामजी लक्ष्मणसहित परवत परबसे सोक्याहै ४३

श्लो॰ केचत्वारोगतामासावर्षिकाःसुमनोहराः॥ विलापोरामचन्द्रस्यपुनःकोजानकीकृते॥४४॥

भा॰टी॰ - सुंदर मनकों हरण करवेजोग ऐसेजो चारमास वर्षा ऋतुके गए सोक्याहै फेरजानकीके वास्ते रामचंद्रजीने विलाप कियासो क्याहै

श्लो॰ सुग्रीवत्रासनंकिंचलक्ष्मणेनकृतंतया॥ राघवान्तिकमागत्यप्रेरयामासवैकपीन्॥४५॥

भा॰टी॰ - लक्ष्मणजीने सुग्रीवकों त्रासदिया सोक्याहै सुग्रीवने रामजीके सामने आयके कपियोंको भेजासोक्याहै॥४५॥

श्लो॰ चतुर्दिक्षुमहावीरान्सुग्रीवस्तत्त्वकिम्मुने॥ किमंगुलीयकन्दत्तंरामेणवायुजेकपौ॥४६॥

भा॰टी॰ बडेबली वानरोंकों चारोंदिसाकों सुग्रीवने भेजा सोक्याहै॰ रामजीने हनुमानकूं मुँदरीदिया सोक्याहै॥४६॥

इतिश्रीवेदान्तरामायणे बालकांडे शिवसहायबुधविरचितेसीताशोधनेतृतीयो मोक्षोपानः॥३॥

श्लोकः सम्वर्तउवाच काबधिर्मासिका दत्ताशो

धित्वाचत्रयोदिशः॥ अप्राप्तिंपुनराचख्युर्जानक्या स्तच्चकिम्मुने॥१॥

भा॰टी॰ सम्वर्तमुनिफेर पूंछतेहैं स्रुग्रीवने सब बानरोंकों एकमासका प्रमाण करके भेजा सो क्याहै॰ कपियोंनें तीन दिसा शोधके॰ आय कहेके जानकी नही मिली॰ सोक्याहै॥१॥

श्लोक॰ योगिनीकासमाख्याता पातालविवरंचकिम्॥ कःसम्पातिःपक्षिराजोयद्वाक्यमनुमान्यच॥२॥

भा॰टी॰- हनुमान् आदि वानरोंकों योगिनीमिली सो क्याहै॰ पातालकी रस्ता देख पडीसो क्याहै॰ संपाति गीधपक्षी योका रा— जाक्या॰ जिसकी बचन हनुमान मानके॥२॥

श्लो॰ यदारुरोहहनुमान्समुद्रलंघनोद्यतः॥सगिरिःकोपदापीड्यपारंगन्तुम्मनोदधे॥३॥

भा॰टी॰- जिसपरबतकों हनुमानचढ़ते भए पगसे दाबिके समुद्रकों कूदके उसपारजानेको बिचारकिया सोपर्वत क्याहै॥३॥

श्लोक॰ सिंहिकाकाजलचराछायाकावाहनूमतः॥ मारिताक्रोधयुक्तेनवीरेणमुष्टिनाकथम्॥४॥

भा॰टी॰- जलमेरहनेवाली सिंहिका क्याहै हनुमानकी छायाक्याहै अरु क्रोधकरिके हनुमान् वीरने हाथकी मुष्टी बांधके मारासो मुष्टी क्याहै॥४॥

श्लो॰ सुरसा का समाख्याता ह्ययोः किम्मुखवर्द्धनं॥ किम्प्रविश्यगतःपारंबिचारंकिंहनूमतः॥५॥

भा॰टी॰ -स्रुरसाने मुख बढाया हनुमानने देह बढाया सो स्रुरसा क्याहै॰ स्रुरसाकी मुखमे पैठके हनुमान समुद्रके पारगए सोमुख क्याहै॥ हनुमान सिंधुके दक्षणतीर बैठके बिचार कियासोक्याहै ५

श्लो॰ किन्धृतंलघुरूपंचकालंकामुष्टिपातनम् ॥ विलोकिनासमस्तापूर्न्न दृष्टाजानकीतिकिम् ॥ ६ ॥

भा॰टी॰ हनुमानने छोटारूप धारणकिया सो क्याहे हातकी मुट्ठी बांधके लंकानाम राक्षसीकूं मारी सोलंका क्याहे तमाम लंकापुरी हनुमानफिरे जानकीकूं नहीदेखे सोक्याहे ॥ ६ ॥

श्लो॰ पश्चाद्दृष्टाजनकजाकिंतरुस्थेनतेनवै ॥ किमागमनवेगश्चरावणस्यतदामुने ॥ ७ ॥

भा॰टी॰ - हे मुनिजी पीछे वृक्षपरबैठके जानकीकूं देखे सोक्याहै, तब जलदी रावण आया सोक्याहै ॥ ७ ॥

श्लो॰ गतेदुष्टेराक्षसीभिस्तर्ज्जनंकिंकृतन्तथा ॥ त्रिजटास्वासनञ्चक्रेजानक्याःकिंतदामुने ॥ ८ ॥

भा॰टी॰ - हेमुनिजी, रावण दुष्टके गये पीछे राक्षसीयोंने जानकीकों डरवाती भई सोक्याहेः त्रिजटाने जानकीकूं विश्वासदिया सोक्या है सोकहो ॥ ८ ॥

श्लो॰ किमूचेरामचरितंहनुमान्तरुसंस्थितः ॥ तेनोक्तंवचनंश्रुत्वाविश्वासंप्रापसाचकिम् ॥ ९ ॥

भा॰टी॰ - वृक्षपरबैठके रामजीके चरित्रकूं हनुमान कहने लगे॰ तथा कपिकी वाक्य सुनके जानकीके मन बिश्वास भया येदो नोक्याहै

श्लो॰ दत्तांगुलीयंसङ्कृत्यसंवादमभवत्तयोः ॥ कासाक्षुधाययार्त्तोभूद्धनुमान्कपिसत्तमः ॥ १० ॥

भा॰टी॰ - रामजीकी मुँदरी हनुमानने जानकीकों दिया॰ जानकी लेके खुसीभई दोनो माता पुत्र बात करने लगेसोक्याहे जिस भूषसें हनुमान् दुःखीभंए वोभूष क्याहे ॥ १० ॥

श्लो॰ किम्फलन्तरवःकेचभक्षितावोत्पाटितास्तथा ॥ रा

क्षसीभिः किमुक्तश्चरावणोमानगर्वितः ॥११॥

भा०टी० - जो फल हनुमानने खाए वृक्षोकों तोडे सो फल और वृक्ष- क्याहैं रावणकों राक्षसीयोनें क्या कहा ॥११॥

श्लो० प्रेरयामासतनयंस्वस्याक्षंराक्षसोत्तमः ॥ हृ- तोहनुमतासश्चबद्धश्चेंद्रजिताचकः ॥१२॥

भा०टी० - राक्षसोंमे उत्तमजो रावणहै सो आपने अक्षनाम पुत्रकों भेजा तिस अक्षकों हनुमान मारा सो क्याहैं इन्द्रजीतने हनुमा- नकू बांधा सो क्याहै ॥१२॥

श्लो० लंकाविदाहनंकिन्वताडनम्पुच्छबंधनम् ॥ भ्रमणंहसनंचैवकिन्तैलंरज्जुकिम्मुने ॥१३॥

भा०टी० - हनुमानकी पूंछ बांधते भए, मारे लंकामें फिराए हसीकि ए और तैलरस्सी कपडा येसब क्याहै ॥१३॥

श्लो० कोक्तिर्दशाननस्यैववीरस्यैवबभूवह ॥ राक्ष- सीनांप्रलापंकिंकिम्पुच्छशीतलन्तथा ॥१४॥

भा०टी० रावणकी हनुमानकी बाते भई सोक्याहै० लंकाजलतीदे खके राक्षसीयोंने विलाप किया सो क्याहै० हनुमानने पूंछ बुझाय के थंडी किया सो क्याहै ॥१४॥

श्लो० जानक्यायामणिर्दत्तारामविश्वासकारणे ॥ गृ हीताकपिनासाकाजानक्यास्वासनञ्चकिम् ॥१५॥

भा०टी० - रामजीकों विश्वास होनेवास्ते हनुमानकुं मणि जानकीनै दिया सोक्याहै। कपीने मणीलेके जानकीकों विश्वास दिया सो क्याहैं ॥१५॥

श्लो० किम्पुनर्लंघनंसिन्धोरङ्गदास्वासनंचकिम् ॥ किं तन्मधुवनंशून्हूंतेः फलंकिम्प्रभक्षितम् ॥१६॥

भा॰टी॰ - फेर हनुमान समुद्र कूदके उत्तर पार आए सो क्याहै॰ अंग द कों आस्वास किया सोक्याहै॰ मधुबनमें प्रवेस करके कपियोनें फलुखाए सो सुंदर सुग्रीवको मधुबन क्याहै ॥१६॥

श्लो॰ तर्जितावनपाःकेचकपीशायनिवेदनम्॥ को हर्षःकपिराजस्यरामप्रश्नंचकिम्मुने॥१७॥

भा॰टी॰ - बनके रखवालोंको मारा वे सुग्रीवसे जापुकारे सुग्रीव कों हर्ष भया॰ सुग्रीवसे रामजीने पूछा येसब क्याहै॥१७॥

श्लो॰ आगत्यहनुमानूचेनस्याप्यादरभावना॥ से- नासंयोजनाकाचसमुद्रतटसंस्थितिः॥१८॥

भा॰टी॰ - हनुमान आयके सब हाल रामजीसे कहे हनुमानका आ दर रामजीनेक्याकिया फौजकों एकट्ठीकरके चलते हुए सो क्या है॰ समुद्रके तीर सेना सहित रामजीने डेरा किया सोक्याहै॥१८॥

श्लो॰ बिभीषणस्यधिक्कारःकिंकृतंरावणेनवै॥ के बिभीषणमंत्रज्ञास्तैःसार्द्धंरामसन्निधिम्॥१९॥

भा॰टी॰ - रावणने बिभीषणको कहा कि तेरेको धिक्कारहै ऐसी बानी क्याहै॰ बिभीषणको मंत्री कौनहै जिनोकों संग लेके राम जीके पास आए ॥१९॥

श्लो॰ आययौकपयश्चक्रुःकिन्तस्यविनिवारणम्॥ बिभीषणायकिंदत्तंराज्यंरामेणवैतदा॥२०॥

भा॰टी॰ - आयाजब कपियोंने आणे नही दिया सोक्याहै, तब रा मजीने बिभीषणकों राजदिया सो क्याहै ॥२०॥

श्लो॰ समुद्रतरणेचैवकोविचारस्ततैः कृतः॥ किं चदर्भासनन्तत्रत्रिदिनंराघवस्यह॥२१॥

भा॰टी॰ - समुद्रके पारजानेकेवास्ते बिचार कियासो क्याहै, हेमु-

जी, रामजीका कुशन्आसनक्याहै ॥ २१ ॥

श्लो· त्यक्त्वामूलफलेरामोनिराहारोबभूवच ॥ किम्मूलंकिम्फलंचैवकिमयाचतसागरम् ॥२२॥

भा·टी· – मूल फलकों रामजीने त्यागिके निराहार रहे सो मूल फल क्याहै, समुद्रसें रामजीने याचना किया सो क्याहै ॥ २२ ॥

श्लो· कः क्रोधोरामचंद्रस्यकिं सागरविशोषणम् ॥ केवैजलचराः सर्वेव्यथिताःशरकर्षणे ॥ २३ ॥

भा·टी· –रामजीने क्रोध किया सो क्याहै, समुद्रकूं शोष लेनेकूं मनकिया सो क्याहै, समुद्रशोषणेवास्ते धनुषपर बाण चढायके खेंचे तब जलजीव बहुत दुःखपाए सो क्याहै ॥ २३ ॥

श्लो· किंसागरघृतंरूपम्ब्राह्मणस्यातिकौतुकम् ॥ कापात्रीकेचतेरत्नाःसमानीताश्चसिन्धुना ॥२४॥

भा·टी· – समुद्रने तमासा सरीके ब्राह्मणको रूप धारण किया सोक्या है· सिंधुथालीमे रत्नधरिके रामजीकी बिनतीकिया सो रत्न तथा थाली येसब क्याहै ॥ २४ ॥

श्लो· स्तवनंकिम्प्रकाराशःरामचंद्रस्यसागरः ॥ कश्चोत्तरतटस्थश्चसिन्धुशत्रुर्निपातितः ॥ २५ ॥

भा·टी· –समुद्रने रामजीकी स्तुतिकिया सोक्याहै, समुद्रके उत्तरतीरमेसमुद्रका बैरी सो रामजीने मारा सोक्याहै ॥२५॥

श्लो· कःसेतुः कश्चपाषाणःकेचान्येसेतुबन्धने ॥ साहित्याश्चैवरामेनदुःखितेनसुखायच ॥ २६ ॥

भा·टी· – बडे दुःखी रामजीने सुख होनेवास्ते पुल बांधते भए· सोपुल क्याहै· पुलकी सामग्री क्याहै· ॥ २६ ॥

श्लो· कश्चरामेश्वरोदेवःस्थापितः पूजितोनिशम् ॥ किं

सैन्योत्तारणंतस्यकासेनागणनातथा ॥ २७ ॥

भा० टी० - रामजीने आपना कुलदेव जानके रामेश्वरजी कों स्थापन-किया और बारंवार पूजन किया सो क्याहे० फौजकूं समुद्रके पार जाना तथा गिनती किया सो क्याहे० ॥ २७ ॥

श्लो० कःसुवेलोगिरिर्ब्रह्मन्सैन्यानांकास्थितिस्तथा ॥ चतुर्षुद्वारदेशेषुलंकायाश्चचतुर्दिशः ॥ २८ ॥

भा० टी० - हेब्राह्मणजी; सुवेल पर्वत और सुवेलकेऊपर फौज टिकी ये दोनो क्याहे, लंकाके चारों तरफ तथा चारों दरवाजाको ॥ २८ ॥

श्लो० रोधनंकिम्मुनेब्रूहिकोत्तरेराघवस्थितिः; किंयुद्धंरावणादीनांराक्षसानांपरस्परम् ॥ २९ ॥

भा० टी० - हेमुनिजी, घेर लेते भए सो क्याहे, उत्तर दरवाजापर रघुनंदन आप खडेहुए सो क्याहे, रामजीके तथा रावण आदि गिणती न-हीं जिन राक्षसोंकी जिनसें परस्परयुद्ध ब हु त भईसो क्याहे ॥ २९ ॥

श्लो० कपीनांरामचन्द्रेणप्रेरितानाम्मुहुर्मुहुः ॥ रामस्यलक्ष्मणस्यैवराक्षसैश्चमहाहवं ॥ ३० ॥

भा० टी० - रामजीके हुकुम पायके बानरोंकी तथा राक्षसोंकी बडी प्रलय युद्ध भई० तथा राम लक्ष्मणसें और राक्षसोंसें बडी युद्ध भई सोक्याहे ॥ ३० ॥

श्लो० किंशिरोवर्द्धनंछिन्नेरामेणरावणस्यच ॥ कामायाराक्षसेन्द्रेणसंग्रामेदर्शिता मुहुः ॥ ३१ ॥

भा० टी० - बारंबार रामजीने रावणको शिर काट काटके जमीनमे परके और रावणके शिर फिर दूसरे तयार भए० उसीतरें शिरोंकी बडी वृद्धि भई सो क्याहे० युद्धमे रावणने बहुतमाया दिखाई सोमायाक्या

श्लो० कानिद्राकुंभकर्णस्यकिंवैजागरणंतथा ॥ शक्तया

विघातितेतत्रलक्ष्मणेपतितेक्षितौ ॥३२॥
भा०टी० - कुंभकर्णकी निद्रा क्याहै० रावणने कुंभकर्ण कों जगाया सो० क्याहै; इन्द्रजीतने लक्ष्मणकों शक्तिसे मारा लक्ष्मण भूमिपर पडग यासोक्याहै ॥३२॥
श्लो० कोरामस्यविलापश्चकपीनाञ्चैवसर्वशः ॥कः सुषेणोगिरिर्द्रोणोकोमार्गेऽकश्चतापसः ॥३३॥
भा०टी० - तबरामजीने ओर सबवानरोनें बडाविलापकियासो क्याहै सुषेणतथाद्रोण पर्वत क्याहै, जिसके रस्तामे राक्षस कपटमुनिहोके हनु मानकों विघ्नकरनेवास्ते बैठा सोरस्ता ओरमुनिकौनहै ॥३३॥
श्लो० किंकमंडलुतोयंचदर्शितस्तेनकः शरः ॥ काछा- याकपिनामृत्युप्राप्ताकागुरुदक्षिणा ॥३४॥
भा०टी० - दुष्टमुनिने हनुमानको आपने कमंडलुको जल देने लगा० सोज ल तथा कमंडलुक्याहै, हनुमानने कमंडलुको जलनहीपिये तो दुष्टने तलाव बताया सो तलाव क्याहै, हनुमान तलावमें जलपीनेलगे तो० छाया हनुमानकों खानेवास्ते आई उस्कों हनुमानने मारडाली सोछा या क्याहै, दुष्टमुनिने गुरु दक्षिणा मांगी सोगुरुदक्षिणाक्याहै ॥३४
श्लो० वनस्पतेरविज्ञानः कोद्रोणोत्पाटनञ्चकिम् ॥ किम्पुनस्थापनंतस्य लक्ष्मणाजीवनन्तथा ॥३५॥
भा०टी० - हनुमानने औषधी नही पछानी तो द्रोणपर्वतकों मूल स- हितउपाडके सेनामे आए सोउपाडनाक्याहै, लक्ष्मणकों चैतन्यभ- एपीछे पर्वतकुं उसीजगापर रख आए सो क्याहै ॥३५॥
श्लो० कारात्रिःकिंदिनंयुद्धंनागपाशविबन्धनम् ॥ राम लक्ष्मणयोःकश्चगरुडागमनञ्चकिम् ॥३६॥
भा०टी० - रामजीसे रावणसे रातदिन युद्ध भई सो रातदिन क्याहै,मे

धनादने रामलक्ष्मणकों नागपाशमें बांध लिये सो क्याहै· गरुडने· आयके छुडाए सो क्याहै ॥ ३६॥

श्लो॰ स्वस्त्रियंजानकींकर्त्तुंरावणश्चभृशंमुने ॥ लोभादयः केकथितारावणेनतदन्तिके ॥ ३७॥

भा·टी·- रावणने जानकीकों अपनी स्त्री बनाने वास्ते वारंवार लोभ आदि कहता भया सो क्या है ॥ ३७॥

श्लो॰ कोजानकींविलापश्चमासेचैकादशेमुहुः ॥ त्रिजटास्वासनंकिम्वैमन्दोदर्याः शुचश्चकाः ॥ ३८॥

भा·टी·- मास ११ वारंवार जानकीने विलाप किया सो क्याहै जानकी कों त्रिजटाने विश्वास दिया सो क्याहै· मंदोदरी कों शोच भया सो क्याहै ३८

श्लो॰ मेघनादादिसर्वेषुहतेषुपुत्रभ्रातृषु ॥ विलापो· दशकंठस्यकोबभूवमुनीश्वर ॥ ३९॥

भा·टी·- हे मुनियों के ईश्वर मेघनाद आदि लेके गिनती करवे जोग नहीं जो रावण के पुत्र, प्रपुत्र, भाई, राक्षस, इन्होके मरे पीछे रावणने विलाप किया सो क्याहै ॥ ३९॥

श्लो॰ यज्ञास्थितेदशग्रीवेकोविघ्नोवानरैः कृतः ॥ रामरावणयोर्युद्धेयेचान्येभूरिकौतुकाः ॥ केतेसर्वेयथायोग्यम्वदस्वमुनिसत्तम ॥ ४०॥

भा·टी·- रावणने शत्रुजीतनेके वास्ते यज्ञ करनेकूं बैठा तब वानरोने विघ्न किया- ये दोनो क्याहै, रामरावणके युद्धमे और जो बहुत चरित्र भया सो क्याहै· हे मुनिजी येसब बात यथायोग्य कहो ॥ ४०॥

श्लो॰ रावणेसकुटुम्बेचसामात्य पुत्रपौत्रके ॥ हतेरामेणकपिभिर्लक्ष्मणेनावशेषिते ॥ ४१॥

भा·टी·- रावणके पुत्र पौत्र भाई कुटुंब मंत्रीसहित को रामने मारे औ

रखोवाकीरहेसो कपिओरलक्ष्मणने मारेसो क्याहै ॥ ४१ ॥

श्लो॰ राक्षसीनांविलापः कोलंकाराज्यंबिभीषणे । दत्तं किंरामचंद्रेणसैन्यानांजीवनंचकिम् ॥ ४२ ॥

भा॰टी॰ - राक्षसीयोंका विलापक्याहै॰ लंकाको राज्य बिभीषणकूं दियासोक्याहै॰ ओर अपनी सेना मरीपडीथी उस्कोजियाने भए॰ येसबकाम रामजीने किया सो क्याहै॰ ॥ ४२ ॥

श्लो॰ कास्तुतीरामचंद्रस्यकृतासर्वैश्वराचरैः ॥ जानक्या रामचंद्रस्यकोमिलापोऽतिसौख्यदः ॥ ४३ ॥

भा॰टी॰ - देवोंसहित तीनलोक॰ चौदाभुवन॰ रामजीकी स्तुति किया तथा बहुत सुख देनेवाला॰ मिलापरामचंद्र जानकीका भया सोक्याहै

श्लो॰ पुष्पकेचसमारोप्यरामः सर्वान्कपींस्तथा ॥ लक्ष्मणंजानकींचैवकिंरणस्थलदर्शनम् ॥ ४४ ॥

भा॰टी॰ - रामजीनें पुष्पक विमानमे लक्ष्मणजानकी तथा सबबानरों कों बैठायके अयोध्याकूंचले॰ तब ऊपरसें रणभूमि दिखाई सो क्याहै ॥ ४४ ॥

श्लो॰ यथायातोवनंरामस्तथान्वपुनरागतः ॥ भरद्वाजाश्रमेस्थित्वा हनुमत्प्रेषणंचकिम् ॥ ४५ ॥

भा॰टी॰ जैसा रामजी बनकूं गए तैसेही फिर अयोध्याकूंचले॰ भरद्वाजमुनिके आश्रम॰ आयके हनुमानकौं भरतके पास भेजासोक्याहै॰

श्लो॰ हनुमान्भरतोक्तिश्चकिंपुष्पकसमागमम् ॥ सर्वासांचप्रजानांवैकोहर्षः पुरवासिनाम् ॥ ४६ ॥

भा॰टी॰ - हनुमानओर भरतकोसंवाद भयासोक्याहै॰ पुष्पक॰ विमान भरतके सामने आयासोक्याहै॰ पुरवासियोंको बडाहर्ष भयासोक्याहै ॥ ४६ ॥

श्लोक॰ सर्वेषांचैवभ्रातॄणांकिंजटाकृंतनम्मुने॥पट्टा
भिषेकोरामस्यसर्वेषांसुखसंस्थितिः॥४७॥

भा॰टी॰ - हेमुनिजी सब भाइयोनें जटा उतरायके हजामत कराया सोक्याहे॰ रामजीकों राज्य प्राप्ति हुवा और सबकों आनंद भया॰ सोक्याहे॥४७॥

श्लो॰ विसर्जनञ्चसर्वेषांकपीनाम्मुनिसत्तम॥किंरा
ज्यंरामचंद्रस्यकिंप्रजानांसुखन्तथा॥४८॥

भा॰टी॰ - हेमुनिजी रामजीने राज पायके कुछदिन पीछे सब कपियेंकों तथा बिभीषणकों बिदाकिया सोक्याहे॰ रामजीने राजकिया सब प्रजा सुखपाए सोक्याहे॥४८॥

श्लो॰ रामेणकेकृतायज्ञाजानकीत्यागनंचकिम्॥
कौरामपुत्रौसंजातौकोदुर्वासामुनिःप्रभो॥४९॥

भा॰टी॰ - रामजीने यज्ञकिया तथा जानकीकों त्यागदिया॰ रामजीकें दो लडके हुए॰ दुर्वासामुनि आए येसब क्याहे॥४९॥

श्लो॰ वियोगोरामचंद्रस्यलक्ष्मणस्यचकोमुने॥को
भूम्याविवरोदत्तोजानकीयेनसंगता॥५०॥

भा॰टी॰ - लक्ष्मणको रामजीसें वियोग भयो सोक्याहे॰ जानकीकी सोगन सुनके भूमिने रस्तादिया॰ जिसरस्तेसें जानकी जायके जोतिमें मिलगई सोक्याहे॥५०॥

श्लो॰ सर्वाःप्रजास्समादायरामःकुत्रगतःप्रभो॥ए
वंचान्यानिरामस्यरावणस्यचभोमुने॥५१॥

भा॰टी॰ - सब चराचर प्रजाकों संगलेके रामजी किसस्थानकूंगए हे मुनिजी सो कहो॰ रामरावणको चरित्र मैंने पूछ्यासो॥५१॥

श्लोक॰ अनापृष्टान्चिमयावदस्वकृपयामुने॥पुराणे

रामचरितंश्रुतन्नतर्पितम्मनः ॥५२॥

भा०टी० - जोमैंने नहीं पूंछा सोबी आप कृपाकरके कहो० पुराणमें रामचरित्र मैंने सुनापरंतु मेरामन तृप्तनहीं भया० ॥५२॥

श्लोक० वेदान्तमार्गेणवदस्वभोमुनेसर्वञ्चरित्रंरघुनन्दनस्यवै ॥ श्रुत्वामनोमेबहुतापतापितम्मया० तिशान्तिन्त्वयमाशुनिश्चितम् ॥५३॥

भा०टी० - हेमुनिजी रामजीको सम्पूर्ण चरित्र वेदान्त मार्ग करके कहो जिसको सुनके मेरामन जलदीसें शान्तिकों प्राप्त होवे० कैसामनहै० बहुत भ्रमरूप अग्निसे जलताहै ॥५३॥

इतिश्रीवेदान्तरामायणेबालकांडे शिवसहायबुधविरचितेसम्वर्तवरतन्तुसम्वादेसर्वप्रश्नोनामचतुर्थोमोक्षोपानः ॥४॥

वरतन्तुरुवाच ॥ ॥साधुसाधुमहाबाहोधन्यौते० पितरौमुने ॥ वर्द्धयन्तितवप्रश्नाःममभोदन्तपोधन ॥१॥

भा०टी० - वरतंतु मुनिबोले हेसंवर्तमुनि, तुमने बहुत अच्छे अच्छे प्रश्नकिये० तुमारे प्रश्नसे हमारेमनकों आनंदकी.रद्धी होतीहै तुमारे मातापिताकों धन्यहै० ॥१॥

श्लोक० नरामोमानुषोविप्रदशास्योनचराक्षसः ॥ भूर्भुवःस्वरितिब्रह्मन्नत्रिलोकन्निगद्यते ॥२॥

भा०टी० - हेमुनि रामजी मनुष्यनहीं और रावण राक्षसनहीं और आकाश पाताल मृत्यलोक इनकी तीनलोक संज्ञा नहींहै ॥२॥

श्लो० अष्टादशपुराणानांषड्शास्त्राणामिदम्मतम् ॥

वेदान्तानांविशेषेणसर्वलोकमिदन्तनु ॥३॥

भा॰टी॰ अगरा पुराण॰ षड्शास्त्र॰ औरविशेषकरके वेदान्तको मत यहहैकि तीनलोक॰ चौदाभुवन॰ ये देहहीहै॰ ॥३॥

श्लो॰ वर्णयामिद्विजश्रेष्ठतवप्रश्नविभूषिताम्॥ गाथामेतांसुदुर्गम्यामपक्वमानसैर्नरैः॥४॥

भा॰टी॰ – हे द्विजोमे बडे मुनि तुमारे प्रश्नकरिके शोभित है यह कथा जिसकूं मै कहताहुं कैसीहै कथा॰ जिन्नरोंकी हृदय ज्ञानसें परिपक्वनहीहै उनमनुष्योंकरिके बहुत दुःखसे प्राप्ती होवेजोग्यहै॰४

श्लो॰ यतोभगवतस्चैतत्जगदुत्पद्यतेमुने॥ पाल्यतेयत्प्रपद्यंतेपुनश्चान्तेत्वनेकधा॥५॥

भा॰टी॰ – हेमुनिजी जिस भगवान्ते यह संसार अनेक प्रकारका उत्पत्ति होताहै तथा पालन होताहै॰ और अंतमे उसी भगवानमे लीनहोजाताहै ॥५॥

श्लो॰ सच्चिदानन्दरूपस्यनिर्गुणस्यजगत्पतेः॥ जडसंजीवनानन्दकारकस्यमहाप्रभोः॥६॥

भा॰टी॰ – देह जीवके आनंदकरनेवाले भगवानके रजोगुण तमोगुण सत्वगुण करिके रहितके संसारके पतीके जडसंसारके बहुतप्रकारसेजीवनरूप आनंदकरनेवालेके महाप्रभूके ॥६॥

श्लो॰ ध्यानगम्यस्यसनतंनिराधारस्यनिस्तनोः॥ निर्विकल्पस्यनित्यस्य यत्तेजोऽखिलदुर्गमम्॥७॥

भा॰टी॰ – ध्यानसे प्राप्ति होवे योग्यके आधारसें रहितके सरीरसे हीनके तर्क वितर्कसे वर्जितके जन्मनाशासें रहितके ऐसे भगवानका यो तेज॰ कैसातेजहै संसारी जीवोंकरिके बडे दुःखसें प्राप्ति होनेजोगहै ॥७॥

श्लोक· तस्याएवर्बुदभागेनविस्तृतम्भुवनत्रयम्॥ब्रह्म विष्णुमहेशादियुतंसर्वंचराचरम्॥८॥

भा·टी· - तिसतेजके अणुके अर्बुदभागसे इस तीन भुवनका विस्तारहोरहाहै अणु किसकूं कहतेहैं किजो मकानके ऊपर छपरके छेदमेंसें सूर्यका किरण पडतेहै उसकिरणके भीतर धूलकी कणिका फिरतीदीषतीहै उस कणिकामेंसे एक कणकी अणुसंग्याहै उस अणुको अर्बुद भागकरना १००००००००० इस्मेसे निन्नानवेक्रोड निन्नानवेलाख निन्नानवे हजार नवसे निन्नानवे निकारिके बाकीजोरहाभाग १ तिसभागका तीन लोक चवदाभुवन चराचरकोविस्तारभयाहै कैसेलोकहै ब्रह्म विष्णु महेश इन्होकों आदिलेके अनेक प्रकारकेजीवोंकरके संयुक्तहै ॥८॥

श्लोक· उत्पत्य वन संहारेतस्येच्छानमुनीश्वर॥अणोरर्बुदभागस्तुद्विधाभून्मुनिसत्तम॥९॥

भा·टी· हेमुनिजी संसारकी उत्पत्ति रक्षा नाश करना ऐसी भगवान्की इच्छा नहीहै परंतु वो जो अणुको अर्बुदभागहै सो अपनी इच्छासे दो भाग होगया हेमुनिजी॥९॥

श्लोक· प्रमदापुरुषोविभताभ्याम्विस्तारितंत्विदम्॥ मुनींद्रप्रमदायासीत्साशक्तिर्बहुरूपिणी॥१०॥

भा·टी· - हे विप्र एक भागकरके स्त्री हुई· दूसरे भागकरके पुरुष भया इनदोनोंके संजोग से यह तीनलोक चौदाभुवनको विस्तार भयाहैजो स्त्रीभई सोशक्तिको रूपहै ॥१०॥

श्लो· पुरुषोभगवान्प्रोक्तोविष्णुर्नारायणोहरिः॥अनेकरूपोगदितोमुनिभिर्योगतत्परैः॥११॥

भा· टी· - जोपुरुष भयासो भगवान् विष्णु नारायण हरी इसप्रकारके

बहुतनाम विख्यात भए. योगको जाननेवाले मुनियोंने अनेक रूपभगवानकों कहेहैं ॥ ११ ॥

श्लो॰ निराकारस्यदेवस्यनिर्गुणस्यजगत्प्रभोः ॥ तेजसः पश्यसामर्थ्यमणोरर्बुदभागिनः ॥ १२ ॥

भा॰टी॰ - आकार सें रहित गुणसें हीन, ऐसे भगवानके तेजके अर्बुदभागकी सामर्थ्य देखो ॥ १२ ॥

श्लो॰ येनेदंविस्तृतंसर्वंदृश्यतेसचराचरम् ॥ ज्ञानिनो ध्यानयुक्ताश्चजगच्चैतच्चराचरम् ॥ १३ ॥

भा॰टी॰ - जिस अर्बुदभागके तेजकरके यह चराचर संसार विस्तार भयाहै ज्ञानी और ध्यानकरनेवाले जोजीवहैसो ध्यान कर्के युक्त यह चराचर जगतको ॥ १३ ॥

श्लोक॰ ध्यानयोगेनस्वस्यैवपश्यंतिहृदये ऽनिशाम् ॥ ज्ञानध्यानविहीनाश्चबहिर्बाह्यमनिशन्ध्रुवम् ॥ १४ ॥

भा॰टी॰ ध्यानयोग करके अपने हृदयमें बारंबार देखतेहैं और जो जीव ज्ञान ध्यानसे रहितहैं सो जीव निश्चय करिके बारंबार हृदयके बाहिर ॥ १४ ॥

श्लोक॰ पश्यन्तिचर्मचक्षुर्भ्यांमोहसंतापतापिताः ॥ बाह्यसृष्टेःप्रभावन्वेदवर्णयामिसविस्तरम् ॥ भविष्यतितदाग्रंथोमहान्सज्जनसौख्यदः ॥ १५ ॥

भा॰टी॰ - चर्मकी आंख करके देखतेहै कैसेजीवहै मोहरूप अग्निकी ज्वालासेंजलेजातेहै. बाहेर सृष्टीके प्रभावको विस्तार जोमैं वर्णन करूं तो सज्जन जीवोंकोसुख देनेवाला ग्रंथ बहुत बडाहोजावे. १५

श्लो॰ ग्रंथमहतिजातेवै नदोषोऽर्णवदृश्यते ॥ तथापि ममसामर्थ्यंसूक्ष्मस्यनास्तिवर्णने ॥ १६ ॥

भा॰टी॰ - ग्रंथ बडा होनेमे कुछ दोष अणुमात्र भी नही है बडा आनं द है॰ परंतु मै वृद्ध होगया विस्तार वर्णन करणेकी मेरी सामर्थ्य नहीं

श्लो॰ श्रृण्विदानीमतोविप्रचरित्रंशूरवीरयोः॥ राम रावणयोःसम्यङ्मुमुक्षूणांसदाप्रियम्॥१७॥

भा॰टी॰ - हे विप्र इस कारणसे अब रामरावण दोनो सूरबीरके चरित्र को सुनोके साच रित्र है मोक्ष जानेवाले जीवोंको सदा प्यारा लगेहै

श्लो॰ पुरुषेच्छाप्रसूतस्तुशरीरःसर्वदेहिनाम्॥ शक्त्या नुमानितंसत्यमसत्यमचलञ्चलम्॥१८॥

भा॰टी॰ - सब जीवोंके वास करनेवास्ते वह जो पहिले अणुमात्र ते ज अपनी इच्छासें स्त्रीपुरुष भया॰ उसकी इच्छासें यह देहरूप ह वेली बनीहै॰ कैसी शरीरहै झूठी स्थिर नही है॰ परंतु स्त्री जोपेस्तर भई सोई मायाहै॰ तिसकरिके साथ हुवाजो पुरुष तिसका अंशजो जीव सो सत्य मानताहै अचल कीयह मेरी देह रूपी हवेली कभीन ष्ट नही होगा ॥१८॥

श्लोक॰ पुरुषप्रकृतिसंयोगात्तर्कोभूच्चभवांकुरः॥ स पुलस्त्यइतिख्यातोवितर्कश्चतदुद्भवः॥१९॥

भा॰टी॰ - पहले अपनी इच्छासे हुवे जो पुरुष, प्रकृति उन दोनोके सं जोगजो बीर्यहै तिस वीर्यमें संसारकों उत्पन्न करनेवास्ते तर्कनाम अंकुर भया तर्क उस्कू कहते हैं कि एक मिनिटमें इतना बिचार करे॰ कि जिसकी गिनती शेष शारदा भी नही कर शके॰ संसारके पहिले॰ भया॰ उसवास्ते तर्क कुं पुलस्त्य नाम भया॰ और पुलस्त्यके वितर्कनाम पुत्र भया वितर्क किसकूं कहते है॰ यह काम होवेगा कि नही होवेगा १९

श्लो॰ समरीचिर्मुनिःप्रोक्तश्चोद्वेगस्तस्यसंभवः॥ स॰ विश्रवास्समाख्यातोदुर्मतिस्तस्यगेहिनी॥२०॥

भा॰टी॰ -वितर्क मरीच मुनि है तिस मरीच मुनिके उद्वेग नाम पुत्र-भया॰ उद्वेगको क्या अर्थ है एकक्षणमें जीव अनेक चीजमे जाय लगे स्थिर न रहे उस्कों उद्वेग कहते हैं॰ उद्वेगनाम विश्रवामुनि हैं॰ दुर्मति कहे खोटे कर्मकी जो इच्छा करना सो विश्रवा मुनिकी स्त्री है २०

श्लो॰ साकैकसी द्वितीयातु दीनावै पतिरंजिनी॥ दीनायास्तनयोजातः कुबेरो धैर्य संज्ञितः॥२१॥

भा॰टी॰ - दुर्मतिको कैकसीनाम है दूसरी स्त्री विश्रवाकी दीनमति है दीनकहे गरीब मति है॰ यह पति कों सुख देनेवाली है॰ दीनमति जो-विश्रवाकी स्त्रीं है तिसके धीरजनाम पुत्र जन्म्यो सो कुवेर है ॥२१॥

श्लोक॰ विमानन्तस्यपुष्पाख्यमविकम्पनमेवच॥ बभूवुर्दुर्मतेः पुत्रास्त्रयश्चान्ये सहस्रशः॥२२॥

भा॰टी॰ अनेकदुःखपडे परंतु अपने धर्मको नहीछोडे ऐसी निश्चय सोपुष्पकविमान है॰ और दुर्मतिजो विश्रवाकी स्त्री तिसके तीनपुत्र-भये॰ औरतो दुष्टराक्षस अनेक हैं

श्लो॰ मनोतिप्रबलोजज्ञेसरावणइतिस्मृतः॥ परोपतापनंजारचौर्य्यमानरवोसमम्॥२३॥

भा॰टी॰ - प्रथम तो मन जन्म्या॰ सो बडा बलवान प्रतापी रावण भया॰ दूसरेजीवोंकू त्रास देना १ भगवानकी प्रीत छोडके आन काजमे प्रीत करना २ ईश्वरके भजनमें भंगकरना ३ मानकूं बढाना॰४ जीवमे भेद देखना॰५ ॥२३॥

श्लो॰ पानम्वैरमविश्वासंचपलंसम्भ्रमंसदा॥ एतानि दशमूर्द्धानिमनसोरावणस्यवै॥२४॥

भा॰टी॰ - खोटे काजमे सुखदेखना सोई मदिरापान ६ सबजीवोंसें

वैरकरना ७ किसीजीवको विश्वास नहीरारवना॰८ सुंदर काजदे
खके भागना ९ सबजीवकों अनादर करना १० येदस मस्तक म॰
नरूपी रावणकेहै ॥२४॥

श्लो॰ दुःखत्यागस्सुखस्येच्छावियोगमातुरंतथा॥
सदाक्लेशंसदातुष्टिःप्रमादोऽभयमेवच॥२५॥

भा॰टी॰ - दुःखकोत्याग १ सुखहोनेकी इच्छा २ जीवोसें वियोगमा
नना॰३ विनाविचार काजकरना ४ दुःखमें क्लेश, सुखमेभीक्ले॰
शपाना ५ असंतोष ६ प्रमाद ७ ईश्वरकों डर नानही ८

श्लो॰ निंदापैशून्यमातंडंवितंडंभालमेवच।ग्लानि
हानिमहामोहप्रमादंकौतुकंरतिः॥उन्नताबाह
वश्चैमेविंशाःप्रोक्तामुनीश्वरैः॥ २६॥

भा॰टी॰ - निंदाकरना ८ चुगली करना १० बेदसें रहित कर्म करना
११ आपकीइच्छासे रहना दूसरेका उपदेस माननानहीं १२ स॰
दाग्लानि १३ सदाहानि १४ सदाबुरेकाममें प्रीति १५ प्रमत्तर
हना १६ तमासामें प्रेम १७ स्त्रियोसें प्रेम १८ किसीसे नम्रनही
रहना १९ सबजीवोंमे आपकूं बडामानना २० हेमुनिजी यह म
नरूपीरावणका बीस भुजाहै ॥२६॥

श्लो॰ दुःसंगस्तुद्वितीयोभूत्सकुंभश्रोत्रउच्यते॥
त्रास स्तृतीयः संजातः प्रोक्तश्च सविभीषणः २७

भा॰टी॰ - खोटेकर्मकी संगतकरना सोई कैकसीको दूसरापुत्र॰
उसकानाम कुंभकर्ण॰ बुरे कर्म कूं देखके बहुत डरना सो तीसरा
पुत्र उसकानाम बिभीषणहै॥ २७॥

श्लो॰ बभूवदुर्मतेः कन्यादुःसंगेच्छातिक्रूरिणी॥सा
वैसूर्पणखाप्रोक्तादुष्टकार्याःखरादयः॥२८॥

भा॰टी॰ - दुर्मतिनाम कैकसी जिसके लडकी भई सो खोटी संग॰ न कर्मोंकी इच्छा उसका नाम शूर्पनखा है॰ तीन लोकमें जितने बुरे काम हैं चोरी, ज्ञारी, जुवारी, चुगली और जहर देना ये सब खरादिक राक्षस हैं ॥ २८ ॥

श्लो॰ मनसस्तनयोजातोदुश्चेष्टितइतीरितः ॥ समेघनादोविख्यातोमेघवद्गर्जतेसदा ॥ २९ ॥

भा॰टी॰ - बुरे काज में प्रेम करना सोई मनरूपी रावणको पुत्र मेघनाद नाम है॰ जैसे आकासमे मेघ गर्जते हैं तैसा यह गर्जता है॰ २९

श्लोक॰ दुष्टकर्मरुचिःख्याताराणस्यप्रियाशुभा ॥ सैवमंदोदरीचैवचैनाद्दृश्यस्त्वनेकशः ॥ दुष्टकार्येमदाप्रीत्यासंस्थितिर्वैपणाकुला ॥ ३० ॥

भा॰टी॰ - बुरे काममें प्रीति सोई मनरूप रावणकी स्त्री है, उसका नाम मंदोदरी है॰ और जो बुरे काम अनेक प्रकारके उत्तम मध्यम निकिष्ट इन कर्मोंकी अनेक प्रकारकी प्रीति सोई रावणकी मंदोदरी सरीके बहुत स्त्री हैं दुष्टकार्यमें प्रीति करके हठ ने

श्लोक॰ सालंकातत्सुखंहेमतद्धर्षोवारिधिस्मृतः ॥ हर्षतृष्णाचपरिखादुरानन्दोविधिस्स्मृतः ॥ ३१ ॥

भा॰टी॰ - सोई लंकापुरी है जिस लंकामें बसकर सुख मानना के तीन लोकमें कोई सुख है नहीं सोई सोना है॰ उसी सोनेसें लंका जडी है तिसो नके सुख में हर्ष मानना सोई समुद्र है॰ खोटे काजमे वास करनी सो लंकाको सुख॰ सोनेके हर्षकी तृष्णा करना सोई लंकाकी चारों तरफ खाई है और बुरे काजोंमें आनंद मानना सोई ब्रह्मा है ॥ ३१ ॥

श्लो॰ नत्सेवनंतपःप्रोक्तंवरंक्रूरनिमेवनम् ॥ मदमानरूपंचयत्प्रीतंराक्षसैःसदा ॥ ३२ ॥

भा॰टी॰ - उसी बुरे कर्मके आनंदको सेवन करना सोई रावणकी

तपस्याहै खोटेकर्ममें नित्यप्रेमराखना और कभी हम मरेंगे नही· ऐसा मानना सोई बरदान रावणने ब्रह्मासें लिया· अज्ञानहै सोई मदिराको रसहै जिसकूं राक्षस लोक सदापीतेहैं· ॥३२॥

श्लो० विशेषतश्च मनसाप्रपीतंरावणेनच॥ शरीरं सर्वजीवानामिदंचैवचराचरम्॥३३॥

भा०टी· -विशेष करिके उसमदकों मनरूपरावण पीताहै सब-जीवोंकी यहशरीर जोहै चल देह तथा अचल देह ॥३३॥

श्लो० त्रिलोकमितिविख्यातंपीडितंतेनराक्षसा॥ अनाचाररथेस्थित्वातद्धर्षवाजिसंयुते॥३४॥

भा०टी० -सोई तीनलोकहै तिसकों मनरूपरावण बहुत पीडादेताभया· आचारोंसेंहीनकर्म सोई रथहै तिस रथमें बैठके उसी· रथकूं देखके बहुत खुशी होना सोई अनेक घोडेहै॥३४॥

श्लो० दुराशासनदुश्चित्तदुरंजन दुरापनम्॥एतै श्चक्रैर्बृतेवीरोगर्दभैश्चकुकर्मभिः॥३५॥

भा०टी· -सबजीवोंकों दुष्टकर्म शिखाना १ रातदिन दुष्टकर्ममें चित्त लगाय राखना २ कोई कोई बुरे कर्मको देखने वास्ते ज्ञानके अंधे होजातेहैं उनजीवोंको दुष्टकाजके सुख सुनायके उसी· सुखको अंजन उनकी आंखोंमें लगाना ३ हमेश बुरेकाज प्राप्ति होनेकी उपाय करना ४ येच्यार पहियाहै इनचारों पहियां करके रथ युक्तहै· बुराकर्म करना सोई खच्चरहै तिन्हों करके युक्तहै॥३५

श्लो० कुकर्मणीच्छाशक्तिश्चमुखानिदशचेन्द्रियाः आमिषंदुष्टकार्याढ्यं रक्तंचरागवर्द्धनम्॥३६॥

भा·टी· अनेक बुरे कर्मकी इच्छा सोई रावणकी सांगहै· दशइं-द्रियसोई रावणके दशमुखहै बुरेकर्मको खजानाभराहै सोईमां

सहै उस खजानेमें स्नेह बढाना सोई रक्तहै·॥३६॥

श्लो० मोक्षस्पृहोरावणस्यमनसोमुनिसत्तम ॥
सवेशिवइतिख्यातःसेवनंतद्विचिन्तनम्॥३७॥

भा·टी· - हे मुनिजी, मनरूपरावणको मोक्षहोनेकी इच्छारहती है परंतु उपाय नही करता सोई शिवहै· मोक्षकी चिंता करनाकि मोक्ष अच्छी वस्तुहै सोई शिवको पूजनहै॥३७॥

श्लो० दुर्बुद्धिःसारथिर्ज्ञेयः कुविचारोवितोत्रिकम्॥
हर्षवृद्धिर्वाजिवेगोमदमप्रंरजस्मृतम्॥३८॥

भा·टी· - रावणकी दुष्टबुद्धि सोई रावणके रथको सारथीहै· खोटा बिचार करना सोई घोडोंको हांकनेवाला चाबुक है· दुष्टकर्ममें हर्षकी वृद्धि करना सोई घोडोंको दौडानाहै· औरमदपीके मस्तरहना सोई धूलिहै ॥३८॥

श्लो· दुराचारमहामोहोरथस्यकूबरंमुने॥ तन्मो
हप्रीतिजबनंरश्मिबद्धंस्कदुश्छिदम्॥ भ्रमणंदु
ष्टकार्येषुरथस्यागमनंमुने॥३९॥

भा·टी· - बुरेकर्मके आचारमेंबडी मोह कर्ना सोई रथमें बैठनेकी जगाहै· उसीबडीमोहमें प्रीति उत्पन्न कर्ना, अनेक दुःखपरे तो भी उस्कूं छोडनानहीं सोई रस्सीहै· तिन रस्सियोंसें रथ बंधीहै उस रथकी ग्रंथिको काटना चाहै तो बडे कष्टसें करेगा हेमुनिजी, आठपहरचौसठघडी बुरेकर्ममें फिरना सोईरथकीदौडहै॥३९

श्लो· मनः प्रमाथीप्रबलोदशाननोविमर्दयामाससु
कर्मतत्परम्॥ चराचरंविश्वमिदंसहोदरैःसुतैःप्रपौ
त्रैःसहराक्षसैर्युतः॥४०॥

भाषाटीका- पुत्रपौत्रभाई राक्षसों करिके संयुक्त ऐसाजोराव

ए सो स्नान संध्या देवपूजन कथाश्रवण श्रौर इसी प्रकारके अनेक॰ काजोंमें प्रवीण जीवोंको नाश करताभया॰॥

इतिश्रीवेदान्तरामायणे बालकांडे पं॰ शिवसहायविरचिते मनोरावणविभूत्युत्कर्षे पंचमो मोक्षोपानः॥५

---

श्लोकः वरतन्तुरुवाच कामः क्रोधश्चलोभश्चमात्सर्यवंचनौमुने॥ तिरस्कारोसतांचैवनैष्ठुर्यंस्करच कर्मणि॥१॥

भा॰टी॰ - वरतंतुमुनि फिरबोले हेसंवर्तमुनिजी काम, क्रोध, लोभ, दूसरेको सुख देखके दुःखी होना कपट सज्जनजीवोंका अनादर सुंदर कामोंमें चुस्लाई॥१॥

श्लो॰ एतैः पुत्रैर्युतोराजापीडयामाससन्ततम्॥ भुवनत्रयसंसुक्तं वेदमार्गंमुहुर्मुहुः॥२॥

भा॰टी॰ - येसब आदिलेके और अनेक प्रकारके दुष्टकर्म सो रावणके पुत्रहैं इनपुत्रोंकरिके युक्त रावण नित्यप्रति तीनलोककूं पीडा देता भया और वेदमार्गकों तो विशेषकरके पीडादेताभया॥२॥

श्लो॰ कामादीनांसुखप्राप्तिःसातेषांप्रमदामुने॥ पुत्रपौत्राः प्रपौत्राश्च कामादीनान्त्वनेकशः॥३॥

भा॰टी॰ - हे मुनिजी काम आदि कर्मोंके सुखमें प्रीति सोई रावणके पुत्रोंकी स्त्रीहै और काम आदि रावणके पुत्रोंके पुत्र पौत्र प्रपौत्र गिनती करवेजोग नहीहै॥३॥

श्लो॰ तेषांचैवर्णनेशक्तिःशेषस्यापिसुदुस्तरा॥ कथं मयातेवर्ण्यन्ते मनोरावणजाः प्रजाः॥४॥

भा॰टी॰ - मनरूप रावणकेपुत्र पौत्रप्रपौत्रोंके पुत्र पुत्रोंकी तथा राक्षसों॰

की गिणती करनेमे शेषजीकीभी सामर्थ्य नहीहै॰ औार मन रावण सें उत्पन्न हुए परिवारोंकी गिनती मैंकैसा वर्णन करशकों ॥४॥

श्लो॰ मोहजांवारुणीम्पीत्वाराक्षसाः क्रोधजागणाः
दुश्चेष्टितास्त्रैर्धिमदाश्छिंधुः सद्धर्मजान्सुरान् ॥५॥

भा॰टी॰ - क्रोध आादि बडे बडे योद्धोंकरिके उत्पन्नहुयेजो राक्षस सो मोहसें उत्पन्न हुईजो दुष्टचेष्टारूप मदिरा सोपीके मस्त होके बुरे कर्मकी समूह सोई अस्त्र शस्त्रहे तिस अस्त्र॰शस्त्र करिके वेदमे लिखाजोधर्म उसधर्म करिकेउत्पन्न जो यज्ञ दान तप स्नान इन आादि जो गिनतीरहित जो देवताहै तिनकों काटते भये मारते भये ॥५॥

श्लोक॰ ज्ञानविज्ञानवैराग्यसन्यासामोक्षदायिनः॥
तएववेदाः कथितास्तेषांवार्ताश्चसंहिताः॥६॥

भा॰टी॰- ज्ञान विज्ञान वैराग्य सन्यास येचार वेदहै मोक्षके देने वाले हैं॰ इनचारोंकी कथा सोई संहिताहै॥६॥

श्लो॰ विनाशिताश्चतेसर्वे मनोरावणप्रेरितैः॥राक्ष
सैर्निर्दयैः क्रूरैः कामक्रोधादिसंभवैः॥ ७॥

भा॰टी॰ - इनवेदोंकी संहितोंकों राक्षसोने नाश करते भये॰ कैसे॰ राक्षसहे मन रावणकी आज्ञाकों पायेहे॰ सुकर्म कोनाश करनेवाले दयासें हीन राक्षस बडे दुष्टहे काम क्रोध आादि लेके जो खोटा कर्म तिसकरिके राक्षस जन्मेहे॰ ॥७॥

श्लो॰ ब्रह्मणःपरमेशस्यसच्चिदानन्दरूपिणः॥चिं
तकाभक्षिताःसर्वेसद्धर्मामोक्षदानृणाम् ॥८॥

भा॰टी॰ - परब्रह्मके ब्रह्मा विष्णु महेश के ईशके जीव देह आत्माके रूपके ऐसे भगवानके चिंताकरनेवाले जो सुंदर धर्म जैसे आचार

विचार श्रवण कीर्तन विश्वास इनकुं आदि लेके और वेदमें लिखे हुए धर्म जीवोंकूं मोक्ष देनेवाले हैं· से इन धर्मोंको राक्षसोनें खाए·८

श्लो॰ तएवब्राह्मणाः सर्वेगावश्चसत्क्रियास्मृताः॥ तास्चैवंभक्षितास्सर्वाराक्षसैरतिहिंसनैः॥ नित्या भ्यासोवेदयज्ञस्तेनातीव विनाशितः॥९॥

भा·टी· - येसब सुंदर धर्म ब्राह्मण हैं· इन धर्मोंकी क्रिया सोई गौ है इन ब्राह्मण गोवोंकोभी जीव मारनेमे बडे चतुर जो राक्षस सो खा य लेते भये भगवानको ध्यान नित्य करना सोई वेदकी यज्ञ है· उस यज्ञकोंभी राक्षसोंनें नाश करते भए ॥९॥

श्लो॰ पुराणपुरुषध्यानकीर्तन श्रवणादयः॥ स्म रणंस्मारणंचैव वन्दनंप्रीतिरंजनम्॥१०॥

भा·टी· - भगवानको ध्यान कीर्तन· कथाश्रवण·कर्नी· आप स्मरण· कर्नी दुसरेकूं स्मरण कराना· वंदना करना· भगवानकी पूजनमें प्री ति बढाना ॥१०॥

श्लो॰ कथनंकाथनञ्चैव पूजनंशिरसानतिः॥ वि नयंस्वामिभावश्च नमस्कारप्रदक्षिणे॥११॥

भा·टी· - ईश्वरको चरित्र आप कहणा· दूसरेसे कहाना· पूजन कर ना· शिरनवायके नमस्कार कर्ना· विनय करना· मैं ईश्वरका दास हूं ईश्वर मेरे स्वामी हैं ऐसा हृदयमे राखना वारंवार नमस्कार और प्रदक्षिणा करना ॥११॥

श्लो॰ साष्टांगंगद्गदावाणीरोमहर्षश्चसंततम्॥ पु राणनाशितास्चैतेब्रह्मसन्निधिकारकाः॥१२॥

भा·टी· - साष्टांग दंडवत कर्ना गद्गदवाणी बोलना· प्रीतसें रोम ख डे होजाना· ये अठारा पुराण हैं· जीवोंको ब्रह्मके साम्हे लेजाने वाले

है. इनकोंभी राक्षसोंनें नासकिया. ॥१२॥

श्लो॰ शरीरचेष्टासाभूमिर्महतीभारपीडिता॥ करुणागोः समाख्यातासाभूत्वाशरणम्विभोः॥ जगामैतैर्युतापृथ्वीकम्पिताचमुहुर्मुहुः॥१३॥

भा.टी. - सबजीवोंकी देहकी प्रकृती सोई भूमिहै. बहुत बडीहै. सो भूमि राक्षसोंके खोटा काजरूप भारकरिके दुःखी होगई. सोई भूमि. दयारूपजो गौहै तिसका रूप धारण करिके इन देवतोंकों साथ लेके भगवानके शरणकूंगई॥१३॥

श्लो॰ शरीरशुद्धयः सर्वाःस्नानादिमज्जनादयः॥ गंगादिनद्यस्ताः प्रोक्तास्ताभिः सार्द्धंचदुःखिता॥१४॥

भा.टी. - देहकीजो सब शुद्धताहै जैसे स्नान, मंजन, आचारयुक्त कर्म, इन आदि औरजो शुद्धताहै सोई गंगा आदि नदीहै. तिस्कों संगलेके॥१४॥

श्लोक. दुरानन्दोविधिश्चैवकुधर्मः सुरनायकः॥ तेन सार्द्धंस्कुरैश्चैवधर्मजैः सहसंगता॥१५॥

भा.टी. जैसे ब्रह्मा आपनी लडकीकेसंग भोग करनेकी इच्छाकिया. इस आदिजो खोटेकर्ममें आनंद मानना. सोई ब्रह्माहै. और जैसाइंद्र आपने सुख होनेवास्ते अधर्म नहीं देखता ऐसा अधर्म सोइंद्रहै. शास्त्रमें इन्द्रकों उत्तम संज्ञाहै. कर्मउस्को खराबहै इसवास्ते. अधर्मरूप इंद्र और सुंदरधर्मसें जन्मेजो देवता प्रथम बर्णनहै. इन सबकों संगलेके भगवानकी शरणकूं पृथ्वीगई॥१५॥

श्लो॰ जगामप्रार्थितुंविष्णुंपुरुषांशसमुद्भवम्॥ चेतनंसहसासुमंचेतिन्यानिजमायया॥१६॥

भा.टी. - भगवान्के अंशसें उत्पत्तिजो विष्णु तिनकी प्रार्थनाकरने.

वास्ते पृथ्वीगई॰ कैसे भगवानहै संसारके चेतन रूपहै॰ संसारकों चे॰
तन करानेवाली जो आपकी माया तिसकरिके सेवित सोतेहै॰ १६

श्लो॰ धमन्युद्वर्तिनी देहेप्राणिनामस्तियाशुभा।
तदास्येक्षीरसदृशांसिंधुवद्विस्तृतंह्रदः॥१७॥

भा॰ टी॰ - सबजीवोंकी देहमें एकनाडीहै॰ उस नाडीका उद्वर्तिनीना
महै॰ नाडी जीवकी रक्षाकरनेवालीहै॰ उस नाडीके मुखमें समुद्रस
रीके लंबा चौडा एककुंडहै उसकुंडको आकार दूध सरीकेहै १७

श्लो॰ शक्त्याविस्तारितास्तस्मिञ्छीलादिसद्गुणास्स
दा ॥ह्रदर्दीप्त्याविभासन्ते गुणाक्षीरइवप्रभो॥ग॰
त्वातत्रचतेसर्वेस्तुतिञ्चक्रुश्चव्याकुलाः॥१८॥

भा॰टी॰ - प्रभूकी सक्तीकरके विस्तार भएजो शील आदि लेकेसुं
दरगुण सोसबगुण उसकुंडके जोतिकरिके दूध सरीके शोभा
कुंडमे देरहेहै॰ उसदूध के समुद्रमे सोएजो भगवान तिसके पास
जायके सब भूमि आदि व्याकुलहोरहे और भगवानकी स्तुति
करते भए॰ ॥१८॥

श्लो॰ ब्रह्माउवाच तुभ्यंनमोभगवतेकरुणाक॰
रायसद्धर्मभूमिद्विजधेनुमखावनाय।स्वच्छा
यस्वच्छनिलयायनिराश्रयाय भक्तप्रियाय भवदुः
खविभंजनाय॥ १९॥

भा॰ टी॰ - ब्रह्मास्तुतिकरतेभए॰ हेभगवन् ऐश्वर्यरूप आपकों
मैंनमस्कार करताहूं॰ जीवोंके ऊपर दया करनेवाले आप तिनकूं
मैंनमस्कार करताहूं सुंदर धर्म भूमि ब्राह्मण गौ यज्ञ इनसबकी
रक्षाकरनेवाले तिनकूंमैंनम॰ शुद्ध रूप आपकों मैंनम॰ शुद्ध है
स्थान आपको ऐसे रूपकूं मैं नमस्कारक॰ आश्रयसें हीन जोआ

प तिनकों मैंनम॰ भक्त आपके प्रियहैं ऐसे स्वरूपकूं मैंनमस्कार॰ संसारके दुःख कूं नाश करनेवाले आपकूं मैं नमस्कार करताहूं १९

श्लो॰ संसारतापशमनायमनोहराय योगींद्रशे षमुनिमानसहंसकाय॥ धर्मप्रियायधरणीव्रत धारणायदेवाधिदेवपतयेचनमस्करोमि ॥२०॥

भा॰टी॰- संसारके तापकों नाशकरनेवाले, मनकों प्रसन्न करनेवाले, बडेयोगीजन शेष मुनि इनसब को मन सोई मानस सरोवर है, तिसमैं हंसरूप आप वास करतेहो औरं धर्मके प्यारे, क्षमा रूप, देवरूप, और देवतोंके पतिरूप ऐसेजो आप परमात्माउन कूंमैं नमस्कार करताहूं ॥२०॥

श्लो॰ दीनप्रियायशरणागतपालनायप्रोत्फुल्लपं कजमुखायनिरंजनाय॥ श्रीमन्महापुरुषतेजस चेष्टितायमायानुवादरहितायनमोनमस्ते ॥२१॥

भा॰टी॰ - दीनआपकूं प्रियहैं, शरणागतके पालना करनेवाले कमलके पुष्पसरीके फुल्लायमान आपको मुख बडेशोभित॰ ऐसेजो ब्रह्म तिसके तेजकरिके आप प्रकाशितहो, मायाके विवादसें रहित ऐसेजो आप तिनकूं मैं नमस्कार करताहूं ॥२१॥

श्लो॰ इतिस्तुतोजगन्नाथोदेवैर्दुःखविमूर्छितैः॥ उवाचविहसन्देवोविषादंसान्त्वयन्निव॥२२॥

भा॰टी॰ - दुःखकरिके मूर्छाकों प्राप्तिभये जो देवता तिनोकरिके स्तुति कियेजो जगतके नाथ सो तिनदेवतोंके दुःखकोंसाति॰ करनैवास्ते हसके बोलतेभये ॥२२॥

श्लो॰ ज्ञातंमया सुरगणाःसुनिपीडितम्वे सर्वंच राचरमिदंभुवनत्रयम्भो॥सम्प्रेरितेश्चमनसाख-

लुरावणेनतेनापिराक्षसगणैःसततम्मुहुर्वै॥२३
भा·टी· –चेतनपुरुषबोले हेदेवतालोगो यहतीनलोकचराचर को मनरूप रावण तथा रावणकीआज्ञाकुं पायेजो राक्षस येस ब बहुत पीडाकरते भए येसब हमकूं मालूमहै ॥२३॥
श्लो० सर्वामरत्वयादत्तंनरवानरवर्जितम्॥अतो हंनररूपस्त्क भविष्यामिनसंशयः॥२४॥
भा·टी· –हेब्रह्मा तुमने रावणको सबसे अमरकियाकितू किसी केमारे नहीं मरेगा· परंतु कपीजो किष्किंधाकांडमें वर्णन होवैंगें और मानुषजो उत्तरकांडमें वर्णन होवैंगे· इनदोनोंसे तेरी मृत्यु होगा· इसवास्ते हम मानुष अवतार धरेगें·इसमेंसंशयनहीं २४
श्लो० चतुर्भिर्भ्रातृभिः सार्द्धदेव्यासहसुरोत्तमाः पुत्रोदशरथस्यैवसाकेताधिप तेर्ध्रुवम्॥२५॥
भा·टी· – हेदेवतालोगों हम च्यारभ्राता होकरके शक्तिसहित· अयोध्याके राजा दशरथके पुत्र निश्चयकरकें होवैंगे ॥२५॥
श्लो० यूयंसर्वेभविष्यध्वंवानराःपृथिवीतले॥ना शयिष्यामशीघ्रम्वैमनोरावण राक्षसम्॥२६॥
भा·टी· – और तुमसब देवता पृथ्वीमें जायके वानररूप होकर जन्मो· तुमकूंसंगलेके हम मनरूप रावणकोजलदी नाशकरेंगे २६
श्लो० इत्युक्त्वान्तर्दधेविष्णुर्ब्रह्मास्चास्यक्षितिंतया ॥देवानाज्ञाप्यप्रययोस्वालयंकपिजन्मनि॥२७॥
भा· टी· – ऐसा कहिके चेतनरूप भगवान् अंतर्ध्यान होगये· और ब्रह्मा भूमिसें कहेकि अब डरोमति· थोरेही दिनमें रावण· कोनास होगा· और देवतोंकूं ब्रह्माबोलेकि तुम सब पृथ्वीमें· वानररूप धरो ऐसासमुझायके ब्रह्मा अपने स्थानकूंगये ॥२७॥

इतिश्रीवेदान्तरामायणेबालकांडे पं॰शिवसहाय विरचितेषष्ठेमोक्षसोपानः ॥ ६ ॥

श्लोक॰ वरतन्तुरुवाच अयोध्यासुमतिः प्रोक्तासरयूःसात्सुवासना ॥ निश्चलत्त्वतटाप्रोक्ता निर्मानजलपूरिता ॥ १ ॥

भा॰टी॰ – वरतन्तुमुनिबोले हेसंवर्त मुनि सुनो जीवोंकी सुंदर॰ मतिजोहैसो अयोध्या पुरीहै और जीवोंकी सुंदर वासना सो सरयूनदीहै॰ सुंदर वासना कभी अपनेस्वभावेसें चलायमान नहीहोती सोई शरयूके दोनटहै॰ और सुंदर वासनाके अभिमान नहीहैसोई जलहै तिसजलकरिके सदा भरीरहतीहै ॥ १ ॥

श्लो॰ शक्तिस्वभावजःपुत्रोवसिष्ठइतिकथ्यते ॥ आत्मप्रकाशःसविताविचाराद्याश्चतत्सुताः ॥ २ ॥

भा॰टी॰ – मायाको स्वभाव सो वसिष्ठ मुनिहै॰ आत्माको तेजसोसूर्यहै विचारआदि सुंदर स्वभाव सो सूर्य केपुत्रहै ॥ २ ॥

श्लो॰ विचारतनयोब्रह्मन्नात्मज्ञानंसुनिर्मलम् ॥ सवैदशरथःप्रोक्त स्तस्यच्छायातुकौशला ॥ ३ ॥

भा॰टी॰ – विचारको पुत्र आत्माको ज्ञानहै कैसा आत्मज्ञानहै मलसें रहितहै सो दशरथहै तिस आत्मज्ञानकी छाया कौशल्याहै ३

श्लो॰ श्रवणंमननंमौनमभ्यासस्तद्विचिन्तनम् ॥ चेष्टनंसत्यतानित्यमविचाल्याप्रकंपनो ॥ एतेदशरथाः प्रोक्ताआत्मज्ञानस्यभूपतेः ॥ ४ ॥

भा॰टी॰ – कथाश्रवण १ कथासुनके माननाकी जो शास्त्रमेलिखाहै सो सत्यहै॰ २ खोटे कर्ममे बोलनानही ३ भगवानके रूप जानने

वास्ते निस्सउपाय करना. ४ रूपकी चिंतना कर्नी ५ ईश्वरके ध्यान मे आलस्य नही करना ६ ईश्वरके रूपकों सत्य मानना. ७ औरस ब देहके सुख झूठा मानना ८ किसी दुष्टकोसंग दैवयोगसें मिल जावे तो ईश्वरके ध्यानकों छोडके दूसरेको ध्याननहीकर्ना ९ ईश्वर. के भजनमें दुख सुख होवेसो सहिलेना. १० आत्मज्ञानजो दशर थ तिसकेये दशरथहे ॥ ४॥

श्लो० आत्मनस्स्वच्छप्रकृतिः सासुमित्रेतिकथ्यते ॥
किंचिद्भक्तोचयाप्रीतिः कैकयीसानिगद्यते ॥ भूरिशो
रुचयः सत्कृताश्चान्यान्नृपवल्लभाः ॥ ५॥

भा.टी. - आत्माकी सुंदरि प्रकृति सोई सुमित्राहे. मायामें थो रीप्रीति सो केकईहै सज्जनोमें बहुत रुचि सो दशरथकी और. स्त्रियोंहै ॥ ५॥

श्लो० आत्मज्ञानंचिरंकालंनलेभे पुत्रजंसुखं ॥ दुः
खमापतदावीरोविश्वार्त्थमितिभार्य्यया ॥ ६॥

भा.टी. - आत्मज्ञानजो राजा दशरथ सो बहुतदिन बीतगये पुत्र. को सुखनहीभया तो संसारके सुख होने वास्ते स्त्रीसहित दुःख. कों प्राप्ति भए ॥ ६॥

श्लोक. स्वभावगुरुणापश्चाद्वसिष्ठेनैवबोधितः ॥ ऋ
ष्यश्रृंगंसमाहूयचेतनांशंविचिंतनम् ॥ ७॥

भा.टी. - कुछ दिन पीछे शक्तिके स्वभावरूपजो वसिष्ठ सो दशरथ के गुरूहै. सो बोले कि हे राजा श्रृंगीऋषि कों बुलायके यज्ञ करा. वो तो तुमारे पुत्र होवेंगे ऐसी गुरुकी आज्ञा पायके चेतनकोअं शजोचिंतन सोश्रृंगीऋषिहै तिनकों बुलायके ॥ ७॥

श्लो० ध्यानयज्ञंचकाराशुतस्मेजोहुतभुङ्मुने ॥ नृप

स्यत्हृदयंकुंडमर्चिस्तत्द्रुचिरेवच ॥ ८॥
भा॰टी॰ - जलदी ईश्वरको ध्यानरूप यज्ञ करते भए, हे मुनिजी ध्यानकोतेजसो अग्नि भयाहै आत्मज्ञान दशरथकी हृदय सो कुंड भयाहै॰ ध्यानरूप यज्ञमें राजाकी रुचि सो अग्निकी ज्वाला भईहै॰
श्लो॰ प्रेमकाष्ठंत्वरोमंत्राहोमद्रव्यंचनिश्चयम् ॥ तेजसापावकेनापिदत्तासद्भावनानृपे ॥ ९॥
भा॰टी॰ - आत्मज्ञान राजाको ध्यान यज्ञको प्रेम सो काष्ठहै ध्यानयज्ञ करनेमें जलदी करना सो मंत्रहै दशरथको ध्यानयज्ञमें निश्चय सो होमकी सामग्रीहै॰ ध्यानको तेजरूप अग्नि सो दशरथको साधुवोंमें सुंदर भक्तिरूप हविष्य देतेभये ॥ ९॥
श्लो॰ तस्याः संप्राशनञ्चक्रुर्ग्रहणंराजवल्लभाः ॥ तासांबभूवगर्भोवैभावनाप्रीतिकारणम् ॥ १०॥
भा॰टी॰ - तिस भक्तिरूप हविष्यको राजाकी तीनो स्त्रियों राजासेंग्रहण करती भई॰ सो हविष्यको खाती भई॰ तिनोस्त्रियोंके साधुजनोंकी भक्तिमें प्रेमहै सोई गर्भरहता भया ॥ १०॥
श्लो॰ चैत्रन्नृपस्सुखंशुक्लंसमुल्लासोनिरंतरम् ॥ रतिःप्रीतिर्गुरोःसेवासन्नतिर्विमतिः क्षमा ॥ ११॥
भा॰टी॰ - राणियोंके गर्भ देखके दशरथको सुख भया सो सुखचैत्रमासहै॰ रोजगर्भ देखके राजा खुश भयासो शुक्लपक्षहै॰ धर्ममें राजाकी मति बढिगई॰ गुरु देवकी सेवा बहुत करने लगे॰ सब जीवोंसें राजकोमद छोडदिया॰ सब जीवोंको एक सम जानना क्षमा कर्ना॰ ॥ ११॥
श्लो॰ शन्हृतास्वच्छताकीर्तिर्नवमीमाःप्रकीर्तिताः मध्यान्हसमभावंचतास्मिन्जातोरमापतिः ॥ १२॥

भा०टी० - ईश्वरमें निःकपट १ ईश्वरमें प्रेम ईश्वरकेनामकी कीर्त्ति कर्नी येसवनवमी तिथिहै० संसारमें किसीकी निंदा स्तुति नहीकर्नी परंतु बुरे कर्मको छोडना सुंदर कर्म कों ग्रहणकर्नी ऐसे स्वभावको दुपहर कहतेहै तिस दुपहरमें भगवान् दशरथके गृहमें जन्मते भए ॥ १२॥

श्लो० कौसल्यायांजगत्स्वामीजगदानंददायकः॥
विवेकश्चेतनांशश्चपापवारिधिकुम्भजः॥१३॥

भा०टी० - आत्मज्ञान दशरथकी छाया कौसल्यामे जगतके स्वामी जगतकेआनंद देनेवाले पापरूप समुद्रकों शोषण कर्नेमे अगस्त्यरूप चेतनको अंस ऐसेविवेक नाम पुत्रहोतेभये॥१३॥

श्लो० अर्थधर्मादिहस्ताद्यैःसत्यादिमुकुटादिभिः॥युतं रूपंदर्शयित्वापश्चाद्बालोबभूवह॥ कैकय्यांचविवेकस्यचार्द्धभागः प्रजग्मिवान्॥ अर्द्धांशेनचद्वौजातौसुमित्रातनयौमुने॥१४॥

भा०टी० अर्थधर्मआदिचार भुजाहै, सत्यआदिधर्ममुकुटहै इन्हसे युक्तरूप माता पिताको दिखायके बालक होते भये - विवेकके अर्द्धांश केकयी - शक्तिमेथोरीप्रीतहै - तिस्मेजन्मता भया - औरविवेकके अर्द्धांश को अर्द्धांश करिके आत्मज्ञानकी सुंदरप्रकृतिजो सुमित्रा तिसके दो पुत्र भये० ॥१४॥

श्लो० योरोम्णिरोम्णिरमतेरमणेनैवमोक्षदः॥ सरामइतिविख्यातोविवेकोमोक्षदायकः॥१५॥

भा०टी० - सबजीवोंके रोम रोममें जो रमितहै और रोम रोममें रमणकरिके सबजीवोंको मोक्ष देनेवाला सोई रामहै० उसरामको विवेक कहतेहै वो विवेक जीवोंकों मोक्ष देने बालाहै ॥१५॥

श्लो० निर्मोहोभरतेजीवान्तस्माद्भरतसञ्ज्ञितः॥

लक्ष्मणंवैस्वरूपस्ययेनविज्ञायतेमुने॥१६॥

भा॰टी॰ हेमुनिजी, औरजो जीवोंका पोषणतो करे परंतु किसीजी वमें मोहनकरे उस्कूं निर्मोह कहतेहैं॰ सोई भरतहै॰ जिसकरिके॰ ईश्वरके स्वरूपको लक्षण मालूम पडे॥१६॥

श्लो॰ सलक्ष्मणइतिख्यातःसन्तोषोमोक्षनायकः॥ यःशत्रून्सततंहन्तिशत्रुघ्नस्तेनकथ्यते॥स्वदेहस्था निन्द्रियजान्सहनःसमतागुणः॥१७॥

भा॰टी॰--सो लक्ष्मणहैसोसंतोषहैसोईमोक्षका मित्रहै॰ इंद्रियोंकरी के देहमें रहनेवाले जो इंद्रियोंके रूपवरूप शत्रु उनकोजो नाशकरेति स्कानाम शत्रुघ्नहै॰ न किसीकूं स्नेही जाणना नकिसीकूं वैरीजान- ना ऐसाजो सहन स्वभाव तिस्कूं शत्रुघ्न संज्ञाहै॥१७॥

श्लो॰ हृद्युदासीनवृत्तिश्चविवेकक्रीडनम्मुने॥स्व रूपस्यसदाचिन्तासाश्वेतागारसंज्ञिका॥ नप्री॰ तिरंजनंशश्वमजिरंकथ्यतेमुने॥१८॥

भा॰टी॰--विवेक रामचंद्र आपनी हृदयमें नित्य ऐसा मानतेहैकि संसारमें नकोई मित्रहै नकोई वैरीहै ऐसा स्वभाव सोई रामजीके चारों भाइयोंका खेलना भयाहै॰ ब्रह्ममें मिलनेकी चिंता॰रामजीकों सदा रहतीहै सोई दशरथकी सफेद महलहै॰ ऐसी महलमें प्री॰ तसें स्नेह सोई महलकी चौकहै॥१८॥

श्लो॰ इन्द्रियाणांसदात्रासोधूलिराशिर्निगद्यते॥ निजानंदस्वरूपस्यचिंतकाःपुरवासिनः॥१९॥

भा॰टी॰--इंद्रियोंको नित्य विवेकरूप रामजी त्रास करतेहै सोईब हुतसी धूलिहै ऐसे महल चोक धूलमें चारों भाई रामचंद्रउदासीन रूप खेल खेलतेहैं॰ भगवानके सदा आनंदरूपके चिंताकरनेवाले

जो जीवहै सो अयोध्यावासीप्रजाहै ॥१९॥

श्लो० ज्ञानंखड्गंशराहर्षास्तूणञ्चापोशमौस्मृतौ॥
संस्काराश्चेन्द्रियाणाम्वैनिग्रहामुनिनाकृताः॥२०

भा॰टी॰ - ज्ञानजोहैसो रामकीखड्गहै सत्संगीजीवोंको देखके अनेकप्रकारको हर्षहोना सोई रामको अनेकप्रकारको बाणहै॰ समदृष्टी संसारकूं देखणा सोई तर्कसहै॰ रामने इंद्रियोंको जीतनासोई धनुषहै॰ रामजीने कभीइंद्रियोका विश्वास नहीकरते सोई वसिष्ठमुनि रामजीको मुंडण कर्णछेदन यज्ञोपवीत इनआदिलेके संस्कार करतेभए॥२०॥

श्लो० एवंक्रीडासमुत्साहेवर्द्धितेनृपमंदिरे॥ चित्तो गाधिसुतोधीरोप्याजगामक्षणादनु॥२१॥

भा॰टी॰ - दशरथके महलमें ऐसा आनंद खेल तमासा चारोंभाई बहुत करिरहेहै उसी समयमें चित्तरूपजो विश्वामित्रमुनि सो आते भये॰ बडेचतुरहैं एकक्षणमें॥२१॥

श्लो० पूजितोनृपवीरेणनोदितोवरयाचने॥यया चेचैवमेधावीतत्सुतौरामलक्ष्मणौ॥२२॥

भा॰टी॰ - राजोंमेंबीर दशरथने मुनिजीको पूजन करिके कहेकी॰ महाराज आपकूं चाहेसो मुस्से मांगो॰ तब चतुरविश्वामित्रमुनिबोलेकि हे राजन् तुम आपणे दोपुत्र रामलक्ष्मणकों हमेदेवो॥२२

श्लो० तमपक्वल्हदंज्ञात्वाराज्ञानेतीत्युदीरितः॥बोधितोगुरुणापश्चाद्दोराजासुहर्षितः॥२३॥

भा॰टी॰ - दशरथनें बिचारकियाकि चित्तरूप विश्वामित्र इनकोल्हदय ज्ञानसें पकीनहीहै कच्चीहै ऐसाविचारिके कहेकी मै पुत्रोंकों नही देऊंगा॰ परंतु पीछेसें गुरुवसिष्ठजो शक्तिके स्वभावहै सो दशरथकों

समुझायके सबबात कही तो राजा बडे हर्षसें रामलक्ष्मणकोविश्वा-
मित्रकों दिया ॥२३॥

श्लो० तावादायगतोधीरः शांतियज्ञमथाकरोत्
तृष्णागाद्यज्ञनाशायशीघ्रंसाताडकामुने ॥२४॥

भा०टी० –चतुर जो विश्वामित्रउन्होनेराम लक्ष्मणकूं लेके अपने आ
श्रमपर जायके मनरूपरावणको शांति होनेवास्ते शांतिरूप यज्ञ का
तेभए सोयज्ञनाशकरनेके वास्ते तृष्णा रूप ताडका आती भई २४

श्लो० हतासारामचन्द्रेणपतिताधरणीतले ॥ मोहा
हंकाररूपौद्वौराक्षसौमखनाशकौ ॥२५॥

भा०टी० –तिस्कों रामजीने मारकर पृथ्वीमें पटकदिया तब मोहरू
प सुबाहु अहंकार रूप मारीच ये दोनो आते भयेयज्ञनाशकरनेकूं २५

श्लो० मोहःसुबाहुर्निहतोरामेणपतितोभुवि ॥ क्षि
प्तोरामेणाभिमानःपतितःसागरान्तिके ॥२६॥

भा०टी० –मोहरूप सुबाहुकों रामजीने मार डाला तब वह भूमिमें
पडगया और अहंकाररूप मारीचकों बाणसें उठाकर समुद्र केसा
फेंकदिया ॥२६॥

श्लोक-सुखेनकृतवान्यज्ञंमुनिस्तद्गतमानसः ॥ राक्ष
सानांविनाशायसद्विद्यादत्तवान्मुनिः ॥२७॥

भा०टी० –विश्वामित्रनें रामजीमें चित्त लगायके सुखसें यज्ञ करते भये
और राक्षसोंके नाश करनेवास्ते विश्वामित्रनें रामजीकों सद्विद्याशि
खाते भये ॥२७॥

श्लो० गृहीतारामचंद्रेणताःसर्वारावणार्दने ॥ पंच-
ज्ञानेंद्रियाणांचधर्मःसो गौतमोमुनिः ॥२८॥

भा०टी० – मनरूप रावणकोनाशकरनेवास्ते रामजी सर्व विद्या शि

खते भये· पांच ज्ञानइंद्रियोका एकदरधर्म सो गौतम मुनिहै २८
श्लो॰ अहिल्यातद्रुचिःप्रोक्ताकुधर्मःएकनायकः
रमितातेनसानारीएकखजारसमुद्भवम्॥२९॥
भा·टी· – तिस पांचज्ञानेंद्रियोंके धर्ममे रुचि सोई अहिल्याहै·खो टाधर्म सो इन्द्रहै· पांचज्ञानेंद्रियोंके·धर्ममेंजीवोंकीरुचि खोटाध र्मे छुडायदिया सोईजारको एकवहै ॥२९॥
श्लो॰ तत्कर्मनाशनंविप्रशापोदुर्वासनंक्षितौ॥गं भीररजसापूतास्वकर्मविस्मृतिःशिला॥३०॥
भा·टी· – और खोटे कर्ममें अहिल्याकोसुकर्म मिलगया तथा देहकी चेष्टारूप भूमिपर सज्जनोनें निंदाकिया· ये दोनो गौतमकी नारि अहि ल्याको श्राप तथा अनुग्रह है· विवेकरामजी को गंभीरस्वभाव सो ईरामजीके पगकी धूलिहै· उस धूलि करिके अहिल्यापवित्रभई· और अहिल्या आपने कर्मकों भूलिगई सोईशिलाहै ॥३०॥
श्लो॰ शिलायाम्भिद्यमानायांपुनःप्राप्तास्वमालय जीवश्चमैथिलोज्ञेयःसदेहश्चविदेहवान्॥३१॥
भा·टी· – शिला रामजीके पगकी धूलि करिके फटगई सो अहिल्या की पांचज्ञानेंद्रियोंमें प्रेमरूप आपना घर तिस्कों गई· जीवजोहै सोजनकहै· कभीदेहमें स्नेह कर्ताहै कभीदेहमें स्नेह छोडदेताहै
श्लो॰ नृपस्यमोहिनीभार्यारूपचिन्ताकदापुरी॥ज नकस्यानुजोविप्रसदादुःखोनिगद्यते॥३२॥
भा·टी· – मायाकी दासीजो संसारकों मोहतीहै सोमोहनी रूपजनक की स्त्रीहै· जीवने कभीकभी भगवानकी चिंता करताहै सो जनक की नगरीहै· जीव रोज दुःखी रहताहै सो दुःख जनकरूप जीवको एककेतुनाम छोटभाई है ॥३२॥

श्लो॰ कन्ये द्वेतस्यसंजातेह्यानिर्ग्लानिश्चसत्तम॥
जनकस्यसुताजातारूपप्रीतिःसुशीतला॥३३॥

भा॰टी॰ - एक केतु के ह्यानिरूप तथा ग्लानिरूप ये दोलडकी भई॰ भगवानके रूपमें प्रीति बडी सीतल॰ ऐसी एक कन्या जनकके होतीभ

श्लो॰ द्वितीयाजानकीप्रोक्तारूपभक्तिश्चशाश्वती
स्वयंवरश्विचारश्चधनुरिष्टवियोजनम्॥३४॥

भा॰टी॰ - भगवानके रूपकी नित्यजो भक्ति सोजनकके दूसरीकन्या भई॰ उस्कानाम जानकी भया॰ जीव कभी कभी थोरा बिचार करताहै सोई स्वयंवरहै॰ जीवको इष्टदेव भगवान तिस्से जीवको वियोग॰ भया सोई स्वयंवरमें धनुषहै॥३४॥

श्लो॰ त्रोटनंज्ञापनंकिंचिद्रूपस्यजनकेनवै॥ सत्वरं
रामचन्द्रेणधनुषस्त्रोटनंकृतम्॥३५॥

भा॰टी॰ - जीवरूपजनक थोरा थोरा भगवानके रूपको जानताहै॰ सोई धनुषको तोडनाहै॰ सोजलदी रामजी धनुषकूं तोडते भये॰ ३५

श्लो॰ तद्रूपस्मरणंशीघ्रंभार्गवोप्याजगामह॥ स्व-
स्थानसंस्थितिज्ञानंधनुषारोपणंकृतम्॥३६॥

भा॰टी॰ - जीवको तथा भगवानको वियोग रूप धनुष टूटगयात व जीवने भगवानके रूपको स्मरण करता भया॰ सोई परशुराम मुनि आते भये भगवानको प्रेमरूप वैकुंठ तिसमे टिकने को जीवको॰ ज्ञान भया सोईपरशुरामके धनुषको रामने चढाये तव परशुराम॰ रामको दंडवत करिके चलेगये॰॥३६॥

श्लो॰ सत्कर्माद्यभिसंयुक्तःसेनाश्वरथहस्तिभिः॥
सुरवासनश्चतैःसार्द्धमाजगामनृपोत्तमः॥३७

भा॰टी॰ - और ज्ञान ध्यान जप तप आदि लेके सुंदर कर्म सोई राम

के घोडा फौज, गज, पालकी है॰ इन्होंको संग लेके आत्मज्ञान राजा दशरथ जनक पुरको बरात लेके आते भये॰ ॥३७॥

श्लो॰ वर्द्धितः सत्समाजश्च विवाहे सततं मुने ॥ जानक्या रघुवीरस्य चान्येषां भ्रातॄणां तदा ॥३८॥

भा॰टी॰ – सत्संगीजन इकट्ठे होके ईश्वरको भजन करने वास्ते एक सभा बनाये हैं॰ ये बडी जो सभा है सोई सत्संगी लोगोंकी सभा॰ राम जानकी तथा और तीनों भाइयोंका विवाह भया है ॥३८॥

श्लो॰ विदेहेन तदा दत्तं कन्योद्वाहे नृपाय वै ॥ रूपस्मरणविज्ञानमचलं वित्तसंचयम् ॥३९॥

भा॰टी॰ जीवरूप जनकने ईश्वरको स्मरण रूप ज्ञान दशरथकूं बताते भये॰ सोई लडकीयोंके विवाहमें दायज अचल धन, खजाना, भया है ॥३९॥

श्लो॰ विस्मृतं पुनरायातं च तत्प्रयाणं नृपस्य च ॥ पूर्वोक्ता पुत्रपत्नीश्च पुत्रान्वितं च भूरिशः ॥ पुरोक्तैर्मुनिभिः सार्द्धमाजगाम नृपोत्तमः ॥४०॥

भा॰टी॰ – आत्मज्ञानरूप दशरथको भगवानको स्मरण रूप ज्ञान किंचित् भूलगया॰ सो फिर प्राप्ति भया॰ सोई दशरथको फिर अयोध्या चलनेकी तयारी भई॰ पहिले कहे हुए जो पुत्र, पुत्रोंकी स्त्री तथा जनकको दिया जो भगवानको स्मरण रूप धन बहुत॰ तथा पहिले वर्णन भये जो मुनि इन सबकों संग लेके चलते भये ॥४०॥

श्लो॰ समादायागतो राजा स्वपुरीं क्रमतिन्ततः ॥ पुनरीदृक्समाजश्च भविष्यति कदाप्यहो ॥ इत्युक्तं ह्यो विदेहस्य बभूव मानसे सदा ॥४१॥

भा॰टी॰ – पहिले श्लोकमें वर्णन भये जो प्राणी तिन सबकों संगले

के स्रुमति नाम अयोध्याको प्राप्तिभये॰ बडी भाग्यहैकीकभी॰फि रऐसीसभा साधुवोंकी होवैगी ऐसा विचार करके जनक हर्षमें आनंदमाने सोई जानकी आदि कन्याके बिदामें जनककी विह्वलता भई॰ ॥४१॥

श्लो॰ यथापुरेदं परिपीडितंजगन्मनोदशास्येननिरंतरम्मुने॥ विवर्द्धितेदाशरथेनथासुखंकिञ्चित्समावापनृपात्मजोऽपिसः॥४२॥

भा॰टी॰ - हेमुनिजी मनरूप रावण पहिले जैसा यह संसारकों॰ पीडाकरता रहा॰सोई रामजी की थोडी वृद्धि भईसंते संसारकोंथोरा सुखकी वृद्धि होती भई॰ संसारकों किंचित् सुखी देखके रामजी भी थोरा सुखकूं प्राप्तिभये॰ रामजीनें विचार कियाकि थोरा सुख भया तो अब कुछदिनमें सब दुःखनाश होवैगा ॥४२॥

इतिश्रीशिवसहायबुधविरचिते वेदांतरामायणे बालकांडेसम्वर्तवरतन्तुसंवादे रामावतारकथनेसप्तमोमोक्षोपानः॥७॥

॥ ॥ समाप्तश्चायंबालकाण्डः श्रीरस्तु॥ ॥

## अथायोध्याकाण्डं

वरतन्तुरुवाच श्लो॰ इन्द्रियार्थान्समालोक्यविपरीतान्नृपोत्तमः॥ तच्छिक्षार्थंनृपोरामभभिषेकंसमारभेत्॥१॥

भा॰टी॰ - वरतंतु मुनिबोले हेसम्वर्त मुनि सुनो आत्मज्ञानरूप दशरथ राजा॰इंद्रियोके अर्थकों बहुत भ्रष्टदेखके तिन इंद्रियोंकों शिखाने वास्ते रामजीकों राज देनेको प्रारंभ करतेभये॥१॥

श्लो० भ्रातृत्रयाणांभगिनीदुर्बुद्धिर्मंथराव्हसा॥
शिक्षयामासकेकेयींकिंचिच्छक्तिप्रियान्तदा २

भा॰टी॰ - काम, क्रोध, लोभ, इन तीनो भाइयोंकी वहनजो दुर्बुद्धि सोई मंथरानाम केकयीकी दासीहै॰ सो मंथरा थोरीजोसक्तिकी प्रीतिरूप केकयीतिस्कूं शिखातीभई ॥२॥

श्लो० कलंकंतुतयाप्राप्तंसज्जनैर्दूरत्याजनम्॥रा
मस्यवनवासञ्चभरतस्याभिषेचनम्॥३॥

भा॰टी॰ - सज्जन लोगोनें दुर्बुद्धिरूप मंथराकों त्यागते भये॰ सोत्यागरूप कलंक मंथराकों प्राप्ति भया॰ रामजी कूं बनजाने वास्ते श्रौर भरत कूं राज देनेवास्ते ॥३॥

श्लो० याचयामासकेकेयीपूर्वदत्तवराहिसा॥नृपे
णद्वौवरौदत्तौभार्यायाः प्रीतिचेतसा॥वश्यमेकं
द्वितीयन्तुत्वयानित्यम्प्रबद्धितः॥४॥

भा॰टी॰ - दशरथनै कैकेयीकूं पहिले दोवर दान दियेथे॰ प्रसन्न होकर॰ एकवरतो तुमारी वश्य हमरहेंगे दूसरावर तुम करिके हम बंधेरहेंगे ॥४॥

श्लो० तस्मिन्न्यस्तौतयाकालेयाचितोसत्यभावतः ५

भा॰टी॰ -यह दोवरकों कैकेयीने दशरथके पास थाती रखदियाथा सत्य स्वभाव सोई थातीहै ॥५॥

श्लो० दुःस्वभावः शरीरस्यतदारण्यंनिगद्यते॥प
रतापादयोवृक्षाभूरितृष्णाद्योलताः॥६॥

भा॰टी॰ - देहको खोटा स्वभाव सोई बनहै॰ दूसरेजीवकों दुःख आदि अनेक कष्ट देनायेसब बनके वृक्षहै॰ बहुत तृष्णा करना सोई वेलहै ॥६॥

श्लो॰ उत्पातकारकाःसर्वेवनजा स्तच्चराःस्मृताः॥दुः
स्वभाववनस्येह विस्तारोयद्विवर्ण्यते॥७॥

भा॰टी॰ - उत्पात करनेवाले काम॰ सोई सब बनके भील भयेहे देहको खोटेस्वभावरूप बन तिसकों विस्तार जो वर्णन करें॥७॥

श्लो॰ तदायम्बहुभूमाच ग्रन्थोभवत्तिसज्जनाः॥ ईदृ
शंकाननंदत्तंरामायनृपभार्यया॥८॥

भा॰टी॰ - तबहे सज्जन मानुष्यों ग्रंथ बहुत बडा होजावेगा इस वास्ते वनको विस्तार मैनेनही बर्णन किया॰ दशरथकीप्यारी स्त्री कैकेयी ऐसा बन रामजीकूं देती भई॥८॥

श्लो॰ आज्ञानृपतिनादत्तास्वच्छवृत्तिःसुकोशला
॥विलापोनृपतेःप्रोक्तोदुःस्वभाववनेचलम्॥९॥

भा॰टी॰ - बडीचतुर निर्मल वृत्ति दशरथकी सोई राजाने रामजी॰ को बन जानेकी आज्ञा देताभया॰ बनजानेमें रामजीको चित्त॰ चलायमान नही भया॰ सोई दशरथ आदिसबको विलापहे ९

श्लो॰ गमनंरामचन्द्रस्य वर्षाणांचचतुर्दश॥पंच
कर्मेंद्रियावर्षास्तदर्थाःपंचलोलुपाः॥१०॥

भा॰टी॰ - पांच कर्मेंद्री और पांच कर्मेंद्रियोंका अर्थ बडे कामक्रोध॰ आदिउत्पन्न कर्नेवाले

श्लो॰ बालादीनिचचत्वारिशरीरस्यवयांसिच॥एते
दिग्वदवर्षाश्चविपरीतेन्द्रियार्थता॥११॥

भा॰टी॰ - और जीवोंकी देहकी अवस्था बाल आदि च्यार अवस्था जेसे बाल॰ पौगंड युवा वृद्ध ४ येसब खोटी इन्द्रियोंका अर्थलेके चौदा १४ वर्ष वनमें रहनेवास्तेहे॥११॥

श्लो॰ साराज्यवृत्तिर्भरतेदत्तवान्नृपसत्तमः॥पितु
र्वाक्यंरथंप्रोक्तंस्वच्छवृत्तिर्भवागुणाः॥१२॥

भा॰टी॰ - और खोटे इंद्रियोंके अर्थकों शिखाने वास्ते दशरथनें भ
रतकूं राजकी वृत्ती देते भये॰ और दशरथकी वाक्य रामजीकूं ब
नजाने वास्ते॰ सोवाक्य रामको रथहै॰ रामजीकी सुंदरमति ति
स्के गुण जैसे लोभ-मोह स्नेह वैर ये रामजीके नहीहै ॥१२॥

श्लो॰ हयाश्चतत्सुखवाद्धव्यारथस्यतत्स्थितीरवः॥
सुमन्तोनिश्चलत्वंचनृपस्यमुनिसत्तम॥१३॥

भा॰टी॰ -सोई रामजीके रथकेघोडेहै॰ उनघोडोंमें सुख मानना-
सोई रथकी सब सामग्रीहै॰ पिताके वचन रूप रथमे बैठना सोई
रथकों दोडनाहै॰ हे मुनिजी, आत्मज्ञान राजाको धर्म सो कभी
चित्त चलाय मान नहीहोता- सोई सुमंत नाम राजाको मंत्रीहै१३

श्लो॰ विवेकतनयस्यैववियोगोरुदनम्मुने॥ तम
साऽचंचलावृत्तीरामस्यमुनिसत्तम॥१४॥

भा॰टी॰ - ऐसीरथमे बैठके रामजी बनकूंचले तो दशरथके विवेक
सरीके पुत्रको वियोग बहुत दिनसें भया सोई राजा आदि राणि
योंकों तथा पुरवासियोंको रोना भयाहै॰ हेमुनि पिताके बचनसें
रामजीकी अचल वृत्ति सोई तमसा नदीहै ॥१४॥

श्लो॰ वासश्चकारभगवान्तत्तीरेग्लानिवर्जितः॥ह
यसंचारणंधीरः कारयामाससारथिः॥पितुरा॰
ज्ञाविचलनंहयानामशनंस्मृतम्॥१५॥

भा॰टी॰ - विवेक रामजीके कभीग्लानि नही होती सोई तमसा
के तीर रामजीको बासहै॰ धर्ममें बडे चतुर रामजी सोई सुमंत॰
ने॰ घोडोंकों फेरते भये॰ तथा पिताके आज्ञाको रामजीनें मान

लिया सोई घोडोकों चारा खिलाते भये ॥१५॥

श्लो॰ पित्रोर्विनिन्दनंत्यागंपूर्वोक्ताः पुरवासिनः ॥
चैतन्यस्यसदाचिन्ताकृतारामेणमानसे ॥ १६ ॥

भा॰टी॰ - तथा रामजीने कभी पिताकी निंदा नही किया॰ सोभी ये डोकों चाराहै विवेक रामजी चैतन्य रूप भगवानकी चिंता आपके॰ हृदयमें रोज करतेहे ॥१६॥

श्लो॰ सानिद्रातमसातीरे वाक्यंरामस्यनिश्चयं ।
पितुर्मोहोवनेहर्षोरामस्यवर्ततेद्वयम् ॥१७॥

भा॰टी॰ - सोई तमसाकेतीरपर रामजीको निद्रा आनी भई॰ निश्चय करिके बनजाना ऐसा रामजीकोविचार सोई रामजी सुमंतसें कहेहैकि, रथको फिरायके लेचलो॰ पुरवासी हमारे संग चलेंगे सो अच्छा नहीहै॰ रामजीको बनजानेमे बडा हर्ष है॰ तथा पिताकी मोहहै ॥१७॥

श्लो॰ एतद्रथस्यभ्रमणंनिश्चिताकाननेस्थितिः ॥
राक्षसानांविनाशायभूभारहरणायच ॥१८॥

भा॰टी॰ - येदोनो रथको भ्रमण कर्नाहै॰ रामजीकी बनमें निश्चय स्थिति करना भूमिको भार नाश करना तथा राक्षसोंको नाश करना॰ श्लो॰ एतत्पुनस्तद्गमनंतुष्टभावोरघूत्तमे ॥ निवर्तनंप्रजानाम्विकषायइवकालनम् ॥१९॥

भा॰टी॰ - येदोनो प्रसन्न होके तमसाके तीरसें रामजीको फिर बनमें गमन भया॰ जैसा॰ कादा उकलताहै तैसे पुरवासी प्रजाओंक पीछा आना भया ॥१९॥

श्लो॰ पुरवासिनाम्विलापश्चपुनः प्रोक्तंमुनीश्वर ॥
रामश्च स्वस्थभावेनगुहेनाशुसतोषितः ॥२०॥

भा॰टी॰ - सोई प्रजाको फिर विलाप भयाहै-हे मुनिजी; रामजीको स्वभाव सोई गुहनाम भीलहै सो भील रामजीकों प्रसन्न करता भया ॥२०॥

श्लो॰ स्वभावाचलनन्विप्रश्शृंगवेरपुरःस्मृतः॥ औदासिन्यंचरामस्यशिंशिपस्तरुसत्तमः॥२१॥

भा॰टी॰ - रामजी अपने स्वभावसें कभी चलायमान नहीहोते-सोई श्रृंगवेरपुरहै रामजीके नकोई मित्रहै नकोई वैरीहै सोई शिंशिपावृक्षहै तिस्के नीचे राम लक्ष्मण जानकी सहित बसते भये २१

श्लो॰ रूपध्यानंकृतन्तेनरामेणतरुसन्निधौ। तदासनम्महाबाहोप्रेमोत्कंठाः कुशास्मृताः ॥२२

भा॰टी॰ -रामजीनें ईश्वरके रूपको ध्यानकरते भये- सोई आसन गुहने बनाता भया- रामजीने ध्यान करिके प्रेमसें गद्गद होगयेसोई कुशहै तिस कुशको आसन बनाया ॥२२॥

श्लो॰ कुकर्मणोनिवृत्तिश्चसागुहस्येवभावना॥ तैःकुशैरामचंद्रस्यगुहेनकृतमासनम्॥२३॥

भा॰टी॰ - रामजीने खोटे कर्मसें चित्तकों खैंचे रहतेहै सोई गुहने रामजीकी भक्ति किया तिन कुशों करिके गुहने रामजीकों आसन बनाताभया ॥२३॥

श्लो॰ तस्मिन् शिश्ये स्वपत्न्याचरामोनिद्रांचकारवै सत्सभाविहरान्कान्ताबुद्धिर्निद्रास्मृतामुने ॥२४॥

भा॰टी॰ - तिस आसनपर जानकी सहित रामजी सोते भये- हे- मुनिजी, रामजीकों साधुवोंकी सभाका वियोग होजाताहै- उस- वियोग करिके रामजीकी बुद्धि दुःखी होजातीहै- सोई निद्राकरतेभये॥२४॥

श्लो॰ असद्वार्त्तादयोधर्म्मायेचैवंमाययाकृताः॥
तेविभूषणवस्त्राद्यास्त्यक्ताद्वाभ्यांगुहान्तिके॥२५

भा॰टी॰ - मायाकरिके रचेंज्योखोटेखोटे धर्म सोई संसारकेगहना तथा वस्त्रहैं॰ तिन सबकों राम लक्ष्मण गुह मित्रके सामने त्यागतेभये॰॥२५॥

श्लो॰ गुहलक्ष्मणयोः सुप्तेसपत्नीकेरघूत्तमे॥ बभूवतुःसत्कथनंसद्विचिन्तनमेवच॥२६॥

भा॰टी॰ - रामजीकों तथा जानकीकों सोएजानके गुहको लक्ष्मणको संवाद भया दोनोनें सुंदर धर्म तथा ईश्वरकी चिंता कर्त्तेभये सोई संवादहै ॥२६॥

श्लो॰ संवादजागरौप्रोक्तौतौतयोर्जान्हवीतटे॥
शरीरशुद्धिर्योगेनपूर्वोक्ताजान्हवीस्मृता॥२७॥

भा॰टी॰ - पहिले वर्णन भईजो गंगाजी तिस्के तीर गुहको तथा लक्ष्मणको संवाद तथा जागतेभये॰ सुंदर धर्मकोकथन तो संवाद भयाहै॰ ईश्वरकीचिंताकर्ना सोजागनाभया॥२७॥

श्लो॰ शुद्धमाचरणन्तोयम्बाह्याभ्यंतरयोःशुचिः॥
तटौद्वौमुनिभिःप्रोक्तौतरंगिण्यानुशासिकाः॥२८

भा॰टी॰ - शुद्ध कर्मकों कर्ना सोई गंगाकोजलहै॰ और देहके बाहर जलमृत्तिकासें शौच कर्ना, हृदयमें ज्ञानसें शौचकर्ना॰ये दोनो कर्म गंगाके दोतीरहैं॰ गुरुकी दीक्षा लेना सोईगंगाकीलहरहै

श्लो॰ स्वभावाचरणंवंशंतत्प्रीत्यायष्टिसंज्ञया॥
योगाचरणयानावा तारणंशुद्धसंस्थितिः॥२९॥

भा॰टी॰ जीवोंके स्वभावकों आचरण सोई बांसहै उसी स्वभाव रूप बांसमें प्रीति करना सोई बांसकी लाठीहै॰ योगको करना

सो नांवहै॰ शुद्धकर्ममें टिकना सोगंगाको उतरनाहै॰ इस प्रकारसं योग सें गुहने रामलक्ष्मण जानकीको गंगाकेपार लेगया॰॥२९॥

श्लो॰ कृतंगुहेनसहसाप्रयागंत्दृदयस्थलम्॥सज्ज नैर्भाषणंस्नानंतस्यप्रीतिःसरस्वती॥३०॥

भा॰टी॰ - गुहनें पारउतारे रामजीकीत्दृदयसो प्रयागहै॰ सज्जन मानुष्योंसें भाषण करना सोस्नानहै इसी सज्जनोके भाषणमें प्रीति सो सरस्वतीहै॰॥३०॥

श्लो॰ तत्संगतोचयत्प्रेमतद्रुचिर्यमुनास्मृता॥वटःस्व धर्मोविप्रेंद्र सत्कर्माचरणोमुनिः॥३१॥

भा॰टी॰ -सज्जन जीवोंके मिलापमें प्रेम औरउसी प्रेममें रुचि सो यमुनाहै॰जीवोंको आपना२ धर्मसो अक्षय वटहै॰ सुंदरकर्म कर्नी सो भरद्वाजमुनिहै॰ तिनके आश्रमपर रामजी जाते भये॰॥३१॥

श्लो॰ पूजितोयेनरामोवैजानकीलक्ष्मणान्वितः॥सु खमापमहाराजोरामोराजीवलोचनः॥३२॥

भा॰टी॰ - जोभरद्वाजमुनी राम लक्ष्मण जानकी को पूजन करतेभयें भरद्वाज मुनिके आश्रमपर एकरात्रि रामजी रहे तहां बहुत सुख॰ पातेभये॥३२॥

श्लोक॰ उवासरामोमुनिनासुपूजितोविदेहपुत्र्या॰ चसहानुजोविभुः॥प्रातःसमुत्थायप्रियासहोदरैः स्नानंत्रिवेण्यांविधिवच्चकारवै॥३३॥

भा॰टी॰ - मुनिकरके पूजित ऐसे रामचंद्र जानकी लक्ष्मण भरद्वाज मुनिके आश्रमपर रात्रि बसके प्रातःकाल उठके पहिले वर्णन हुइ जोत्रिवेणी तिस्मे विधिपूर्वक शुद्ध आचरण हैरामजीको सोईविधिहै॰ और पहिले वर्णन भयाजो जल तिस्मे डरसें हीनकर्म रूप॰

स्नान राम लक्ष्मण जानकी करते भये. ॥३३॥

इतिश्रीवेदान्तरामायणे अयोध्याकांडे पं० शिवसहाय बुधविरचिते सम्वर्तवरतन्तुसम्वादे रामचंद्रभारद्वाजाश्रमनिवासे प्रथमो सोपानः ॥१॥

वरतन्तुरुवाच ॥ श्लोक. आत्मज्ञानस्य स्वपितुः रामेण चिन्तनम्मुने ॥ स वाल्मीकिर्मुनिः प्रोक्तः शत्रुजेता जयोगिरिः ॥१॥

भा.टी. - वरतन्तु मुनि बोले रामजीने अपने पिता जो आत्मज्ञान तिस्का चिंतन करते भये. सो वाल्मीक मुनि हैं तिनके आश्रम पर रामजी जाते भये. रामजी को पराक्रम कामादि शत्रुवों को जीतने मे बडा बलवान हैं. सो चित्रकूट पर्वत हैं. वाल्मीक की आज्ञा पायके तिस चित्रकूट पर रामजी बसते भये ॥१॥

श्लो० रामस्य सततं प्रीतिर्या रूपे सा पयस्विनी ॥ सभयादिगुणास्तत्र मुनयो वनवासिनः ॥२॥

भा.टी. - भगवान के रूप की प्रीति रामजी के हृदय में नित्य बनी रहती है सोई मंदाकिनी नदी है. अधर्म के भय आदि गुण रामजी में है सो इस बन के मुनि हैं. अधर्म सें डरे सोई महात्मा है ॥२॥

श्लो० इंद्रियाणाम्प्रचंडानामविस्वासादयो गुणाः तैरारण्यचरैर्नित्यं सेवितो जानकीपतिः ॥३॥

भा.टी. - बडी जबर्दस्त जो इन्द्री है तिनको विस्वास रामजी कभी नही करते ऐसा गुण सोई वनके रहनेवाले मानुष्य है. सो मानुष्य रामजी की सेवा करने भये ॥३॥

श्लो० गिरेर्वैजयरूपस्य चित्रकूटस्य नित्यशः ॥ अ

चलत्वंचतस्मेमकुटीरौरामसंकृतौ॥४॥

भा·टी· -पहिले वर्णन भया जो रामजीका काम आदि जयरूपचि त्रकूट सो अचलहै तथा उसअचलमें प्रेम येदोनो रामलक्ष्मणकी पर्णकुटीहैं· ॥४॥

श्लो॰ तद्गिरौनिश्चलाप्रीतिर्वसतीराघवस्यवै॥प्रपं चरहितंसौख्यंप्राप्तंरामेणतत्रच॥५॥

भा·टी· -ऐसेचित्रकूटमे रामचंद्रकी प्रीति निश्चलहै सोई चित्रकू टपर रामचंद्रको वासहै· रामजी संसारके प्रपंचसें रहितहैं· सोई- चित्रकूटका सुखहै॥५॥

श्लो॰ अयोध्यासुमतेर्भूरिर्निश्चलेनैवसंकृता॥ तत्सुमंत्रागमःप्रोक्तःपुनारामांतिकान्मुने॥६॥

भा·टी· -जिसको चित्त कभी धर्मसें चलायमान नहीं होना सोसु- मंतरूप सारथीने सुमतिरूप अयोध्याको प्रेम निश्चल होके किया सोई रामजीके पाससे सुमंतको फिरि अयोध्यामें आनाभयाहै·

श्लो॰ सत्समाजेविनष्टोभूदात्मज्ञानंनिरंतरम्॥तदे वमरणम्प्रोक्तमयोध्याधिपतेस्तदा॥७॥

भा·टी· -सत्पुरुषोंकी समाजमें रोज आत्मज्ञान नष्ट होगया सोई दशरथको मरणहै॥७॥

श्लो॰ कृतंकोलाहलंसर्वैःसज्जनैःसत्सभान्तले॥ पूर्वोक्तनृपभार्याभिर्युगपत्तद्विलापनम्॥८॥

भा·टी· -सत्पुरुषोंकी सभामें आत्मज्ञानकों नष्ट देखके उसीस- भामें बैठके सज्जनोने बहुत उच्चस्वरसें रुदनकिया सोई पेस्तरब र्णन भईसो राजाकीस्त्रीहैं· सोसब इकठी होयके विलाप करती भई॥८॥

श्लो॰ निर्दयत्वं सदाशक्तेस्तत्केकयपुरस्मृतः ॥ धर्माचरणदूतास्ते वसिष्ठेनैव प्रेरिताः ॥ गतास्तेतत्पुरंप्रोचुः क्रूरं केकयभूपतिम् ॥ ९ ॥

भा॰टी॰ - शक्ति निर्दई हे जीवको फसानेमे मोहनही करती॰ किय हुगरीब दुःख पावैगा॰ ऐसा शक्तिको स्वभाव है सोई कश्मीरनगर है॰ वसिष्ठजीने आपने धर्मके आचारमें बडे पुरुषसो सब दूत है तिन दूतोंको कश्मीरको भेजते भये॰ दूत जायके कश्मीरको केकयीको क्रूरस्वभाव सोई कश्मीरको राजा है तिस्से बोलते भये ९

श्लो॰ नृपस्यमरणंशीघ्रं गृहीत्वातस्कृतौतदा ॥ कुमत्याप्रापितौतत्र पूर्वोक्तौनृपनंदनौ ॥ १० ॥

भा॰टी॰ - जलदी आत्मज्ञान दशरथको मरण कहिके कुमति करीके कश्मीरको लेगयेजो राजाके दो पुत्र भरत शत्रुघन तिनदोनोंकों संगलेके ॥ १० ॥

श्लो॰ आयाताः कुमतिन्दूताभरतानादरम्प्रजाः ॥ भगवच्चिंतकाः सर्वे प्रजाश्चपुरवासिनः ॥ ११ ॥

भा॰टी॰ - दूतोनें कुमति रूप अयोध्याकूं आते भये॰ तब भगवानके भजन कर्नेवाले रूप जो सब पुरवासी है सो भरतके अनादरकों

श्लो॰ चक्रुश्चानादरन्तस्य हास्यरूपन्निरंतरम् ॥ आश्वासितौ वसिष्ठेन क्षमामार्गेणरोदनम् ॥ १२ ॥

भा॰टी॰ - करतेभये॰ क्या अनादर किये रोज भरतकूं देखके हसना सोई अनादर है॰ और वसिष्ठजीनें क्षमारूप आश्वास किया॰ सोई॰ भरत शत्रुघनको रोनाहे॰ ॥ १२ ॥

श्लो॰ चक्रतुः शपथंवीरौ कौशल्यांभरतोऽर्जवम् ॥ चकारमातुः स्वस्यैव भर्त्सनंधैर्यनाशनम् ॥ १३ ॥

भा·टी· - भरत को कोमल स्वभाव सोई दोनोभाई सौगंद करतेभ ये· रामजीको वियोग तथा दशरथकोमरण· रूनिके भरत शत्रुघन- की धीरज नष्टहोगई· सोई केकयीकों भरत ताडना करतभये·१३

श्लो० दाहादीनिसमस्तानिकर्म्माणिमुनिसत्तमः॥
कारयामासभूपस्यशुद्धाचाराणितेनवै॥१४॥

भा·टी· -सबजीवोंको शुद्ध आचार सोई दशरथकी दाह क्रिया· दिकर्म वसिष्ठने भरतसें करवाये ॥१४॥

श्लो० पूर्वोक्तसेनाजननीवांधवैः पुरवासिभिः॥गुरु
णाविप्रवर्गैश्चसंयुतोगमनन्वसः॥१५॥

भा·टी· - पहिले वर्णन भईजो फौज तथा माता भाई पुरवासी गुरु ब्राह्मण इनसबों करिके संयुक्त भरत होकर रामजीकेपास जानेकी तयारीकिया·॥१५॥

श्लो० परमानंदरूपंहिगुहेनभाषणंकृतम्॥ रामधै
र्यस्वरूपंचतत्प्रतीतिनिवासनम्॥१६॥

भा·टी· - भरतने परमरूप आनंदमें लीन भये सोई गुहको तथा भरतको संभाषणभया· रामजीको धीरज स्वभाव सोई गुहकी· निश्चयहै· श्रीरामकों मिलने वास्ते भरतजातेहैं सोई भरतको गंगा तटपर टिकाना भया ॥१६॥

श्लो० सैन्यविश्वासनंचक्रेरामध्यानेनसंयुतः॥ भर
तस्स्वस्वभावेनससैन्यमातृबांधवैः॥१७॥

भा·टी· - भरत शत्रुघन रामजीको ध्यान करतेभये· सोईफोजकोंवि श्वास देनाहै· तथाभरत अपनेस्वभावमें दृढहै सोई सेना भाई गु रु माता सहित ॥१७॥

श्लो० गंगापारंस्करवेनामोगुहप्रेरितनौकया॥प्रया

गस्थोमुनिश्चक्रेसत्कार्य्यं भरतस्यच ॥१८॥

भा॰टी॰ - गुहसें चलाई नाव करिके गंगाके पारगये॰ प्रयागजीमें टिकेजो मुनि भरद्वाज पहिले वर्णन हुए सो भरतको सत्कार करतभये॰

श्लो॰ यमादिभिर्योगपथैः सन्तुष्टोन्नृपनन्दनः। बभूवाव्यक्तकथनं श्रोतॄणांचाचिनांतथा॥१९॥

भा॰टी॰ - किस चीजसें सत्कारकिया॰ खोटा बचन नहीं बोलना॰ इंद्रियों कोंजीतना॰ इनआदि अनेक प्रकारके सुंदर कर्म्मों करिके॰ सत्कार किये॰ तब भरत संतुष्ट होके चित्रकूट कूंगये॰ तब चित्रकूट पर रहनेवाले जीवोंको तथा कहने वाले जीवोंके बीचमें ईश्वरको धर्म वर्णन भया॰॥१९॥

श्लो॰ चतुर्णांन्चैवभ्रातॄणामन्येषांच परस्परम्॥ समागमस्सोविख्यातः परमात्म प्रकाशकः॥२०॥

भा॰टी॰ - तथा चारों भाई रामजीके और अनेक जीवोंके आपस्मे परमात्माके रूपको प्रकाश मालूम पडा सोई सबको चित्रकूट पर आना भया॥२०॥

श्लो॰ पादुके रामचंद्रेणसत्य बुद्धिः सहिष्णुता॥ स्वानुजायस्वयन्दत्तेप्रीत्यागृत्यागमत्पुरीम्॥२१॥

भा॰टी॰ - सत्यराखना हृदयमें तथा कोई आपनेको दुःख देवैसो उस्कोदुःखदेनेका बिचारनानहीं ये दो पादुकाहैं सो दोनों पादुका रामजीने प्रसन्न होके भरत कूं देतेभयेभरतनें दोनों पादुका आपने स्वभावरूप शिरपर धरिके अयोध्यापुरीमें आतेभये॥२१॥

श्लो॰ भरतोभ्रातृसहितः सेनामातृमुनीश्वरैः॥ वासंचक्रेपुरीबाह्ये पंचक्रोशमितेशुभे॥२२॥

भा॰टी॰ - भाई सेना॰ माता॰ मुनीश्वर सहित आयके आप भरतके

लेपुरीके बाहेर पांचकोसपर टिकते भये॥ २२॥

श्लो॰ कदापिसुमतिः कुर्यात्कुमतेः संगमद्भुतम्॥ अ
तोतद्दूरतःस्थित्वापंचदुष्टेन्द्रियोझ्झिते॥२३॥

भा॰टी॰ - भरत विचारने भये कि दैवयोगसें सुमतिजोहै सोकुमति की संगत करलेवै तो बडा आश्चर्य होजावे इसवास्ते पांच दुष्टइंद्रियों करिके त्यागभया जो सुंदर कर्म्म उसी पांचकोशमें वासकरते भये॥२३॥

श्लो॰ सत्कर्माचरणे वीरोनन्दिग्रामेसुशोभने॥ त
त्प्रीतिरूपिणीम्बध्वाजटांरामइवस्वयम्॥२४॥

भा॰टी॰ - सुंदर कर्मको आचरण कर्ना सोई नंदिग्रामहै॰ तिस्मे टिकते भये॰ नंदिग्रामकी प्रीतिरूपजटा रामसरीके भरतभी शिर में बांधिके॥२४॥

श्लो॰ द्वयोःपादुकयोश्चक्रेरंजनंप्रीतिसेवनम्॥
शमादीनाम्प्रजानाम्वैविपरीतोद्भवोद्भवैः॥ भरतोर
क्षणंचक्रेदुःखितानांमुहुर्मुहुः॥२५॥

भा॰टी॰ - पेस्तर वर्णन भयेजो दोनूपादुका तिनको स्नेहरूपप्रीतिसोईसेवन करतेभये॰ शम दमयज्ञ आदि औरजो सुकर्म सोई सब प्रजाभये॰ तिन सबकी रक्षाकरतेभये भरत खोटीइंद्रियोंको जोखोटाअर्थ तिस करिके वारंवार दुःखीजोप्रजा तिनकोरक्षा करतेभये॥ २५॥

इतिश्रीवेदान्तरामायणेपं॰ शिवसहायबुधविर
चितेनंदिग्रामे भरतवासेद्वितीयोमोक्षोपानः॥२

इति अयोध्याकांडम् समाप्तं

अथारण्यकांडः

श्लोकः वरतन्तुरुवाच कुज्ञानसमुदायाश्चतेमृ
गाः काननौकसः ॥ सलक्ष्मणेनरामेण हतानि
पतिताःक्षितौ ॥ १ ॥

भा·टी· - वरतन्तु मुनि बोले खोटा खोटा ज्ञान जैसे परस्त्रीकों भोगना· परधन हरनां· चोरी करना· इनआदि बहुत ज्ञानसो सब बनके मृग भये· तिन मृगोंकूं राम लक्ष्मण मारने भये· वे मृग भूमिपर पडगये ॥ १ ॥

श्लो· ज्ञानहर्षशरैस्तीक्ष्णैर्जघानारण्यसंश्रितान्
राक्षसानपिपूर्वोक्तान्मनोरावणप्रेरितान् ॥ २ ॥

भा·टी· - तथा मन रावण करिके आज्ञा पायके बनमें फिरनेजो राक्षस तिनकोभी रामजी ज्ञानमें हर्ष मानना सोई बाणहै तिस्स बाणों करिके मारते भये ॥ २ ॥

श्लो· रूपभक्त्याश्चजानक्याःपादौतच्छ्रुतिकीर्तने
आलस्योनिजतुंडेननिजघानस्करेशजः ॥ ३ ॥

भा·टी· - विवेक कोचरित्र सुनना तथा कीर्तन कर्ना ये दोनों भगवानके रूपकी भक्तिजो जानकी तिसके दो पगहै तिस पगको आलस्यरूपजो कागसो जानकी विवेककेचरित्रको सुनती तथा कीर्तनकरती भई· इनदोनोंकों नहीकर्नेदेना · सोई तुंडहै तिस तुंडकरिके जानकी केपगमें घाव करताभया ॥ ३ ॥

श्लो· अप्रीतिकृतहर्षेणजानक्याश्चरणांवुजे ॥ पात
यामासतस्याक्षिशरेणैकेनराघवः ॥ ४ ॥

भा·टी· - आलस्य रूप कागने जानकीको नित्य मनाकरताभया· कि तूंपरमेश्वरकी प्रीतछोडदे· जानकी दुष्टकी वाक्य नही मानीइस

वास्ते उस आलस्यरूप कागकी प्रीति जानकीमे नहीहै ऐसी अप्रीत्तिमेजो कागको हर्ष सोई तुंडकी धारहै उसी धार करिके जानकीके चरणमें मारता भया. तब रामजीने एक बाण करिके जयंतकी एक आंखि काटिके भूमिपरगिराय देतेभये ॥ ४॥

श्लोक· उपदेशशरेणैकं क्रोधाकुलितलोचनः॥ आलस्योव्याकुलोभूत्वा क्रूरवाक्यादिसंगतो॥५॥

भा·टी· - किस बाणसें रामजीने आंख काटे उपदेस रूप बाण· करिके क्रोध करिके रामजीको नेत्र लाल होगया· तब आलस्यरूपकाग खोटीवचन बोलना ऐसी अनेकप्रकारका बुराकाम तिसकी सभामें ॥५॥

श्लो॰ गतवान्प्राणरक्षार्थं नकेनापि स्करक्षितः॥ पश्चाच्छरणमायातोरामस्यचरणाब्जयोः ॥६॥

भा·टी· - अपने प्राणकी रक्षा करनेवास्ते जाताभया· परंतु किस दुष्टोंकी सामर्थ्य नही भई कि रक्षा करशके तब रामजीके चरणकी शरण आया ॥६॥

श्लो॰ · शौर्य्यार्ज्जयोश्च तन्दृष्ट्वारक्षित्वाराघवस्त्यजत् तदागतः समाजग्मुर्दुष्टकर्मादिराक्षसाः॥ चित्रकूटस्थितंज्ञात्वारामंसत्यपराक्रमम्॥ ७॥

भा·टी· - कैसे रामके चरणहै एकतो शूररूपहै, दूसरा कोमलतारूपहै, रामजीनें शरण जानके कागके प्राणकी रक्षा करनेभये· तब काग चलागया· तब दुष्टकर्म पेस्तर बर्णन हुयेजो राक्षस सोचित्रकूटपर रामजीकूं टिके जानकर रामजीके सामने आतेभये ७

श्लो॰ अर्दितुंसहसोद्योगंचक्रुर्मरणकांक्षिणः॥ सद्धर्मामुनयश्चैवचित्रकूटवनाश्रिताः॥८॥

भा॰टी॰ – राक्षसोनें जलदी मरणकी इच्छा करिके रामजीकों दुःखदेनेवास्ते उपाय करते भये॰ तथा चित्रकूटके बनमें रहने वाले सुंदर धर्मरूप जो मुनिहै वोभी ॥ ८ ॥

श्लो॰ तेऽपिप्रापुर्महादुःखंपीडिताराक्षसैस्तथा ॥
तान्पीडितान्विलोक्याशुरामस्तत्याजतंगिरिम् ९

भा॰टी॰ – राक्षसोंसे पीडा पायके दुःखी होतेभये॰ रामजीने विचार कियाकि हमारेवास्ते राक्षस आते हैं॰ सो मुनिलोगभी दुःख पाते॰ हैं॰ हमचित्रकूटपर नही होतेतो राक्षस रोज इहां नहीं आते ऐसा बिचारिके और मुनियोंकों दुःखी देखके चित्रकूट त्यागि के दूसरे बनकूं चले ॥ ९ ॥

श्लो॰ शत्रुत्रयाणांविजयंचित्रकूटंरघूत्तमः । । तत्याजस्ववशंज्ञात्वानैतेमांजयितुंक्षमाः ॥ १० ॥

भा॰टी॰ – काम क्रोध लोभ इन तीनों वैरीयोकोंजीतनारूप जो चित्रकूट तिस्कूं आपनी वस रामजीनें जानके येवैरी हमे नहीजीतसकैगे ऐसाजानिके चित्रकूटकों त्यागते भये॰ ॥ १० ॥

श्लो॰ कामादिसारंसंगृह्यभूभारहरणायच ॥
रक्षोविनाशनंचैवतैर्विनानभविष्यति ॥ ११ ॥

भा॰टी॰ – रामजीने बिचाराके कामकोसार सुख॰ लोभकोसार संसारमें आपनी स्तुतीहोना॰ क्रोधको सार वैरीको मारनेमें दया नहीकरना॰ इनतीनोंकी थोरा थोरा सार भूमिके भार नाशकरने वास्ते लेतेभये इनतीनों सारों बिना राक्षसोंका नाश नही होगा॰ ऐसाबिचार करिके ॥ ११ ॥

श्लो॰ एवम्विचार्यसहसाजगामात्रेरथाश्रमम् ॥ मार्गेरुध्वाविराधस्तंतत्रतस्यपुरस्थितः ॥ १२ ॥

भा॰टी॰ - रामजीने ऐसाबिचारकियाकि अब मुनियोंकेपासच लना॰ तो प्रथम अत्रिमुनिके आश्रमकूं चलतेभये॰ तब रामजी॰ कारस्ता घेरके रामजीके साम्ने विराधनाम राक्षस खडा होगया १२

श्लो॰ राधः सदुपदेशश्चतेनयोविगतोभुवि॥ स विराधइतिख्यातोऽश्रमोभयविवर्द्धनः॥१३॥

भा॰टी॰ - सुंदर काजके उपदेशकूं राध कहतेहैं॰ शास्त्रमे उसीराध सें दूरि होजावै तिस्को नामबिराधहै॰ भयको बढानेवाला जोश्र महै उस्कानाम बिराधहै॥१३॥

श्लो॰ जानकीतेनसन्नीता ब्रह्मभक्तिश्चशाश्वती॥ अतोरामेणतरसा हतः प्राप्ताचजानकी॥१४॥

भा॰टी॰ - तो विराध जानकीकों हरि लेगया॰ इसवास्ते जलदी रा मजीने बिराधकों मारिके जानकीकों ले आए॥१४॥

श्लो॰ तंहत्वारामचन्द्रश्चजगामात्रेः शुभाश्रमम्॥ नसन्तिशत्रवोयस्यजन्मतस्त्रयएवते॥१५॥

भा॰टी॰ - रामजीने तिसविराधकों मारिके सुंदरजो अत्रिमुनिको आश्रम तिसपर जाते भये॰ जन्मतें काम क्रोध लोभ येतीन शत्रु जि स्के नहीहे॥१५॥

श्लो॰ सोऽत्रिर्मुनिः समाख्यातः शीलोब्रह्मसखा महान्॥ निंदानजन्मतोयस्याः सानुसूयेतिक॰ थ्यते॥१६॥

भा॰टी॰ - तिनकों अत्रिमुनि शास्त्रमें कहतेहैं॰ सो अत्रिमुनिशी लकोनामहै॰ शील ब्रह्मको बडामित्रहै जन्मसें जिस्की हृदयमें जीवमात्रकी निंदानहीहै उस्कों शास्त्रमे अनुसूयाकहतेहै १६

श्लो॰ शीलवृत्ति र्वैराग्येष्ठामुनिपत्नीपतिव्रता॥ सो

त्रिः संपूजयामासस्वस्वभावोद्भवैर्गुणैः॥१७॥

भा०टी० - शीलकी वृत्तिको अनुसूयानामहै. बडीश्रेष्ठहै. शीलरूप अत्रिमुनि जिनकीस्त्रीहै. शीलको छोडिके दूसरीजगा अनेक दुःख पावे तोभीनहीजाती शीलरूप अत्रिमुनि आपने स्वभावसे उत्पन्नगुण करिके रामजीको पूजन करते भये ॥१७॥

श्लो० जानकींशिक्षयामासस्ववृत्तिंमुनिवल्लभा॥स त्सभान्वेषणम्प्रेमदुःस्वभाववनेभवत्॥१८॥

भा०टी० अत्रिमुनिकीप्यारीजो शीलकी वृत्ति अनुसूया सोआपनी बडीउत्तमवृत्तिजानकीकों शिखातीभई खोटास्वभावरूप वनमें जीवको मोक्ष कर्नेवाली सभाकों प्रेम करिके सोध लगाना

श्लो० रामचन्द्रस्यभ्रमणंपितृवर्षप्रमाणतः॥पत्नीभ्रातृसमायुक्तोजन्माग्निवारिदः प्रभुः॥ शरभंगंमुनिन्द्रष्टुंजगामरघुनन्दनः॥१९॥

भा०टी० - सोई रामजीको वर्ष १४ वनमें भ्रमण करना भयाहै. कैसेरामजीहै जानकी लक्ष्मण संयुक्तहै. तथा जन्मबाधारूप जो-अग्नि तिस्कों बुझाने वास्ते मेघरूपहै. सोरामजी शरभंग मुनि का-दर्शन कर्ने वास्ते शरभंग मुनिके आश्रमपर गये. ॥१९॥

श्लो० तेजसाशरभंगेनपूजितोजानकीपतिः॥ शौचाद्याचारसाहित्यैस्तेषांप्रीतिस्तुतिः कृता॥२०॥

भा०टी० - तपको तेज सोईशरभंगमुनिहै सोमुनि शौच आचार आदि औरउत्तम उत्तम कर्महै तिन्हो करिके रामजीको पूजन किया. तथा राम लक्ष्मण जानकी उनके चरणमें बडीप्रीत किया. सोईशरभंगमुनि रामजीकी स्तुति करतेभये॥२०॥

श्लो० कौशलप्रीतिरचिताचिता श्रीरामसंगतिः॥द

ग्ध्वादेहंमुनिःशीघ्रंविवेकेराघवेविशत्॥२१॥

भा॰टी॰--रामजीमें बडीचतुर प्रीति ठसप्रीतिकी चिता बनाया त-था रामजीकी संगतिसो अग्निभई है- ऐसीसुंदर उत्तम चिता अग्निसे भावरूप देहका भस्म करिके विवेकरूप रामजीमें शरभंग मुनि मिलगये ॥२१॥

श्लो॰ अविचारसुतीक्ष्णेनकृत्वासंभाषणम्प्रभुः॥
सन्मार्गमुपदिश्यास्मुतीक्ष्णेमुनिसत्तमे॥२२॥

भा॰टी॰ - रामजीके विचारसेंरहित कर्म सोई सुतीक्ष्ण मुनिहै ति-स्सें संभाषण करिके सुंदर धर्मकारस्ता सुतीक्ष्णकों बतायके॥२२

श्लो॰ रामोजगामवेगेनकुंभजस्यानुजाश्रमं॥मान
वृद्धेश्चजीवस्यकदापिरघुनंदनः॥२३॥

भा॰टी॰- जलदी रामजी अगस्त्य मुनीके छोटेभाईके आश्रमपरजा-तेभये कभीजीवके अभिमानकी वृद्धिहोतीहै सोई अगास्त्यको-भाईहै ॥२३॥

श्लो॰ दीनस्वभावोजीवानांसोगस्त्योमुनिसत्तमः॥
मानवृद्धिःकदातस्यसोगस्त्यस्यानुजःस्मृतः॥२४॥

भा॰टी॰ - जीवोको स्वभाव बडा गरीबहै सोई अगस्त्यमुनिहै जीवों-केकभी मानकीवृद्धिहोतीहै सो अगस्त्यको छोटाभाईहै ॥२४॥

श्लो॰ तस्मैसन्मार्गमुद्दिश्यकुंभजाश्रममागतः॥पू
जितःकुंभजेनैवरामोदीनदयागुणैः॥२५॥

भा॰टी॰ -तिस अगस्त्यकेभाईकुंईश्वरके भजनरूप रस्ताबताय-के रामजी अगस्त्यमुनिके आश्रम पर आए-जीवोंको दीनस्वभाव जो अगस्त्यहै सो दीनको गुण दया आदि बडे उत्तमधर्म तिसकरि के रामजीको पूजन करतेभये॥२५॥

श्लो· अगस्त्यवचनाद्रामोजग्राहैन्द्रं महद्धनुः ॥ राक्ष
सानांविनाशायसमतान्लक्ष्मणंविभुः ॥ २६ ॥

भा·टी· – रामजीने अगस्त्यकी वचन मानकर राक्षसोंका नाशकर
नेवास्ते समरूप इन्द्रकोधनुष ग्रहण करते भये· ॥ २६ ॥

श्लो· अगस्त्याज्ञांचसंगृह्यरामोगोदावरींययौ ॥
याददातिस्वयंगाम्वैनिर्म्मलांसततंस्थिताम् ॥ दृ
ष्टिम्ब्रह्मस्वरूपेचसावैगोदावरीस्मृता ॥ २७ ॥

भा·टी· – जोकोई वस्तु आपहीसें ब्रह्मके स्वरूपमें निश्चयवास
करनेवाली औरनिर्मल दृष्टिदेवे उसकूं गोदावरी नदी शास्त्रमें क
हतेहैं· सो रामजीने अगस्त्यमुनिकी आज्ञा पायके ऐसीगोदा
वरी नदीकूंजातेभये ॥ २७ ॥

श्लो· उदासीनमतिर्ब्रह्मन्सावैगोदावरीनदी ॥ वि
हर्षोमन्दभावश्चगोदावर्यास्तटौस्मृतौ ॥ २८ ॥

भा·टी· – संसारमेंउदासीनमति राखनाकि हेभगवन् संसाररूप
बंदीघरसें मेरेकूं कब छुडावोगे· ऐसीमतिजोहै सोई गोदाव-
रीनदीहै संसारके सुखरूप चरित्रकों देखके हर्षनही मानना न
थापशूसरीके आपने देहमें मंदता हानि मानना ये दोनों गोदा
वरीके तटहैं ॥ २८ ॥

श्लो· अनुद्वेगजलेनैवपूर्य्यमानादिवानिशम् ॥ क्ष
मालंबंचरामस्य लक्ष्मणस्यसुकोमलम् ॥ २९ ॥

भा·टी· – दुःखकोंपायके जीव उद्वेगकों नप्राप्तिहोवे सोगोदावरीको
जलहै· तिस जलकरिके रात्तिदिन पूर्ण रहतीहै· क्षमा कोआलंबतो
रामजीको और कोमलस्वभाव लक्ष्मणको ॥ २९ ॥

श्लो· सत्संगस्मारिणीबुद्धिः सावभूवद्वयोस्तदा ॥

तत्रानंदयुते वासे संस्थिते रघुनन्दने ॥३०॥

भा॰टी॰ – इन दोनो लक्ष्मणो करिके दोनों भाइयोंकी रातदिन सत्संगके स्मरणमें बुद्धि होती भई॰ तिस गोदावरीके तटपर आनंदसें रामजीको स्थित भये संते ॥३०॥

श्लो॰ किंचित्कालंव्यतीतंच स्फुखमानंदचिन्तनम् ॥ दुर्मतेस्तनयाक्रूरादुःसंगेच्छातिक्रूरिणी ॥३१॥

भा॰टी॰ – आनंदरूप भगवानको चिंतना करते सन्ते दुर्मतिजो॰ कैकसी तिसकी लडिकी खोटाकर्म की संगतिकरनेकी इच्छा बडी क्रूर ॥३१॥

श्लो॰ आजगामातिवेगेन रावणस्य सहोदरी ॥ रामस्य सन्निधिं दुष्टा दुष्टकामेन तापिता ॥३२॥

भा॰टी॰ – ऐसी रावणकी बहिण शूर्पनखा बडे वेगसें रामजीके सामने आती भई रामजीको सुंदर कर्म देखके उस्कों दुष्ट कर्म॰ मालुम पडा सो दुष्टकर्म कामदेव करिके जलिरहीहै ॥३२॥

श्लो॰ उवाच वचनंस्निग्धं पतिर्मे भव राघव ॥ सुखं भोक्ष्यसि चात्यन्तं मयानीतं निरंतरम् ॥३३॥

भा॰टी॰ – हसके रामजीसें बोली हे रामजी तुम मेरे पति होवो॰ मै संसारमें ऐसा सुंदर सुंदर बुराकर्मको सुख लै आऊंगा॰ उस सुखकूं आप भोगोगे॰ बहुत करिके ॥३३॥

श्लो॰ इत्येवमुक्तस्तया रघूत्तमः प्रोवाच तामस्मि सपत्निकोत्यहम् ॥ सहोदरोयं मम ते पुरास्थितः करिष्यते ते सकलं विचिंतितम् ॥३४॥

भा॰टी॰ – शूर्पनखा करिके ऐसे कहे जो रामजीहै सो बोलते भये॰ कि हे दुःसंगकी इच्छा मेरे तो स्त्रीहै॰ तेरे सामने येह मारा भाई खडा

है- सो तेरा संम्पूर्ण विचार सिद्ध करेगा- रामजीने विचार किया- कियह दुःसंगसें छूटजावेतो अच्छाहोवे- इसवास्ते संतोषरूप लक्ष्मण के पास भेजदेते भये कि संतोषकी संगति पायके इसकी वुद्धि निर्मल होजावेगा- ॥३४॥

श्लो॰ रामेणप्रेरिताबालासाययौलक्ष्मणान्तिकं॥
निरस्कृतालक्ष्मणेन पुनरायान्नदन्तिकम्॥३५॥

भा-टी- -रामजीकी आज्ञापायके लक्ष्मणके पास गई- लक्ष्मणने विचार कियाकि यह जन्मजन्मांतरकी बिघडीहै इस कूंमे कुछ शिक्षाभी करूंगातो मेरी शिक्षा मानेगानही- इसवास्ते पास- नही आने देई तो फिर रामजीके सामने गई॥३५॥

श्लो॰ भ्रम्याविभ्रामिता तत्रश्रुतवत्यापुनःपुनः॥प्र
दुद्रावातिवेगेन भक्षितुंजनकात्मजाम्॥३६॥

भा-टी- -राम लक्ष्मणनें उस्के कर्म मुनियोंसे पहिले सुनरखे- थे सोई श्रवणरूपजो भ्रमीनाम हिंडोलाहै तिस हिंडोलना करिके वारंवार रामजीके पाससें लक्ष्मणके पास लक्ष्मणकेपाससें रामजीके पास फिरती भई- तब परमेश्वरकी भक्तिरूपजो जानकी तिस्कूं खानेवास्ते दौडती भई खाना क्याहै जानकीको ईश्वरमें प्रेमहै उसको बिगाड देना-॥३६॥

श्लो॰ दुरालापदुराचारोतच्छ्रोत्रौलक्ष्मणस्तथा॥
चकर्ततत्क्षणेशीघ्रंनाशिकांचापिदुर्गमाम्॥३७॥

भा-टी- -तब लक्ष्मणनें क्रोध करिके जलदी शूर्पनखाके दोकान शुभ कर्ममेंजो प्रीतिहै सोई तरवारहै तिसतरवारसें काट लेते- भये- कैसे कानहै दुष्टवचन साधुवोंको शूर्पनखा बोलती है- एककान तो खोटा बोलहै- दूसराकान सज्जनोको अनेक उपाय-

करिके खोटा आचार शिखानेको बिचार करती है· ॥३७॥

श्लो॰ दुराश्रवणप्रेमाद्यांशुभप्रीत्यासिनासुधीः॥
श्रोत्रादिवासनायुक्तेरक्ते श्चैवकुकर्मभिः॥३८॥

भा·टी· - तथा बडे दुःखसें भगवानकी चटीवस्तुकी सुगंधि लेनाऐसी नाकभी काट लेते भये· कैसी नाक है· रातदिन सूर्पनखा खोटे कर्मोकी कथा सुनतीहै सोई नाक है· दुष्ट संगतसें कान आदि इंद्री भ्रष्ट होगई उनकी वासनाको अर्थ तथा खोटी इन्द्रीसें खोटा कर्म कर्ना ये दोनो रक्त है· इसी रक्तकरिके शूर्पनखा लालहोगईहै यह श्लोक दोयकाअर्थ मिलाहै इस्कूं व्याकर्णमे कुंलक कहते हैं·

श्लो॰ रक्तांगीसा प्रदुद्राव प्राप्तारवरसभास्थलम्॥
खरस्याग्रेनिपतिता रुरोदबहुसुस्वरम्॥३९॥

भा·टी· - शूर्पनखा उसरक्तसें लाल होके पेस्तर बर्णन भये जोखर· आदिराक्षस तिन्होंकी कुमति रूप सभाहै· तिस सभाकों शूर्पनखा गई· खरके आगे पडिके बडे उच्चस्वरसें रोनें लगी· ॥३९॥

श्लो॰ खरादिभिश्चसंपृष्टावर्णयामाससर्वशः॥ राम
लक्ष्मणयोःकृत्यंनाशिकाकर्णकृन्तनम्॥४०॥

भा·टी· - खर आदि राक्षसोनें शूर्पनखासे पूछते भये तब राम· लक्ष्मणको कर्म तथा अपनी नाक कानकी काटनेकी हाल कहती भई॥४०॥

इतिश्रीवेदान्तरामायणे पं॰ शिवसहाय बुधविरचिते आरण्यकांडे सम्वर्तवरतन्तु संवादेप्रथमो मोल्लो पानः॥१॥· श्रीरस्तु

वरतन्तुरुवाच श्लोकः जारघूर्त्तमदापानात्प्राययुः

खररूपिणः॥ चतुर्दशमहासैन्यैरेषाम्प्रीतिसमु
द्भवैः॥१॥

भा॰टी॰ – वरतन्तु मुनि फिर बोलते भये. जार, द्यूत, मद्कोपान-आदिलेके पहिले वर्णन भये इनसब बुराकर्मो का रूपजो खर-आदि राक्षस सोई जार द्यूतादि कर्मोकी अनेक प्रकारकी प्रीतिसें उत्पन्न हुयेजो बुरेकर्म बहुत तिनमेंसे १४००० हजारसेना लेके रामजीसें युद्ध कर्नेकों आते भये॥१॥

श्लो॰ जानकीभयसंयुक्ता छायामभ्यासनिर्मितां
जगामलक्ष्मणेनैवसार्द्धंसातरसागुहाम्॥२॥

भा॰टी॰ – इन दुष्टोंको देखके जानकी डरायके नित्य भगवानमेंमिलनेवास्ते अभ्यास करतीहै उसअभ्यास करिके बनाईजो भगवानकी बहुतसें थोडी छायारूप कृपा सोई गुहाहै तिसगुहामें लक्ष्मणको संगलेके गई॥२॥

श्लो॰ गुहागतान्निरीक्ष्यैवरामोजनकनन्दिनीं॥ज
घानखरसैन्यन्तंक्षणेनैकेनरघूत्तमः॥३॥

भा॰टी॰ – गुहामें प्राप्त हुई जानकीको रामजीने देखके एकक्षणमें खरकी सेनाकों मारते भये॥३॥

श्लो॰ हतसैन्यास्तुतेदैत्यारामंहन्तुंसमुद्यताः॥
तेपिरामेणनिहताःपतिताःपृथिवीतले॥४॥

भा॰टी॰ – आपनी सेनाकों मरी देखके राक्षस सब रामजीकोंमारनेवास्ते दौडतेभये. तिन सबकोंभी रामजीने मारडाले. राक्षसभूमिपर पडगये॥४॥

श्लो॰ हतेषुतेषुसर्वेषुराक्षसेषुखरादिषु॥तत्सैन्य
मपिहृष्टासानिहतंपतितम्भुवि॥५॥

भा·टी· - शूर्पनखाने सेना सहित खर आदि सब राक्षसोंको म
राजानिके तथा पृथ्वीमें पड़ेदेखके ॥ ५॥

श्लो· दुःखिताश्रुविमुञ्चंतीपतिनास्खलितापथि ॥
रुदतीलक्ष्मणेनैवछिन्नकर्णान्तनाशिका ॥ ६॥

भा·टी· - तबशूर्पनखा लक्ष्मणकरिके नाक कान कटीहुई रोती
गिरती पडतीभई· ॥ ६॥

श्लो० जगामवेगेनसहोदरीदरीदुःकर्मप्रीतिस्थि-
तिमुक्तमाम्पुरीम् ॥ लंकाम्मनोरावणपाणिपालि
तांसभास्थितम्वाक्यमुवाचभ्रातरम् ॥ ७॥

भा·टी· - दुष्टकर्ममें हट करिके ठरना ऐसी लंकापुरी तथा मन
रावणकरिके पालितहै ऐसी लंकापुरी कों जलदीगई· हटतें दुष्ट
कर्ममें चेष्टारूप जो मन रावण आदि राक्षसोंकरिके सोभित रा
वणकी सभा तिससभामे बैठाजो शूर्पनखा को भाई रावण तिस्सें
शूर्पनखा बोली ॥ ७॥

श्लो० त्वंक्रूरबुद्धेमदपानमादितोनबुध्यसेशत्रुग
णंसमागतम् ॥ विकर्त्तयित्वाममकर्णनाशिका
सहानुजेनैवसपत्निकःस्खरवी ॥ ८॥

भा·टी· - हेदुष्ट मदिरापीके तूं मस्त होगयाहै· तेरा नाश कर्नेवाले
वैरी आयगया· परंतु तेरेकों मालूम नहीहै· तेरावैरी आपने भाई·
सें मेरीनाक कान कटायके स्त्रवसें भ्रातास्त्री सहित गोदावरी·
पर बस ताहे ॥ ८॥

श्लो० पुत्रौदशरथस्यैवअयोध्याधिपतेःशुभौ ॥
रामलक्ष्मणनामानौराक्षसान्हंतुमागतौ ॥ ९॥

भा·टी· - अयोध्याके राजा दशरथ तिसके पुत्र दोहै राम १ लक्ष्म

ण २ यहनामहै राक्षसोंको नाश करने वास्ते आयेहैं ॥ ९ ॥

श्लो॰ ताभ्यांकिमर्थंतेनासाकर्णौचैवविकर्तितौ॥
वर्णयामाससर्वंसाचरितंतस्यचात्मनः॥१०॥

भा॰टी॰ - मन रावण पूंछताहै तेरा कान नाक उन दोनोनें किस वास्ते काटे तब शूर्पनखा अपना चरित्र तथा रामजीको चरित्र वर्णन करतीहै ॥ १० ॥

श्लो॰ विचार्यतद्धृदयेस्वीयेरावणःक्रूरशासनः॥ किंचित्संस्मृत्यचात्मानंज्ञानदृष्ट्यास्मरोत्तमः॥११॥

भा॰टी॰ - शूर्पनखाका बचन सुनके बडे कठिनसे शिखावे योग्य जोरावण असुरोंमें उत्तम सो ज्ञानदृष्टि करिके अपने आत्माको विचारिके किमै ऐसे सर्वेश्वरको पार्श्ववर्तीहों ॥ ११ ॥

श्लो॰ रूपभक्तेश्चजानक्याःसौंदर्यंब्रह्मभावनम्॥
तेनकामेनसंतप्तोममाप्येवम्भवेत्कदा॥१२॥

भा॰टी॰ - कैसारावणहै ब्रह्मकी भक्तिरूप जानकी तिस्की सुंदरताजोहै सोई ब्रह्ममें भावहै उस ब्रह्मके भावरूप कामदेव करिके बहुत तप्त होरहाहै यह विचारताहैकि ऐसा ब्रह्मको भावमेरे भी कभी होजावे ॥ १२ ॥

श्लो॰ तदाहंभवसंसारान्मुक्तोयास्यामिस्वांगतिम्
एवंनिश्चित्यमनसाहर्तुंकामश्चजानकीम्॥१३॥

भा॰टी॰ - तब मैभी संसारसें छूटके आपनीगतिमें चला जाऊं ऐसा आपने मनमें निश्चय करिके जानकीकों हरन कर्नेवास्ते ॥ १३ ॥

श्लो॰ रथारूढोजगामेकोरात्रौकामविमोहितः॥
मदान्धतायांप्रययौमारीचस्यान्तिकंद्रुतम्॥१४

भा॰टी॰ - रात्रिको ब्रह्ममे भावरूप कामसें मोहित मनरूपरावण

अभिमान करिके अंधकार रूप रात्रिमें रथमें बैठके अकेलाज लदी अहंकार रूपजो मारीच तिस्के सामने गया॰॥१४॥

श्लो॰ मारीचस्तन्दद्दर्शाथ दुराचाररथेस्थितम्॥
तन्दर्षवाजिभिर्युक्तेगर्द्दभैश्चकुकर्मभिः॥१५॥

भा॰टी॰ - कुकर्म रूप खच्चर करिके तथा रथके हर्षजो घोडे तिन करिके संयुक्तजो भ्रष्ट आचार रूप रथ तिस्मे बैठके रावण मारीच केपास गया॰ तिसकूं मारीच देखताभया॥१५॥

श्लो॰ समुत्थायादरंचक्रेपृष्टोवाचदशाननः॥ भगिनीदुर्द्दशांचैवखरादीनांवधंतथा॥१६॥

भा॰टी॰ - रावणकों देखके मारीच उठके आदर किया॰ और आने को कारण रावणसें पूछताभया॰ तब रावणने शूर्पनखाकीदुर्गति तथा खरआदि राक्षसोंका मरण सबकहनेलगा॰॥१६॥

श्लो॰ जानकीहरणार्थायसमायातस्तवांतिकम्॥
विचित्रमृगरूपस्त्वंभवतातमयेरितः॥१७॥

भा॰टी॰ -किजानकीकों मै हरण करूंगा॰ इसवास्ते तुमारे पास मै आयाहूं॰ हे भाई हमारी आज्ञा तुम मानिके चित्रविचित्र मृगबनो॰

श्लो॰ श्रुत्वादशाननोक्तिंचमारीचोमानगर्वितः॥
स्वनाशभयभीतेनकर्मणातंव्यबोधयत्॥१८॥

भा॰टी॰ - बडा अभिमानी जोमारीच सो रावणकी वचन कों सुनिके कहाकी हे रावण जो कर्म तुमने विचारेहो तिसकरिके मेरा मरण होगा॰ औरतुम दुःख पावोगे॥१८॥

श्लो॰ बोधितोपिदशग्रीवोनबुबोधमहाबली॥ भयाद्बभूवमारीचः कुविचारोमृगोद्भुतम्॥१९॥

भा॰टी॰ - बडाबलवानजोरावणहै सो मारीचकी वाक्यकों सुनि

केनहीमाना तब मारीचनें जानाकी जोमें फिर कुछ ज्ञान देउंगा तो मेरेकुं मार डालेगा· ऐसें भयसें खोटाबिचार रूप मृग होगया·

श्लो॰ कुमार्गतनयैर्युक्तः परपीड्यादिरोमभिः॥ भू रिभिर्दुःखदैःपादैः कुवाक्य छलवंचनैः॥ २०॥

भा·टी· - खोटा मार्गजोहै सोई दुष्ट पुरुषहै तिस्के दूसरेजीवों- कों दुःखदेनेवाले आदिपुत्र जैसा ईर्षण मत्सरता चुगली इनआ दि औरजो दुष्टहै सोई रोम भयेहै तिस रोमों करिके युक्तहै· औ रखोटीवचन बोलना· छलकरना· कपट करना· ठगाई करना ये· च्यारि पगहै इन्हो करिके युक्त मारीचहै॥ २०॥

श्लो॰ कुरावकुशलाशोभाकुतृष्णाबिन्दुरंकितः॥ स त्तिरस्कारपुच्छेनसंयुतोऽधर्मचंचल ः॥ २१॥

भा·टी· - खोटावाक्य बोलनेमें चतुराई सोई मारीचके देहकी शो भाहै· बुरे कामोंकी बहुत तृष्णा सोई बिंदूहै तिस्का कालापी ला सफेद आदि अनेक प्रकार करिके चित्र विचित्र होरहाहै· स त्पुरुषोंका तिरस्कार सोई पूंछहै तिस पूंछ करिके युक्तहै अधर्म सोई चंचलस्वभावहै तिस करिके बहुत चंचलायमानहै॥ २१॥

श्लो॰ सदानादरहास्याभ्यांशृंगाभ्यांशोभितःखलः जगामरामवसतिंतन्दृष्ट्वाजनकात्मजा॥ २२॥

भा·टी· - सुंदर कर्मको जैसा विद्यादान तलाव कूवा धर्मक्षेत्र· आदि और कर्म तिनको अनादर तथा हँसी करनाये दोसींगहै· ऐसी सींगकरिके खल मारीच शोभित होरहाहै· ऐसा रूप बनाय के रामजीकी पर्णकुटीके सामने गया· तब तिस मारीचकों देख के जानकी॥ २२॥

श्लो॰ लुलोभसहसादेवीस्वकार्यात्किंचिदातुरा॥

बभूवप्रेरयामासरामंतद्ग्रहणेसती ॥ २३ ॥

भा-टी- – अपने काजनें थोरी आतुर होके लोभकूं प्राप्ति हुईजो जानकी सो विचार किया कि मन रावणको भेजा आयाहे- अब रामजी- रावणकों मारेगे तो घर२ प्राणी २ प्रति हमारी वृद्धि होवेगासबमें हम बसेगे- रामजीसें जानकी बोलीकि इस मृगकों पकडके ले आवो २३

श्लो० करुणापृथिवीदुःखसंहारंरघुनन्दनः ॥ प्राप- मोहंविचलितस्तद्वधेग्रहणायवा ॥ २४ ॥

भा-टी- – दयारूपजो पृथिवी तिस्का दुःख संहार रूप मोह कूं रामजी प्राप्ति होके मृगाको पकडना अथवा मारना इसवास्तेचलते भये

श्लो० सन्तोषलक्ष्मणेनैवस्वस्थत्वेननिवारितः ॥ स्वीकृतन्नैवरामेणगत्वासंघातितोमृगः ॥ २५ ॥

भा-टी- – संतोष रूपलक्ष्मणको संसारमें समस्वभाव हे उसी स्वभाव करिके रामजीकों मनाकिया- कि आप इस मृगकूं मारनेवास्ते मति जावो- लक्ष्मणकीविनयकों रामजी नहींमाने- और जायके मृग- कों मारतेभये ॥ २५ ॥

श्लो० आविर्भावंकदाकुर्वन्कदान्तर्ध्यानमेवच ॥ मा नप्रीत्याविप्रीत्याचधावन्वेगतरंहतः ॥ २६ ॥

भा-टी- – मृगने अभिमानकी प्रीति कभीथोरी कभीज्यादा- करिके भागता भयासोई मृगको दोडनाहे तथा गुप्त होनाहे- ॥ २६ ॥

श्लो- हतोहालक्ष्मणेतीवप्रोवाचमृगसत्तमः ॥ वि- वेकंचैवसंस्मृत्य तत्तनौप्रविवेशह ॥ २७ ॥

भा-टी- – मृगने मरतेवखत हासंतोषरूप लक्ष्मण मैने बहुतपाप किया सोआपक्षमाकरो- ऐसाशब्द बोलताभया- सोई लक्ष्मणको पुकारनाहे- तथा विवेक कोस्मरण करिके अभिमान रूप मारीच

शरीरकों त्यागिके रामजीकी शरीरमे मिलगया॥२७॥

श्लो॰ अहंकारकृता:सर्वेनमयावर्णितुंक्षमाः॥ते पितुर्मरणंदृष्ट्वारावणंचैवसंश्रिताः॥ चक्रुर्विनाश नंसर्वेसज्जनानांमहोद्यमाः॥२८॥

भा॰टी॰ - अभिमानरूपजो मारीचहै तिस्के पुत्रोंको वर्णन कर॰ नमें मेरीसामर्थ्य नहीहै॰ मारीचको मरण देखके मारीचके पुत्र जो बुरेकाजहैं सब इकट्ठा होके रावणकेपास जायके साधुवोंका नाश करने लगे॥२८॥

श्लो॰ निहत्यरामोमृगरूपधारिणंत्वचन्नलेभेमृ गदेहसंश्रिताम्॥ देहंत्यजन्हाखलुलक्ष्मणेति प्रोक्तं वचःश्रुत्यविसिस्मयेत्हृदि॥२९॥

भा॰टी॰ - रामजीने अभिमानरूप मारीचकों मारिके मृगाकीदे हकीखालनही पाए तथा मृगने देह त्यागते बखत लक्ष्मणकों पुकारताभया॰ उस शब्दकूं सुनिके रामजीके मनमें बडी विस्मय होगया॥२९॥

इतिश्रीवेदान्तरामायणे पं॰ शिवसहायबुधविरचि ते आरण्यकांडे मारीचवधे द्वितीयोमोक्षोपानः॥२॥

---

वरतन्तुरुवाच श्लोकः हालक्ष्मणेतिसंश्रुत्यजा नकीव्यग्रमानसा॥ दीपार्चिःपवनेनैव बभूवव्य॰ थितासती॥१॥

भा॰टी॰ - वरतन्तमुनि बोले हेसंवर्त सुनो॰ हालक्ष्मणऐसाशब्द सुनकेजानकी ने बिचार कियाकि अभिमान बडाबलवानहै॰ बडे॰ बडेयोद्धोंकूं जीतलिया॰ सो मेरेप्राणनाथजो विवेकरूप रामजी॰

तिनको भी जीतलिया सो दुःखी होके संतोषरूप लक्ष्मण को आ
पनी रक्षा कर्नेवास्ते बुलाते हैं॰ ऐसा विचारसें दुःखी होगई-जानकी॰
जैसा हवा करिके दीपकी जोति कांपती है तैसे ही जानकी दुःखी
होकर कांपनेलगी ।।१।।

श्लो॰ उवाचवचनंस्निग्धंकिंचिच्चलितपौरुषम् ।। ग-
च्छलक्ष्मणतेभ्राताराक्षसेनैवपीडितः ।।२।।

भा॰टी॰ थोरा लक्ष्मणकोंभी पुरुषार्थ चलायमान होरहाहै मारीच
की वचन सुनिके ऐसेजो लक्ष्मण तिनसें जानकी बोली हे लक्ष्मण
जलदी जाओ॰ तुमारे भाईकों राक्षस दुःख देताहै॰ ।।२।।

श्लो॰ त्वांसमाह्वयतेशीघ्रंप्राणांत्यक्ष्यामित न्विना ।।
उवाचलक्ष्मणोदेवीनैवंभवतिकर्हिचित् ।।३।।

भा॰टी॰ - दुःखीहोके वे तुमकूं पुकारते हैं॰ रामजीबिनामें मरजा
ऊंगा॰ लक्ष्मण बोले हे देवि रामजी कभी दुःखी नही होवैंगे॰ ।।३।।

श्लो॰ नहंतारंप्रपश्यामिरामस्यभुवनत्रये ।। तयो
क्तोलक्ष्मणस्तूर्णंमांगृहीतुंसमागतः ।।४।।

भा॰टी॰ - हे देवि तीन लोकमें रामजीकूं मारनेवाला कोई मैंनही
देखताहूं॰ ऐसी लक्ष्मणकी वचन सुनिके जानकीकी बुद्धि मली
न होगई सोई मलीन रूप ग्रहण कर्नेको जानकीने कहाकि हे-
लक्ष्मण तुमविचारते हो किविवेक रूप रामजीको अंतकाल हो॰
जावे तो हम जानकीकों लेलेवें सो भाई ऐसा नही होगा॰ ।।४।।

श्लो॰ एवमुक्तेतुजानक्यागतेदूरेचलक्ष्मणे ।। तिर
स्कारकृतेदूरे आजगामदशाननः ।। ५।।

भा॰टी॰ - ऐसी भेदरूप वचनजानकी के कहेसं ते लक्ष्मणरा
मजीके पासकूं चले तबजानकीनें लक्ष्मणको तिरस्कार किया॰

सोई दूरहै तिस दूरकूं लक्ष्मण गये तब रावण जानकीके पास-
आता भया-॥५॥

श्लो० महार्जवंचसन्यासंकृत्वागाद्दशाननः॥तस्मे
मभस्मनाछ न्नंतद्धुर्द्धनकमंडलुम्॥६॥

भा-टी- बड़ा कोमल स्वभाव सोई सन्यास है-तिस सन्यासकोरू
पधरिके जानकीके पास मनरूप रावण आया- उस कोमल स्वभा
में प्रेम सोई विभूतिहै- तिसविभूतिको देहमें लगायेहै- तथाउ
सी विभूतिमें स्नेह बढ़ाना सोई रावणको कमंडलुहै-॥६॥

श्लो० शौचंवस्त्रंचसंधृत्यशुद्धगैरेयरंजितम्॥भि
क्षांकपटप्रीतिंचय्ययाचेजानकीन्तदा॥७॥

भा-टी- - देहमें पवित्रता राखना सोई वस्त्रहै- शुद्ध स्वभाव सो-
गेरुहै उसीगेरुसें शौच रूप कपड़ा रंगेहै- ऐसा रूप धरिके कप
टरूप भिक्षा जानकीसें मागता भया॥७॥

श्लो० दयावर्द्धनंनिर्दयायाश्चत्यागन्ददौजानकी-
साधवेकन्दमूलंसा॥नजग्राहकामातुरोहर्तुकाम
स्तदाजानकींक्रूरवाक्यंसमूचे॥८॥

भा-टी- - तब जानकीने दयाको बढ़ाना रूप कंद निर्दयाकूं छो-
डनारूप मूल साधुजानके रावणकूं देनेंलगी- तब पहिले वर्णन
हुया जो काम तिस्कामकरिके आतुर होरहा है रावण- सो जान
कीकों हरण करनेकी इच्छा करिके जानकीकूं चिढ़ानेवास्ते खो
टीखोटी बचन बोलता भया॥८॥

श्लो० किंकरिष्यसिरामेण वनस्थेनस्कदुःखिना॥मां
भजस्ववरारोहेराक्षसानामधीश्वरम्॥९॥

भा-टी- - हे जानकी बनमे रहने वाले रामके संग तेरेकों कुछ सुख

नहीहै· राक्षसोंका मालक जो मैं हूं सो मेरी स्त्री तूं होजा·॥ ९॥

श्लो० इत्युक्त्वादर्शयामासस्वरूपंराक्षसाधिपः॥
पूर्वोक्तंबालकांडेच दशास्यम्विंशहास्तिकम्॥१०

भा·टी· - ऐसा कहिके जानकीकूं रावणने अपना स्वरूप दिखाया· कैसा स्वरूपहै बालकांडमे पहिले दशमुख वीशभुजा वर्णन भयाहै सोस्वरूप ॥१०॥

श्लो० तन्दृष्ट्वाजानकीभीताश्रुतपूर्वंखलंसती॥
उवाचधैर्यमालम्ब्ययदित्वंरावणः खलः॥११॥

भा·टी· - पहिले मुनियोंसें जानकीनें रावणको रूप सुनि रखा था· उसी रावणकूं देखके बहुत डरायके जानकी धीरज धरिके बोली हे दुष्ट जो तूं रावणहै ॥११॥

श्लो०क्षणंतिष्ठात्रमेभर्तासत्वरश्चागमिष्यति॥
नाशयिष्यतितेगर्वमित्युक्तश्चतयातदा॥१२॥

भा·टी· - तो एकक्षण हमारे सामने तूं खडारह हमारापति जलदी आवेंगे तो तेरे अभिमानको नाश करेंगे· ऐसी बचन जानकी· रावणको कहती भई॥१२॥

श्लो०जानकीमूर्द्धजांगृह्यरामपादाब्जसन्नतिं॥
करेणैकेनचोरुंचरामरूपनिरीक्षणम्॥१३॥

भा·टी· - तब रामजी के चरण कमल को वारंवार नमस्कारकीप्रीति सोई ईश्वरकी भक्तिजानकीकी चोटी है· तिस चोटीकूं एक हातसें पकडके तथा रामजीके रूपको वारं वार देखना· सोई जानकी की जंघाहै तिस जंघाको ॥१३॥

श्लो० द्वितीयेनाशुसंगृह्यस्वरथेस्थाप्यकामतः॥
ययावाकाशमार्गेणज्ञानशून्यस्तदाचसः॥१४॥

भा॰टी॰ -तिस जंघाकों दूसरे हातसें पकडके आपनी रथमें बैठा-
यके ज्ञानसें हीनजो हृदय सोई आकाशहै तिस आकाशमार्ग
करिके जानकीकों लेचला॰ ॥१४॥

श्लो॰ हारामराजीवदलायताक्षत्वयाविहीनावि
धिनाकृताद्यहम्॥ वियोगचिंतातवपादपद्म-
योश्चिरंसदातिष्ठतिमानसेमम॥१५॥

भा॰टी॰ - जानकीविलाप करतीहै हेरामजी ब्रह्मदेवने आपु-
करिके हमकू हीन करदिया॰ आपुके चरण कमलको बियोगमेरे
चित्तमे टिका रहेगा॰ ॥१५॥

श्लो॰ एवमादीनिबहुधाविलापानिचजानकी॥
कुर्वतीरथमध्यस्थारक्षोपतिविमर्दनम्॥१६॥

भा॰टी॰ - इसप्रकारको बहुत विलाप रावणके रथमें बैठी हुई जान
की करती भई॰ रावणको तथा दुष्टराक्षसों का नाश रूप विलाप॰
जानकी करतीहै ॥१६॥

श्लो॰ दुष्टकर्मोद्भवाम्प्रीतिंहठजांस्वपुरींखलः॥
सत्वरोगन्तुकामश्चलंकाराक्षससत्तमः॥१७॥

भा॰टी॰ - दुष्टकर्म सेउत्पन्न जो प्रीतिरूप हठ करिके ठरना ऐसी
जो लंकापुरी तिस्कों जानकीकों लेजानेकी इच्छा किया॥१७॥

श्लो॰ दुर्लक्षणोजटायुश्चदुर्ज्ञानोद्भवमामिषम्॥
दुर्वाक्यतुंडेनसदायोभुनक्तिनिरंतरम्॥१८॥

भा॰टी॰ - तब दुष्टजीवोंको लक्षणजोहै सोईजटायुनाम गीधहै
तथादुष्ट ज्ञान जैसे विचारना किचोरीमें धन कमाना॰ परस्त्री भो-
गना॰ इत्यादि चोर अनेक बुरेकर्म है तिन्हों करिके उत्पन्नजो क-
र्म सोई मांसहै॰ खोटा बचन बोलना सोईचोंचहै॰ ऐसे चोंच करिके

उस मांसकों रोज जटायु गीध खाताहै॥१८॥

श्लो॰ दुश्चेष्टेहाकृतीपक्षौतत्सुतौचरणौस्मृतौ॥ एतादृशोजटायुश्चकृत्वातेन स्वभाषितम्॥१९॥

भा॰टी॰ – दुष्टकर्ममें चेष्टा तथा दुष्टकर्म कर्नेकी इच्छा येदोनो जटायुके पक्षहै॰ इनदोनों चेष्टातथा इच्छाके जो पुत्र नरकमें पडना तथा कुयोनिमें जन्मलेना येदोनो जटायुके दोपग है ऐसा जटायु रावण सें संभाषण करिके॥१९॥

श्लो॰ पातितोरावणस्तेनस्ववाक्यसंगरेरथात्॥ पुनश्चोत्थायवेगेन गृहीत्वाजनकात्मजाम्॥२०॥

भा॰टी॰ – सुंदर वचनरूप युद्ध करिके रावणकों रथसें जमीनमें जटायुने गिराय दिया॰ तब रावण जलदीउठके जानकीकों पकडिके रथ मेंबैगयली क्यूंकि जब रावणकों जटायुने गिराय दिया तबजानकीभी रथसें पडगयीथी॰ भागनेवास्ते सोफिर पकड लिया॥२०॥

श्लो॰ पक्षौद्वौतस्यखड्गेन छित्वागात्त्वरितःपुरीम्॥ स्वैश्वर्येनिश्चलाबुद्धिर्नमेमे कर्हिचित्कदा॥२१॥

भा॰टी॰ – रावणने तरवारसें जटायुके दोनोपक्ष काटके लंकाकूं जाताभया॰ मनरूपरावण ऐसा बिचारताहै कियह मेराऐश्वर्य कभी॰ नाशकूं नही प्राप्ति होवेगा॥२१॥

श्लो॰ नाशमेष्यतिसाशोकवाटिकारावणप्रिया॥ तदुद्भवाःसुखावृक्षास्तस्यांजनकनंदिनीम्॥२२॥

भा॰टी॰ – नाशकूं नही प्राप्ति होवेगा ऐसीजो रावणकी बुद्धि सोअशोक बागहै॰ रावण कोंबडीप्यारीहै॰ उसबगीचामें उत्पन्न भयेजो सुख सोवृक्षहै॰ तिस बगीचामें जानकीकूं॥२२॥

श्लो॰ स्थापयामासदासीभिर्निन्देर्षासहनादिभिः॥

कारयित्वाऽवनंतस्याश्चतुर्दिक्षुनिशाचरः॥ २३॥

भा·टी· – जानकीकूं अशोकबगीचामें रिकाताभया· क्या करिके ऐसीराक्षसीयोंसें जानकीकी रक्षा करायके· कैसीराक्षसीहै परजीवकी निंदा· जीवकों स्करवी देखके अपनी हृदयमें दुःखी होना·जीवमात्रसें प्रीति नहीराखना इनआदिऔरजो बहुत ऐसी मतिसोराक्षसी है

श्लो॰ निंदेर्षासहनासूया दुर्वांछाद्याश्चकोटयः॥

दास्यस्तस्यसमाख्यातावर्णितुन्नेवताः क्षमाः॥ २४॥

भा·टी· – दूसरे जीवकीनिंदा ईर्षा असहना· जीवउपकार करेतोभी निंदाकरना· जीवोंकों दुःख देनेकी इच्छा रूप इन्होंआदि गिनतीरहित इतनी रावणकी दासीहै॥ २४॥

श्लो॰ मृगंहत्वारघुश्रेष्ठो निवृत्तः स्वाश्रमंप्रति॥ मार्गे

दृष्ट्वातदायातं लक्ष्मणंविह्वलोभवत्॥ २५॥

भा·टी· – अभिमानरूप मृगकों मारिके रामजी अपने आश्रमकूं चले तोरस्तामें लक्ष्मणको आते देखके रामजी विह्वल होगये॥ २५

श्लो॰ उवाचाधैर्यसंयुक्तं वचनंरघुनन्दनः॥ कस्मा-

त्तातत्वयात्यक्ताजानकीममवल्लभा॥ २६॥

भा·टी· अधीरज युक्त वचन रामजीनें लक्ष्मणसें बोले· हे भाई हमारी प्राणसें प्यारी जानकीकों त्यागिके क्यों आए॥ २६॥

श्लो॰ उवाचलक्ष्मणः सर्वं कारणन्तत्सविस्तरं॥ सह

तेनैवसंयातोरामः स्वाश्रममंडलम्॥ २७॥

भा·टी· – लक्ष्मणनें सब कारण बिस्तार पूर्वक कहते भये· तबरामजी लक्ष्मणसहित अपने आश्रमपर आए॥ २७॥

श्लो॰ विलोक्यजानकीहीनं विललापाकुलेंद्रियः॥

गांभीर्य्यस्थैर्य्यस्यास्तिक्यैचलत्वंकिंचिदात्मनः॥ २८

भा·टी· – रामजी अपने आश्रम पर आए सो जानकी करिकेही न देखते भये· तब अपनी शरीरकी स्थिरतासे तथा गंभीर स्वभावसें तथा अपने धर्मसें किंचितमात्र चलायमान होगये· सोई· विलापहै ॥२८॥

श्लो॰ एवंमहाविलापश्चरामलक्ष्मणसंस्कृतः॥गृद्ध्न्निपतितन्दृष्ट्वाचक्रेप्रश्नोत्तरंहरिः॥२९॥

भा·टी· – ऐसाविलाप राम लक्ष्मण करतेभये· गीधकों भूमिमें पडा देखके उससें प्रश्नतथा उत्तर करते भये ॥२९॥

श्लो॰ अहंदुर्लक्षणोगृद्धःपातितोरावणेनवै॥जानकीरक्षणेशक्त्स्त्वद्दर्शनजिजीविषुः॥३०॥

भा·टी· जटायु बोले हेरामजी, दुष्टोंको लक्षण रूप मैंगीधहूं· जटायु मेरा नामहै· जानकीकीरक्षा करनेमें मैंने कुछ पराक्रम किया तब मेरे कों रावणनें पृथ्वीपर गिरायदिया· आपके दर्शनकी इच्छा करिके अबतक मैं जीता रहाहै ॥३०॥

श्लो॰ इत्युक्त्वातत्यजेप्राणंगृद्धोरामसमीपतः॥रचित्वाप्रेमकाष्ठेनचितामास्थाप्यतम्प्रभुः॥३१॥

भा·टी· – गीधने ऐसे बचन रामजीसें कहे पीछे प्राणत्यागताभया· तब रामजीको प्रेम जटायुपर बहुतथा तथा उसीप्रेमरूप काष्ठ करिके चिता बनायके उसी चितामें जटायुकूं बैठायके ॥३१॥

श्लो॰ ज्ञानाग्निनाचतन्दग्ध्वाभोजयामासपक्षिणः॥तज्जातिजान्महाक्रूरान्दुर्मर्षादीन्सहस्रशः॥३२

भा·टी· – ज्ञानरूप अग्नीसें जटायुकूं जलायके उसकीजाति जोदुष्ट कर्मकी भावना· तिस्मे उत्पन्न भयेजो बडेक्रूर २ कुःखदेने वाले अमर्ष कहें दूसरेके सुखकों देखके जलना इनआदिलेके इनमेजो सं-

दरपक्षी बडे दुष्टोंमें दुष्ट तिनकूं बहुत हजार पक्षियोंकू रामजीनें भोजन करवाते भये ॥३२॥

श्लो. सदोपदैशिकैर्धर्म्मैर्भक्ष्यभोज्यैश्चभूरिशः॥
भ्रेमतुःकाननेवीरौसीतान्वेषणतत्परौ ॥३३॥

भा.टी.--रामजीने दुष्ट कर्मोंकों ईश्वरके भजन रूप उपदेश देते भये. सोई उपदेश अनेक प्रकारके पकवान हैं. तिसकरिके पक्षियोंकों भोजन करायके जानकीके शोधनेवास्ते दोनोभाई वनमें भ्रमणकरते भये ॥३३॥

श्लो. सन्निंदनकबंधेनवेष्टितौरामलक्ष्मणौ ॥ अ-
सत्प्रशंसनारागभुजाभ्यान्दैवयोगतः॥३४॥

भा.टी.--सुंदर धर्मकी निंदाकरना. ऐसा दुष्टकर्म सोई कबंधहै. तथा दुष्टकर्मकी तारीफ कर्ना और उसी तारीफमें स्नेहकर्ना येदो कबंधकी भुजाहै. सो दैवयोगसें राम लक्ष्मणकों कबंधने आपनी दोनो भुजाकेबीच बांधलिया. ॥३४॥

श्लो. एकंचिच्छेदरामस्तुशिक्षाखड्गेनतद्भुजम्॥
सूक्तासिनाद्वितीयञ्चचिच्छेदलक्ष्मणोभुजम्३५

भा.टी.- कबंधकों रामजीने सुंदर धर्म शिखाते भये. सोई खड्ग है तिसखड्ग करिके रामजी एकभुजा काटते भये. और सुंदर वचन रूपतरवारसें दूसरी भुजा लक्ष्मण काटते भये ॥३५॥

श्लो. छिन्नौभुजौयदातस्यतदाप्राणांससर्जह ॥हिं
साविरहितैःकाष्ठैर्दयारूपाचिताकृता॥३६॥

भा.टी. जब कबंधकी दोनो भुजा कटगई तब पहिले कथितजो कबंधहैसो प्राणछोडता भया. तब रामजीनें कबंधकूं जलानेवास्ते जीवहिंसासें हीनजोकर्म. जैसे कथाश्रवण. मौनरहना. दुष्टकीसंगत्यागना

इत्यादि सब काष्टहै· तिसकाष्ठसें चिता बनायके कैसीचिताहै· दयारूप·॥३६॥

श्लो॰ रामेणसहह्भ्रात्रैवकृपाग्निदाहितोऽसुरः॥स द्रूपधारीविमलो ज्ञानानंदोबभूवह॥३७॥

भा·टी· - लक्ष्मणसहित रामजी कबंधकेऊपर कृपाकरते भये· उसी कृपारूप अग्नीसें कबंधको जलातेभये· तब कबंध सुंदर रूपधारण करिके ज्ञानमें आनंद भया॥३७॥

श्लो॰ उवाचवचनंस्निग्धंजानकीप्राप्तिकारणे॥अग्रे तिष्ठतिराजेन्द्रशबरीभिल्लनंदिनी॥३८॥

भा·टी· - जानकीके प्राप्ति होनेकी उपायरूप बचन बडी कोमल कबंध रामजीसें बोलाकि हे राजोंके इंद्ररूप रामचंद्र इहांसे अगाडी थोडी दूरपर भीलकी कन्या शबरी रहतीहै·॥३८॥

श्लो॰ तस्याश्रमंसमागच्छसातेसर्ववदिष्यति॥इत्युक्त्वासगतः स्वर्गस्करेंद्रभुजपालितम्॥३९॥

भा·टी· - तिस शबरीके आश्रमपर आप जावो· तब जानकीके मिलनेकी संपूर्ण वार्ता शबरी आपसें कहेगा· ऐसा रामजीसें कहिके ईश्वरके शरीरमें जो स्वर्गलोकहै इंद्र करिके रक्षाहो रहीहै· ऐसे स्वर्गको कबंधगया॥३९॥

श्लो॰ निशम्यरामोपिकबंधभाषितंसलक्ष्मणोलक्ष्मण सेवितांघ्रिः॥जगाम शीघ्रंशबरीशुभालयंश्रीजानकी जीवनवल्लभोहरिः॥४०॥

भा·टी· रामजीकबंधकीवचनसुनिके जलदी शबरीके आश्रमको जातेभये·

इतिश्रीवेदान्तरामायणेआरण्यकांडेशिवसहायबुधविरचितेसंवर्तवरतन्तुसंवादे तृतीयोमोक्षोपानः॥३

अथ किष्किंधा कांड प्रारम्भः

वरतन्तुरुवाच श्लो॰ कबंधवचनंश्रुत्वारामोलक्ष्मणसंयुतः॥ पुनरन्वेषमाणश्चजानकीम्विरहातुरः॥१॥

भा॰टी॰ – वरतन्तु मुनि बोले लक्ष्मण सहित रामजीनें कबंधकीवचनकनिके दुःखी होयके फिरि खोटे स्वभाव रूप बनमें भ्रमण करतेभये॥१॥

श्लो॰ महामोहो वनचरः सद्धर्मपशुहिंसकः॥ दुहितातस्यविप्रेन्द्रचंचलामतिरुत्तमा॥ शबरीसासमाख्यातासज्जनानाञ्चसंगतः॥२॥

भा॰टी॰ – हेविप्रेंद्र स्नान ध्यान दान जप पूजा विनय नमस्कार इन आदि औरजो अनेक प्रकारके सुंदरधर्म तो सब पशु भयेहैं॰ तिनकों मारनेवाला जो बडा मोह सोई भील है॰ जीवोंकी चंचल मति उसकी कन्याहै॰ शबरी उसका नामहै॰ सुंदर२ धर्म सो ब्राह्मणहै॰ तिन ब्राह्मणोंकी संगत कों शबरी करती भई॥२॥

श्लो॰ चकाररामचन्द्रस्यभक्तिंसाशबरात्मजा॥ तदाश्रमंजगामाशुरामोलक्ष्मणसंयुतः॥३॥

भा॰टी॰ – उस संगतिके प्रभावसें रामजीकी भक्ति शबरी करतीभई॰ तिस्के आश्रमपर लक्ष्मण सहित रामजी जातेभये॥३॥

श्लो॰ शबरीपूजयामासरामंसभ्रातृकंतदा॥ स्थैर्यस्वभावसाहित्यैःप्रार्थनेनविशेषतः॥४॥

भा॰टी॰ – शबरीको स्वभाव धर्ममें बहुत स्थिरहै॰ अनेक दुःखपरे॰ तौभी॰ भगवानको भजनरूपधर्म छोडतीनही उसधर्मरूप पूजन कीसामग्री करिके तथा बहुत प्रार्थना करिके लक्ष्मण सहित राम

जीको पूजन करती भई। ॥४॥

श्लो० शरीरंरामप्रेमाग्नौ दहन्वाक्यमुवाचसा॥ रा-
माग्नेनलिनीम्पश्यसरश्चैवतदुद्भवम्॥५॥

भा॰टी॰ – रामजीको प्रेम शबरीके हृदयमें बहुतहै। उसी प्रेमरूप अ-
ग्निकरिके देहजलायके बोलती भई। हे रामजी। आपकी रस्तामें ए-
कतलाई है। उस्का पंपानामहै। तथा उसी तलाईसें उत्पन्नभया एक
तलावहै। उस्का पंपासर नामहै इन दोनोंकों आप देखोगे॥५॥

श्लो० किष्किंधांचपुरींरम्याम्प्रवर्षणगिरिन्तथा॥ आ-
स्तेतस्यगिरेर्मूर्ध्नि सुग्रीवःकपिसत्तमः॥६॥

भा॰टी॰ – तथा बडी सुंदरिकिष्किंधापुरी तथा प्रवर्षण पर्वत इनकूं-
आप देखोगे। प्रवर्षण पर्वतके शिखरपर सुग्रीव नाम कपि टिकाहै।

श्लो० तंगच्छजानकीनाथसस्तेकार्य्यंकरिष्यति॥
इत्युक्त्वास्वतनुन्दग्ध्वागतास्वर्गंहृदालये॥७॥

भा॰टी॰ – हेजानकीनाथ तिस सुग्रीवको दर्शन देनेवास्ते आपजा-
वोगे तब सुग्रीव आपको सब काम करेगा। ऐसा रामजीसें कहिके
सबरी शरीरको भस्म करिके आपने हृदयमेंजो स्वर्गपुरीहै। उस-
स्वर्गपुरीकों गई॥७॥

श्लो० रामोपित्वरितम्प्रापनलिनीम्फुल्लपंकजाम्॥
शांतिरूपांधैर्यजलांनिर्म्मलज्ञानसन्तटाम्॥८॥

भा॰टी॰ – तथा रामजीभी जीवोंकी शांतिरूप पंपानाम तलाईकों।
जाते भये। कैसी तलाईहै। धीरजरूपजल करिके भरीहै। तथा मल
रहितजोज्ञान सोई तटहै। जिसतलाईके॥८॥

श्लो० निश्शंकपंकजांस्वच्छांसरश्चैव महासुरवम्
नपुनर्जन्मतोयेनसंयुतंतच्चराघवः॥९॥

भा०टी० - कामआदि राक्षसोंकी भयसे हीन जो स्वभाव पंपाकोसोई कमलहैं बहुत निर्मल तलाईहै एसी जो शांतिरूप तलाईको स्रव जोहै सोई पंपासर नाम तलावहै शांतिको सेवन किहेसें - वारंवार जन्म नहीं होना सोई जलहै तिस जलसें तलाव भराहै ९

श्लो० स्नानंचकारतत्तोयेलोकविस्तारणम्प्रभुः ॥ प्रवर्षणंगुरुध्यानंशिखरंतद्धिचिंतनम् ॥ १० ॥

भा०टी० - तलावके सुयसको लोक२मे विस्तार रामजी करेंगे सोई - यश विस्ताररूप स्नान उस तलावमें रामजी करते भये गुरुको प्रतिदिन ध्यान कर्नो सोई प्रवर्षणनाम पर्वतहै रातदिन गुरुदेवकी वचन चिंतवन करना सोई प्रवर्षण पर्वतको शिखरहै ॥ १० ॥

श्लो० गुरूपदेशस्सुग्रीवस्तद्वियोगेनवालिना ॥ त्रासितोदुःखितोऽत्यन्तंसुचिरंतापतापितः ॥ ११ ॥

भा०टी० - गुरुदेवको उपदेश सोई सुग्रीवहै गुरुको वियोग सोई वालिहै तिस वालि करिके सुग्रीव बहुत दुःख तथा त्रासकों प्राप्ति भयाहै तथा बहुत दिनतक वालिनें सुग्रीवकों आपने तेज रूपअग्निसें जलाता भया क्योंकि सब दुःख साधुलोग सहि लेतेहें परंतु गुरुको वियोग क्षणमात्रभी नहीं सह सक्के ॥ ११ ॥

श्लो० निरीक्ष्यवीरावायान्तौप्रेषयामाससत्वरम् ॥ बलवन्तंमहावीरंहनुमंतंतदन्तिके ॥ १२ ॥

भा०टी० - तव प्रवर्षणके शिखरपर बैठाजो सुग्रीव सोरामलक्ष्मणकों आते देखके जलदी वीरोंमें बडा वीर ऐसाजो हनुमान तिस्को रामजीके सामने भेजत्ते भये ॥ १२ ॥

श्लो० तृष्णांजनेयंसहसामोहंस्वाससमुद्भवम् ॥ सुखेच्छाहर्षलांगूलंतन्मग्नादिलसत्तनुः ॥ १३ ॥

भा॰टी॰ - कैसे हनुमानहै तृष्णातो अंजनीहै तथा जीवकी, शरीरकी स्वासा सोवायुहै॰ इनदोनोंके संयोगसें उत्पन्न भये जो॰ हनुमान इनको मोहनामहै॰ और मोहरूपभी है॰ रामजीके प्रेमके सुख प्राप्ति होनेकी इच्छामें हनुमानकों हर्ष बहुत होना है सोई हर्ष हनुमानकी पुच्छ आदिसब अंगहै तिस्के हर्षमेंरातदिन उन्मत्त रहना आदिजो कर्म जैसा रामजीकी सेवा

इसीप्रकारके कर्ममें मस्तरहना सोई हनुमानकी शरीरकी॰ शोभाहै ॥१३॥

श्लो॰ किंचित्कुशलविप्रस्यधृत्वारूपमगात्कपिः॥
रामान्तिकम्प्रगच्छन्तम्प्रोवाचकपिसत्तमः॥१४॥

भा॰टी॰ थोरासुखसोईब्राह्मणको रूपधरिके रामजीके पास हनुमानजाते भये॰ रामजीके दर्शन को प्रेम सोई हनुमानको रामजीके पास जानाहै॰ रामजीके पास को जातेजो हनुमान तिससें सुग्रीव बोले॰

श्लो॰ यदीमौवालिनाप्रेष्यौदुष्टौसम्भ्रमविभ्रमौ॥
तदातेचेतनम्प्राप्य त्यक्ष्यामीदमहंगिरिं॥१५॥

भा॰टी॰ - जोयेदोनो भ्रम तथा विभ्रम होवे और बालिके भेजे आतेहोवे तब तुमारी चेतन रूप जो अनुशासन तिस्कूं पायके मै इस पर्वतकूं छोडके भगजाऊं॥१५॥

श्लो॰ इत्युक्तःकपिराजेनसत्वरंहनुमान्कपिः॥ आजगामातिहर्षेणरामपादाब्जषट्पदः॥१६॥

भा॰टी॰ - ऐसा सुग्रीवने हनुमानसें कहे॰ हनुमान सुनिके रामजीकेपद कमलहै तिस्के रस लेनेमें भ्रमररूप हनुमान सो बडे हर्षसें रामजीके पास आते भये॥१६॥

श्लो॰ नमस्कृत्यचद्वौवीरौ कौयुवांजगतीपती॥ मुनि

वेषेणपृथिवींचरन्तौस्वेच्छयाबली ॥ १७ ॥

भा·टी· –राम लक्ष्मणकों नमस्कार करिके हनुमान पूछते भये आप दोजने कौनहो· ईश्वरकी प्रीतिके पतिहो मुनिको रूपधरि के आपनी इच्छासे पृथ्वीमें भ्रमण करि रहे हो ॥ १७ ॥

श्लो० हनुमद्वचनंश्रुत्वावर्णयामासलक्ष्मणः ॥ श्रुत्वातद्वाक्यमतुलंशमरूपंकपीश्वरः ॥ १८ ॥

भा·टी· –हनुमानके बचन सुनिके सब चरित्र लक्ष्मण कहते भये· शम· दम· यम नियम आचार आदि कर्म लक्ष्मण को कहनाभया· तिस शम रूप लक्ष्मणकी बचनको हनुमान सुनिके ॥ १८ ॥

श्लो० कथयामाससर्वंहिसुग्रीवापत्तिकारणम् ॥ युवयोर्भवितामैत्रीनिःशंकायदिराघव ॥ १९ ॥

भा·टी· –गुरु उपदेशरूप सुग्रीवकी संपूर्ण विपत्ति हनुमान राम जीसें कहते भये· हनुमान बोलेकि हेरामजी, आपतो विवेकहो और सुग्रीव गुरुकोउपदेस है दोनोजनेकी मिताइ जब होवै १९

श्लो० तवतस्यचसर्वंहिकार्यंभवतिशोभनम् ॥ इत्युक्त्वातौसमारोप्यस्वपृष्ठेरघुनंदनौ ॥ २० ॥

भा·टी·तब सब तुमारा तथा सुग्रीवका काज होवे· गुरुके वियोग रूप वालिकोतो आप मारो· और मन रावणके मारनेमें सहाय· सुग्रीव करेगा· ऐसा हनुमान कहिके रामजीके प्रेमको सुखतिस्के हर्षरूप हनुमानकी शरीरकी शोभारूप पीठपर रामलक्ष्मण कों बैठायके सुग्रीवकेपास को चलते भये ॥ २० ॥

श्लो० जगामचंचलमतिर्मग्नपृष्टेकपीश्वरः ॥ नयित्वा यत्रसुग्रीवस्तत्रवीरावबेशयत् ॥ २१ ॥

भा·टी· –जिस शिखरपर सुग्रीव विराजेथे उसीस्थानपर राम ल-

क्ष्मणकों हनुमान प्राप्ति करतेभये श्लोक वीस तथा एकवीसको अर्थ सामिलहै कारण यह श्लोक युग्म है इसवास्ते॥ २१॥

श्लो॰ चकारमैत्रीन्दुर्भेद्यान्दुर्जनैरिन्द्रियोद्भवैः॥ मध्येकृत्वागुरोर्भक्तिमग्निन्द्वौ गुरुभावनाम्॥ २२॥

भा॰टी॰ - रामजी तथा सुग्रीव अपनीअपनी गुरुदेवकी भावना रूप मित्रता करतेभये॰ दुष्ट इन्द्रियों करिके उत्पन्नजो बुरे कर्म सो सब दुर्जनहै तिन्हो करिके दुःखसे काटवे योग्यहै॰ सहजमें नही कटसकेगा गुरुदेवकी भक्ति रूप अग्निको रामजी अपने तथा॰ सुग्रीवके वीचमें रखके मित्रता करतेभये॰ राम सुग्रीवकी निश्चय सोई वीचहै॥ २२॥

श्लो॰ जांववान्जल्हषेतत्रमायाचेष्टोतिदुःसहः॥ तस्यच्छायास्वभावेन नलनीलौमहाबलौ॥ लघुदीर्घौतदाकारौचक्रतुर्हर्षमुत्तमं॥ २३॥

भा॰टी॰ - मायाका विचार सोई जांववानहै॰ बड़ाकठिणहै सो राम सुग्रीवकी मित्रता देखके खुशी भया॰ तथा जांववानकी छायाको स्वभाव दोप्रकारकोहै येक बडा दूसरा छोटा सो नलनीलहै॰ सो भी वडे हर्षकों प्राप्ति भये॰॥ २३॥

श्लो॰ हिंसापराधम्वसनन्द्विजभावंचरावणे॥ भूषणंजानकीत्यक्तन्दर्शयामासवानरः॥ २४॥

भा॰टी॰ - रावण ब्राह्मणहै तिस्में ब्राह्मणको भाव तथा ब्राह्मण॰ मारनेसे ब्रह्म हत्या होतीहै येही दोनो गहणा तथा वस्त्र जानकी के भये है इनदोनोको पेरुर रावणकी रथमें बैठीजो जानकी त्यागिगयीथी॰ कारण रावणको ब्राह्मण नही मानना॰ येतो चंडालहै॰ तथा रावणके मारेकी हत्याकोभी नहीं डरना ऐसा वस्त्र भूषण सु

ग्रीवने रामजीको दिखातेभये॥ २४॥

श्लो॰ दृष्ट्वातज्जानकीवस्त्रंभूषणंरघुनन्दनः॥तच्चिं तनविलापंचतत्क्षणेकृतवान्प्रभुः॥२५॥

भा॰टी॰ - पहिलेश्लोकमें वर्णन भया जोगहना वस्त्र जानकीको तिस्कों रामजीने अपने नेत्रोंसे देखिके जानकीकी चिंता रामजी रात दिन करतेभये सोई रामजीको विलापहै ॥२५॥

श्लो॰ पश्चात्पप्रच्छसुग्रीवंकस्माद्वससिकानने॥ इतिपृष्टःसमारेभेस्वकार्यकथनंकपिः॥२६॥

भा॰टी॰ -ऐसा विलाप करिके पीछे सुग्रीवसें रामजी पूंछतेभये कि दुःखभावरूप वनमें तुम क्यों बसतेहो॰ रामजी ऐसा पूछे तब सुग्रीवने आपनी हाल कहने लगा॰ ॥२६॥

श्लो॰ उवाचसर्वकपिसत्तमस्तदास्वकर्मदुःखब हुतापवर्द्धनम्॥ चित्तंसमाधायरघूत्तमस्तदाशु श्रावसर्वकपिवर्यवर्णितम्॥२७॥

भा॰टी॰ - बहुत संतापकी वृद्धि कर्नेवालाजो अपना कर्म है तिस कर्मको गुरुको उपदेसरूपजो सुग्रीवहै सोसब चरित्र रामजीसें कहताभया॰ और विवेकरूप रामजीभी॰ चित्तको स्थिर करिके सुग्रीवकी हाल सुनतेभये॥ २७॥

इतिश्रीवेदान्तरामायणेकिष्किंधाकांडेपं॰ शिवस हायबुधविरचितेसम्वर्तवरतन्तुसंवादेसुग्रीवराम चंद्रविलापेप्रथमोमोक्षोपानः॥१॥

---

वरतन्तुरुवाच श्लोकः विवेकरामचन्द्रेणपृष्टः प्रोवाचराघवम्॥ सुग्रीवोदुःखितोत्यन्तंरामं

सत्यपराक्रमम् ॥ १ ॥

भा॰टी॰ - वरतन्तुमुनि फिरबोले॰ रामजीसें पूछाजो सुग्रीव सो॰ बहुत दुःखी होके रामजीसें बोलता भया ॥ १ ॥

श्लो॰ वालिनश्चममोत्पत्तिंकपीनांचैवविस्तृतम् ॥
अयोध्याप्राप्तराज्याय मुनिस्तेकथयिष्यति ॥ २ ॥

भा॰टी॰ - हेरामजी, जब सुमति रूप अयोध्यामें आप राजगादी पर बैठोगे तब कोई मुनिने बालिकी तथा मेरी तथा सब बानरोंके जन्मकी कथाकहेंगे ॥ २ ॥

श्लो॰ ममभ्रातारघुश्रेष्ठवालिर्ज्येष्ठोतिबुद्धिमान् ॥
ब्रह्मणास्थापितोराज्ये कपीनांरघुनंदन ॥ ३ ॥

भा॰टी॰ - हेरामजी गुरुको उपदेश रूपतो मैंहूं सुग्रीव मेरानामहै और मेरा बडाभाई गुरुसें वियोग होताहै सोवह बालिनामहै॰ बालिको कर्मतो मेरे जन्म पीछे होताहै परंतु वालितो मेरेपेस्तर जन्माहै॰ क्योंकि संयोगके पहिलेही वियोग जन्मताहै॰ सो ऐसेबालिको ब्रह्माने बानरोंका राजाकिया॰ ॥ ३ ॥

श्लो॰ मनुष्यभावायेसर्वे गुरौ तेकपयःस्मृताः ॥ मनुष्यभावकर्माणिचासंख्यानिचचंचलाः ॥ ४ ॥

भा॰टी॰ - जोमनुष्यको कर्म अनेक प्रकारकोहै॰ जन्म मरण हानि लाभ॰ दुःख सुख इन्ह आदि औरजो बहुत कर्महै सो सब गुरूमें देखना॰ ऐसे अनेक प्रकारके स्वभाव सोई गिनतीसें हीन वानहै ॥ ५ ॥

श्लो॰ गुरौकुभावनालोकास्तेऋक्षाल्हदिजा मुने ॥
गुरौदुर्बुद्धिरत्यन्तंसाकिष्किंधापुरीप्रभो ॥ ५ ॥

भा॰टी॰ - और जुवारी, चौर, व्यभिचारी, नसेबाज, परनिंदक, रूपि

ए॰ इनआदि और जो अनेक बुरेकर्म हैं सो सब ये लक्षण गुरूमें देखना॰ सोई ऋक्ष हैं॰ तथा गुरुमें बहुत खोटी बुद्धि कर्नी सोई बुद्धि किष्किंधापुरी है॰ ॥५॥

श्लो॰ तस्यांस्थितोमहाबुद्धिर्वालिर्विगतकल्मषः॥ यावत्त्वबलसामर्थ्यंतावद्दुर्मतितांगुरौ॥जीवा- नांकारयामासतच्चर्क्षकपिशासनम्॥६॥

भा॰टी॰ – तिस किष्किंधापुरीमें टिकिके बड़ाबुद्धिमान् पापसें रहित ऐसाजो वालि सो वानरोंका राज कर्ता भया॰ जहांतक गुरुके वियोग रूप वालिको जोर चला तहांतक जीवोंकों गुरुमें॰ खोटीमति कराय दिया॰ ऐसा बानरोंकों तथा ऋक्षोंको राजकरता भया॥६॥

श्लो॰ तस्यभार्यारघुश्रेष्ठतारानाम्नीशुभावलिः चिंतागुरुवियोगस्यतस्यांजातोऽगदःसुतः ७

भा॰टी॰ – हेरामजी गुरुके वियोग कीचिंता सोई वालि कीस्त्री है तारा उस्का नामहै॰ तिसतारामें बालिके अंगदनाम पुत्रभया

श्लो॰ उपायोगुरुदेवस्यवियोगशमनस्यच॥ मम भार्यामहाराजरुमानाम्नेतिविश्रुता॥ गुरोराज्ञा सदाग्राह्यासाममप्राणवल्लभा॥८॥

भा॰टी॰ –गुरुके वियोगकी शांति करनेकी उपायजो है सोई अंगद है॰ हेमहाराज नित्य गुरुकी आज्ञा विनाविचारे ग्रहण करना - येनहींविचारनाकि ये आज्ञागुरु खोटी देतेहैं॰ या भली देतेहैं॰ ऐसीमति सो मेरी स्त्रीहै॰ रुमा उस्कानामहै॰॥८॥

श्लो॰ एवंवालिर्महावीरश्चकारराज्यमुत्तमम्॥ क पीनांचिरकालंच ममापिप्रीतिवर्द्धनः॥९॥

भा०टी० - इसप्रकारसें वालिनें बहुत दिनतक कपियोंका राजा होकर राजक्रिया तथा मेरीभी प्रीति बढाई ॥ ९ ॥

श्लो० एकदादुंदुभिर्नामराक्षसोरघुनंदन ॥ आज गामनिशामध्ये वालिंजेतुन्निशाचरः ॥ १० ॥

भा०टी० - हेरघुनंदन एकदिन रात्रिमें वालिको जीतने वास्ते दुंदुभी नाम राक्षस आताभया ॥ १० ॥

श्लो० अभिमानोगुरोराम दुंदुभिर्बलवत्तरः ॥ गुरौमानस्ययाप्रीतिः सानिशारघुनंदन ॥ ११ ॥

भा०टी० - जीवोंको गुरुमें अभिमानकि सब संसार छोराहे औ रहमारेगुरु बडेहे ऐसो मान सोई दुंदुभीहै बडाबलीहै और उसी गुरूकेअभिमानकी प्रीति सोई रात्रिहै ॥ ११ ॥

श्लो० तत्सोख्यांध युतामध्यंसौख्यान्धहर्षकारणम् ॥ दुंदुभिः क्रोधसंयुक्तोऽथाजुहावकपीश्वरम् १२

भा०टी० - उसीगुरुदेवके अभिमानकी प्रीतिमें सुख मानना सोई अंधकारहै तिसकरिके रात्रियुक्तहै उसी प्रीतिके सुखमें बडा हर्षमानना सोई अर्ध रात्रिहै ऐसाजो दुंदुभी राक्षस सो क्रोधक रिके वालिकू पुकारने लगा अरे दुष्ट गुरुके वियोगरूप वालि तू ने बहुतसे जीवोंको गुरुसेवासें दूर करिके बैठाहे सो तेरेकों मा रिके सबजीवोंकी गुरु देवसें मुलाकातकराऊंगा ॥ १२ ॥

श्लो० युद्धार्थेस्वस्वकार्यार्थेतच्छ्रुत्वाकपिसत्तमः ॥ आगत्यत्त्वरितंवीरोजघानैकेन मुष्टिना ॥ १३ ॥

भा०टी० - ऐसे शब्दकों सुनिके वालि तोजीवोंको गुरुसें वियोगकर नेवास्ते और दुंदुभी जीवोंको गुरुसें मिलाप कराने वास्ते युद्ध करते भये वालिनें एक हातकी मुट्ठी करिके दुंदुभीकों मारने लगा ॥ १३

श्लो० ताडितोमूर्खवतामुष्ट्यादुद्रावादवेगतः॥
स्वगुहांगर्वबुद्धिंवैआविवेशत्वरान्वितः॥१४॥

भा॰टी॰ -जीवोंकी मूर्खबुद्धि सोई वालिके हातकी मुष्टिहै तिस करिके मारागयाजो दुंदुभीहै सो बडी बेगसें भागिके गुरुके अभिमान रूप दुंदुभीकी बुद्धिजोहै सोई दुंदुभीकी गुहाहै॰ तिस गुहामें घुसगया॥१४॥

श्लो॰ वालिर्विवेशक्रोधेनतंहन्तुंतांगुहांस्कुधीः॥
भ्रातृस्नेहपरीतेनमयापिगमनंकृतम्॥ मांस्था-
प्यसोगुहाद्वारेसत्संगतिविवर्जिते ॥१५॥

भा॰टी॰- दुंदुभीकों मारनेवास्ने वालिभी उस गुहामें प्रवेशाकरताभया॰ भाईको स्नेह जोहै सोई मेरागमनहै॰ इस प्रकारसें मैंभी वालिकेपीछे२ जाताभया॰ सत्संगतिसें वर्जित जो कर्म सोई- गुहाको दरवाजाहै॰ तिस दरवज्जेपर वालिने मेरेकूंटिकायके॰

श्लो॰ तत्रयुद्धंकृतंतेनवालिनाचपरस्परम्॥ स्थि
त्वाहंमासमेकञ्चभ्रातृस्नेहस्वरूपिणम्॥१६॥

भा॰टी॰ - गुहाके भीतरगया॰ तब वालिसें तथा दुंदुभीसे युद्धहोतीभई॰ मेरे ऊपर वालिका स्नेह बहुतरहासोई एकमास गुहाके दरवाजापर खडाहोनाहै॥१६॥

श्लो॰ वालिनानिहतोरक्षस्तदाद्वारेयवाहच॥ बहु
रक्तंमयाज्ञातंस्वभावचलनंसखे॥१७॥

भा॰टी॰ - वालिने दुंदुभीकों मारा तबगुहाके दरवज्जेपर मेरे स्वभावको चलायमान होना सोईरक्तहै सो बहुतबहताभया॰

श्लो॰ हत्वावालिंसमायातिमांहन्तुंदुंदुभिःशठः॥
एवंज्ञात्वाशिलामेकांस्वबुद्धिजडतांनृप॥१८॥

भा॰टी॰ - हेमित्र; मैंनेविचार कियाकि गुरुदेवमें अभिमानरू पदुंदुभी बडा जवर्दस्त है क्योंकि दुंदुभीके ऊपर गुरुकी कृपा है सोवालिकूं मारिके मेरेकूं मारेगा॰ ऐसा जानके हे राजन् रामचंद्र जी मेरी बुद्धिकी जड प्रकृतिसोई शिलाहैं ॥१८॥

श्लो॰ गुहाद्वारिसमाधायकिष्किंधामहमागतः
॥प्रसह्यकारात्कपयः पूर्वोक्तारघुनन्दन ॥१९॥

भा॰टी॰ - मैंने आपनीजडप्रकृतिरूप शिलासें सत्संगति व र्जित गुहा के दरवज्जेकूं दापिके किष्किंधा पुरीकों मैचला आ या तब हेरघुनंदन पेस्तर वर्णन भयेजो कपिहै सो मेरे कोंज- बर्दस्तीसे ॥१९॥

श्लो॰ सरवेमामभ्यमिच्छन्तमभिषेक्तुर्मुदाकुलाः
॥गुरुदुर्बुद्धिकिष्किंधापुरीराज्येस्थितोस्म्यहम्॥२०

भा॰टी॰ - हेमित्र॰मेरेगुरुदेवमें दुर्बुद्धि रूप जो किष्किंधापुरीति- स्काराज्य कर्नेकी मेरी इच्छा नहीथी॰ तौभी मेरेकों अभिमानसें उन्मत्त ऐसेजो कपिहै सो मेरेकौं किष्किंधापुरीका राजदेतेभये॰

श्लो॰ गुरूक्तिनिश्चयस्यैवभंगंप्राप्तंकरवम्मया॥
तन्निहत्यसमायातोवालिस्त्वासनसंस्थितम् २१

भा॰टी - गुरु के वचनको बिश्वास मेरेकों नष्ट होगया यह स्करवकि ष्किंधा के राजमें मै पाया॰ हेरामजी दुंदुभीकूं मारिके गुरुके वि- योगरूप बालि आयके आसन पर बैठा॥२१॥

श्लो॰ दृष्ट्वामांहन्तुकामश्चदुद्रावत्वरितोयदा॥न
दाहंत्रासितोरामसर्वसन्त्यज्यविद्रुतः॥२२॥

भा॰टी॰ मेरेकों देखिके गुरुके वियोगरूप वालि मेरेकूं मा रने दौडताभया॰ तब मैने आपके गुरुदेवमें प्रेम भक्ति अनु

गगसें वन आदि सब सुंदर कर्म तथा गुरु देवकी आज्ञा रू पमेरी रुमानाम स्त्री इन सबकूं छोडिके व्याकुल होयके भागगया ॥ २२ ॥

श्लो० करुणाम्पृथिवींसर्वांबभ्रामाहंसुदुःखितः ॥ भ्रमणंदुर्बलत्वंमेस्वात्मनोरक्षणायवै ॥ २३ ॥

भा०टी० – करुणारूप संपूर्ण पृथ्वीमे मैंने भ्रमण किया० परंतु० वालिको द्रोही जानिके मेरेकौं कोईने शरण नहीलिया० क्यौं कि गुरुको उपदेशरूप जोमैं हूं सोगरीब और गुरुको वियोगरू प वालि बडा जबरदस्त है इसवास्ते मेरीदुर्बलता सोई पृथ्वीमें मैं नें भ्रमणकियाहै ॥ २३ ॥

श्लो० वियोगवालेस्संत्रासोवर्ततेवसुधातले ॥ अ विश्वासेनत्रासेननलब्धंशरणंमया ॥ २४ ॥

भा०टी० – गुरुमे वालिको विश्वास नहीहै सोई वालिकी त्रास है तिसत्रासकरिके दयारूप पृथ्वीमे मैनें भ्रमणकिया० परंतु मेरे कूं कहीं शरण नही प्राप्तिभई ॥ २४ ॥

श्लो० स्वस्वभावगुरोश्चाहंशरणंगतवानहं ॥ तेनो पदिष्टः प्राप्तोहंगिरिमेनंसमाश्रितः ॥ २५ ॥

भा०टी० – पीछेसें मेरा स्वभावजोहै सोई मेरागुरुहै तिस्की शरण कूं मैंगया० तब मेरा स्वभावरूप गुरुदेवकी आज्ञापायके इसपर्व- तपर मैं ठिकाहूं ॥ २५ ॥

श्लो० रामनात्रसमायातिवालिर्मेमूलकृन्तनः ॥ म- तंगशापाद्राजेंद्रतस्मादत्रस्थितोत्यहम् ॥ २६ ॥

भा०टी० – हेरामजी मतंग ऋषिकी श्रापसें इसपर्वतपर मेरेमूल को काटनेवाला वालि नहीआता० इसवास्ते मैं इस पर्वत परटिक

श्लो॰ सुखेनमंत्रिभिःसार्द्धंचतुर्भीरघुनंदन॥
सखेतेसंगतिंप्राप्यमग्नोहंसुखवारिधौ॥२७

भा·टी· – हे रघुनंदन सुख करिके चारमंत्रीसहित यहांटिकाहूं· परंतु हेमित्र अब आपकी संगतिपायके सुखके समुद्रमें मग्न भयाहूं॥२७॥

श्लो॰ गुरूपदेशेनसुकंठनाम्नाविज्ञापितोभूदितिरामचन्द्रः॥ पप्रच्छसर्वंमुनिवर्य्यकृत्यंरघूत्तमोवालिविनाशभीतिम्॥२८॥

भा·टी· – सुग्रीवनाम जो गुरूपदेश तिसकरिके कहेहुयेजो रामजीहैं सो मतंगकी आपकी हाल जिस्से वालित्रासपाताहै सोपूंछतेभये॥२८॥

इतिश्रीवेदान्तरामायणेकिष्किंधाकांडेशिवसहायबुधविरचितेसुग्रीवरामसंवादेरामप्रश्नेद्वितीयोमोक्षसोपानः॥२॥

---

श्लो॰ वरतन्तुरुवाच सुग्रीववाक्यावसरेरामःप्रोवाचसादरम्॥ कोमतंगोमुनिःश्रापंयोददौकपिसत्तमे॥ ॥१॥

भा·टी· – वरतंतु मुनिबोले सुग्रीव बचन कहिचुके तब रामजी· सुग्रीवसें पूंछते भये· वालिको श्राप देनेवाले मतंगऋषि कौनहै

श्लो॰ रामस्यवचनंश्रुत्वाहरिःप्रोवाचराघवम्॥सखेश्रृणुकथामेतामेकदामहिषासुरः॥२॥

भा·टी· –विवेक रूप रामजीकी बचन सुनिके गुरुदेवको उपदेशरूप सुग्रीव बोलते भये· हेमित्र, यह कथा सुनिबे लायक है

सोऽप्यापस्कनो ः एकदिन महिषासुर राक्षस ॥ २॥

श्लो॰ असत्याचरणोवालिंस्ववशेकरणायच॥ कि
ष्किंधामाजगामाशुभयवेगकलीर्षणैः॥ ३॥

भा॰टी॰ -हट करिके रूठ कर्मको आचरण कर्ना सोई महिषासु
रहै॰ सोमहिषासुर वालिकों जीतने वास्ते किष्किंधा पुरीकों आ
ताभया॰ जीवोंको भयदेना, कामकरनेमें जलदी रखना, सब-
जीवोंसें लडाई कर्नी, सब जीवोंसें इर्षा करना इनकरिके ॥ ३॥

श्लो॰ पादैरेतैश्चसंयुक्तो दुराचर्यादिसम्भवैः॥ रो
मभिर्भूरिभिर्व्याप्तन्देहम्बिभ्रन्मदाकुलः॥ ४॥

भा॰टी॰ - एच्यार महिषासुरके पगहै॰ इन च्यारि पगों करिकेयु
क्त है॰ खोटे कर्मसें उत्पन्नजो कर्म सो रोमहै॰ तिस बहुत रोमकों
धारण करिके उन्मत्त होरहाहै ॥ ४॥

श्लो॰ दुरुक्तिनिरयाभ्यांचैनेत्राभ्यांरागरंजितः॥
पैशून्यपरघाताभ्यांशृंगाभ्यांतीक्ष्णनिर्मितः ५

भा॰टी॰ -खोटीवाक्य बोलना तथा नरकमें पडने माफिक कर्म
कर्ना येदोनोकर्म दोनेत्रहै इन दोनों कर्म में स्नेह सोई लालरंग
है तिस करिके दोनों आंख लाल होरहीहै॰ चुगली कर्नी तथा
दूसरेकूं मारना ये दोनो शींगहै इन कर्मोंमें प्रेम सो शींगकी धार
है ऐसी शींग करिके युक्तहै ॥ ५॥

श्लो॰ पैशून्यसुखपुच्छेनलंबमानेनशोभितः॥
एतादृशोहतोरामवालिनामहिषासुरः॥ ६॥

भा॰टी॰ -चुगलीमें सुख मानना सोई पूंछ है तिस पुच्छ करिके
शोभितहै ऐसे महिषासुरकूं वालिनें मारडाला॰ ॥ ६॥

श्लो॰ हतमुत्थापतंवीरश्चिक्षेपक्रोधसंकुलः॥

पपातपर्वतस्यास्यसमीपेरघुनन्दन ॥७॥

भा॰टी॰ - हेरघुनंदन महिषासुरकों मारिके बालिने उसकीदेह कों उठायके फेंकताभया॰ तब वोदेह इस पर्वतके सामने आय पडी ॥७॥

श्लो॰ स्वेच्छाचारमतंगस्यचाश्रमेपतितोसुरः॥

दुष्टाचरणरक्तैश्चरंजितोभूत्तदाश्रमः॥८॥

भा॰टी॰ - वेदशास्त्र लोककों संमत नहीं मानना अपनी इच्छा में आवे सोई करना ऐसे स्वभावकों शास्त्रमें मतंगऋषि कहते हैं ऐसे मतंग मुनिके आश्रम पर मरा हुवा आय पडा॰ तथा खोटा कर्मको आचरण रूप करिके जोरक्त उससें मुनिका आश्रम लाल होगया ॥८॥

श्लो॰ गुरुध्यानगिरेरस्यसमीपेवानरोत्तम ॥यद्या गन्तासिवैमृत्युस्तत्क्षणेनेभविष्यति॥९॥

भा॰टी॰ - तब स्वेच्छाचार रूप मतंग मुनि बोलेकि हे कपियोंमें उत्तम बालि यहजो गुरुदेवको ध्यानरूप प्रवर्षण पर्वतहै इस्केसमीप जोतूं आवेगा तो उसीबखत मरजावेगा॰॥९॥

श्लो॰ एवंज्ञात्वारघुश्रेष्ठनायात्यत्रकदापिच॥ एवंज्ञात्वाचमेवासङ्कृतोऽत्ररघुनन्दन ॥१०॥

भा॰टी॰ - हेरघुनंदन मैं ऐसा जानाकि बालि यहां नही आसक्ता इस वास्ते इसपर्वतपर मैंने वासकियाहै॰ ॥१०॥

श्लो॰ श्रुत्वाचसुग्रीवसमीरितंवचङ्प्रोवाचरामङ् करुणाश्रुपूरितः॥ अहंहनिष्यामितवाशफ्द्रोहिणंसखे ऽभिषेच्यामिचत्वान्नृपासने॥११॥

भा॰टी॰ -ऐसी सुग्रीवकी वाक्य सुनिके रामजी बोलेकि हेमित्र,

तुमारे द्रोह करनेवाले वालिकूं हम मारेगे और तुम कूं किष्किंधा पुरीको राजा करेंगें ॥११॥

श्लो० रामोक्तिंकपिवीरस्तुनिशम्योवाचराघवम्॥ किष्किंधाधिपतिर्मान्त्वंवानराणामधीश्वर॥१२

भा.टी. - विवेकरूप रामजीकी वचन सुनिके गुरुको उपदेश रूप सुग्रीव बोलेकि हेरामजी, जो आपु मेरेकों गुरुदेवमें खोटी बुद्धि कर्नो ऐसी किष्किंधा पुरीको राजा ॥१२॥

श्लो० करिष्यसियदावीरतदात्तेजानकीमहम्॥ पुरीमपिशुभांकुर्य्यांसुबुद्धिंगुरुसत्तमे॥ सप्तपातालविवरात्सप्तोर्द्धाद्रघुनन्दन ॥१३॥

भा.टी. - करोगे तब मैं पुरीकोंभी सुंदरबुद्धि गुरूसे करिदेऊंगा.तथा जानकीकोंभी सात पातालनीचे सात ऊपर ॥१३॥

श्लो० विनाश्यजानकीदुःखदातारंसकुलम्प्रभो॥ सगुरुंसपुरंदुष्टंसमित्रंसहचारिणम्॥१४॥

भा.टी. मैंभीजोजानकीकों दुःख देनेवाले दुष्टको परिवार गुरुपुर मित्र संगरहनेवाले इनसबकों नाशकरिके ॥१४॥

श्लोक दास्यामितुभ्यंजनकात्मजामहंसखेध्रुवं प्राप्यकपीश्वरेशतां॥ हनिष्यसेत्वंकथमद्यवालिनंवीरंसुवीरार्च्चितपादपल्लवम्॥१५॥

भा.टी. - जानकीको आपकूं देऊंगा. परंतु हेमित्र जो मेरेकों किष्किंधाको राज्यमिलेगातो हेरामजी बडेबडे वीरजैसे ध्यान ज्ञान उपदेश इन आदि और अनेक सुंदर कर्म वालिके पगकी पूजन करनेहैं कि हे गुरुकेवियोग दुष्ट वालि तूं जीवोंको गुरुदेवसें वियोग मतिकर ऐसेवीर वालिको आप अभी कैसे मारोगे ॥१५॥

श्लो० इत्युक्त्वादर्शयामाससप्ततालान्कपीश्वरः॥
रामचंद्रायत्वरितंशरुष्कंच दुंदुभेश्शिरः॥१६॥

भा·टी· -रामजीसे सुग्रीव ऐसा कहिके रामजीको सात तालके वृक्ष तथा दुंदुभीको सूखाशिर देखाने भये ॥१६॥

श्लो० कुतृष्णायास्सुतान्सप्तलंबमाननभस्थरान्॥
परसौख्यविनाशंच परवित्तकलत्रयोः॥१७॥

भा·टी· -खोटे कर्ममें तृष्णा कर्नी तिस तृष्णाके सात पुत्र जमीन सें आकाश तक ऊंचे दूसरे जीवके सुखका नाशकरना· और दूसरे जीवको धन तथास्त्रीको ॥१७॥

श्लो० हरणंसुज्ञ विद्वेषमन्यायेवर्तनंसदा॥स्व·
स्त्रीनिरादरंनित्यं मरणाचिन्तनंतथा॥१८॥

भा·टी· - हरणकरना तथा ईश्वरके गुणकों जाणणेवाले जीवोंसें वैर राखना· रातिदिन अन्याय कर्ममें रहना· आपनी स्त्रीको रोज अनादर करना मरणेकी चिन्ता नहीं करना॥१८॥

श्लो० एतान्तालान्स्वस्वसुखे ऽंपत्रैश्चवर्द्धितान्कपिः
प्रोवाचदर्शयित्वैतान्धृत्वाकंपयतेऽसकृत्॥१९॥

भा·टी· -येसात कर्मरूप सात तालके वृक्षहै·येसात तालके वृक्ष आपने आपने कर्ममें सुख मानना उसी सुखरूप पत्र करिके व र्द्धिन होरहेहै· सुग्रीवने ऐसे सात तालके वृक्ष रामजीको दि· खायके रामजीसें बोले कि इन सातों वृक्षोंकों एकहीवार वालि पकडिके हिलाताहै॥१९॥

श्लो० वालिर्यद्येकबाणेन ह्वे दि तुन्त्वंसमंऽप्रभो॥
तदावालिवधेरामविश्वासोमेप्रजायते॥२०॥

भा·टी· - हेरामजी जोएक बाणकरिके आपु सात वृक्षोंकूं काट

नेमें समर्थ होतव वालिकों मारनेमें विश्वास मेरेकूं होवे ॥२०

श्लो॰ सर्वप्राणोत्तमं ज्ञानं गुरोर्यद्रघुनन्दन ॥ नद्दुं दुभिशिरश्छेद माद्रक्षिप्तञ्चवालिना॥ २१॥

भा॰टी॰ – हे रघुनंदन सबजीवोंसें आपने गुरुकूं उत्तम माननासो ई दुंदुभीको शिरहै सोई शिरयह आपके सामने पड़ाहै यह शिर आलारहाथा तब वालिने उठायके त्यांपरफेंकदिया॥ २१

श्लो॰ तवास्योत्क्षेपनेरामचेत्पश्यामिपराक्रमम् तदात्वयाहतंमन्येवालिनम्वीरसम्मितम्॥ २२॥

भा॰टी॰ – और अब यहशिर सूखाहै तो भी आपु इस्को उठानेको भीजो समर्थ होवो तो मैं जानूं कि आपके मारे वालि मरेगा॰॥ २२

श्लोक॰ इत्युक्तः कपिनारामोविवेकोज्ञानवारिधिः॥ सत्संगार्बुदछायायाः छायाछायार्बुदेनवै ॥२३॥

भा॰टी॰ – ऐसी सुग्रीवकी वचन सुनिके ज्ञानके समुद्र रामजी विवेकरूपसो सत्संगकी अर्बुदभागजो छाया तिसच्छायाकी छायाके॰ अर्बुद भागको एकभाग सोई बाणहै॰ तिस एकबाण करिके एक ही दफेमें सातों वृक्षोंकूं काटडारे॰ दोकाअर्थमिलाहैसोयुग्महै २३

श्लो॰ भागेनैकेपुणारामश्चिच्छेदयुगपत्तरून्॥ कदापिरामचंद्रस्यस्वभावोभ्यासतश्चलेत्॥ २४॥

भा॰टी॰ – विवेक रूप रामजीको स्वभाव कभी ईश्वरके ध्यान करनेसें चलायमान होताहै औरकभी चलायमान नही होता ऐसास्वभाव रामजीके दोनोपगहै॰ दोकोअर्थमिलाहैसो युग्महै॥ २४॥

श्लो॰ कदापिनचलेत्तस्मादिमौपादौप्रकीर्तितौ॥ अचलोदक्षिणोज्ञेयश्चलोवामइतीर्य्यते॥ २५॥

भा॰टी॰ – रामजीको अभ्यासमें अचलस्वभाव सोई रामजीको द

क्षिण पग है॰ और चल स्वभाव वाम पग है॰

श्लो॰ याश्चलाश्चलयोः प्रीत्य स्ताश्चांगुल्यः प्रकीर्तिताः॥ द्वयोरचलवृत्तंय त्तदंगुष्ठं निगद्यते॥२६

भा॰टी॰ - चल पगमें तथा अचल पगमें जो बहुत प्रीति सो दोनों पगोंकी अंगुली है॰ रामजीके दोनो पगोका अचल स्वभावसो दोनों पगोंका अंगुठा है॥ २६॥ इसश्लोकमे प्रीतिशब्दईवन्त है॰

श्लो॰ तच्छिरश्चाशु चिक्षेप वामांगुष्ठेन राघवः॥ एतत्पराक्रमन्दृष्ट्वा रामस्य कपिसत्तमः॥२७॥

भा॰टी॰ - रामजीने वामपगके अंगुठेसे उगायके जलदी दुंदुभी॰ को शिर बहुत दूर फेंकदिया॰ ऐसा॰ रामजीको पराक्रम सुग्रीव देखके॥२७॥

श्लो॰ राज्यस्पृहां परित्यज्य ज्ञानयुक्तो वभूवह॥ इक्ष्वाकुराजलिंरामम्प्रो वाच विनयान्वितः॥२८॥

भा॰टी॰ - राजकी इच्छा छोडिके ज्ञानकुं प्राप्ति भया जो सुग्रीव है सो हाथजोडके रामजीसें बोला॰॥२८॥

श्लो॰ राज्यं न कांक्षे रघुवीर दुःखदं त्वत्पादसल्लग्नरजोभिवाञ्छकः॥ भवामि नित्यं त्वदासकिंकरः प्रदेहि राज्यं तवसेवनावधिम्॥२९॥

भा॰टी॰ - हेरामजी॰ जिस किष्किंधापुरीको राजपायके गुरुदेवमें दुष्टबुद्धि होवै ऐसा दुःख देनेवाला राज्य कों मैं नही चाहताहूं॰ आपके चरणकी धूलि चाहताहूं॰॰ आपु आपके चरणोंकी सेवनरूप राज्य मेरेकूं देवो॥२९॥

इतिश्रीवेदान्तरामायणेकिष्किंधाकांडेशिवसहायबुधविरचितसुग्रीवनिश्चयेतृतीयो मोक्षोपानः॥३॥

श्लोक· वरतन्तुरुवाच सुग्रीववचनंश्रुत्वासं·
शिक्ष्यकपिसत्तमम्॥ प्रेरयामासयुद्धायवालिना
रघुनन्दनः॥१॥

भा·टी· -वरतंतु मुनिबोले सुग्रीवकीवचनसुनिके रामजीने सुग्रीवकूं शिखायके वालिकेसंग युद्ध करनेकों भेजा· ॥१॥

श्लो॰ चतुर्भिर्मंत्रिभिस्सार्द्धंराघवाभ्यांचसय्युतः
क्रोशैकेगुरुदुर्बुद्धिकिष्किंधायाम्श्वनिश्वये॥२॥

भा·टी· -चारि मंत्रीसहित तथा रामलक्ष्मणसहित गुरुमें दुष्ट बुद्धिरूपजो किष्किंधा तिस्के एककोशपर ॥२॥

श्लो॰ तद्दूरेलक्ष्मणोस्थित्वाचत्वारश्चैवमंत्रिणः॥सु
ग्रीवेणतदाहूतोवालिर्वीरशिरोमणिः॥३॥

भा·टी· -सुग्रीव खडाहोके गुरुके वियोगरूप वालिकों पुकारता· भया· श्रौर सुग्रीवसे कुछदूरपर रामलक्ष्मण श्रौर सुग्रीवके· चारमंत्री येसब खडे रहे॥३॥

श्लो॰ तूर्णमागत्ययुयुधेस्वानुजेनकपीश्वरः॥गुरु
वाक्येषुविश्वासस्सुग्रीवपुच्छवर्णनम्॥४॥

भा·टी· -गुरुकी वाक्यमें विश्वास मानना सोई सुग्रीवकी पुच्छहै कपीश्वरजो वालिहै सो जलदी श्रायकर श्रपना भाई सुग्रीवसें युद्धकरतेभये॥४॥

श्लो॰ तदविश्वासज्ञानंचवालिपुच्छभिगद्यते॥ता
भ्यांयुद्धंचह्रौचक्रे पुनर्मुष्ट्याप्रजघ्नतुः॥५॥

भा·टी· - उसी गुरूकी वाक्यमें विश्वासनहीं मानना सोई वालिकी पुच्छहै· सोपहिलतो दोनो वीरोनें पुछसें युद्धकरतेभये पीछे मुष्टिसें युद्ध करतेभये ॥५॥

श्लो० ब्रह्मसृष्टोचयद्वस्तु तन्मे सर्वंगुरुर्हरिः ॥ इ
तिबुद्धिस्समाख्याता सुग्रीव मुष्टिबंधनं ॥ ६ ॥

भा·टी· - ब्रह्माके बनाए जो तीन लोक चवदा भुवनमें जो चीज है· सो सब चीजरूप मेरा गुरु है ऐसा गुरुको ब्रह्मरूप माननेवाली बुद्धि सो सुग्रीवकी मुष्टिको बांधना है ॥ ६ ॥

श्लो० बुद्धिस्तदन्यायातस्मिन्सावाल्यंगुलिबंधना
मुष्ट्यायुयुधतुर्वीरौसुग्रीवोवालिताडितः ॥ ७ ॥

भा·टी· - और गुरुमें ऐसी बुद्धिसे हीन जो दूसरी बुद्धि है कि जैसी जुदी जुदी सब वस्तु है तैसेई गुरुभी है ऐसी बुद्धि वालिकी मुष्टिबंधन है ऐसी मुष्टिसें वालिकों सुग्रीवने मारा· सुग्रीवकों वालिनें मारा· सुग्रीवतो चाहता है कि गुरुके वियोग रूप वालि कों मार डारों· तो जीवोंसे गुरुवियोग नहीं होवे· और वालि चाहता है कि गुरुके उपदेशरूप सुग्रीवकों मारि डारों तो गुरुको उपदेश संसारमें नष्ट होजावे· और मेरा राज रहे· सो वालि सुग्रीवको मारा· तब सुग्रीव दुःखी होगया· ॥ ७ ॥

श्लो० प्लाव्यायाद्दुःखितोभूत्वागिरिमूर्ध्निस्वमाश्रमं
॥ स्पृष्टोविवेकरामेणकरेणकपिसत्तमः ॥ ८ ॥

भा·टी· - तब सुग्रीव दुःखी होके भागिके पर्वतपर अपने आश्रम पर आया· तब विवेकरूप रामजीने आपना हात सुग्रीवकेऊपर फेरते भये· कृपाकरिके देखना सोई हात फेरना है· ॥ ८ ॥

श्लो० गतश्रमःसुखंपेदेशौर्येणमंत्रिभिःसह ॥ उ-
वाचरामंसुग्रीवः कथंघातयसेरिणा ॥ ९ ॥

भा·टी· - तब सुग्रीवके देहकी पीडा· नष्ट होगई· और सुग्रीव सुखकौं प्राप्तिभये· मंत्रियों सहित बडे मानसे जैसा पुत्र पितासें मा·

नकरिकै बात करै कि मैंतो आपको बालक हौं यह काम आपकूं करना पड़ेगा· तैसे ई सुग्रीव रामजीसें बोलेकि हे रामजी, बैरीसें मेरेकूं आप क्यों मराते हो· मारना होवेतो आपही मेरेकों मारिडालो ९

श्लो० इत्युक्तो राघवः प्राह न ज्ञातस्त्वं मया सखे॥ एकरूपौ युवां वीक्ष्य न त्यक्तश्शायको मया॥१०॥

भा·टी· - ऐसी सुग्रीवकी वाक्य सुनिके रामजी बोले कि हे भाई तुम दोनो एकरूप रहेथे इसवास्ते मैं नही जाना कि कौन वालि है· कौन सुग्रीव है इस वास्ते मैंने बाण नही छोडा॥१०॥

श्लो० पुनराव्हय वालिन्त्वं हतं पश्यसि भूतले॥ इत्युक्त्वा लक्ष्मणं प्राह रामः सत्यपराक्रमः॥११॥

भा·टी· - सो फिर बालिकों तुम पुकारो· अबकी वालिकों मरा देख लेना· सुग्रीवसें ऐसा कहिके सत्य है पराक्रम रामजीको· सो लक्ष्मण सें बोलते भये॥११॥

श्लो० मत्प्रीतिरूपां बध्नीहि मालां कंठेऽस्य धीमतः॥ ययेमं चिन्हितं ज्ञात्वा वालि प्राणं हराम्यहम्॥१२॥

भा·टी· - हे लक्ष्मण मेरी प्रीति सुग्रीवपर बहुत है उसी प्रीतिरूप माला सुग्रीवके गलेमे बांधि देओ· उस माला करिके मैं जानोंगा· कि यह सुग्रीव है· ऐसा जानिके वालिके प्राणकों मैं हरूंगा·॥१२॥

श्लो० इत्युक्तो लक्ष्मणस्तूर्णं बध्वा मालां ददौ शुभाम्॥ रामप्रीतिस्वरूपां च तद्धर्षपुष्पपुष्पिताम्॥१३॥

भा·टी· - रामजीकी ऐसी वाक्य लक्ष्मण सुनके जलदी सुंदर माला सुग्रीवके गलेमें बांधते भये· रामजीकी प्रीतिरूप माला है· सुग्रीवको हर्ष सो पुष्प भया है· तिस पुष्पों करिके माला फुल्लाय मान होरही है॥१३॥

श्लो॰ बद्धमालस्तुसुग्रीवः पुनर्गत्वातिशीघ्रतः॥ आ
व्हयामासप्रोच्चैस्तंवालिंयुद्धायनिर्भयः॥१४॥

भा॰टी॰ –मालाकूं गलेमें बांधिके सुग्रीवने जलदी बडे जोरसें वा॰
लिकों युद्ध करने वास्ते निर्भय होके पुकारताभया॰॥१४॥

श्लो॰ वालिश्चपुनराहूतस्सुग्रीवेनातिक्रोधितः॥
तारयावारितोपीत्थंरामचंद्रगुणम्प्रति॥१५॥

भा॰टी॰ – सुग्रीव करिके पुकाराजो वालिहै सोवडाक्रोध करिके॰
चलनेको विचार किया तो तारानें रामजीको सबगुण वालिकों सु॰
नायके वोली आप मतिजावो॰ बडेजबरदस्तसे सुग्रीवकी मिताई
भई है॥१५॥

श्लो॰ तांतिरस्कृत्यसमगात्सुग्रीवंयुद्धलालसम्॥
युद्धंप्रचक्रतुर्वीरौवालिनाविह्वलीकृतम्॥१६॥

भा॰टी॰ – वालिने ताराको अनादरकरिके युद्धकी इच्छाकिहैजो॰
सुग्रीवहै तिस्केपास आयके फिर दोनोंसे युद्ध होतीभई॰ तबवा
लिने सुग्रीवकों विह्वल करिदिया॥१६॥

श्लो॰ सुग्रीवंराघवोवीक्ष्यपूर्वोक्तेधनुषिप्रभुः॥ पु
नश्शिक्षोद्भवंज्ञानंबाणंसंयोज्यशीघ्रतः॥१७॥

भा॰टी॰ – सुग्रीवकों व्याकुल देखिके रामजीने पहिले वर्णन॰
भयाजो धनुष तिसपर फिरि सुंदर कर्मकोशिखाना रूप बाण ज
लदीचढायके॥१७॥

श्लो॰ वियोगकृतमज्ञानम्वृक्षंकृत्वापुरस्सरम्॥ आ
लक्ष्यत्हृदयंतस्यससर्जशरमुग्रिणम्॥१८॥

भा॰टी॰ –गुरुके वियोग करिके कियाजो अज्ञान सोई वृक्षहै॰ति॰
सवृक्षकों आपने सामने करिके आप वृक्षके आडे होयके वालि

की हृदयकों देखिके शिक्षारूप बाण बडा कठिण तिसकू-
छोडते भये॥ १८॥

श्लो० तेनाहतः पपाताशु दृष्ट्वारामम्पुरस्थितम्॥ स्तु
त्वाक्षमाप्यस्वाघंच प्राणांस्तत्याज वानरः॥१९॥

भा-टी- - तिस बाण करिके मृत्युकूं प्राप्त भयाजो वालिसो जल-
दीपृथ्वीमें पडगया- तब रामजीकों सामने देखिके अपना अपरा
ध रामजीसें क्षमा करायके प्राणकों छोडि दिया- गुरुदेवको वियो-
गकों मरण भयासो सबजीव आनंदयुक्त भये॥१९॥

श्लो० चक्रुर्विलापन्तेसर्वेसुग्रीवाद्याः कपीश्वराः॥ ज
निष्यति पुनस्सोयमितिशोकम्प्रचक्रिरे॥२०॥

भा-टी- - गुरुके वियोगरूप वालिके मरणकूं देखिके गुरुके उपदेश-
रूप सुग्रीव तथा सुग्रीव आदि औरजो वानर हैंसो विलाप करते-
भये- कि यह गुरुको वियोगरूप फिर कभी जन्मेगा ऐसा चिंतनरूप
विलाप करते भये॥ २०॥

श्लो० वालिनंनिहतंश्रुत्वातारा द्यावालिवल्लभाः॥ अं
गदादिसुताः सर्वेविलापंचक्रिरेतदा॥२१॥

भा-टी- - वालिके मरणकों देखके गुरुके वियोगकी- चिंतारूप ता
रा तिसकों आदिलेके और जो वालिकी स्त्रीहैं सो सब तथा गुरुके
वियोगकों शांति करनेकी उपाय रूपजो अंगद है तिस्कों आदिलेके
सब वालिके पुत्र विलाप करते भये॥ २१॥

श्लो० शरणंकस्ययास्यामः कोस्मान्संगृह्यपालयेत्
॥एतादृशंविलापंच चक्रुस्सर्वे विमोहिताः॥२२॥

भा-टी- -अंगद विचार कियाकि जो गुरुके वियोगरूप वालिजीता र
हातबतो उसवालिकी शांति करनेकी उपायजो मैंहूं सो मेरेको सब-

जीव आदर देतेथे कि इस्को आदर करेंगे तो यह गुरुको वियोग रूप वालिको सांति करनेकी उपाय है और अब वालि मरगया हम किसकी शरण कू जावें कोण हमारी पालन करेगा ऐसा वि लाप करते भये॥ २२॥

श्लो० निर्निंदराघवं तारापतिप्रेमपरायणा॥ वियोगादर्शनंजातं न देवनिन्दनं मुने॥ २३॥

भा०टी० – पतिके प्रेममें कुशल जो तारा है सो गुरुके वियोग कूं नही देखती भई सोई रामजीकी निंदा करती भई॥ २३॥

श्लो० बोधितारामचंद्रेण ज्ञानं प्राप्य न दासती॥ गुरूपदेशस्यपतेस्सुरवहर्षजहर्षसा॥ २४॥

भा०टी० – तब रामजीने ताराकूं ज्ञान दिया तारा ज्ञानकूं पायके गुरुके उपदेशरूप जो सुग्रीव है तिस्के सुखके हर्षकूं पायके बहुत खुशी भई क्योंकि गुरुके वियोगकी चिंता तो ताराखुदहे नित्य विचार तीथी कि यह गुरुको वियोग शांति होवे तब जीवोंको सुख होवे परंतु अज्ञान सें उसी वियोगकी स्त्री भई रही ज्ञान पायके जान लियाकि मेरापति गुरुको उपदेशरूप सुग्रीव है॥ २४॥

श्लो० परस्परंकृतावार्तातस्यवालेश्चतैस्तदा॥ पराक्रमस्यनित्यस्यसहरामकपीश्वरैः॥ २५॥

भा०टी० – तब रामजी सहित सब कपियोनें आपसमें बालिके पराक्रमकी वार्ता कर्ते भये कि देखो भाई वालि कैसा बली थाकि गुरुकी महिमा कों वेदशास्त्र पुराण लोक ये सब तारीफ कर्ते हैं तिस गुरुको वियोग जीवोंसे करदेना यह बडे बलीको कर्म है

श्लो० सैववालेर्दाहक्रियाकृतातेनांगदेनवै॥ राज्यं ददौततस्तूर्णंसुग्रीवायरघूत्तमः॥ २६॥

भा०टी० - ऐसी वार्ता सब करते भये सोई वालिकी दाह आदिक्रि या अंगद कर्ता भया० तब रामजीनें जलदी किष्किंधा पुरीको राज सुग्रीवकों देते भये० ॥२६॥

श्लो० राज्यासनस्थेसुग्रीवेकपीनांराघवप्रिये॥ पुर्याः पूर्वस्वभावश्चनष्टोभून्नैवदृश्यते॥२७॥

भा०टी० - रामजीका प्यारा सुग्रीव जब वानरोंका राजाभया तब किष्किंधा पुरीको स्वभावजो पेहलरथा कि गुरुमे खोटी बुद्धि देखना० सोखभाव नष्ट होगया० कहीं देखनेमे नही आता० किसी स्थान० पर गुरुमे सुंदर बुद्धि होगई किष्किंधापुरीकी ॥२७॥

श्लो० साराज्यप्राप्तिस्सुग्रीवेनत्सुखंमदवर्द्धनं॥ गुरोर्वियोगमरणंदृष्ट्वारामोऽतिहर्षितः ॥२८॥

भा०टी० सोई सुग्रीवकों राज्य प्राप्ति भयाहे तिस राज्य प्राप्तिमें सुखसोई अभिमानकी वृद्धिहे० तथा गुरुके वियोग रूप वालिके मरणकूं देखिके रामजीभी खुशीहोने भये ॥२८॥

श्लो० विज्ञापनंचगुरवेचोपदेशायवालिजम्॥ दातुं जीवान्यौवराज्यं चक्रेरामोत्यनुग्रहः॥२९॥

भा०टी० - बडे दयालु रामजीने अंगदकों युवराज करते भये० कि० जब कोई जीव गुरुसें उपदेश लेनेकों जावे तब अंगद गुरुदेवसें० अर्ज करे० कि महाराज आपसें उपदेश लेनेकूं जीव आयाहे० ऐसा० कर्म सोई युवराजहे० सो युवराज पदवी अंगदकों रामजी देतेभये

श्लो० सएववासोरामस्यप्रवर्षणगिरावभूत्॥ आत्मज्ञानंस्वपितरन्निर्मोहंभरतन्तथा॥३०॥

भा०टी० - ऐसा अंगदकों युवराजपद देना सोई रामजीको प्रवर्षण पर्वतपर टिकना भयाहे० तथा रामजीने आपने पिता जो आत्मज्ञान

तथा निर्मोहरूप भरत कों ॥३०॥

श्लो० शक्तिपुत्रंवसिष्ठंचजानकीविरहन्तथा॥ एते
षांचिंतनस्पर्शनमङ्गीत्यानिहेतवे॥३१॥

भा॰टी॰ - शक्तिके पुत्र जो वसिष्ठ तिनकों जानकीकी विरहको चिं
तवन जैसा पिताको चिंतवन तथा भरतको मिलाप· वसिष्ठकोन
मस्कार जानकी की प्रीति इनसब कर्मो में प्राप्ति होनेको॥३१॥

श्लो॰ विचारावार्षिकामासास्तत्सुखाश्चमनोहराः॥
संगतिम्प्राप्यदुष्टानांजानकीकिंकरिष्यति॥३२॥

भा॰टी॰ - बिचार करना सोई च्यारिमास वर्षा ऋतुके हे उसी च्यार
कर्म्मोमें सुख सोई वर्षा ऋतुकी शोभाहे· रामजीने ऐसेच्यार मा·
स वर्षामें विचार करतेभयेकि दुष्टजीवोंकी संगत पायके जानकी
क्याकरैगा॥३२॥

श्लो॰ भविष्यतिस्वधर्माद्धाविच्युतासाच्युताऽपिवा
ईदृग्विलापोरामेनकृतःसंगतिकारणात्॥३३॥

भा॰टी॰ जानकीको धर्म ईश्वरकी भक्ति उस भक्तिरूप धर्मकों छो·
डिदेवेगाकि नहीं छोडेगा ऐसाविलाप संगतिके कारणसें राम-
जी करतेभये॥३३॥

श्लो॰ चतुर्णांचचतुर्णांचकिंचिन्मासागताःस्मृताः
चत्वारोविगतान्मासान्मायान्तंकपिसत्तमं॥ दृष्ट्वा
रामोद्भुतंप्रेम्नाप्रेषयामासलक्ष्मणम्॥३४॥

भा॰टी॰ - पहिले वर्णन भये जोचारि महीने सोबीतिगये कारण·
धीरज धरिके रामजी पिताकों वसिष्ठकों भरतकों जानकीकों चिंत·
वन मिलाप नमस्कार प्रीति इनसबको विचारको थोरा कर्म करते
भये सोई च्यारिमासको वीतना भयाहे· परंतु सुग्रीव रामजी केपा

पासनही आया· तब प्रेम करिके लक्ष्मणको भेजते भये·॥३५

इतिश्रीवेदान्तरामायणेपं·शिवसहायबुधविरचिते किष्किंधाकांडे चतुर्थो मोक्षोपानः॥४॥

---

श्लो० वरतन्तुरुवाच प्रेषणम्प्रेमरूपञ्च गमनंतद्विवर्द्धनम्॥ क्षुत्तृषासुखदुःखेच हानिलाभौप्रियाप्रिये॥१॥

भा·टी· - वरतन्तु मुनि बोले रामजीको प्रेम सुग्रीवके ऊपर बहुतहै· उसी प्रेमरूप सुग्रीवके पास लक्ष्मणको भेजना भयाहै प्रेमकी वृद्धि सोई लक्ष्मणको सुग्रीवकेपास जानाभयाहै· क्षुधा तृषा· सुख दुःख हानि लाभ· प्रिय अप्रिय ॥१॥

श्लो०· जीवनम्मरणंनिद्रायश्यापयश्याद्यस्तथा॥ इत्याद्यश्चयेभावासंख्यायेषांनविद्यते॥२॥

भा·टी· - जीवन मरण· निद्रा· यश अपयश इन आदिजो और सबजीवोंके कर्महैं जिनकी गिनती नहींहै॥२॥

श्लो०· सर्वेषामंड जातानांनराणांचविशेषतः॥ एते· सर्वेगुरौ द्रष्टव्या मन्तव्याश्चविशेषतः॥३॥

भा·टी· - सब जीवोंके येकर्म हैं परंतु नरस्वरूप जीवोंकेतो बहुतहैं· येसब कर्म गुरूमें देखना· तथा मानना· किजैसा सबहै तैसाही गुरुभीहै ॥३॥

श्लो० तएवकपयःप्रोक्तास्तेरुद्धोलक्ष्मणस्तथा॥ गुरौयेदुष्टभावाश्चतैर्क्लेशैरपिसर्वशः॥४॥

भा·टी· - सोई सब कर्म बानरहैं रामकी संगति जिनकूं भईथी वोतो स्वभावको छोडि देतेभये और जिनकूं रामकी संगत नहीं भई-

सो दुस्तरहै ऐसे दुष्ट कर्मरूप जो बंदर सो लक्ष्मणको रोकने लगे॰ किस्किंधाके भीतर नहीं जाने दिये॰ पेस्तर कहे तृषाआदि आठ॰ औगुण गुरुमें देखना॰ सोई रीक्ष है॰ वोभी लक्ष्मणकों रोकलिहे॰४

श्लो॰ तेषांदुर्बुद्धिहरणंक्रोधंचक्रेरघूत्तमः॥ताराङ्गदाभ्यामानीतोमारुतेनविशेषतः॥५॥

भा॰टी॰ -तिन सब दुष्टकर्मोंकी दुष्टबुद्धिकों हरणरूप क्रोध लक्ष्मण करते भये॰ तब कपियोनें लक्ष्मणके क्रोधरूप उपदेश पायके बुद्धि सुंदर धर्ममें लगाने भये॰ खोटा कर्म छोड दीन्ही॰ गुरु॰ कों ईश्वर मानने लगे तब तारा अंगद हनुमान येतीनो लक्ष्मणको आदर करिके सुग्रीवके पास लेगये॥५॥

श्लो॰ क्रोधशान्तिं कपीनांचेदृष्ट्वाबुद्धिंसुनिर्मलां॥अहंगुरूपदेशोवेनान्योस्तिपृथिवीतले॥६॥

भा॰टी॰ -सुग्रीवनें लक्ष्मणकों देखिके आदरकिया॰ तथा कपियोंके क्रोधकी शांति देखिके और बुद्धि सुंदर कर्ममें देखिके सुग्रीवनें ऐसा विचार कियाकि विवेकरूप रामजीसरीके मेरेमित्र और॰ गुरूको उपदेशमें बडे सुंदरकर्म कर्नेवाले मेरे सब कपि रीक्ष अब मेरे सरीखा पृथ्वीपर कोई दूसरा नहीहै ऐसा सुग्रीवकूं अभिमानभया॰॥६॥

श्लो॰ तन्माननाशनंत्रासंकृत्वारामानुजःकपिम्॥सर्वैःकपिवरैस्सार्द्धंयुवराजादिमारुतैः॥७॥

भा॰टी॰ -तब लक्ष्मणके सामने सुग्रीवको अभिमान नाशहोना भया॰ सोई सुग्रीवको त्रासकरिके सब वानर तथा सुग्रीव अंगद॰ हनुमानसहित॥७॥

श्लो॰ जांबवान्नलनीलाद्यैरानयित्वात्वरान्वितः॥

प्रवर्षणेनिपेतुस्तेरामस्याग्रेचवानराः॥८॥

भा॰टी॰ - जांबवान् नलनील आदिवानरोंसें बहुत देस देसकेगुरुमें दुष्टकर्म देखनेवालेजो कर्म सोई वानरहैं तिनकोंसंगलेके प्रवर्षण पर्वत पर रामजीके सामने सब पडतेभये॥८॥

श्लो॰ विवेकदर्शनाम्विप्रतेषांतत्यतनंस्मृतम्॥ पृष्टा रामेणतेसर्वेस्वकर्मकरणंसदा॥९॥

भा॰टी॰ - सब गुरूमें दुष्टबुद्धि करनेवालेकर्म देसदेससें आयके विवेक रूप रामजीके दर्शन करतेभये सोई सबको पृथ्वीमें पडनाहैं॰ तबरामजीनें सबके कर्मकी कुशल पूंछतेभये॰॥९॥

श्लो॰ चतुर्दिशस्समायाताःकपीनांयूथपास्तदा॥
असंख्यागणितुंशक्तानशेषेनापिकर्हिचित्॥१०

भा॰टी॰ - तबचारोंदिशासें और बहुत गुरूमें दुष्टकर्म देखनेवाले जो दुष्टकर्मरूप वानर सोभीआतेभये जिनोंकी गिनती करनेकी शेषकीभी सामर्थ्य नहीहैं ॥१०॥

श्लो॰ पूर्वोक्ताःकपयःसर्वेदृष्ट्वारामंचतत्यजुः॥
नमस्कृत्यस्वभावन्तेप्रयाताःसर्वतोदिशम्॥११॥

भा॰टी॰ सब कपिऋक्ष रामजी कूं देखिके नमस्कारकरिके अपना स्वभावजो गुरूमें दुष्टकर्म देखना सोछोड देतेभये॰ गुरुको ईश्वरमानतेभये॥११॥

श्लो॰ सुग्रीवप्रेषिताःसर्वेजानकीशोधकारणे॥
निर्वचनास्वभावस्ववृत्तिर्मासावधिःकृता ॥१२॥

भा॰टी॰ - सुग्रीव करिके भेजेजो सब वानर रीछ जानकी कों शोधनेवास्ते चारों दिशाकों जातेभये॰ कपियोंको अपने स्वामीसें कपट नहीकरनाऐसे स्वभावकी वृत्ति सोई सुग्रीवने एकमास

का प्रमाण करते भये श्लोक ग्यारा तथा बारा का अर्थ मिला है इस-
कुं युग्म कहते है ॥१२॥

श्लो० जांववन्तं हनूमंतमंगदादीननेकशः॥ दक्षि
णं प्रेषयामास स्रुग्रीवो जानकीकृते ॥१३॥

भा०टी० - जानकीकों शोधनेवास्ते स्रुग्रीवनें जांववान हनुमान
अंगद आदि बहुत वानरोंकों दक्षिणदिशाको भेजते भये ॥१३॥

श्लो० धर्मादीनां शुभाचिन्ताश्वतस्रश्च दिशः स्मृताः
तत्प्राप्तिप्रेषणम्प्रोक्तं गच्छन्तं मारुतिम्प्रभुः ॥१४॥

भा०टी० - धर्मकी चिंता सो पूर्व दिशा है अर्थकी चिंता सो दक्षिणदि
शा है कामकी चिंता सो पश्चिम दिशा है मोक्षकी चिंता सो उत्तरदि-
शा है इन च्यारों अर्थ धर्म काम मोक्ष प्राप्ति होना सो कपियोंको भेज
ना भया है हनुमान जाने लगे तब रामजीने ॥१४॥

श्लो० रामो ददावंगुलेयम्प्रीतिजम्प्रेमनिर्म्मलम् ॥ ह
नूमते प्रसन्नश्च प्रोवाच वचनं हरिः ॥१५॥

भा०टी० - रामजीकी प्रीति जानकीपर बहुत है उसी प्रीति करिके
उत्पन्न जो निर्मल प्रेम सोई मुँदरी है उस मुंदरीकों रामजीने हनुमा
नकों देते भये तथा प्रसन्न होके हनुमानसें बोले

श्लो० देया जनकजायै षा त्वया तात स्रुचेतसा॥ एता
म्प्राप्य ध्रुवं देवी विश्वासं ते करिष्यति ॥१६॥

भा०टी० - हे सुंदर कर्ममें मोहरूप हनुमान यह मुँदरी तुम जान
कीकों देना इस मुंदरी कों पायके जानकी तुमारा विश्वास करेगा कि
यह कोई विवेकरूप रामजीको दास है ॥१६॥

श्लो० नामादाय ययुः सर्वे नमस्कृत्य रघूत्तमम् ॥-
मासे पूर्णे निवृत्तास्ते विदिग्भ्यः कपयः शुभाः ॥१७

भा॰टी॰ - तिस मुंदरीकों लेके हनुमान आदि सब कपिचलते भये एकमास बीतगया उसीदिन तीनदिशासें वानर आयके ॥१७॥

श्लो॰ समागत्यसमाचख्युरप्राप्तिंकपिसत्तमाः॥
जानक्याश्श्रुत्यतद्रामोलक्ष्मणश्चकपीश्वरः॥ अय
स्तेदुःखमापन्नास्स्वस्वकार्यविनाशनम्॥१८॥

भा॰टी॰ - सुग्रीवसें कहते भये कि हम सबतो जानकीकों आपनी२ दिशामें शोधनकिया॰ परंतु जानकी नहीमिली॰ ऐसी कपियोंकी व-चन कूं सुनिके रामलक्ष्मण सुग्रीव बहुत दुःखी होतेभये॰ रामजी कातो जानकीका वियोगरूप दुःख भया और लक्ष्मणकों रामजीको दुःख देखके दुःखभया॰ तथा सुग्रीवकों रामजीसें करारकियाहे॰ कि जानकीका शोधन मैंलगाऊंगा॰ सो दुःखभया ॥१८॥

श्लो॰ सुबोधितौरामकपीश्वरौतदाविमूर्छितौनो
षबलेनबन्धुना॥ दुःखम्परित्यज्ज्यसुखेन संयु
तौबभूवतुर्धैर्यबलेनतौतदा॥१९॥

भा॰टी॰ - मूर्छाकों प्राप्तिभये जो रामजी तथा सुग्रीव इन दोनोंकों संतोषरूप लक्ष्मण रामजीके भाई हे उन्होने ज्ञान देतेभये॰ तबज्ञा नकों पायके रामजी तथासुग्रीव दुःखकों त्यागिके धीरज धरिके सु खकों प्राप्ति होतेभये ॥१९॥

इतिश्रीवेदान्तरामायणेकिष्किंधाकांडे शिव सहा
यबुधविरचितेसंवर्तवरतन्तुसंवादेजानकीशोधने
पंचमोमोक्षोपानः॥५॥ समाप्तश्चायंकिष्किंधाकांडः

---

## अथसुंदरकांड प्रारंभः

श्लो॰ वरतन्तुरुवाच युवराजादय स्सर्वेकप-

योदक्षिणान्दिशम्॥ चक्रुर्विशोधनंतस्यागिरि·
दुर्गेष्वनेकशः॥ १॥

भा·टी· - वरतंतु मुनि बोलते भए अंगद आदिसब वानर दक्षिणदिशामेपर्वतोंके बडेबडे कठिन गुहा तिसमें जानकीको शोधतेभए॥ १॥

श्लो॰ नकेषामपिसूक्तंच गृह्यतेयेनकारणात्॥ स
गिरिः क्रूरताकर्मदुर्गमित्यभिधीयते॥ २॥

भा·टी· - जिस मूर्ख पणसे जीवमात्रकी सुंदर वाक्य नसुनै तथा बुरी वाक्य सुनै ऐसे स्वभावको पर्वत संज्ञाहै उसी स्वभावरूप पर्वतमें बहुत बुराकर्म करैसो पर्वतोंकी कठिनगुहाहै॥ २॥

श्लो॰ भ्रमतांकपिवीराणांशोधार्थंजानकीकृते॥
निर्वचनास्वभावस्यगतामासावधिस्तदा॥ ३॥

भा·टी· - पेस्तर वर्णन भएजोकपि तिन्होमें वीरजो अंगदआदि तिनको जानकीके वास्ते शोधन करते २ निःकपटको स्वभावरूप जो मास एक कोप्रमाण सोबीतिगया॥ ३॥

श्लो· तां व्यतीतांसमालक्ष्यबभूवुर्दुःखसंयुताः॥
अंगदस्तुविशेषेणरुरोदपितृवर्जितः॥ ४॥

भा·टी· जोप्रमाण सुग्रीव करिदियाथा मास १ जानकीकी शोधनकरिकै आना ऐसे प्रमाणको बीतिगयादेखि सब हनुमान-आदिकपि दुःखी होते भये· तथा अंगदतो गुरुवियोग रूप पिता सेंहीनहै इसवास्ते रुदन कर्ता भया॥ ४॥

श्लो॰ जांबवान्दुःखितान्दृष्ट्वासमस्तान्कपिसत्तमा
न्॥ उवाचवचनंवीरोमायाचेष्टेतिदुःसहः॥ ५॥

भा·टी· - बडा कठिन मायाको विचाररूप जांबवान सो सब वान

रोंकों दुःखी देखिके सब कपियोंसे बोलताभया॰ ॥५॥

श्लो॰ स्वभाववचनांत्यक्त्वासर्वेजन्मावधिन्द्दढां ॥
कुर्वन्तांजानकीप्राप्तिर्धुवमश्चभविष्यति ॥ ६ ॥

भा॰टी॰ - अरेहे वानरो स्मग्रीवनोंनिः कपटस्वभावरूप एकमासको प्रमाण दियो सोतो वीतिगयो॰ अब जबतक आपन सब जीवै तबतककी प्रतिज्ञा करो॰ बिनाजानकीकी शुधिलिहे स्मग्रीवकेपास नहीं जावैगे॰ ऐसी दृढता करोगेतब निश्चय जानकी प्राप्तिहोवैगा॰ ॥६॥

श्लो॰ ऋक्षेशवचनंश्रुत्वातथोक्तंकृत्यसादरम् ॥ जानकीशोधनेयत्नाःपुनर्वीरायथुस्तदा ॥ ७ ॥

भा॰टी॰ - जांबवानकी वाक्य स्मनिके कपियोनें फिरि जानकीके॰ शोधनेवास्ते जातेभये ॥७॥

श्लो॰ मार्गेप्रातातदातेषांयोगिनीयोगतत्परा ॥ निर्वंचनायास्तनुजाबिलंकपटभेदनम् ॥ ८ ॥

भा॰टी॰ - तब रस्तेमें एक योगिनी मिली॰ कैसी योगिनीहै निःकपटकी लडिकी॰ कपटको काटनारूप योगिनीकी बिलहै ॥८॥

श्लो॰ निवृत्तसिद्धिस्सारव्याता पातालंतत्सुखंमुने ॥ तयाविश्वासमार्गेणसर्वेनिष्कासिताबिलात् ॥
अपक्कहृदयाःपूर्वंज्ञानपक्कास्तयाकृताः ॥ ९ ॥

भा॰टी॰ - मोक्षकी सिद्धिरूपसो योगिनीहै॰ उसी मोक्षके सिद्धिमें जोसुख सो पातालहै॰ कपटकोनाश करने वालीजोबिलिसोपातालमें मिलीहै॰ ऐसी निःकपटकी लडिकी योगिनी मोक्षकी सिद्धिरूप सो विश्वासरूप रस्ता करिके वानरों कोंउसबिलसें निकारिकें बाहेर करि देती भई वाहेरकरनायहहैकि॰ पेस्तर कपिकु छुज्ञानन॰

हीं जानते रहे सो योगिनी कपियोंकों ज्ञानमें पक्का करि दिया ९

श्लो॰ कपटोन्मूलनं तेषां तन्निःकाशान्निगद्यते ॥
लंकाकनकहर्षाब्धितटंतस्थुर्म्मवानराः ॥ १० ॥

भा॰टी॰ - मोक्षकी सिद्धिरूप योगिनी पूर्वोक्त जो वानर हैं तिन्हो की कपट कों मूलसहित नाश किया सोही बिलसें कपियोंका निःकसना हुआ॰ बिलसें निकसिकै लंका रूरवको हर्ष सो समुद्र हैं तिसके तटपर वानरोने टिकते भये ॥ १० ॥

श्लो॰ रामांगुलेयविश्वासदर्भविस्तीर्यतेनदा ॥ पृथिव्यांतउपाविश्यप्राणान्त्यक्तुंसमुद्यताः ॥ ११ ॥

भा॰टी॰ - रामजीकी मुंदरी पासहै इससें सब वानरोकों विश्वास है कि हम लोगोकोंरामजी अपना कार्य सिद्धि विचारिकै तो हमारे दलमें मुंदरी दिए हैं ऐसा विश्वास सोई कुश भया॰ तिस कुशको जमीनमें बिछायकै उसी कुश आसन परबैठिकै सब वानर प्राणत्यागनेकी तयारी करते भये ॥ ११ ॥

श्लो॰ स्वभावक्रूरताप्राणंत्यजूतांवनचारिणाम् ॥
दैवयोगात्तदाप्राप्तस्संपातिर्गृद्ध्रसत्तमः ॥ १२ ॥

भा॰टी॰ - वानरोंका स्वभाव बडा क्रूर है तिसकों त्यागते जो वानर उसी समयमें दैवयोगसें संपाति नाम गीध आता भया ॥ १२ ॥

श्लो॰ दुर्लक्षणजटायोश्च भ्राता दुर्गतिवर्द्धनः ॥ तन्दक्षाकपयः सर्वेस्वात्मानं तेन भक्षितम् ॥ १३ ॥

भा॰टी॰ - खोटा लक्षण जो जटायु तिसका यह भाई खोटी गतिकों बढानेवाली बडी लोभरूप संपाति गीध है॰ तिस बडी लोभरूप संपातिकों वानरोने देखिकै अपनी २ देहका भक्षण ॥ १३ ॥

श्लो॰ अमन्यन्त तदोक्तश्च युवराजेन गृद्ध्रराट ॥ सं

पातिश्चरितम्भ्रातुश्श्रुत्वाविव्हलमानसः॥१४॥

भा॰टी॰ - माननेभए कियह दुष्ट हमसब लोगोंकों खावेगा॰ तब अगदनें संपातिसें पहिलेकी सबबात कहतेभए संपाति जटायुको मरण सुनिके विव्हल होगया॰ विचार कियाकि जीवोंको षोटाल क्षण जटायु बडी लोभजोमैं हूं तिस मेरा आदर करताथा॰ अब व हमरिगया जीवमात्रसब सुलक्षण होगए मेरेकों आदरकौन- देवैगा॰ इसवास्ते संपाति दुःखीभया॥१४॥

श्लो॰ कथित्वासस्ववृत्तांतं जानक्याश्चकपीन्प्रति॥
प्राप्तपक्षोययौपक्षीस्वगतिन्त्वरितंखगः॥स्वस्था
वासार्ज्जवोप्रोक्तोगृन्द्रपक्षोशुभाशुभौ॥१५॥

भा॰टी॰ - अति लोभरूप संपाति अपनी हाल तथाजानकी कीप्रा प्ति होनेकी हाल कहिके संदरिअवस्थामें वास तथा बडी लोभको दुष्टस्वभाव छोडिकें कोमलस्वभावए दोपक्ष प्राप्ति होके चला॰ गया॥१५॥

श्लो॰ कपीनांदर्शनफलादतिलोभंचत्यज्यसः॥
गतेगृद्धेनिरीक्ष्याथकथयस्सागरंतदा॥१६॥

भा॰टी॰ - कपियोंके दर्शनकेफलतें अति लोभकों त्यागिके संपा॰ तिमहात्मा होगया तब गीधके गएपीछे वानरोंनें समुद्रकों दे॰ खिकेसब॥१६॥

श्लो॰ एनमुल्लंघ्य कोवीरोलंकांगत्वाचजानकीम्॥
दृश्याख्यास्यतिरामायजानकीकुशलंसुधीः॥१७

भा॰टी॰ - आपसमें विचारने लगेकि ऐसावीर कौनहै॰ जोवीर इस समुद्रकों कूदिके लंकाकोंजायके जानकीकों देखिके जा॰ नकीकी कुशल रामचंद्रसें कहे॥१७॥

श्लो॰ स्वस्ववीर्यंवदन्तिस्मसर्वेकपिवरास्तदा॥
गुरुमानवभावंवैकार्य्यकर्त्तुन्नतेक्षमाः॥१८॥

भा॰टी॰ –गुरुको मानुष्यसरीके देखतेथे वानर लोग सो वानरका पराक्रमहै उसी अपने २ वीर्यको समुद्रके लाँघने वास्ते आपसमें सब वानर कहते भये॰ परंतु समुद्रकों कूदिके लंकाकों जा॰यके जानकीकों देखिके फिरि समुद्रकों कूदिके जानकीकी हाल रामजीसे कहनेको किसीकी सामर्थ्य नहीं होती भई॥१८॥

श्लो॰ दुःखितान्वानरान्वीक्ष्यप्रेरयामासमारुतिम्॥
ऋक्षेशोरामचंद्रस्यप्रीतितृष्णासमुद्भवम्॥१९॥

भा॰टी॰ –वानरोंकों दुःखित देखिके रामजीमें जोप्रीति तिसकी जो तृष्णा तिसतृष्णाके पुत्रजो हनुमान तिस्कों जांबवान आज्ञा॰ देताभया॥१९॥

श्लो॰ रामपादरतेर्मोहं हनुमन्तम्महाकपिम्॥ आ॰
रुरोहगिरिंवीरोरामनिन्दनरूपिणम्॥२०॥

भा॰टी॰ – कैसे हनुमान है रामजीके चरणोंकी जोरति तिसरति में मोहरूप है ऐसाजो हनुमानहै सो दुष्टजन रामजीकी निंदा करते है सोई निंदारूप पर्वतपर चढिगए॥२०॥

श्लो॰ दासाभिमानपादेनतमापीड्यमहागिरिम्
सिंन्धूल्लंघनकार्यार्थमारुरोहनभंकपिः॥२१॥

भा॰टी॰ – हनुमानविचारेकि मैं रामजीके दास हों ऐसा दासको॰ अभिमान सोई हनुमानको पगहै तिसपगकरिकै रामजीको निंदनरूप पर्वतकों दाबिके समुद्रकों कूदनेवास्ते हनुमान आ॰ काशकों चढिगए॥२१॥

श्लो॰ कार्यसिद्धिंस्वतोज्ञात्वाचिंताशून्यंनभःस्मृतं॥

पूर्वोक्तसागरे हर्षतोयवृद्धिप्रपूरिते ॥ तिष्ठंतीव- निताकाचित्कुकर्मरीतिरद्भुता ॥ २२ ॥

भा॰टी॰ - रामजीके कार्यकी सिद्धि हनुमाननें आपसे जानिकें चिंताको त्याग दिहे सो चिंताहीन हनुमानको चित्त सोई आकाश भयाहै॰ पेस्तर वर्णन भया हर्ष सोई जल है तिसजलकी वृद्धि करिके पूर्ण जो समुद्र तिसमें कुकर्मकी रीति रूप कोई स्त्री बडी अद्भुत ॥ २२ ॥

श्लो॰ सिंहिकासासमाख्याता तयाग्रस्तस्तदाकपिः छायामार्गेणसावीरञ्च कर्षस्वान्तिकंहि सा ॥ २३

भा॰टी॰ - सिंहिका उसका नाम सो स्त्री हनुमानकी छाया पकरिके अपने साम्नेको हनुमानकों षेंचि लेती भई ॥ २३ ॥

श्लो॰ स्वच्छायांहनुमान्वीक्ष्य कार्यबुद्धिंदृढांकपिः ॥ शीघ्रंगमनक्रोधेनकार्यविघ्नेनमुष्टिना ॥ २४ ॥

भा॰टी॰ - रामजीके काजमे हनुमानकी बुद्धि बहुत दृढ है सोई हनुमानकी छायाहै तिस छायाकों ग्रसित देखिके तब रामजीके- काज वास्ते जलदी जाना॰ तिसमें विघ्न होना सो हनुमानके हातकी मुष्टि है तिस मुष्टि करिके ॥ २४ ॥

श्लो॰ तांहत्वाचपुनर्गन्तुमारेभेसहसाकपिः ॥ सुरैर्जग्राहतंवीरम्प्रेषितासुरसासती ॥ २५ ॥

भा॰टी॰ - सिंहिकाकों मारिके जलदी चलतेभए तब देवतोंकरिके भेजीजो सुरसा सो हनुमानकों पकडि लिया ॥ २५ ॥

श्लो॰ सुकार्य्यभ्रांतिस्साज्ञेयामार्गन्देहीतितांकपिः ॥ प्रोवाचनददौमार्गंस मनस्त्वञ्चसायदा ॥ २६ ॥

भा॰टी॰ - सुंदरकाजमेंजो भ्रांति होती है सोई सुरसा है तब सुर

सासें हनुमान बोले हे स्करसे तूंस्कंदरकाजकी भ्रांति है सो मेरे स्कंदरमनरूप रस्तादे रामजीके काज करनेमें मेरे मनमें भ्रांतिरूप तूं मति रिकु ऐसा हनुमान कहेजब स्करसाने रस्ता नहीदिया२६

श्लो० तदाकपिस्तान्निर्भर्त्स्यगंतुकामं प्रचक्रमे॥ गच्छंतंसाकपिन्दृष्ट्वाभक्षितुंसमनुद्यता॥२७॥

भा·टी· - तब हनुमान उसको त्रास करिके जबर दस्तीसें चलतेभये· तब चलेजात जो हनुमान तिन्को खानेवास्ते उपाय करतीभई

श्लो० रामकार्येषुविद्वेषन्तत्तस्यामुखवर्द्धनम्॥अ हंद्रक्ष्यामिवैदेहीमितिहर्षरवन्तनुः॥२८॥

भा·टी· - रामजीके काजमें वैर सोई स्करसाको मुखको बढाना भया· तथा हनुमानजीविचारेकि मैं जानकीकों देखोंगा ऐसा हर्षकीवृद्धि सोई जलदी हनुमानको भी देहका बढाना हुआ· ॥२८

श्लो०कपिनावर्द्धितस्तूर्णंज्ञात्वातस्यपराक्रमम्॥त दास्यमदनाशश्चतम्प्रविश्य तनुंकपिः॥२९॥

भा·टी· - स्करसा हनुमानके पराक्रमकों देखिके तब स्करसाके मुखबढानेको अभिमान नष्टहोगया·तब हनुमान स्करसाके तनुरूप मुखमें प्रवेश करिके॥२९॥

श्लो० गन्तुकामन्गिरीस्त्यैवददावाशिषमुत्तमाम्॥नि र्मोहताशिषन्दत्वागत्ताकाशंचसापुनः॥३०॥

भा·टी· - यहश्लोक युग्महै हनुमानकों जाता देखिके निर्मोहरूप आशीर्वाद हनुमानकों देती भईकि हे हनुमान रामजीकेचरणकेप्रीतिमे· तुमारी मोह सदाबनीरहेगा· ऐसा कहिके आकाशकों जातीभई॥३०॥

श्लो०चिंतापानीयतद्दीर्यस्करकार्यविवर्जनम्॥दुष्ट

कर्माण्यनेकानितषाम्मध्येशतैस्तदा ॥३१॥

भा॰टी॰ - तब हनुमान समुद्रके पार जाते भये कैसा समुद्र है हनुमानकी चिंतारूप जल सोई समुद्रको पराक्रम है देवतोंके कार्यकों करने नही देना सोई अनेक दुष्टकर्म है तिन दुष्टोंके मध्यमें शैकरौं १०० दुष्टकरिके ॥३१॥

श्लो॰ महाबलैर्विस्तृतंचदुरीहजन्तुसंकुलम् ॥ ईदृशं सागरन्तीर्त्वागतः पारंचदक्षिणम् ॥३२॥

भा॰टी॰ - बडे बलीकरिके विस्तार होरहा है तथा दुष्टों कों रातिदिन षोटेकर्ममें भाव सोई जलके जीव है तिनजीवों करिके व्याप्त होरहा है॰ ऐसे समुद्रकों पारजायके समुद्रके दक्षिण तटकों हनुमान प्राप्तिभए॰ तीनश्लोक ३० तथा ३१ तथा ३२ कौ अर्थ मिला है सो कुलक है ३२

श्लो॰ मंस्यन्तिमातरं मे ऽद्योधन्यामेत्तच्चराचरम् ॥ इतिहर्षकपिर्मेने तद्दक्षिणतटंमुने ॥३३॥

भा॰टी॰ - हनुमाननें विचार कियाकि अभीयह संसार केचराचरजीव मेरीमाताकों धन्य मानैंगे ऐसा हर्ष हनुमान आपने हृदयमें मानते भये॰ सोई समुद्रका दक्षिण तट है ॥३॥

श्लो॰ संस्मृत्यरामस्य स्वरूपमद्भुतं कपीश्वरः सिंधु तटस्थितोबभौ ॥ अहंभविष्यामिहृयोस्सुवीरयोस्सुकंठसन्तोषनुदोस्सदाप्रियः ॥३४॥

भा॰टी॰ - हनुमानरामचंद्रके अद्भुत स्वरूपकों स्मरण करिके खुशी भयेसोई समुद्रके तटपरटिके जो हनुमान तिनकी सोभा है॰ जानकीकूं देखिके रामजीके पास जाउंगा॰ तब रामजीकों तथा सुग्रीवकों बडाप्याराहोउंगा॰ ऐसा आनंदमानते भये ॥३४॥

इतिश्रीवेदान्तरामायणेशिवसहायबुधविरचिते

सुंदरकांडेप्रथमोमोक्षोपानः॥१॥

श्लो० वरतन्तुरुवाच सिंधोस्तटेसमासीनोवि
चारंकृतवान्कपिः॥ रामचन्द्रपदध्यानन्तद्विचा·
रंहनूमतः॥१॥

भा·टी· - वरतंतु मुनि बोले हर्षरूप समुद्रके तटपर हनुमानरिकि
के रामजीकेचरणकोध्यानकर्तेभये· सोई ध्यान लंकामें प्रवेश कर
नेवास्ते हनुमान कोविचार कर्नाभया॥१॥

श्लो० रामचन्द्रपदद्वंद्वप्रीतितृष्णासुतस्यवै॥ जगतो
लघुज्ञानत्वंलघुरूपंचतद्धृतम्॥२॥

भा·टी· - रामजीके चरणमेंजो प्रीति उसी प्रीतिकी तृष्णा तिसके
पुत्र हनुमानसें अपनी हृदयमें ऐसाविचार करतेहैंकि तीनलोक
चौदाभुवन विवेक रूप रामसे थोराहै ए रामजी सबसेबडेहैंऐसा
विचार सोई छोटा रूप भयाहै· ऐसे रूपकों हनुमान धरिकें लंका
में प्रवेश कर्ते भये॥२॥

श्लो० दुष्टकर्म्मस्थितिंप्रीत्याहठात्साराक्षणालया॥
प्रविशन्तंकपिन्द्रष्टुात्तर्ज्जयामाससानिजैः॥ बिर·
संस्थैश्चरित्रैश्चदुष्टराक्षससंस्थितैः॥३॥

भा·टी· - तब हठसें षोटेकर्ममें प्रीतिसें टिकना ऐसीजो लंकारू
पराक्षसी सो लंकामें प्रवेश कर्तेजो हनुमान तिनकों आपनेचरित्र
करिके डराती भई· कैसाचरित्रहै बहुत दिनोसें दुष्टराक्षसोंके·
संगवास रूपचरित्र॥३॥

श्लो० लंकाप्रवेशहर्षस्ययातृष्णाभूत्कपेस्तदा॥ त·
यामुष्ट्यामहावीरोहत्वातांप्राविशत्पुरीम्॥४॥

भा॰टी॰ - हनुमाननैं लंकामें प्रवेश किए तब बडा हर्ष भया-उस हर्षमें जो तृष्णा सो हनुमानकी हात के मूठि भई उसी मूठि करि॰ के लंका राक्षसीकों मारिके लंकामें प्रवेश कर्ते भये ॥ ४ ॥

श्लो॰ जानकीशोकसविताऽगमास्तन्तदाकपिः ॥
कपेर्धैर्य्यमभूत्सायम्प्रवेशं हर्षवर्द्धनम् ॥ ५ ॥

भा॰टी॰ - तबजानकीको शोकरूप सूर्यका अस्त होगया तथा हनुमानकी धीरजपण सोई सायंकाल होगया॰ हनुमान अत्यंत खुशीभए सो खुशी होना लंकामें हनुमानको प्रवेश भयाहै ॥ ५ ॥

श्लो॰ मदांधबुद्धिर्दैत्यानांरावणादिप्रतापिनां ॥ सा-
निशाजानकींद्रष्टुं तस्याम्बभ्रामवानरः ॥ ६ ॥

भा॰टी॰ - रावण आदि लेके बडे बडे राक्षसोंकी बुद्धि अभिमानकरिके अन्धी होरहीहै सोई रात्रि भई तिस रात्रिमें जानकी के देखने वास्ते प्रेमरूप भ्रमण हनुमान करते भए ॥ ६ ॥

श्लो॰ नापश्यज्जानकींतत्रब्रह्मभक्तिं कपीश्वरः ॥ रा
क्षसानांदुराचृत्तिस्साचिन्ताप्य भवत्कपेः ॥ ७ ॥

भा॰टी॰ - ब्रह्मकी भक्तिरूप जानकीकों नही देखे हनुमान तब राक्षसोंकी षोटीवृत्तिरूप चिन्ताकों हनुमान प्राप्ति भये ॥ ७ ॥

श्लो॰ चिन्ताग्रस्तः कपीशश्चजगामाशोकवाटिकाम् ॥
कदापिदैवात्सत्संगोरावणस्यापिसंभवेत् ॥ ८ ॥

भा॰टी॰ - उसी चिंता करिके ग्रसित जो हनुमान सो अशोक बगीचामैं गए॰ कभी दैवयोगसें रावणकोभी सत्संग होजावैगा ॥ ८ ॥

श्लो॰ यत्रकुत्रापितद्धर्षस्साऽशोकतरुरुच्यते ॥ त-
स्मीतिर्वाटिकाप्रोक्ताश्चान्येवृक्षास्त्वनेकशः ॥ ९ ॥

भा॰टी॰ - जिसी किसीजगहपर ऐसा विचारमे जो हर्ष सो अशोक

नाम वृक्ष है- उसी हर्षरूप अशोक वृक्षमें जो प्रीति सो अशोक बगीचा है तथा दूसरे कामके हर्षरूप वृक्ष तो अनेक हैं ॥ ९ ॥

श्लो॰ तेसर्वेशोकवृक्षानांस्कन्धाश्चामितशाखिनः ॥
फलिनस्तरवश्चान्येदुःकर्म्मामोदरूपिणः ॥ १० ॥

भा॰टी॰ - और जो वृक्ष अनेक अनेक प्रकारके है सो अशोक वृक्षोंके स्कन्धरूप है- और षोटे काजमें आनंद माने ऐसा रूप वृक्ष फूलवाले भी है क्योंकि बगीचामें एकैरकमको वृक्ष नही रहता बहुत प्रकारके रहते है ॥ १० ॥

श्लो॰ पूर्वोक्तावाटिकामुख्याचेयमाभ्यन्तरस्थिता ॥
राक्षसानांविलासायचान्यास्तासुचभूरिशः ॥ ११ ॥

भा॰टी॰ - तथा अरण्यकांडमें जानकी के टिकाने वखत अशोकवाटिकाको वर्णन भया है- असिल वह है यह तो बगीचाके भीतर भी बगीचा रहता है सो यह है- राक्षसोंको आनंद करनेवास्ते अशोव बगीचामे इस्से भी और बहुत बगीचा है ॥ ११ ॥

श्लो॰ समारुह्यकपिर्वीरोदृढिमानंतरुंकधीः ॥ दढ
र्शतदधोवीरोहर्षशोकस्वरूपिणि ॥ १२ ॥

भा॰टी॰ - हनुमानके हृदयमें ऐसी दृढता हैकि मैं रामजीको कार्य करूंगा- सोई एक वृक्ष है जिसके नीचे जानकी रहती थी- तिस वृक्षपर हनुमान चढिके कभी हर्ष कभी शोक ऐसा हनुमानकी हृदयमें होता है सोई उस वृक्षको नीचतल भया है- ऐसे वृक्षके नीचे जानकीको हनुमान देखते भये ॥ १२ ॥

श्लो॰ जानकीम्ब्रह्मणोभक्तिंजन्ममृत्युविनाशिनीम् ॥
एकवेणीधरान्देवीरूपचिन्तास्वरूपिणीम् ॥ १३ ॥

भा॰टी॰ - कैसी जानकी है ब्रह्मकी भक्ति है- जन्म तथा मरणकेवा

धाकी नाशकर्नेवाली है· भगवानके रूपकी चिंताजानकीराति· दिन कर्ती हैं सोई शिरमें एक पाटी बनाय के उसीपाटीकों शिर में धारण कियेहैं॥ १३॥

श्लो० कृशितांराक्षसानाम्वैमुक्तिदानस्यचिंतया॥
बिभ्रतीम्मलिनंवस्त्रंरामचंद्रवियोगजं।दुःखरूपं
विलोक्याशुजहर्षकपिसत्तमः॥१४॥

भा·टी· - इनदुष्टराक्षसोंका मोक्ष कैसा होवैगा ऐसी चिंता रूप· सोई जानकी दुर्बल होरहीहै· रामजीको वियोगरूप मैलावस्त्र जानकीनें धारण कियाहै ऐसा दुःख रूप जानकी को स्वरूप हनुमान जलदी देखिके बहुत खुशी भए किजानकी दुःखी है परंतु मैं दर्शन जानकीको पाया-इसवास्ते खुशी भए॥१४॥

श्लो० आजगामतदावीरोरावणोराक्षसेश्वरः॥ जान
कींस्वस्त्रियंकर्तुंतन्दृष्ट्वापिहितउंकपिः॥१५॥

भा·टी· - तबउसीवखत जानकीकों रावण अपनी स्त्रीबनानेवा· स्ते आता भया·तिसकों देखिके हनुमान छिपिगए·॥१५॥

श्लो० दर्शयित्वाचसामादिरावणोवैपराजितः॥ न
स्वीकृतन्तयासर्वाराक्षसीउंप्रत्युवाचह॥१६॥

भा·टी· - रावणने साम दाम दंड भेद जानकी कों देखाय केहारि गया· जानकी रावणकी वाक्यकों नहीं मानती भई· तब रावण-बोला हेदेवि मैंभी भगवानको अंशहीं इतिसाम॥ हेदेवि मैंभी· तुमारा नामलेउंगा· इतिदाम· हेदेवि मेरीविनत्ती नहीमानो तो मै तो भ्रष्ट होगयाहों परंतु तुमकोंभी भ्रष्ट करिदेवोंगा इतिदंड· आपनी प्रकृतिरूपराक्षसीयोंकों भेजिके जानकी केपास चुगली कराया· मेरी मंडलीमेंआइ जावो यहचारिभेद नहीमानी जानकी तो

राक्षसीयोंसें बोला रावण ॥१६॥

श्लो० द्विमासाभ्यन्तरेसीतानमद्वशमुपेष्यति॥तृ
दास्याः कर्त्यचांगानिराक्षसेभ्यः प्रदास्यथ॥पूर्वो
क्ताराक्षसाप्रोक्तारुत्यागन्तत्तनुकृंतनम्॥१७॥

भा-टी- - दो महीने के बीचमे सीता हमारी बसमें नही आवेगा तो इस जानकीकी देहकों काटिके राक्षसोंकों तुमसब मिलके देदेना जानकीकों लंकासे निकालिदेना-येही देहको काटनाहै-पहिले कहे हुए राक्षसोंकों जानकीकेरक्षावास्ते देना सोई देहकाटके देना है १७

श्लो० इंद्रियाणांच द्वौचेष्टौकर्मज्ञानेतिसर्वदा॥इ
त्युक्काराक्षसीरक्षोजगामस्वालयशठः॥१८॥

भा-टी- - दसइंद्रियोंकी दोचेष्टाहे पांच ज्ञानेंद्रियस्वभाव पांच कर्मेंद्रियस्वभाव यहसदा है सोई दोमहीनाभयाहै-ज्ञानसें तथाकर्मसें समुझो-ऐसा राक्षसियोंसें कहिके रावणजो शठहै-सो अपनेघरकूं गया-॥१८॥

श्लो० गतेदशाननेसीतान्निंदेर्षाद्यास्त्वनेकशः॥रा-
क्षस्यस्त्रासयामासुस्त्रासनन्तन्मदक्षयम्॥१९॥

भा-टी- - रावणके गयेपीछे परनिंदापराई इर्षा इन्हो आदि लेकेगिनतीरहितजो राक्षसी हे सोसब अपना अनेकप्रकारकीमदकी क्षयरूपजो त्रास सोजानकीकों देनें लगीं॥१९॥

श्लो० वर्ज्जयित्वाचतास्सर्वास्त्रिजटावाक्यमब्रवीत्
॥शत्रुत्रयविनाशायत्रिधाबुद्धिश्चसाम्भृता॥२०॥

भा-टी- - कामक्रोधलोभकी नाश कर्नेकी बुद्धिजो त्रिजटाहे सोरामजीकी प्यारीहे वहसब राक्षसीयोंको मनाकरिकै बोलतीभई॥२०

श्लो० मात्रासयतवैदेहींरावणस्यकुलक्षयम॥अचि

रेणैवमेदृष्टो राज्यान्तिश्चविभीषणे ॥ २१ ॥

भा·टी· - अरे दुष्टिनी राक्षसीयों जनकपुत्रीकों त्रास मत करो· रावणके कुलका नाश थोरेही दिनमें मैं देखती हूं और लंका कोराज बिभीषणकों होवेगा येभीमें देखती हूं ॥ २१ ॥

श्लो· एवमुक्तास्तया सर्वा बभूवुर्निद्रयायुताः ॥ जानक्यैशमनीम्बुद्धिन्दत्वागात्त्रिजटागृहम् ॥ २२ ॥

भा·टी· - त्रिजटाकरिके इसप्रकार कहीजो राक्षसी हैं सो सब निद्रासे व्याकुल होयके सोगई· त्रिजटा जानकीप्रति सांति बुद्धि दैके· अपने घरकूं गई राक्षसीयोंका बुराकर्म छूटनासोनिद्रा· सोना है ॥ २२ ॥

श्लो· संसारसुखत्यागश्चत्रिजटागेहमुत्तमम् ॥ तदादिसर्वं रामस्यचरितंकपिरभाषत् ॥ २३ ॥

भा·टी· - संसारके सुखको त्याग सोई त्रिजटा को घर है· त्रिजटाकेगएपीछे आदिसे रामजीको सब चरित्र हनुमान कहते भए· २३

श्लो· श्रुत्वापि सर्वं रामस्यचरितंकपिवर्णितम् ॥ स्वपतिप्रीतिसन्त्यागाविश्वासंप्रापजानकी ॥ २४ ॥

भा·टी· - कपिके मुखसें कहाजो रामजीका चरित्र सो संपूर्ण जानकीसुनी तोभी चित्तमें बिचारकियाकि मैने आपने पतिकी प्रीतिरक्षाकर्नेवास्ते दूसरेकी वचन नहीसुनतीहूं दुसरेकी बचनसुननेसें अपनेपतिकी प्रीतिको त्याग होता है· ऐसा अविश्वास किया विश्वास नहीमानी ॥ २४ ॥

श्लो· जानक्यारामचंद्रस्यप्रीतिरत्यंतवल्लभा ॥ तदुत्पन्नंचयत्प्रेमददौतद्धनुमान्कपिः ॥ २५ ॥

भा·टी· - जानकीकेऊपर रामजीकी बडीप्यारी प्रीति है तिसप्रीतिसें जोउत्पन्नभयाप्रेम सोमुद्रिका है उस मुँदरीकों हनूमाननें जानकी

कूं देतेभए ॥२५॥

श्लो॰ रामांगुलीयंसंगृत्यस्कृतंमेनेकपिंसती ॥नि
तिक्षारूपसम्वादंचक्रतुःपुत्रमातरौ ॥२६॥

भा॰टी॰ - रामजीकी मुँदरी लेके जानकीने हनुमानकूं अपनापुत्र मानती भई॰ दुष्टके कर्मकों देखके क्रोधनहीकरना ऐसीबात पुत्र जोहनुमान माताजो जानकी येदोनोकरतेभये॥२६॥

श्लो॰ क्षुद्रावणमिलापेच्छातयार्तोराजकन्यया॥
अनुज्ञातोबभक्षाशुफलानिनिर्भयःकपिः॥२७॥

भा॰टी॰ - हनुमानजीके रावणासें मुलाकात कर्नेकी इच्छा सोई॰ भूखहै॰ तिसभूखसें वडा दुःखी होके हनुमान जनककी कन्या॰ जोजानकी तिस्सें आज्ञा मागिके और भयछोडिकें फलखातेभये

श्लो॰ दुष्टकर्मादितरवः फलंतेषांपरार्दनम्॥तानु॰
त्पाट्यकपिर्वीरोभक्षित्वातत्फलानिच॥२८॥

भा॰टी॰ - जुआ चोरी जहरदेना आगिलगाना इनकों आदिलेके औरजोबुरे कर्महै सोसब वृक्षभएहै तिनकों हनुमान मूलसें तो॰ डिडाला॰ इनवृक्षोंका फल क्याहै दूसरेकूं दुःख देना॰ ऐसेफलोंको भीखाया॰ त्रेता द्वापरमे एनष्टहोगये॰ कलियुगमें पुनिभये॥२८

श्लो॰ जगर्ज्जदुष्टनाशम्वराक्षसीभिर्निवेदितः॥गर्जे
न्वीरोमनश्चक्रेरावणंहंतुमुद्यतः॥२९॥

भा॰टी॰ - बुरे कर्मकोनाशरूप हनुमानकोगर्जना भया॰ तथाराक्ष॰ सीयोनें रावणसें सर्व हाल कहतीभई॰ गर्जनाकरते करते हनुमानजी मनरूपरावणकों मारनेको विचार कर्तेभए॥२९॥

श्लो॰ विवेकरूपस्यरघूत्तमस्यतृष्णासुत ऽ प्रेम
रसस्यमोहः॥गर्जन्कपीशाधिपतेश्चदूतोवितर्कः

यामासदशास्यमृत्युम् ॥ ३० ॥

भा॰टी॰ -विवेकरूपरामजीके भजनकी तृष्णा के पुत्र हनुमानतथा रामजीके प्रेमके मोहरूप सुग्रीवके दूत ऐसे हनुमान रावणको मरणविचारते भए ॥ ३० ॥

इतिश्रीवेदान्तरामायणेसुंदरकांडे सम्वर्त वरतन्तुसंवादेशिवसहायबुधविरचिते अशोकवाटिकानाशे द्वितीयोमोक्षोपानः ॥ २ ॥

---

श्लो॰ वरतन्तुरुवाच राक्षसीभिः समाश्रुत्यक पेः कर्मचरावणः ॥ स्वपुत्रमक्षनामानंकलियाः हीत्यनोदयत् ॥ १ ॥

भा॰टी॰ - वरतन्तु मुनि बोलते भए राक्षसियों करिके कथितजो हनुमानका किया कर्म तिस्कों रावणने सुनिके आपना पुत्रजो सब जीवोंसे लडाई रूप अक्षनाम तिसकों भेजताभया-उससें कहाकि तूंजायके हनुमानकों पकडिल्यावो ॥ १ ॥

श्लो॰ पित्राज्ञातोययौशीघ्रंकलहोरामपादयोः ॥ तृष्णात्मजंचतन्मोहं ददर्शस्वस्यरूपिणम् ॥ २ ॥

भा॰टी॰ - पिताकी आज्ञाकों पाइके जलदी अक्षय कुमारगया-जायके बहुत हुसियार होयके देखेजो हनुमान तिसकों देषा-कैसेहनुमानहैं रामजीके दोनोंचरणों कीजोतृष्णा तिसके बेटाहैं-तथा रामजीकेपगकी जोमोह सोई हनुमानहैं ॥ २ ॥

श्लो॰ सद्रोहोराक्षसेन्द्रस्यप्रासादोवाटिकास्थितः ॥ तमारूढंकपिन्द्रस्याहन्तुंसोभिप्रदुद्रुवे ॥ ३ ॥

भा॰टी॰ - मनरूपरावणनें सुंदरकार्यमें द्रोह किया-सोईद्रोहरूप

अशोकबगीचामें हवेली है अक्षयकुमारनें तिस हवेलीपरबैठे जो हनुमान तिस्कों मारनेवास्ते दौडता भया॥ ३॥

श्लो० सहतः कपिवीरेण पपात धरणीतले॥ विरुद्ध बुद्धिसम्भूते दुर्वाक्ये रावणात्मजः॥ ४॥

भा·टी· – रावणको पुत्र हनुमान करिकै माराथका सो भूमिमें पडि गया· षोटीबुद्धिसें उत्पन्न जो षोटावचन सो भूमि ऊपर कहाती है त· हां पडिकै मरिगया॥ ४॥

श्लो० किंचित्कलिंस्वतनयं हतं दृष्वा च रावणः॥ दुश्चेष्टितं मेघनादं प्रेरयामास सत्वरः॥ ५॥

भा·टी· – रावणने थोराकलहरूप अपना बेटा अक्ष तिस्कों मरा देखिकै जलदी षोटे काजकी प्रीति जैसा दूसरेका स्करव देखिके· जलना सोई मेघनाद है तिस्कों भेजता भया·॥ ५॥

श्लो० सस्ले न कृतवान्युद्धं स्वस्वकर्मप्रशंसनम्॥ सत्तिरस्कार पाशेन वबंधत्वरितं कपिम्॥ ६॥

भा·टी· – मेघनादनें अपने कुलकी तारीफ किया· तथा हनुमान· नै रामजीकी समाजकी तारीफ किया· ऐसी युद्ध दोनो कर्ते भए· तिस पीछे साधुलोगोंको जो अनादर सोई पास भया है तिस पाश करिकै हनुमानकों बांधता भया॥ ६॥

श्लो० रामचन्द्रविरुद्धेच्छा सा सभा रावणस्य च॥ कपिर्बद्धोययौ तां च तेनानीतो दुरात्मना॥ ७॥

भा·टी· – रामजीके संगविरुद्ध करनेकी इच्छा सोई रावणकी स· भा है सो खोटे काजमें प्रेमरूप मेघनाद उसी सभामें बंधे हुए हनुमानकूं लेगया॥ ७॥

श्लो० मनसा रावणेनैव पृष्टः कस्त्वमिहागतः॥ कि

मर्थंकाननन्नष्टंकृतंतेमेसुतोहतः ॥ ८॥

भा-टी- - मनरावण हनुमानसे पूछने लगा तूं कौनहै इहां क्यों आया- और अशोकवाटिकाको नाश क्यों किया- तथा हमारे पुत्रकों क्यों मारा ॥ ८॥

श्लो० इतिपृष्टस्तदोवाचनिर्भयोहनुमान्कपिः ॥ दूतोहंरामचन्द्रस्यनिर्मोहोहनुमान्कपिः ॥ जानकीदर्शनायात्रप्राप्तस्सुग्रीवप्रेरितः ॥ ९ ॥

भा-टी- - मैं विवेकरूपरामजीकोदूतहौं हनुमान मेरानामहै- गुरुको उपदेशरूप जो सुग्रीव उन्ने जानकीकों देखने वास्ते मेरेकौं लंकामें भेजाहै ॥ ९॥

श्लो० इत्युक्तस्ताडयामासरावणोराक्षसैस्तदा ॥ कपिम्विषयजैस्सौख्यैर्गणनावर्जितैर्मुहुः ॥ १०॥

भा-टी- - हनुमानकी वाक्य सुनिके गनतीसें हीनजो विषयको- सुख तिसकरिके रावण राक्षसोंसें हनुमानकोंमरातामया ॥ १०

श्लो० रामचन्द्रपदप्रीतितृष्णापुत्रस्यदाहनम् ॥ विचार्यराक्षसाश्चक्रुस्तत्पुच्छेवस्त्रवेष्टनम् ॥ ११॥

भा-टी- - रामचंद्रके चरणकी तृष्णा तिसके पुत्र हनुमान मोहनाम ऐसे हनुमानकों भस्म करने वास्ते खोटा कर्मरूप सब राक्षस हनुमानकी पुच्छमें वस्त्रलपेटतेभये ॥ ११॥

श्लो० रामसेवासुखेहर्षं तल्लांगूलं कपेस्सृतम् ॥ दुष्टकर्मसुखैर्वस्त्रैर्वेष्टित्वाग्निंसमाददुः ॥ १२॥

भा-टी- - रामजीकी सेवामेंजो सुख तिस सुखको हर्ष सोई हनुमानकी पुच्छहै तिस पुच्छमें षोटेकर्मोमेंजो सुख सोई कपडा भयाहै तिसकपडेकों हनुमानकी पुच्छमें लपेटिके अग्नी लगाय

देतेभये॥१२॥

श्लो॰ स्वशक्त्यभावः कार्येषु सोऽग्निरित्येव कीर्त्यते॥
चिंताप्रजागरस्तैलं रज्ज्वक्षशोकमुत्तमम्॥१३॥

भा॰टी॰ –षोटे काजोंमें राक्षसोंकी शक्ति नष्ट होगई सो अग्नि भई तथा राक्षसोंको चिंता करिके नींद नही आती सो तेल है अक्षय कुमारकी शोक सोवडी पुष्ट रस्सी है तिस रस्सीसें पूंछिमें वस्त्रकों बांधिके अग्नी लगाय देतेभये॥१३॥

श्लो॰ ग्रहणं हठसंवेगो भ्रमणं त्वदुरासदम्॥ हसनं राक्षसानां वै रामचन्द्रपराजयः॥१४॥

भा॰टी॰ – राक्षसोंकी हठकी वृद्धि सोई राक्षसों करिके हनुमानकों पकडना भयाहै॰ राक्षस बडे दुःखसें जीतवे योग्य है ऐसा दुष्टोंकोबल सोई लंकामें हनुमानको भ्रमण करानाभयाहै॰ रामजीकों हमजीति लेवैंगे ऐसा राक्षसोंको विचार सोई हास्य भयाहै॥१४॥

श्लो॰ राक्षसानां कुकर्माद्यास्ते सर्वे न्यायकौशलाः॥
तएव ताडना भूरि कपेर्हर्षविवर्द्धनाः॥१५॥

भा॰टी॰ – राक्षसोंकी षोटे कर्म आदि लेकें चतुराई सोई हनुमानके हर्ष बढानेवाला ताडना भयाहै॰॥१५॥

श्लो॰ एतैश्चान्यैश्च बहुभिश्शरीरस्थैश्च राक्षसैः॥
प्रेरितैर्दशभालेन संमोहस्त्रासितः कपिः॥१६॥

भा॰टी॰ – इनसें और भी जो शरीरमें बहुतसे राक्षस टिके है सो सब मनरावणकी आज्ञा पायके रामजीके प्रेमके मोहरूप जो हनुमान तिसकों त्रास देतेभए॥१६॥

श्लो॰ भ्रामितोहासितश्चैव ताडितोऽप्यकुत्सनैः॥ संमोहो हनुमानाप शान्तिं रामप्रबोधतः॥१७॥

भा॰टी॰ - रामके प्रेमके मोह रूप जो हनुमान सो दूसरे जीवोंको दुख देनेवाले राक्षसों करिकैं धुमाए गए तथा माराजाता भए तथा हंसेजाते भए तौभी विवेकरूपरामजीकेक्रोधतें शांतिकों प्राप्तिभए विचार किहेकि लंकामेंजो मैंकुछ ज्यादाउत्पात करोंगातो रामजी मेरी दुर्गति करैंगे ॥१७॥

श्लो॰ नकिंचिद्राक्षसान्सर्वान्मन्यतेकपिसत्तमः॥
लघुनाकृतरूपेणपाशान्निर्गत्यतत्क्षणे॥१८॥

भा॰टी॰ - हनुमानने राक्षसोंको कछुभी बलवान नहीगनतेथे यहजो राक्षसोंकी लघुता सो हनुमानको लघुरूप भयाहै ऐसा लघुरूप धरिके हनुमान उसी वखत राक्षसोंकेपाससें निकलगए

श्लो॰ दुष्टकार्यस्थितिंप्रीत्याहठजांहनुमान्कपिः॥
ददाहलंकान्नगरींराक्षसानांप्रपश्यताम्॥१९॥

भा॰टी॰ - बुरेकाजोंमें हठसें प्रीतिसें टिकना ऐसी लंकाहै तिस लंकाकों राक्षसोंके देखते २ हनुमान भस्मकरिदेते भए॥१९॥

श्लो॰ पूर्वबुद्धिपरित्यागस्सैवदाहोविकथ्यते॥नि
न्देर्षाभूरितृष्णाद्यादुष्टकर्मरतिस्सदा॥परवित्त-
कलत्रादिस्पृहाचसततंहृदि॥२०॥

भा॰टी॰ - हनुमानकी त्रासतें राक्षसोंकी पेस्तरवाली बुद्धिकों थोराथोरा त्यागना सोई लंकाको जलानाभयाहै तथा परजीवकी निंदा ईर्षा बहुत तृष्णा बुरेकाजोंमें प्रीति सदा करना दूसरेको धन स्त्री आदि हरण करनेकी सदा इच्छाकरना ॥२०॥

श्लो॰ एवमाद्यास्त्वसंख्याताराक्षस्योभुवनत्रये॥ग्रं
थवृद्धिभयान्नैवनोक्तास्सर्वामयाधुना॥२१॥

भा॰टी॰ - इनकों आदिलेके गनती नहीजो कुकर्ममेंप्रीति सोरा

क्षसी तीन लोकमें भई है. सब राक्षसीयोंका वर्णन करे तो ग्रंथ बहुत बडा होजावैगा. इस भयसें नही मैंने वर्णन किया ॥२१॥

श्लो॰ भयन्तासांविलापश्च मदह्वानिश्चरक्षसां ॥ पुच्छशीतलतास्ताच लंकादुःखमनेकधा ॥ रूपभक्ते श्चजानक्यास्सेवास्यासनकपुनः ॥२२॥

भा॰टी॰ - लंकाकों जरती देखिके राक्षसी सब बहुत डरिगई सोई राक्षसीयोंको विलाप हुवा तथा राक्षसोंके मदको नाश भया सोई हनुमाननें पूंछि बुझायके ठंढी करते भए. औरजोजीव लंकामें बसेथे सबको बहुत दुःख भया सोई हनुमाननें फिरि जानकीकों विश्वास देते भए ॥२२॥

श्लो॰ पुत्रप्रीतिम्महावीरेताम्मणिंजानकीददौ ॥ तां गृहीत्वानमस्कृत्य तूर्णंचलितुमुद्यतः ॥२३॥

भा॰टी॰ - जानकीने हनुमानमे पुत्रसरीके प्रीति करतीभई सोई चूडामणि है. तिस मणिकों हनुमानकों दिया. जानकीनें. उस मणिकों हनुमान लेके रामकेपास चलते भए ॥२३॥

श्लो॰ कार्यसिद्धिंस्वतोवीक्ष्य हर्षंचक्रे कपिस्तदा ॥ तदेवलंघनंसिन्धोः पुनराभून्मुनीश्वर ॥२४॥

भा॰टी॰ - हनुमाननें अपने पराक्रमको देखिकें खुशी भए सोई. फिरि समुद्रके उत्तरपार आना भया ॥२४॥

श्लो॰ गुरुदेववियोगस्य शान्त्युपायांगदस्यच ॥ आश्वासनंकपिश्चक्रे स्वचरित्रप्रवर्णनैः ॥२५॥

भा॰टी॰ - गुरुके वियोग शान्तिकीउपायजो अंगद तिस्को हनुमान जो लंकामें कर्म किया उस कर्म रूपविश्वास देतेभये ॥२५॥

श्लो॰ कपेर्गुरूपदेशस्य विरुद्धाचरणंगुरौ ॥ तत्स्वा

तंकाननंतस्यकदापिविच्युतम्फलम्॥२७॥

भा॰टी॰ - गुरुकोउपदेशरूप सुग्रीव तिस्कों नित्यगुरुके पूजनमें शुद्ध आचार सोई सुग्रीवको मधुनाम बगेचाहै दैवयोगसें सोई आचार कभी क्षण भरेको नष्टहोजाताहै सोईफलहै ॥२६

श्लो॰ तस्यैवभक्षणञ्चकुः कपयोंगदप्रेरिताः॥गुरावाचारमननध्यानचिन्तनकीर्तनाः॥२७॥

भा॰टी॰ - क्षणभरेको आचारनष्टहोजाताहै सोईफलकों अंगदकी आज्ञापायके कपियोंने खातेभए गुरुके चरणमें आचार मानना॰ ध्यान चिंतन कीर्तन करना॥२७॥

श्लो॰ एतेवनेशाःकपिना कृतारक्षापरायणाः॥एतेषुचकदालस्यात्तेन्यूनवनयार्द्दिताः॥२८॥

भा॰टी॰ - ध्यान आदि इन्होंकों सुग्रीवने वनको मालिक कियाहै एसब गुरुके आचार केरखानेमें बडेचतुर है॰ इन्कोंजो कभी आलस्य होजातीहै सोवनके रक्षाकरनेमें छोटे मालिकहैं॰ उनकोंकपिलोगोनें मारतेभए॰॥२८॥

श्लो॰ निपीडितास्तेवनपाः कपीश्वरैर्विक्षुब्धमानाःस्वलितामुहुः पथि॥सुग्रीवमूचुः करुणापरास्तदातत्काननस्यैवविनाशनंमुने॥ २९॥

भा॰टी॰ - हेमुनिजी कपियोंसें पीडितजो पेस्तरवर्णन हुए बगीचाके रक्षाकरने वाले सोसब अपनादुःख तथा बगीचाको नाशसुग्रीवसें कहतेभए॰ २९॥

इतिश्रीवेदान्तरामायणेसुंदरकांडे संवर्तवरतन्तुसंवादेशिवसहायबुधविरचितेकपिमधुबनफलभक्षणेतृतीयोमोसोपानः॥३॥

श्लो॰ वरतन्तुरुवाच तेन्यूनवनपास्सर्वेप्रेरि॰ तैःकपिभिस्तदा॥ अंगदेनभृशन्वैवताडितावि मदुद्रुवुः॥ तेषांविस्मरणन्नष्टंस्मरणान्निम्व॰ ताडना॥१॥

भा॰टी॰ - वरतनु मुनि बोले अंगदकी आज्ञाकों पायके कपियोंने व नमेजो छोटे २ मालिक तिनकों मारते भए॰ मारना क्याहै एसर्वध्यान॰ आदिसुंदरकर्मोकों गुरु देवमें भूलिजातेरहे सो भूलना नष्टहोग॰ या॰ अब ध्यानआदिको स्मरण नित्यकरैंगे एई मारनाहुआ॰ इसप्रका रसें ताडनाकी प्राप्तिजो वनके रखानेवाले सोभागतेभए॥१॥

श्लो॰ कम्पनम्प्लवनम्प्रोक्तं प्लाव्योनुःकपिसत्तमं॥ सर्वंकपिकृतंश्रुत्वाकपीशोहर्षमाययौ॥२॥

भा॰टी॰-वनकेरखवा लोंकेहृदयमें ध्यान आदिकी आलस्य कांपनेलगी॰ सोईतिनको भागनाहुआ॰ इसप्रकारसें भागिके सुग्रीचसैं सब हा॰ लकहतेभएकि हमारीसबकी अब पूर्व देहको लक्षण॰ नष्टहोगया॰ सोई कहना भयाहै॰ वानरोंके कर्मको सुनि के सुग्रीचकों बडाहर्ष प्राप्ति हुआ॰॥२॥

श्लो॰स्वात्मानमचलंमेनेकपिस्तद्धर्षमुच्यते।।स्वप क्षवर्द्धनंज्ञानंतस्मभंराघवस्यच॥३॥

भा॰टी॰ - सुग्रीवने अपनेरूपको अचल मानते भए॰किजो दुष्टकर्म गुरु देवकी आज्ञासें मेरे कोंदूरि करतेथे सो धीरे २ नाशभएचलेजातेहै यहसुग्रीचको हर्षहै तथा रामजीनें अपनापक्षजो ज्ञान॰ विराग॰ स त्संग॰ यमनियम॰ इन्हो आदि लेके सुंदर कर्मोकी वृद्धि मानतेभए सोई सुग्रीवसें रामजीको प्रश्न भयाहै॥३॥

श्लो॰एतस्मिन्नंतरेन्वेवकपयस्तेसमागताः॥स्वस्वभा

वंपरित्यज्न्यपतितारावचान्तिके ॥ ४ ॥

भा॰टी॰ -ऐसी आनंद समैमें परस्पर कहेहुए जो वानर सो सब अपने अपने स्वभावकों छोडिके रामजीके सामने पडिजाते भए ॥ ४ ॥

श्लो॰ पृष्टारामेनतेसर्वेकुशलम्वाप्रिरेतदा ॥ कृपया त्वराजेंद्र वयन्त्रिर्मलिनं कृताः ॥ ५ ॥

भा॰टी॰ - विवेक रूपरामजीनें वानरोंसें कुशल पूछे तो वानर बोले कि, हेरामजी जिसदिन हमारे सर्वके ऊपर आपकी कृपाभई उसीदिन गुरुमें बुराकर्म देखना इससे आदि औरजोकर्म ऐसे वानर रिक्ष हम सर्वजो हैंसो आपने मलरूप स्वभावते छूटिगए ॥ ५ ॥

श्लो॰ भोवचहनुमान्सर्वंलंकावृत्तांतमादितः ॥ स्वस्मिन्तनयप्रीतिंचजानक्यामणिमाददौ ॥ ६ ॥

भा॰टी॰ - लंकाको समाचार सब हनुमान रामजीसें कहते भए आपनेकुं जानकी लडिका मानिकें पुत्रवाली प्रीतिकियासोई पुत्रकी प्रीति मणि भईहै सो मणि हनुमानकों देती भई सोईमणि हनुमानने रामजीकोंदिया रामजीनें मणिपायके खुशी भए ॥ ६ ॥

श्लो॰ जानकीबालकोयम्वैप्रेमरूपं पुनः पुनः ॥ उवाचरामस्तम्प्रीत्यातत्तदादरमुच्यते ॥ ७ ॥

भा॰टी॰ - रामजीवारंवार सबसें कहते भएकि जानकीको ब्रह्ममेजो प्रेम सो पुत्ररूप हनुमान है ऐसी रामकी वाक्य सो हनुमानको आदरभयाहै ॥ ७ ॥

श्लो॰ गुरौदुर्भावनात्यक्ताकपृष्ठेश्वसद्भावना ॥ कृतान्वसैवसेनायायोजना गणना शुभा ॥ ८ ॥

भा॰टी॰ - जीवोंको गुरुदेवमें दुष्टभाव छूटिगया सुंदरभाव करनें लगेकि हमारेगुरु साक्षात् ईश्वरहै ऐसीजीवोंकी बुद्धि सोई सेनाकीग

नती तथा लंकाको चलना भयाहै. ॥८॥

श्लो० दुष्टकर्मस्थितिप्रीतिलंकासौख्यस्यकांचनं॥
तद्धर्षवारिधेर्नाशचिंतासातत्रसंस्थितिः॥९॥

भा० टी० – खोटेकाजोमें हठ करिके टिकना. ऐसीजो लंका निस. का सुख सो सुवर्ण तिस्कोहर्ष सोसमुद्र ऐसे समुद्रके नाश करनेकी चिन्ता सोई समुद्रके तटपर रामजीकी फोजको उतरना होताभया.

श्लो० कुकर्मत्रासरूपेण बोधितश्चदशाननः॥भ्रा-
त्राविभीषणेनैवतेननिर्ष्कासितोबलः॥१०॥

भा० टी० – बुरेकाजमें डरनासो बिभीषणहै. सोमनरूपरावणकों. बिभीषणने ज्ञान दिया. कि भाई तुं दूरकर्मकरो. बुराकर्म छोड़िदेवो. ऐसीवचन सुनिके लंकासें बिभीषणकों रावणने निकासि दिया. बुराकर्म कर्नेमें राक्षस भयसें हीनभये सोई बिभीषणकों लंकासैं निकारना हुआ ॥१०॥

श्लो० सत्यार्जवनिरानन्दाहिंसनास्तस्यमंत्रिनः॥स
मायान्मंत्रिभिश्चैतैश्शरणंराघवस्यवै॥११॥

भा० टी० – सत्यवचन. कोमलस्वभाव. अभिमानहीनचित्त. जीवमात्र की दया यहचारि बिभीषणके मंत्रीहैं. इनचारोंकों संगलेके रामजी कीशरण आया ॥११॥

श्लो० नाम्नश्चार्थमविज्ञातंकपिभिस्तस्यकर्हिचित्॥
त्रासन्दास्यत्ययन्तस्मान्नोऽतश्चक्रुर्निवारणम्॥१२

भा० टी० – कपियोनें त्रासरूप विभीषणके नामको अर्थ कभी नहींजाणतेथें यहजानतेथेकि त्रासरूप राक्षस सबकों त्रास देताहै. विचारकिहेकि, यह आवेगातो हमसबकों त्रास देवेगा. इसवास्ते राम. जीकेसामने विभीषणकों नहीं आनेदिए॥१२॥

श्लो· आज्ञप्तारामचन्द्रेणबोधितास्वापिवानराः॥क
पयश्चानयामासुस्तन्त्वराक्षससत्तमम्॥१३॥

भा·टी· - रामजीवानरोंसें बोलेकि यह बिभीषण सबको त्रासनहीं देता· एतो खुद बुरेकामसें डरताहै इस्कोल्यावो· ऐसारामजीसें ज्ञान पायके बिभीषणकों रामजीके पास लेआए॥१३॥

श्लो· ईश्वरप्राप्त्युपायस्य मूलम्प्राप्यजहर्षसः॥स
एवपातोरामस्यपादाग्रेतस्यवर्णितः॥१४॥

भा·टी· - ब्रह्ममें प्राप्ति होनेकी उपायको मूल रूपविवेक रूपरामजी जिनकोपायके बिभीषण खुशी भया सोई रामजीके चरणके साम्नेबि भीषणको पडिजानाहुआ॥१४॥

श्लो· लंकायाशिक्षणार्थायलंकाराज्यंददौहरिः॥
भविष्यतिचसालंकासाधूनाम्प्राणवल्लभा॥१५॥

भा·टी· लंकाको भगवानकीसेवन आदि सुंदरकर्मशिखाने वास्ते· लंकाकोराज रामजीने बिभीषणकोदियाकि लंकाको राजा बिभीषण होवैगा·तोयह लंका साधु लोगोंको प्राणसेंप्यारी होवैगा·ऐसाविचारिकै॥१५॥

श्लो· लंकासुरवहिरण्यस्य हर्षवारिधितारणे॥ई·
श्वरप्रार्थनारूपम्विचारंकृतवान्प्रभुः॥१६॥

भा·टी· - लंकाकोसुरव सोई सुवर्णहै· तिसकरिकै लंकाजडीहै· उससुवर्णमें हर्ष मानना सो समुद्रहै· जैसासमुद्रको पारनहीं तैसा ही हर्षकोपारनहीं ऐसेसमुद्रकेपार जानेवास्ते इश्वरकी विनतीरूप· विचार रामजीकर्तेभए॥१७॥

श्लो· एतस्मिन्प्रेरितौशीघ्रमागतौशुकसारणौ॥राम
सेनांरावणेनकृतघ्नगुरुद्रोहिणौ॥१८॥

भा·टी· - ऐसाविचार रामजी करिरहेहैं उसी वखत रावणकी· आज्ञापायके जलदी शुक सारण ये दोराक्षस रामजीकी फौजमें आये· शुक तो कृतघ्नरूपहै· जोउपकार करैउसकों नाहीमानै· और सारण गुरुसें द्रोह करताहै तिसकारूपहै।।१७।।

श्लो॰ दूतौदशाननस्यैतौ कृतघ्नगुरुद्रोहिणौ।। कप
यस्ताडयाञ्चक्रुर्ज्ञात्वाकपिनृपाज्ञया।।१८।।

भा·टी· - येदोनो कृतघ्नतथागुरुद्रोहरूप रावणके दूतहै ऐसावि· चारिके सुग्रीवकी आज्ञा पायके वानर मारने लगे।।१८।।

श्लो॰ स्वकर्मणि द्वयोः प्रीतिर्य्यापुराजन्मतोऽप्यभूत्
रामदर्शनमात्रेणविनष्टासाचताडना।।१९।।

भा·टी· - कृतघ्न तथागुरुद्रोहरूप शुक सारणको स्वभावकिउपका रकोनहीं मानना तथागुरुको द्रोह करना· ऐसीजो दूतोंकी अपना२ कर्ममें प्रीति रहीसो प्रीतिरामजीके दर्शनसे नष्ट होगई· सोई शुक सारणकी ताडना हुई।।१९।।

श्लो॰ मोचितौरामचंद्रेणगतौरावणसन्निधिम्।।-
ख्यापयांचक्रतुस्सर्वंरावणायपथाक्रमम्।।२०।।

भा·टी· - रामजीने दूतोंको कपियोंकी त्रासतें छुडाय दिया· तबदूनो दुष्टनिर्मल होके रावणासें रामजीकी हाल जोदेषिगएं सो सव· कहते भये।।२०।।

श्लो॰ पूर्वप्रकृतिनिर्मुक्तौतदेवमोचितौतदा।। तिर
स्कृतौरावणेन कुसंगत्यागकारणात्।।२१।।

भा·टी· - पहिलेके दुष्टस्वभावसें दूनो छूटिगए सोई कपियोंकी त्रा ससें रामजीको छुडानाहुआ· तथाषोटीसंगतिसें छूटिगए सोई राव णसें अनादरपायके।।२१।।

श्लो॰ शरणंरामचन्द्रस्यसमायातोपुनर्द्रुतम्॥रा
मसंगतिजं सौख्यंप्रापितोमुक्तिकारणम्॥२२॥
भा॰टी॰ - शुकसारण जलदी रामजीकी शरण आते भए॰ मुक्तिको
बीज ऐसा जो रामजी को संग तिसमें उत्पन्न हुआ सुख उस सुखको
प्राप्ति होते भए॥२२॥

इतिश्रीवेदान्तरामायणेसुंदरकांडे संवर्तवरतन्तुसंवा
देशिवसहाय बुधविरचिते शुकसारणमोक्षे चतुर्थो
मोक्षोपानः॥४॥ इतिसुंदरकांडसमाप्तः

---

## अथयुद्धकांड प्रारंभः

श्लोक॰ वरतन्तुरुवाच सर्वेषाम्मतमागृह्य॰
रामस्सत्यव्रतस्सुधीः॥ लंकासुखहिरण्यस्य
हर्षपालनहेतवे॥१॥
भा॰टी॰ - वरतन्तु मुनि बोलते भए सब वानर तथा रिक्षोंके मत॰
कों लेके बडे बुद्धिमान रामजी है सो लंकापुरीको सुखरूप सुवर्ण
तिसके हर्ष सोई समुद्र तिस्के रक्षाकरने वास्ते॥१॥
श्लो॰ प्रेमोत्कंठाशमादीनान्तेकुशाविजयंरिपोः॥
तद्रूपमासनंकृत्वाव्रतंरामःसमादधे॥२॥
भा॰टी॰ - शम॰यम॰दम॰दया इन्हो आदिलेके औरजो ईश्वरकेप्यारे
कर्म है तिन्ह कामोमें प्रेमसें गद्गद होना वचनन कहिआवें ऐसेस्व
भाव कुशहै तथा रावणकोंजीतिके आपनी विजय सोई आसन॰
है ऐसा कुशके आसन पर बैठिकें जीवमात्रके मोक्षकरनेको चित्ता
रूपव्रत रामजी धारण करते भए॰॥२॥
श्लो॰ त्रयःकालादिनाः प्रोक्तास्सर्वानाकृष्यमंडले॥

सत्सङ्गस्यनयिष्यामिसर्वान्जीवान्चराचरे॥३॥

भा॰टी॰ - भूत भविष्य वर्तमान एतीन काल तीन दिन भए हैं· राम जीनें विचारे कि, मनरूपरावणको नाश करिकें तिसपीछे सबजी वोकों ज्ञान की रस्सीसे पकडिकें सत्संगमें लैआवैंगे· मोक्षहो नेवाले ऐसा उत्तम व्रतरामजी धारण करतेभये॥३॥

श्लो॰ मूलमालस्य मुक्तंच फलन्तत्सुखवर्धनम्॥·
सत्कर्मनाशकोज्ञात्वातत्त्यजेद्धीरघूत्तमः॥४॥

भा॰टी॰ - दोप्रकारकी आलस्यहै एकतो बुरेकाममें दूसरा सुंदर कर्ममेंसे ब्रह्ममे प्रीति तिस्में आलस्य करना सोई वनको मूलहै ति-स्को रामजी त्यागि देते भए· उसी आलस्यमे हर्ष माननासो फलहै उसफलकोंभी त्यागिकें रामजी निराहारव्रत कर्तेभए॥४॥

श्लो॰ लंकासुखर्वहिरण्यस्य हर्षवारिधिमुत्तमम्॥
हानिरूपंमहामार्गं मयाचत रघूत्तमः॥५॥

भा॰टी॰ - लंका को सुख सोई सुवर्ण उस्मे हर्ष सोई समुद्र· तिस समुद्रकी हानि रूप बडी रस्ता रामजी समुद्रसें मागतेभए·कि· तूं हानिमानिकें सुषिजावो· तो लंकामें हमाराराज होजावे॥५॥

श्लो॰ अदृष्ट्वाहर्षहानिंवैरावणस्यवधोद्यतः॥तद्धा
निशमनोपायंक्रोधञ्चक्रेचराघवः॥६॥

भा॰टी॰ - समुद्रकी हानि होती रामजीनहीदेखे· तो रावणके मा रनेवास्ते उपाय करि रहे ऐसे रामजी तिस हर्षके शांति होनेवास्ते· उपायरूप क्रोध कर्ते भए॥६॥

श्लो॰ लंकांशुभांपुरींकर्तुंविचारंप्रकरोतिसः॥ अने-
कयत्नंरामश्चतत्सागरविशोषणम्॥७॥

भा॰टी॰ - रामजीनें लंका पुरीकों सुंदरबनानेवास्ते रोजविचार कर्ते

है सोई समुद्रको शोषण है॥७॥

श्लो॰ धैर्येणविचकर्षांशुतेजरूपंशरम्प्रभुः॥विक
र्षतंशरन्दृष्ट्वारामंसत्यपराक्रमम्॥८॥

भा॰टी॰ - धीरज करिके तेजरूपजो शर है तिस्कों रामजीनें हर्षरूप-
समुद्रके शोषण कर्नेवास्ते षेंचतेभए॥८॥

श्लो॰परपीडादयःसर्वेव्यथिताजलजन्तवः॥ अपश्य
न्तस्स्वशरणंदुःखिताश्चमुहुर्मुहुः॥९॥

भा॰टी॰ - परकों दुःख देनेवाले जोघोरकर्म है सोई सब जलजीव हैं
सोसब आपनी रक्षा करनेवास्ते जीवकों नही देखेतो वारंवार दुःखी
होतेभए॥९॥

श्लो॰ नरामोमानवोयम्वैविवेकोमोक्षदायकः॥इ
तिज्ञानंसमुद्रस्यद्विजरूपंतदेवच॥१०॥

भा॰टी॰ - समुद्रकों ऐसाज्ञान हुआकि, रामजी मानुष्य नही हैं॰ए
तो मोक्षदेनेवाले विवेकहै ऐसा ज्ञान सोई ब्राह्मणको रूप है॥१०

श्लो॰ तत्रासोधारणन्तस्यपात्रीतस्यीतिरुत्तमा ॥
मयासंतोषितेरामेपूर्वन्मेवसुखस्थितिः॥११॥

भा॰टी॰ - रामजीकी त्रास सोई ब्राह्मणकोरूपकोधारणभया॰
है तिस्कों धरिके उसी ब्राह्मणके रूप धारणमें प्रीति सोई थाली॰
भई है॰ समुद्रने विचारकियाकि, जो मै रामजीकों प्रसन्न करिलेउ
गा॰ तबपेस्तर सरीके मेरीस्थिति॥११॥

श्लो॰ वर्तिष्यन्तिचसौख्याद्या भविष्यंतिचमेतदा॥
एतेचान्येच्चतस्यासन्विचाराररत्नसंचयाः॥१२॥

भा॰टी॰ - बनीरहैगा॰ तथा बडेबडे सुखभी मेरेकों होवैगाइस्सरीके॰
औरजो अनेक प्रकार को समुद्रको विचार सोई अनेक प्रकारकीबहु॰

तसेरत्न भईहे ॥१२॥

श्लो॰ सागरस्तान्समादायसंप्रापराघवान्तिकम् ॥
स्वस्यापिराघवेप्रेमवर्द्धनंस्तवनंकृतं ॥१३॥

भा॰टी॰ - पूर्वोक्त ब्राह्मणको रूप धरिकें तथा पूर्वोक्तथालीमें पूर्वोक्तरत्न धरिकें समुद्र रामजीके पास आताभया॰ समुद्रकोभीप्रेमरामजीमें बहुत होगयासोई समुद्रने रामजीकी स्तुति कर्ताभया १३

श्लो॰ समुद्रेणैवरामस्य कृतायाविस्मृतिः पुरा ॥ दिगुत्तराचसाज्ञेयापूर्वमानोरिपुस्मृतः ॥१४॥

भा॰टी॰ - समुद्रने पेस्तर रामजीको भूलिगयाथा सोई उत्तरदिशाहै रामजीसें पेस्तर समुद्रनें अभिमान कियाथा॰ सोसमुद्रको वैरीहै॰ जिने समुद्रको ज्ञान हरिलियाथा ॥१४॥

श्लो॰ पूजितस्संस्तुतोरामः क्षामितःसिंधुनामुहुः ॥
तेनसंप्रार्थितोरामोजघानतद्रिपुन्तदा ॥ राक्षसानांविनाशायभूभारहरणायच ॥१५॥

भा॰टी॰ - समुद्रने रामजीकी पूजनस्तुति किया॰ तथा अपना अपराध रामजीसें क्षमा कराया॰ वैरीकों मारनेवास्ते प्रार्थना किया॰ तबरामजीनें पेस्तर वर्णन हुआजो समुद्रकोवैरी तिसकों मारते भए राक्षसोंकानाश कर्नेवास्ते तथा पृथ्वीको भार हरनेवास्ते ॥१५॥

श्लो॰ पणंचक्रेस्वयंरामस्सस्सेतुस्सागरेभवत् ॥ क्षमारूपश्चपाषाणंरामस्यसेतुबंधने ॥ अन्येसर्वसंगवीर्याद्यास्साहित्यास्तत्रबंधने ॥१६॥

भा॰टी॰ - रामजी प्रतिज्ञाकर्तेहुए सोई समुद्रमे पुल भयाहै॰ रामजीकेचित्तमें क्षमाबहुतहै सो क्षमा पुलबांधनेवास्ते पत्थर भयाहै॰ तथापुलबांधनेमें औरजो अनेक प्रकारकी सामग्री चाहिए सो सर्व

गको अनेक प्रकारको सुंदर कर्म्म हे सो सब सामग्री भए हे ॥ १६ ॥

श्लो॰ बंधनं रामचंद्रस्य दृढत्वंस्वपणेऽभवत्। ॥ ईदृ-
शःसागरेसेतुर्बद्धोरामेनवैतदा ॥ १७ ॥

भा॰टी॰ – रामजी अपनी प्रतिज्ञासें चलायमान कभी नही होते सो ईपुलको बांधना भयाहे॰ तब ऐसापुल समुद्रमें रामजी बांधते भए

श्लो॰ रावणस्यातिबलिनोयुद्धेज्ञात्वारघूत्तमः ॥ महा
दुःखंभवेत्तत्रक्रूरेक्रूरतरेऽपिच ॥ १८ ॥

भा॰टी॰ – बडाबली रावण तिस्के युद्धमे क्रूरसे क्रूरयुद्धमें बडादुःख होवैगा ऐसा राम जीने जानिके ॥ १८ ॥

श्लो॰ चक्रेसंस्थापनंतस्यस्वकर्मेशिवरूपिणः ॥ अच
लत्वंचविश्वासम्पूजनंतत्रनिश्चितम् ॥ १९ ॥

भा॰टी॰ – तब अपने स्वभावको अचल विश्वासरूप शिवकी स्थापना करते भए॰ कि यातो रावणको मारेंगे या हम मरेंगे पण युद्ध छोडेगे नहीं ऐसो स्वभाव पुष्ट कर्ते भए अपने स्वभावमें रामजीको निश्चय हे कि मे ने स्वभावको जैसा राखौगा तैसा रहैगा॰ ऐसा निश्चय सोई शिवकी पूजन भई हे ॥ १९ ॥

श्लोक॰ एवंकृत्वाविधिंतत्रविवेकोराघवस्तदा ॥ संस्मृ
त्यचमनोरूपरावणंप्रबलंप्रभुः ॥ २० ॥

भा॰टी॰ – विवेकरूप रामजीने मनरूपरावणको बडाबली जानिके ऐसा उपाय कर्तेभए ॥ २० ॥

श्लो॰ स्वभावन्तत्यजुस्सर्वेपूर्वोक्तंगुरुसत्तमे ॥ पूर्वो-
क्ताःकपयश्चैवरिक्षाश्चरामसंश्रयात् ॥ २१ ॥

भा॰टी॰ – तथा वानर रिक्ष भी रामजीकी संगति पायके पेस्तर जो गुरुमें दुष्टस्वभाव था उस्कों त्यागि देते भए ॥ २१ ॥

गुरोसद्भावनंचक्रुर्ऋक्षाश्वकपयोनिशम्॥ तत्सैन्यो
त्तारणंत्र्यभ्रन्बभूवराघवस्यच॥२२॥

भा·टी· – वानर तथा रिक्ष गुरुमें रुद्रकर्म देखने लगे· रातिदिन सोई रामजीकी सेनाको समुद्रके दक्षिणपारजानाभयाहै॥२२

श्लो॰ दुष्टकार्येदशास्यस्य सदाप्रेमाचलम्मुने॥
सुवेलोगिरिः प्रोक्तोयुद्धचिंतादशानने॥२३॥

भा·टी· – हेमुनि षोटे कर्ममेंरावणको प्रेम कभीचलायमान नहीहोता सोई सुवेलनाम पर्वतहै तथा रावणके भीरामजीकेसंगयुद्ध करनेमें चिंतारहतीहै॥२३॥

श्लो॰ सास्थितीरामसैन्यानामभवत्तत्रपर्वते।महानं
दयुतोरामोबभूवमुनिसत्तम॥२४॥

भा·टी· – सोईसुवेल पर्वत पररामजीकी सेनाको ठिकनाभयाहै· हेमुनिजी समुद्रके पारजायके सेनाको सुवेलुपर वासदेखिकेराम जीकौं बहुत आनंद होताभया·॥२४॥

श्लो॰ दुःकर्म्मप्रीतिहठसंस्थितिसौख्यहर्षसिंधुंव्य
तीर्यकपिसैन्ययुतोविवेकः॥तस्थौविभीषणमतेन
विभीषणाख्याभूभारहारकुशलोरघुवंशकेतुः॥२५

भा·टी· – पेस्तर वर्णन हुवाजोसमुद्रतिस्केपार जायके विभीषणकेमतसें विवेकरूप रामजी सुवेलपर टिकिके भूमिकेभारनाशकर्नेमें बडेचतुर खुशीहोते भए॥२५॥

इतिश्रीवेदान्तरामायणे युद्धकांडेशिवसहायबुधवि
रचिते ससैन्यरामस्यसुवेलाद्रिस्थिति वर्णने प्रथमो
मोक्षोपानः॥१॥

---

श्लोक- वरतन्तुरुवाच तृष्णारातिर्मतिर्भूतिर्दु-
ष्टकार्येषुसर्वदा॥ वर्त्ततेमुनिशार्दूलमनसोरावः
णस्यवे॥१॥

भा-टी- - वरतंतु मुनि बोले हेमुनियोंमें श्रेष्ठ- षोटे कर्मोंमें सदातृ-
ष्णाप्रीतिबुद्धि विभूति एसब रावणकीचनीरहतीहे॥१॥

श्लो॰ताश्चतस्त्रोदिशः प्रोक्तालंकायादुष्टकर्म्मणि॥
पणप्रीतिस्थितेः पूर्वंकथितायाःसविस्तरम्॥२॥

भा-टी- -पेस्तर वर्णन भईजो लंका तिस्केए चारिचारिउदिशा भईहै

श्लो॰ सत्संगनिंदनंभित्यंतद्विनाशायचिन्तनम्॥
कचित्कचित्कृतंचापिसतांहासादिताडनम्॥३॥

भा-टी- - सत्संगकीनिंदारोजकर्ना सत्संगकोनाशकर्नेवास्ते चिं-
ताकरना- किसी२ जगह सत्संगको नाशभी करिदेना-साधु लोगों-
कों देखिके हसना आदि ताडनकरना ॥३॥

श्लो॰एतेद्वाराश्चचत्वारोलंकायामुनिनायक॥ तेषुता
स्सुजीवानामकरोन्मतिवारणम्॥४॥

भा-टी- - एचारि लंकाकेचारि दरवाजाहै इनदरवाजामें तथा-
चारि दिशामें रामजीनें दुष्टजीवोंकी बुद्धि कोनाश करिके
सुंदरबुद्धि करदियाहे॥४॥

श्लो॰ नदेवरोधनंविप्रलंकायाश्चचतुर्दिशः॥ चतु
र्ष्वद्वारदेशेषु राघवेनकृतंमुने॥५॥

भा-टी- - सोहेमुनिजी ऐसाकर्म सुंदरजीवोंकों सुखदेने वा-
स्तेरामजीनें किये सोई लंकाको चार दरवाजा तथाचारि दिशाराम
जी घेरि लेतेभए॥५॥

श्लो॰सत्संगनाशनंचैवराक्षसैश्चकचित्क्वचित्॥ कृ

न्तन्तदेवलंकायाश्चोत्तरं द्वारमुच्यते ॥ ६ ॥

भा॰टी॰ - राक्षसोनें किसी किसी जगहपर सत्संगको नाशकरिदि-या सोई लंकाका उत्तरदरवज्जाहे ॥ ६ ॥

श्लो॰ विनष्टस्यपुनःकर्त्तुं वर्द्धनोपायचिन्तनम् । से वस्थितिस्समाज्ञेया रामचंद्रस्यचोत्तरे ॥ ७ ॥

भा॰टी॰ - नष्टभयाजो सत्संग तिसकी फिरि वृद्धिहोनेकी उपाय-को चिंतवन रामजी नित्य कर्तेहें सोई लंकाके उत्तर दरवज्जेपर रा-मजीको टिकना भयाहे ॥ ७ ॥

श्लो॰ सद्ज्ञानशिक्षणं रामे लक्ष्मणे च कपिष्वपि ॥ ऋ-क्षेष्वपि विशेषेण सङ्गत्याशोधितेषु च ॥ ८ ॥

भा॰टी॰ - रामजीमे लक्ष्मणमे तथा बानरोंमेंभी तथा रामकी संग-तिकों पायके शुद्ध भएजो रिक्ष तिन्होंमेभी सुंदरज्ञान शिखानेकी बुद्धि बहुतहे ॥ ८ ॥

श्लो॰ चक्रुस्तेशिक्षणं स्वस्वकर्मणो राक्षसेषु च ॥ दु-ष्टकर्माणि सर्वाणि विधिना निर्मितानि च ॥ ९ ॥

भा॰टी॰ - राम लक्ष्मण बानर एसब अपने अपने सुंदर कर्मकों राक्ष-सोकों शिखाते भए॰ जैसी जिस्की बुद्धिहे तिसमाफिक तथा तीनलोक चवदाभुवनमें जो ब्रह्माके बनाए हुए बुरे कर्म जितनेहें ॥ ९ ॥

श्लो॰ रावणे तानि वर्त्तन्ते कुम्भकर्णे विशेषतः ॥ दुष्ट-सङ्गादिकर्माणि स्फुरे शक्रविजये तथा ॥ १० ॥

भा॰टी॰ - सोसब रावणमें वसतेहें कुंभकर्णमे तो विशेषसें वस-तेहें तथा मेघनादमें कुंभकर्णसें ज्यादा बुरे कर्मोकोवासहै १०

श्लो॰ अन्येषु राक्षसेष्वेवमन्यायास्सर्वदा स्थिराः ॥ शि-क्षणान्नेमकुर्वन्ति विवेकादीन्स्वकर्मणः ॥ ११ ॥

भा॰टी॰ - इसी प्रकारसें औरजो राक्षस है तिन्होमेंभी बुराकर्म रातिदिन टिकारहताहै रावण आदिलेके सब राक्षसजोहे सोस व विवेकरूप रामजी आदिलेके जोमोक्षके मित्रहै तिन्हींकों बुरा कर्म्म शिखवातेहै ॥११॥

श्लो॰ एवंपरस्परंयुद्धंरामरावणयोर्मुने ॥ संकृत्य जीवन्धृतन्होरामरावणवैरिणौ ॥१२॥

भा॰टी॰ - इस प्रकारकी अपना अपना कर्म शिखावनरूप युद्ध रा मरावणकी होती भई रामरावण एदोनो आपसमे वैरमानिकें जीवको जुआकरिकें युद्धकर्तेभए ॥१२॥

श्लो॰ क्षयोन्यै स्वर्गमोक्षायमहदैश्वर्यभुक्तये ॥ सर्वसौख्यायजीवस्यप्राप्तयेरघुनन्दनः ॥१३॥

भा॰टी॰ - जीवोंको क्षुद्रयोनिमें जन्म लेने वास्ते तथा स्वर्ग प्राप्तिहो नेवास्ते तथा बहुत स्वर्गभोगनेवास्ते तथा बहुत सुख भोगने वास्ते तथामोक्ष होनेवास्ते रामजी युद्ध करते भए विवेककी इच्छातो जी वोंकों मोक्षदेनेकीहै परंतुजो मोक्षकी उपायमेंजीव भ्रष्टहोजावे तौ संसारको सुख तो होवै ऐसाविचारि रामजी युद्धकर्तेभए १३

श्लो॰ सहित्वानेकदुःखानियुद्धंचक्रेरघूत्तमः ॥ कुयो न्यैनरकायैव रौरवाद्याप्तिहेतवे ॥१४॥

भा॰टी॰ - अनेक दुःख सहिके रामजी युद्ध कर्तेभए तथाजीवोंकों षोटीयोनि प्राप्ति होनेवास्ते तथा रौरव आदि नर्क प्राप्ति होने वास्ते१४

श्लो॰ अनेकदुःखभोगायजन्ममृत्युभवायच ॥ जीव स्यानेकदुःखाप्त्यैयुद्धंचक्रेचरावणः ॥१५॥

भा॰टी॰ - गनतीसेंहीन दुःख जीवोंको भोगकर्नेवास्ते तथा वारंवार जीवकोंजन्म लेनेवास्ते तथा शरीरको छोडनेवास्ते और अनेकप्रकारको

दुःखजीवोंकों देनेवास्ते रावण युद्ध कर्ता भया॥१५॥

श्लो० परितापान्यनेकानिसहित्वाप रतापनः॥ कामः क्रोधश्चलोभश्चमोहमानावहन्तथा॥१६॥

भा-टी- – दूसरेजीवोंकों दुःख देनेवाला जोरावणसें अनेक दुःख सहताहै परंतु जीवकों दुःख देनेवास्ते युद्ध कर्ता भया- तथा काम क्रोध लोभ मोह मान अहंकार॥१६॥

श्लो० सदसत्कमवर्त्ततेकर्मस्वेतेनिरंतरम्॥ असत्कर्मस्वसत्प्रोक्तास्सत्कर्माणिचसज्जनाः॥१७॥

भा-टी- – एसब सुंदर कामोंमें भी रहतेहैं तथा बुरेकामोमें भीरहतेहैं षोटे कर्ममें षोटा कहातेहैं- तथासुंदर कर्म्मोंमें सज्जन कहतेहैं

श्लो० असज्जाः कामवर्गाश्चयुन्हचेष्टाश्चसज्जनैः॥ कुर्वंतिराक्षसा भूत्वासद्धर्मान्पीडयन्तिच॥१८॥

भा-टी- – षोटेकर्म्मों करिके उत्पन्नजो षोटेकर्म जैसा काम क्रोध आदि कर्म सोसबराक्षसहोके सज्जन लोगोंसें युद्धकर्तेहैं- तथासुंदर धर्म जैसा कथा श्रवण स्नान दान दयाजप पूजन इन्होंआदिलेके औरजो सुंदर धर्म तिन्होंको नाश कर्ते भए उसीवास्ते युद्धकर्ते भए- क्योंकि विवेकरूप रामजी सुंदर धर्मको नाश नहीं करने देते॥१८॥

श्लो० एवंपरस्परंयुद्धम्बभूवाहोनिशम्मुने॥ रामरावणयोः क्रूरंजन्ममोक्षाप्तिहेतुकम्॥१९॥

भा-टी- – इस प्रकारसें जीवको मोक्ष होनेवास्ते रामजी युद्धकरते भए- तथा जीवकों वारंवार जन्म लेनेवास्ते मन रावण युद्धकर्ता भया- सुंदरतथा बुरेकर्मको करना एई युद्ध भईहै॥१९॥

श्लो० छिन्नंविवेकेनपुनः पुनश्शिरोज्ञानासिनारा

घववर्यसूनुना ॥ मनोदशास्यस्य महाहवेमुने न-
चंचलत्वंचतदेवतच्छिरः ॥ २० ॥

भा·टी· - मनकी चंचलता जोहै सोई मनरूप रावणको शिरहै तिस·
शिरकों रामजीनें वारंवार काटते भए· ॥२०॥

श्लो॰ लज्जाश्रमविहीनश्चरावणोराक्षसेश्वरः ॥
सएववर्द्धनस्तस्यशिरसश्चंचलस्यवै ॥ २१ ॥

भा·टी· - मन रावण लज्जा तथा श्रमसें हीनहै वे सरम है सोई रा·
वणके शिरकी युद्धमे वृद्धि होती भई ॥२१॥

श्लो॰ कापथात्तंसमाकृष्यसत्पथेचञ्चलंशठम्॥
रामोनिवेशयामासचासकृद्दयया हठात् ॥२२॥

भा·टी· - रामजीनें दयाकरिकें रावणकों षोटीरस्तासें षैंचिकें सुं
दर रस्तामें टिकाते भए· हठसें ॥ २२ ॥

श्लो॰ तदेवछेदनंतस्यकृतंरामेनसंगरे। प्रवेशितो
ऽपितेनाशुसत्पथेहरिवल्लभे ॥ २३ ॥

भा·टी· - सोई राम करिकें शिरको काटना भयाहै· युद्धमे· मनरू
परावणको रामजीनें भगवान कीप्यारी रस्ताजो सत्संग तिस्मे·
टिकातेभए तौभी· ॥२३॥

श्लो॰ तत्परित्यज्यसहसा कापथस्पुनराश्रितः ॥ तत्त
स्यभूमिपतनमाकाशेव्याप्तिरेवच ॥ २४ ॥

भा·टी· - उसरस्ताकों त्यागिकें षोटीरस्तामें फिरि टिकताभया· सो
ई शिरको भूमिमें पड़ना भया· तथा आकाशको जाना भया· ॥२४॥

श्लो॰ कदातृष्णांकदानिद्रांकदाशान्तिंकदाक्षमां ॥
कदाहानिंकदाग्लानिंनीत्वनीत्योकदामुने ॥ २५ ॥

भा·टी· - हेमुनिजी मनरूपरावण कभी तृष्णाको कभी निद्राको·

कभीशान्तिको कभी क्षमाको कभीहानिको कभीग्लानिको कभी-
नीतिको कभीअनीतिको ॥२५॥

श्लो० ज्ञानाज्ञानसुखंदुःखम्मूर्खतांसुज्ञतांकदा॥
एवमादीन्यनेकानियेषांसंख्यानविद्यते॥२६॥

भा०टी० —कभीज्ञानको कभीअज्ञानको कभीसुखको कभीदुःख-
को प्राप्ति होताहै कभीमूर्ख वुद्धिकों कभी सुंदरवुद्धिकों इन्होकों-
आदिलेके गिनतीसें हीन औरजो चीजहै ॥२६॥

श्लो० प्राप्नोत्यज्ञानतोनित्यंकदाराजाकदाप्रजाः॥ध-
नाढ्योवित्तहीनश्चदानीचकृपणस्तथा॥२७॥

भाषाटीका० — मनरूपजोरावणहै सो अज्ञानकी वशी होके नि-
त्य कभी राजकों प्राप्ति होताहै कभीप्रजाकीरीतिकों प्राप्ति होताहै
कभी वडा धनमान होजाताहै कभी दरिद्री होजाताहै कभी-
दानी होजाताहै कभी कृपण होजाताहै कभी ईश्वरसे वैर राख
ताहै इसवैरके प्रतापसें अनेक दुःख सहताहै तौभी ईश्वरसेंप्री-
ति नहीं लगाता इसवास्ते दुःख भोगताहै ॥२७॥

श्लो० क्षणेक्षणेभवत्येवंसामायादर्शितामुने॥सं-
ग्रामेरावणेनैवराक्षसेनमुहुर्मुहुः॥२८॥

भा०टी० — क्षण क्षणमें अनेक प्रकारको जंजाल मन कर्ताहै सोई
युद्धमें रावणकी माया देख ना हुआहै ॥२८॥

श्लो० प्राणनाशोभवेन्मेचेत्तथापिनत्यजाम्यहम्॥स्व
कर्मरक्षसान्नाशंकरिष्यामि हठादपि॥२९॥

भा०टी० — रामजीनें ऐसी प्रतिज्ञा कियाहैकि चाहेमेरा प्राणरूप
सत्संग नाश होजावे परंतु मेराकर्मजो राक्षसोंको नाश सोतोमें करौं
गा छोडोंगानहीं॥२९॥

श्लो॰ रामेनेतिप्रतिज्ञातंरावणेनापितत्तथा॥ रामादि सर्वसाधूनांकर्ताहंमूलकृन्तनम्॥३०॥

भा॰टी॰ – तैसेई रावणभी प्रतिज्ञा कियाकि चाहे मेरा प्राणरूप-षोटाकर्म नाश होवे परन्तु तोभी रामजी आदि लेकै जो साधु हैं जे साचिवे कराम संतोष हरि में प्रेमतीर्थ इन आदिको जडसें खोदिकै नाश करिदेउगा॰॥३०॥

श्लो॰ द्वयोः पणोरामदशास्ययोर्मुने सैवे द्दशास्सं गरवर्द्धनस्तदा॥ बभूवपेतुश्चपरस्परहता भूमौक पीशाः खलुराक्षसामुने॥३१॥

भा॰टी॰ – हेमुनिजी रामरावणकी ऐसी प्रतिज्ञासोई युद्धकी वृद्धिभई॰ रामकीसेनासें मारेहुए जो राक्षस तथा रावणकी सेना करिके मारेंहुए जो वानर से भूमिमें पडिकैं मरिजातेभए॥३१॥

इतिश्रीवेदान्तरामायणेयुद्धकांडेशिवसहायबुधवि रचितेसंवर्तवरतन्तुसंवादे द्वितीयो मोक्षसोपानः॥२॥

---

श्लो॰ वरतन्तुरुवाच दुस्संगकुम्भकर्णस्य-सदाप्रीतिस्स्वकर्मणि॥ सत्संगनाशनंचैवसानि द्रातस्यवैमुने॥१॥

भा॰टी॰ – वरतन्तु मुनि बोलतेभए खोटी संगतिरूपजो कुंभक॰र्ण है तिसकी अपने कर्ममें षोटे काजोमें प्रीति रोज लगीरहती है॰ तथा सत्संगको नाशकर्नेमें नित्य प्रीति रहती है सोई कुंभकर्णकी निद्रा है॥१॥

श्लो॰ तस्यलोभगृहीतश्चसस्तस्यस्वपनस्मृतः॥ अहोनिशंनतद्‌ज्ञातंकदापीत्यम्बभूवह॥२॥

भा·टी· – सत्संगकी नाशकर्नेकी लोभसें कुंभकर्ण दुखी होरहा है सोई उसका शयन कर्नाहै· रातिदिन कुंभकर्ण कों मालुम नही होता ऐसासोनेमेमस्त होरहाहै ॥ २॥

श्लो· चिन्तनंचद्वयोर्नित्यंकरोतिद्विजमानसे ॥ दुः संगपणवर्षेचद्वाविमौचिंतनौमुने ॥ ३॥

भा·टी· – हेमुनिजी कुंभकर्णनें भलाबुरा दोनो कर्मकी चिंतवन कर्ताहै एई दूनोंका चिंतवन बारह महीनेमें ॥ ३॥

श्लो· निद्राक्षयदिनौप्रोक्तौकुंभकर्णस्यदुर्म्मतेः ॥ भविष्यत्तिजयोयुद्धेरावणस्येतिनिश्चितम् ॥ ४॥

भा·टी· कुंभकर्णके जागनेको दोदिन भए है· रावणकोऐसी निश्चय हैकि युद्धमें मेरी निश्चयसें जय होवेगा· ॥ ४॥

श्लो· कुंभकर्णेनतत्तस्यकारयामासरावणः ॥ प्रोक्तं जागरणंविप्रदुस्संगहर्षगर्ज्जनम् ॥ ५॥

भा·टी· – परंतु कुंभकर्ण करिकें जय होवैगा· ऐसा रावणको विचार सोई कुंभकर्णकोजगाना भयाहै· खोटा कर्मरूप कुंभकर्णको· खोटे कर्ममें हर्षहै सोई कुंभकर्णको गर्जना भयाहै ॥ ५॥

श्लो· सत्कार्यालस्यद्यूताद्यैस्सत्तिरस्कारनिन्दनैः ॥ असंख्यैर्विधिनासर्वैर्निर्मितैश्चकुकर्म्मभिः ॥ ६॥

भा·टी· – ब्रह्माकरिके बनाएहुए गिनतीसेहीन कुकर्म जैसा सत्कार्यमें आलस्य तथा जुआखेलना तथा साधुजनोंको अनादर कर्ना निंदाकर्ना ॥ ६॥

श्लो· एतेषांप्रेमसौख्याद्यैशस्त्रैरस्त्रैश्चभूरिशः ॥ संयुतस्सैनिकैरागाद्युद्धायरघुनन्दनम् ॥ ७॥

भा·टी· – इनकर्म्मोको प्रेम तथा सुखसोई हथियार भयाहै· तथा·

एही दुष्टकर्म फोज भयीहै· ऐसी फौंज तथा हथियार करिकै युक्त·
कुंभकर्ण रामजीसें युद्ध करनेकों आताभया ॥७॥

श्लो॰ शीघ्रन्दुस्सगरूपश्चकुम्भकर्णोमहाबली॥
तंसमायान्तमालोक्यविवेकोराघवस्तदा॥८॥

भा·टी· - जलदी दुस्संगरूप कुंभकर्ण युद्धमें आताभया· तिस्कों
देखिकै विवेकरूप रामजीभी ॥८॥

श्लो॰ कपीनयोजयच्छूरानंगदादींश्चकोटिशः॥स्व
यञ्चभ्रातृसमायुक्तोयुद्धंचक्रेरघूत्तमः॥९॥

भा·टी· - अंगद आदि वानरोंकों युद्ध कर्नेवास्ते आज्ञा देतेभए·
तथा आपु दोनो भाई युद्धकर्नेवास्ते चलते भए॥९॥

श्लो॰ पैशून्यमत्सरशठभाशठभद्दष्टिपानेस्तत्सैनिकाः
कपिवरान्विभिदुःकुकार्याः॥अज्ञानवीर्यमदिराम्म
दवर्द्धिनींसैपीत्वाचसोपिविभिदेकपिवर्यवीरान्॥१०॥

भा·टी· - चुगली करना· दूसरेजीवोंके सुखकों देखिकै बुरामानना
सुंदरकाजमें षोटाकाज देषना तथाखोटेकाजमें सुंदरकाज देखना·
ऐसो आंखीसें खूबतरहसे निसान लगाय लगाय दुष्टकाजरूप पे
स्तर वर्णन भएजो राक्षस सोसब वानरोंकों मारतेभए· अभिमानकों
बढानेवालीजो अज्ञानको पराक्रम रूप मदिरा तिस्कों पीकै कुंभक
र्णभी वानररिक्षोंकों मारनाभया·॥१०॥

श्लो॰ तेवैहताश्चकपयःपतिताःपृथिव्यांसत्संगचिन्त
नमयींगमिताश्चमूर्च्छां॥तान्त्यज्यरावणसहोदर
नाशनायप्रोत्थायसर्वदितिजान्विभिदुर्नरवाग्रैः॥११

भा·टी· - राक्षसों करिकै मारेगयेजो वानर तथारीक्ष सोसब पृथ्वीमें
पडिकै सत्संगकी चिन्तारूप मूर्छाकों प्राप्ति होतेभए· क्षणमात्रमें स·

संगकी चिन्तारूप मूर्छा कों त्यागिकें कुंभकर्णकें नाश कर्नेवास्ते उठिकें सबराक्षसोंको अपने अपने नखके अग्रकरिकें छेदन भेदन कर्तेभए ॥ ११ ॥

श्लो॰ संचिन्तनन्निजगुरोर्बहुधानखानितत्पादध्यानबद्धुप्रेमनखाग्रमुक्तम् ॥ तन्मानसार्चनमहागिरिभिश्चवृक्षैर्जघ्नुर्गुरूपवसनामृतचिन्तनैस्तान् ॥ १२

भा॰टी॰ - वानरोनें अपने अपनेगुरुको बहुत प्रकारको ध्यान कर्ते॰ भए॰ तयागुरुको ध्यान नखको अग्र भयाहै॰ मन करिकें गुरुकापूजन कर्ना सोई बडेपर्वत भएहैं॰ गुरुकेसाम्ने टिकनेकी चिन्तवनसो वृक्षभएहै॰ ऐसे वृक्ष पर्वत करिकें वानर राक्षसोंकों मारतेभए ॥ १२ ॥

श्लो॰ तान्स्वान्निरीक्ष्यकपिभिर्विगतांश्चप्राणैस्संम्यग्द्रुतान्निपतितान्भुविसैनिकांश्च ॥ मूर्छागतान्कपिवरांश्चमदावलीढान्दुद्रावदुष्टगमनङ्खलुकुंभकर्णः ॥ १३ ॥

भा॰टी॰ - कुंभकर्णने आपनी दुष्टकर्मरूप फौजको वानरोसें नष्टभईतया भगी पतित देखिकें युद्ध कर्नेकों कुंभकर्णदोडताभया॰ १३

श्लो॰ सज्जनैस्तत्तिरस्कारोगतिवेगोनिगद्यते ॥ तन्द्रवन्तंविलोक्याशुकपीन्हतुंरघूत्तमः ॥ १४ ॥

भा॰टी॰ - सुंदर कर्मजो साधुहै सो कुंभकर्णको अनादर करिदियाहै सोई कुंभकर्णका दोडना भयाहै॰ वानरोंको मारनेवास्ते दोडताकुंभकर्ण कों रामजी देखिकें ॥ १४ ॥

श्लो॰ सज्जनार्चनद्रावेनद्रुत्यतत्सन्निधिंगतः ॥ पूर्वोक्तैरस्त्रशस्त्रैश्चकुंभकर्णंचराघवो ॥ १५ ॥

भा॰टी॰ - सुंदरकर्म कारामजी पूजन कर्ते है सोई रामजीका दोडनाभयाहै॰ इसप्रकारसें दोडिकें कुंभकर्णकेसाम्ने आतेभए॰ कुंभक

र्णभी सामने राम लक्ष्मणको देखिके ये स्तर कहे हुए बाणकरिके

श्लो० स्वसंगभ्रष्टमतुलंक्रोधंकृत्वाजघानतौ ॥ ज-
घ्नतुस्तावपिक्रोधात्तस्य कर्मविचिन्तनात् ॥ १६ ॥

भा-टी- - कुंभकर्णने अपनी संपूर्ण संगतिकों भ्रष्ट देखिके सोई वे
प्रमाण क्रोधहै ऐसा क्रोध करिके राम लक्ष्मणकों मारता भया- कुंभ
कर्णके कर्मको चिंतवन राम लक्ष्मण कर्ते भए-कियह दुष्टनें सज्ज-
नोंकों खूब दुःख दियाहे सोई चिन्तवन राम लक्ष्मणका क्रोधहै ऐसा
क्रोध करिके राम लक्ष्मण कुंभकर्णकों मारते भए ॥ १६ ॥

श्लो० स्फशिक्षासायकैर्दुष्टंकुंभकर्णमदाकुलम् ॥ तयो
र्युद्धंसमीक्ष्याथसाधवोदुर्जनास्तदा ॥ १७ ॥

भा-टी- - रामजीनें दुष्टकों सुंदर धर्मशिखाते भए सोई बाण करि
के दुष्टकों मारते भए- रामजी और कुंभकर्णकी युद्ध कों देखि के-
साधुजन तथा दुष्टजन ॥ १७ ॥

श्लो- विस्मयंपरमंजग्मुः किन्त्वेतद्वैभविष्यति ॥ पु
ण्यपापौचसंज्ञातौतेनापिराघवेनच ॥ १८ ॥

भा-टी- - बडी विस्मयकों प्राप्ति भए यह क्या होवेगा- पुन्यको त-
थापापको रामजीभी जानते हे तथा कुंभकर्णभी जानताहै

श्लो० द्वाविमावीश्वराधीनाविति युद्धंत्रिवासरं ॥ ब
भूवचद्वयोर्ब्रह्मन्वीरयोर्वीरतापनम् ॥ १९ ॥

भा-टी- - कियह दूनो कर्म्म भगवानके आकति आरहे जिस्सें-
जोचाहे सोकरवावे ऐसा जानना सोई तीनदिन युद्धमें भयाहे १९

श्लो० चतुर्थदिवसेप्राप्ते द्वयोर्मानविवर्द्धने ॥ कुंभक
र्णंमहावीर्य्यन्दुरसंगरोरवैधनम् ॥ २० ॥

भा-टी- -रामजीको तथा कुंभकर्णको युद्धमें अभिमान बढ़ताहै सो

ई अभिमान चौथादिन भयाहै· तिस चौथेदिनयुद्धमें आयाजोरौ रवनर्क सो अग्नि भया· तिस्की वृद्धि करनेवाला षोटीसंगरूप कुं· भकर्णको ॥२०॥

श्लो० पूर्वोक्तैस्सैनिकैस्सर्वैस्संयुतंमृतशेषिकैः ॥ युद्धंचक्रेपुनर्वीरो विवेकोरघुनंदनः ॥२१॥

भा·टी· – मरेसें वचीजो फौज तिस्करिकें संयुक्त कुंभकर्ण कोंराम· जीयुद्ध करतेभए ॥२१॥

श्लो० सत्कर्मशिक्षणैर्बाणैस्तंजघानरघूत्तमः ॥ पैशून्याद्यस्त्रशस्त्रैश्चजघानरघुनंदनम् ॥२२॥

भा·टी· – सुंदरकर्मको शिखावन रूप बाण करिकें रामजी कुंभक· र्णकों मारतेभए चुगली करना·आदिले के बुरेकर्मरूप बाण करिके रामजी कों कुंभकर्ण मारता भया ॥२२॥

श्लो० बभूवतुश्च द्वौवीरौ बाणछिन्नकलेवरौ ॥ स्वस्वकार्यस्यप्राप्त्यर्थचिन्तनंबाणछेदनम् ॥२३॥

भा·टी· – अपने अपने काजकी प्राप्ति होनेकी चिंतवनसोई बाण· करिके देहको काटना दूनोभी वीरोंका होताभया ॥२३॥

श्लो० सत्संगवासनासौख्यरक्तांगोरघुनन्दनः ॥ दुस्संगचिन्तनारक्तरंजितोराक्षसोत्तमः ॥२४॥

भा·टी· – सत्संगकी प्रीतिको सुख सोई रक्त भयाहै तिसरक्त करिकै रामजीकी देह लाल होगईहै· । तथा कुंभकर्णको मालुमपडिग· याकि, दुःसंगको नाशरामजी करेंगे· उसी दुःसंगकी नाश होनेकी· चिंता सोरक्तहै तिसरक्तकरिके कुंभकर्णकी देह लाल होगईहै ॥२४

श्लो० एवंयुद्धेसमुद्भूतपृथिवीकरुणानदी ॥ स्वधर्मगिरिभिश्चैवंवृक्षैश्चैवचचालह ॥२५॥

भा॰टी॰ - रामजीकी तथाकुंभकर्णकी ऐसी कठिनयुद्ध देखिकै - जीवमात्रकेऊपर दया रखना सोई पृथ्वीहै उसपृथ्वीको धर्म क्षमा आदि सुंदरकर्म सोई पर्वत तथा वृक्ष हैं - तिनसहित पृथ्वी कांपती भई ॥ २५ ॥

श्लो॰ विधूयमानाम्पृथिवीन्निरीक्ष्यजघानरामः खलुकुम्भकर्णम् ॥ सदोपदेशेनशरेणदुर्मतिंपपातः सोभूमितलेसदालये ॥ २६ ॥

भा॰टी॰ - दयारूप पृथ्वीकों कंपायमान रामजी देखिकै सुंदरकर्मकोउपदेशरूप बाणकरिकै कुंभकर्णको मारतेभए - रामजी करिकै माराजो दुस्संग रूप कुंभकर्ण सोसुंदरधर्मरूप जोपृथ्वीतलतिस्मे पडिकै मरिगया - षोटीसंगति को नाशभया - सुंदरि संगति की वृद्धि भई एहीकुंभकर्णको मरणभया ॥ २६ ॥

श्लो॰ कुंभकर्णेहतेदुष्टेदुःसंगेसाधुदुःखदे ॥ रामेनधर्मजादेवाः पूर्वोक्ताः सज्जनादयः ॥ २७ ॥

भा॰टी॰ - साधुजनोंकों दुःखदेनेवाला दुस्संगरूपकुंभकर्णके मरे पीछे पेस्तरबर्णनभएजो धर्मसें उत्पन्न देवता तथा सज्जन ए

श्लो॰ चक्रुर्जयजयारावं नेदुर्दुंदुभयस्तदा ॥ नेदु तद्दर्षमतुलंसुमनास्तंनिगद्यते ॥ २८ ॥

भा॰टी॰ - सब जयजय कार करते भए - सोई दुंदुभी बाजतीभई - तथा इन साधुजनोकों तथा देवताओंकों बहुत हर्ष भया सोईपुष्प भयाहै ॥ २८ ॥

श्लो॰ शंकाविरहिताप्रीतिस्सज्जनानामभूत्तदा ॥ सत्संगेमुनिशार्दूलपुष्पवृष्टिश्वसाभवत् ॥ २९ ॥

भा॰टी॰ - हेमुनिजी सत्संगमेंसज्जनोकीप्रीतिदुष्टोंकी शंकासें -

हीन होतीभई सोई पुष्पवृष्टि होतीभई॥ २९॥

श्लो॰ दुःसंगरूपेखलुरावणानुजेहतेचरामेणससै न्यकेखले॥ सुखंप्रपेदुःखलुसज्जनाद्योनिश्शं करागंपरमेश्वरेचलम्॥ ३०॥

भा·टी· – षोटीसंगतिरूप कुंभ कर्ण रावणको छोटो भाई तिस्कों· रामजीने मारिडाले तब साधुजनोंकों भयरहित भजनमें प्रेम होता· भया· ऐसा सुख साधुवोंकों होताभया· तथा शंकारहित प्रेम परमें श्वरमें होताभया· ॥ ३०॥

इतिश्रीवेदान्तरामायणे युद्धकांडे शिवसहायबुधवि रचितेसम्वर्तवरतन्तुसंवादेकुंभकर्णवधेतृतीयोमो· क्षोपानः॥ ३॥

---

श्लो॰ वरतन्तुरुवाच कुंभकर्णंहतन्दृष्वारामे नरावणस्तदा॥ स्वसुतंचसमाहूयदुश्चेष्टितमथा ब्रवीत्॥ १॥

भा·टी· – वरतन्तु मुनि बोले रावणनें दुस्संग रूप कुंभकर्णको राम जीसें मराजानिकैषोटेकर्म को प्रेमरूप जोमेघनाद तिस्कों बुलायकै· बोलता भया॥ १॥

श्लो॰ दुश्चेष्टितमहाबाहोयाहियुद्धायसत्वरम्॥ विवेकेनहतोभ्राताकुम्भकर्णोममानुजः॥ २॥

भा·टी· – हे षोटे कर्मके प्रेम मेघनाद मेरेभाई कुंभकर्णको विवेक· रूपरामजीनें मारिडालेहै से युद्ध करनेवास्तेजलदीजावो॥ २॥

श्लो॰ दुष्टकर्मणियत्प्रेमतदिंद्रमर्दनस्स्मृतः॥ सम्श्रु त्वास्वपितुर्वाक्यंशीघ्रंयुद्धायनिर्य्ययौ॥ ३॥

भा॰टी॰ –षोटेकर्म्मोंमेंप्रेमरूप मेघनाद पिताकी वाक्य स्रुनिके उसीवखत युद्ध करनेको गया॰ ॥ ३ ॥

श्लो॰ चकारयुद्धमतुलंताभ्यांच कपिभिःसह ॥ जार
द्यूतमहामोहहास्यस्निग्धादिकर्मभिः ॥ ४ ॥

भा॰टी॰ – व्यभिचार जुआ॰ षोटेकर्मोंमें बडी मोह साधुवोंकी मस्करी कर्नी इनकर्म्मोंमें स्नेह आदिलेकै बुरेकर्म बाण है इन्वाणों करिके राम लक्ष्मण तथा वानरोंसे युद्ध इन्द्रजित कर्ताभया ॥ ४ ॥

श्लो॰ मंद स्मितादिवाक्यैश्चशरैश्चिच्छेदवानरान् ॥
राघवौचविशेषेणजघानैभिश्शरोत्तमैः ॥ ५ ॥

भा॰टी॰ – मुस्कि आयके बोलना॰ यह बडा षोटाकामहै इस्कों बाणब नायके वानरोंकों काटता भया॰ इन्होंबाणों करिकै राम लक्ष्मणकोंभी मारताभया ॥ ५ ॥

श्लो॰ एषाम्प्रीत्यामहाशक्त्याचान्यैश्चविविधैरपि ॥
जघानलक्ष्मणन्तोषंराघवंचविशेषतः ॥ ६ ॥

भा॰टी॰ – पेस्तर वर्णन भए बुरेकर्मरूप बाण तिन्वाणोमेंप्रीति निर्दया सोई सांगहै उसीसांग करिके सन्तोषरूप लक्ष्मणकों मारातथा॰ और अनेक बाणहै तिन्हों करिके विवेक रूपरामजीकों तथाओरयोधोंकों मारता भया ॥ ६ ॥

श्लो॰ कदास्वकार्येस्वस्यैववर्द्धनंन्यूनताकदा ॥
आविर्धानन्तिरोधानन्तस्यतत्कथितम्मुने ॥ ७ ॥

भा॰टी॰ – वीर मेघनाद अपनी युद्धमें कभी अपनी जयकी वृद्धि देखताहै तथा कभीजयकी हानि देखताहै एही युद्धमे मेघनादको प्रगटहोना तथा गुम होनाहै ॥ ७ ॥

श्लो॰ एवंकृत्यमहायुद्धन्तयोः शोकविवर्द्धनम् ॥

मूर्छितान्कपिवीरांश्चराघवौचापिदुर्मदः॥८॥

भा०टी० – इसप्रकारकी महायुद्धकरिकै वानरोंको तथारामलक्ष्मणकों मूर्छित करिकै॥८॥

श्लो० जगामस्वालयंवीरः पितृहर्षविवर्द्धनः॥ रामेनघातितांसेनांसर्वांस्वस्यनिरीक्ष्यवै॥९॥

भा०टी० – पिताजो मनरूप रावण तिस्के हर्षकी वृद्धि करनेवाला इन्द्रजित अपने मंदिर कोंगया० दुष्टोंकी मंडलीसो वाकीमहल० है० अपनी फौजको राम करिकै नष्टभई देखिकै भागिगया॥९॥

श्लो०रामबाणैरर्दितश्चजगामपितुरन्तिकम्॥तदाभूच्च द्वयोः सायंसंशयंमुनिसत्तम॥१०॥

भा०टी० – रामजीके बाण करिकै माराजो मेघनाद भागिकै पिताके पासगया० तबराम रावण दूनो शूरवीरोंकी संशयकीहमारा जयहोवैगा कि नही ऐसा दोनोंवीर विचारते हैं सोई संशपरूप सायंकाल होगया॥१०॥

श्लो० रामरावणयोरस्तंप्रतापभास्करोगमत्॥ किंभविष्यतियुद्धेस्मिन्चिन्तयेतिविचिन्ततोः॥११॥

भा०टी० – राम रावण ये दोनों अपनेअपने चित्तमें चिंतन करते हैं० कि, युद्धमे क्या होवैगा-जीतेंगे कि हारिगे० ऐसाचिंतनरूप रामरावणको प्रताप भयाहै सोई प्रतापसूर्य सामको अस्त होगया ११

श्लो० सन्तोषम्पतितन्दृष्ट्वा शक्त्यानिर्दययाक्षितौ॥ घातितन्दुष्टकार्यस्यप्रेम्णारावणसूनुना॥१२॥

भा०टी० – राम आदिलेकै सुग्रीव बिभीषण सुग्रीवसहित सब० वानर रोतेभए० क्यों रोतेभए खोटे कर्मो मे प्रेमरूप ऐसोजो रावणको पुत्र मेघनाद तिस्करिकै लक्ष्मण संतोषरूपको मारा देखिकै निर्दया

रूप शक्ति करिकै दुष्टनें लक्ष्मणकों मारा तब लक्ष्मण मोक्षके प्रे मसें कुछ थोरा व्याकुल होगए सोई श्वाससें हीन मूर्छाकोंप्रा प्ति होगएहैं ॥१२॥

श्लो॰ मोक्षमेमा कुलत्वेननिरीक्ष्यस्वासवर्जितम् ॥
रामाद्यारुरुदुस्सर्वेसुग्रीवसविभीषणाः॥स्वस्वका
र्येष्वधैर्यञ्चतदेवरोदनंस्मृतम् ॥१३॥

भा॰टी॰ - रामआदि आपने२कार्जमे धीरज कों छोडि दिये सोई स बको रोना भयाहै श्लोकयुग्महै॥१३॥

श्लो॰ सत्याचलस्वभावश्चरामस्यतेनबोधिनः॥सुषे
णेनरघुश्रेष्ठोद्रोण्यानयनहेतवे ॥१४॥

भा॰टी॰ - द्रोण पर्वत पर संजीवन नाम औषधी लें आने वास्ते रा॰ मजीको स्वभाव कभी सत्यसें चलाय मान नही होता॰ सोई स्वभाव रामजीको कहाकि द्रोणगिर सें संजीवन औषधी मँगावो॥१४॥

श्लो॰ सन्तोषजीवनार्थायरावणस्यकुलान्तकम् ॥ क
र्तुंतेनप्रतिज्ञातंसं प्रभातावधिं कृता ॥१५॥

भा॰टी॰ - रामजीनें प्रतिज्ञाकियाकि संतोष रूप लक्ष्मणकों जि॰ वायकें पीछे रावण के कुलको नाश करोंगा॰ ऐसी रामजीकी प्रति ज्ञा सोई प्रातःकालकी मर्यादा भई है कि रातिमें लक्ष्मण जिआवे तवतो अच्छा है नहीतो प्रातःकाल सूर्य दीखने वखत मरिजावे गे॰ रामरावणके सेनाकी चिंता सोई रातिहै॥१५॥

श्लो॰ रामेनसच्चिदानंदध्यानंद्रोणाचलस्स्मृतः॥सं
जीवनन्तदानन्दमौषधञ्चकृतम्मुने॥१६॥

भा॰टी॰ - हेमुनिजी रामजी भगवानकोध्यान कर्तेहै सोई द्रोणना मपर्वतहै तथाध्यानमे आनंदहोताहै॰ सोई संजीवनी नाम औ॰

षधीहै॥१६॥

श्लो॰ रामेनप्रेषणम्प्रेममोहरूपस्यकथ्यते॥गति·
वेगोहनुमतोविवेकानुग्रहस्तथा॥१७॥

भा·टी· – रामजीके प्रेमके मोहरूप जो हनुमान तिस्के ऊपर रामजी कोप्रेम बहुतहै सोई औषधी लेनेवास्ते हनुमानकों भेजनाभया है· हनुमानकेऊपर विवेकरूप रामकी कृपा बहुतहै सोई संजी· वन औषध लेआनेवास्ते हनुमानकोदौडनाभयाहै॥१७॥

श्लो॰ रामध्यानमभूत्पंथादुष्टार्थोमुनिसत्तमः॥भग
वद्वाक्यशास्त्रस्यनिन्दनंतत्कमंडलुः॥१८॥

भा·टी· – हनुमानजी रामजीको ध्यान कर्तेभए सोई औषध लेंने· वास्ते जानेकीरस्ताहै· तथा षोटेकर्मोकों अर्थ जैसाजाते २ अनेक· दुःख सहना सोही विघ्न कर्नेवास्ते कालनेमि मुनि भयाहै· ईश्वरकी वाक्य रूप शास्त्र· तिस्की निंदा कर्ना सोईकालनेमिको कमंडलहै

श्लो॰ ददौहनुमतेतोयंतत्करवंबुद्धिनाशनम्॥तत्त्य·
क्त्वाहनुमानूचेविज्ञायदम्भिनंमुनिं॥१९॥

भा·टी· – हनुमानकों प्यासाजानिकें शास्त्रनिंदनरूप कमंडलुति स्कमंडलका करव सोई जलहै सज्जनोंकी बुद्धिको नाश करनेवा ला जल तथा कमंडल हनुमानको मुनिनेदिया· और कहाकिज रूपीओ· हनुमान मुनिकों चंडाल जानिके कमंडल त्यागिके दु· ष्ट मुनिसें बोले॥१९॥

श्लो॰ नानेनमेभवेच्छांतिस्त्रषस्साचबलीयसी॥नि
श्चंतदोषधेदत्तंतदेववचनंकपेः॥२०॥

भा·टी· – हनुमानको चित्ततो औषधमें लगिरहा सोई हनुमानको बोलनाभया· यहबोलेकि दुष्टमुनि· इसजलसें हमारीप्यासकीशां

न्नि नहीं होवैगा- क्योंकि हमारे कों बडीप्यास लगीहे ॥२०॥

श्लो॰ संतोषलक्ष्मणस्यैव वर्द्धनेच्छा तृषास्मृता। इ
त्युक्तोदर्शयामास दुष्टार्थः कपयेतदा॥२१॥

भा-टी- - संतोषरूप लक्ष्मणकी वृद्धि होने की इच्छा रामजीके प्रेमके मोहरूप हनुमानके बनी रहतीहै सोई हनुमानकी तृषा भईहै ऐसा कपिसें कहा जो मुनि सो हनुमान के वास्ते तलाव देखा ना भया- ॥२१॥

श्लो॰ तडागंसज्जनानाम्वैदुःखरूपंविचिन्तनम्॥ सद्
नादरतोयेनपूरितंसर्वदाशरम्॥२२॥

भा-टी- - सज्जनजीवोंकों दुःख देनेको चिंतवन सोई तलावहै- साधु लोगोंको अनादर सोईजलहै तिसकरिके हमेश वह तलाव भरा- रहताहै ॥२२॥

श्लो॰ सदसद्विचारण म्यानन्तोयस्याभूत्कपेस्तदा॥
छाययासज्जना प्रीत्याग्रस्तस्तत्रकपिस्तदा॥२३॥

भा-टी- -खोटेकर्मको तथा सुंदरकर्मको निर्णय करना सोई हनुमान को जलपीनाभयाहै- ऐसा सुंदर कर्मतथा बुरेकर्मको निर्णयक रतेजो हनुमान तिस्कों साधु जीवोंमें अप्रीति सोई छायानाम राक्षसीहे सोछाया हनुमानकों खानेवास्ते पकडिलिई ॥२३॥

श्लो॰ तांहत्वागान्मुनेश्शीघ्रमंतिकंगुरुदक्षिणा॥ सं
तोषचिंतयामुष्ट्याहननंसत्कभावना॥२४॥

भा-टी- - राक्षसीकों मारिकै मुनिके साम्नेगए तब मुनि दक्षिणा- मागा- तब हनुमानके संतोषकी चिंता बनी रहतीहे सोई मूठिहै- उसी मुष्टिकरिके दुष्टका अर्थरूप मुनिकों मारे तथा साधुजीवों में प्रीतिरूप दक्षिणा देतेभए- तब दुष्टोंका अर्थ नष्ट होगया- और

सज्जनजीचभयसें रहितभये ॥ २४ ॥

श्लो॰ संतोषपतनंकष्टमविज्ञानोवनस्यतेः॥ विवेक संगतोहर्षतद्द्रोणोत्पाटनंकृतम् ॥ २५ ॥

भा॰टी॰ – युद्धमें संतोषरूप लक्ष्मण नाहोश भएहे ऐसा कष्टसो ई संजीवन औषधीको नहीपहिचानना भयाहै॰ विवेकरूपराम॰ की संगतिमें जीवोंको बडा हर्ष होताहे सोई द्रोणपर्वतको मूलसैं उखाडना भयाहे ॥२५॥

श्लो॰ सत्संगवर्द्धनमहाकरवमौषधञ्चसत्याचलप्र॰ कृतिजोगदहाकृषेणः॥ तूर्णन्ददौरघुपतेः खलुल क्ष्मणायतज्जीवनंचसमभूद्धिमतोवियोगः ॥२६॥

भा॰टी॰ – तवद्रोणपर्वतकों देखिके रामजीकों सत्यसें अचलस्वभाव रूप गदहामाने वैद्य कृषेणजोहैसो सत्संगकी वृद्धिमे करव सोई सं जीवन औषधकोंजलदी लक्ष्मणकों देतेभए॰ तबतुर्त लक्ष्मणजी जिआतेभए॰ षोटीमतिमें वियोग होना सोई लक्ष्मणकोजीवन भया हे॰ बडेवैद्यको शास्त्रमें गदहालिखाहे कोईशंका मति करना ॥२६॥

इतिश्रीवेदान्तरामायणे युद्धकांडे शिवसहाय बुधविर चिते संवर्तवरतन्तुसंवादे संतोषजीवनविधौचतुर्थो मोक्षोपानः ॥ ४ ॥

---

श्लोक॰ वरतन्तुरुवाच लक्ष्मणंजीवितन्दृष्ट्वाह र्षितावनचारिणः ॥ रामोविभीषणश्चैव नाद्रीरिस्था पनम्मुनः ॥ १ ॥

भा॰टी॰ – वरतंतु मुनि बोलेलक्ष्मणको संजीवित देखिके रामजी, सुग्रीव विभीषण॰ सब कपिरिक्षकों बडाहर्षभया॰ सोई फिरिद्रोण

पर्वतकों द्रोणके स्थानपर टिकाना भयाहे ॥१॥

श्लो॰ स्वस्वार्थलालसारात्रौतद्धर्षचिंतयाद्वयोः ॥पुनः
प्रतापोवद्धेरामरावणयोस्तदा ॥२॥

भा·टी· – तब अपने अपने जयकों विचार सब कर्तेहे सोई विचार· की इच्छा रात्रि भईहे तिस रात्रिमें अपने अपने जयकी रूरवमें उसी हर्षकी चिंता करिके राम रावणको प्रताप रूपसूर्य फिरिउदयभया·२

श्लो॰ एतत्प्रभातंसंवीक्ष्य द्वयोर्लोभन्दिनन्तथा ॥युद्धा
यपुनराजग्मुः कपयोराक्षसास्तदा ॥३॥

भा·टी· – ऐसा प्रतापरूप सूर्यउदयरूप प्रभातको देखिके तयारा मरावणकी अपने अपने काजमें लोभ सोई दिन भयाहे· ऐसीस· मयमें युद्धकर्नेवास्ते वानर राक्षस फिरि रण भूमिमें आतेभए· अ पने२ काजकीप्रीति सोई रणभूमिहे ॥३॥

श्लो॰ चेद्विवेकोबलीरामःसन्तोषोलक्ष्मणोऽपिच ॥
तथापिनागपासेनपंचेंद्रियगुणेनवै ॥४॥

भा·टी· – राम लक्ष्मण बडे बलवानहे· क्योंकि विवेक संतोष मोक्षके बडे मित्रहे तोभी पांच षोटी इंद्रियोंकोगुण जोहे सोई नागपासभ· याहे तिसनाग पास करिके ॥४॥

श्लो॰ बबंधराघवौयुद्धेमेघनादोमहाबली ॥किंचि
त्स्वकर्मचलनंतद्वयोर्बंधनंमुने ॥५॥

भा·टी· – मेघनाद राम लक्ष्मणकों बांधताभया· कुछ थोराविवे कभी अपनेकर्मसें चलायमान होगयेहे और लक्ष्मणभी थोरा च लायमान होगये हे क्योंकि मनरूप रावणकी युद्धस हजनहींहैं बडे२ ज्ञानियोंकों पकडिके मनरावणने नर्कमें पटकिदियाहे सोईचलाय· मान रामलक्ष्मणकोनागपासमें बांधनाभयाहे ॥५॥

श्लो॰ स्ववीर्यस्मरणेनैवगरुडेनविमोचितौ॥ नागपा
सविमुक्तौद्दौनिरिस्थरावणात्मजः॥६॥

भा॰टी॰ - रामलक्ष्मण अपनेवीर्यको स्मरण कर्तेभए॰ सोईगरुडभ
याहै सोगरुड नागपाससें छुडाय दिया॰ मेघनादनें रामलक्ष्मण
कों नागपाससें छुटादेखिके॥६॥

श्लो॰ प्लाव्ययुद्धाभिराशश्चप्लवनंस्वजयेतया॥ दुष्टा-
नांसंगतिंदेवींनाम्नोक्तांचनिकुम्भिलाम्॥

भा॰टी॰ - अपनीजय होनेमें मेघनादनें आसाछोडि दिया॰सोई मे॰
घनादको भागना भयाहै सो युद्धसें भागिके दुष्टोंकी संगति रूप॰
निकुंभिलादेवीहै तिस्केपासगया॰॥७॥

श्लो॰ स्वकर्मप्रेमकुंडंचतत्सुखोऽग्निरितीर्यते॥ तदु
त्साहाश्चसाहित्याहवनेदारुतत्पणम्॥८॥

भा॰टी॰ - मेघनादकोजोकर्म बुरेकर्ममें प्रेम करना सोई होमको
कुंडभयाहै उसीबुरेकर्मके प्रेममें सुख मानना सोई अग्निभईहै॰
मेघनादकोउत्साहकी मैंबहुत सुखीहों सोई होमकी सबसामग्री
है मेघनादकी प्रतिज्ञाकिराम लक्ष्मणकोंमारिडालौंगा ऐसापण॰
सोई होमको काष्टहै॥८॥

श्लो॰ मरणेचिंतनंहोमंकर्तुंतस्थौचदुर्मतिः॥ शमादि
शिक्षाबाणेनलक्ष्मणेनविनाशितः॥९॥

भा॰टी॰ - मेघनादकोनिश्चय अपनेमरणेकी होगईकि मैंयुद्धमें
मरिजाऊंगा सोई होमको कर्ना भयाहै॰ शम॰दम॰यम॰ आदि सुंदर-
कर्म लक्ष्मण मेघनादकों सिखाते भए सोईसिखाना बाणकरिके
लक्ष्मणनें मेघनादकी होमको नाश कर्तेभए॥९॥

श्लो॰ किञ्चित्स्वकार्येम्लानत्वंतदेवतद्धिनाशनम्॥ पु

नश्यत्के महायुद्धे लक्ष्मणेन हतो भुवि॥ स्वभावं पी-
र्विकं हित्वा स्कस्वभावरतोऽभवत्॥१०॥

भा॰टी॰ - थोरा मेघनादको अपने कर्ममें लक्ष्मणकी शिक्षा पायके प्रेम नष्ट होगया॰ तथा सुंदर कर्मोंमें थोरा प्रेम भया सोई होमको नाश होनाहै होमके नाश भए पीछे फिरि युद्ध कर्नेको आता भया॰ तब लक्ष्मण मारिडाले तब मेघनाद स्थारूप पृथ्वीमें पडिगया॰ द यामें मिलिगया॰ पेस्तर का स्वभाव षोटे कर्ममें प्रेम सो छूटिगया॰ सुंदरस्वभावमें प्रेम कर्ने लगा एई मेघनादको मरणभयाहै १०

श्लो॰ तदेव मरणं तस्य पतनं धर्मसंस्थितिः॥ भूमौ
सद्भावनायांच मेघनादस्य संक्षयः॥११॥

भा॰टी॰ - धर्ममे बुद्धि टिकिगई सो मेघनादको भूमिमें पडनाहै सुंदर कर्म्ममे प्रीति होगई सोई भूमिहै तिस्में पडिके खोटी कर्म में प्रेमरूप जो मेघनाद तिस्को नाशहुआ॰ श्लोक दोयको अर्थ मिले है॰ युग्महै॥११॥

श्लो॰ एवं संतोषरूपस्कलक्ष्मणो राघवानुजः॥ नि-
हत्यचेन्द्रजेतारं स्करवमापस्वकर्मणः॥१२॥

भा॰टी॰ - संतोष लक्ष्मण इसप्रकारसें इन्द्रजितको मारिके अपनाकर्म जो संतोष तिस्को सुखजो भगवानमें प्रेम तिस्को प्राप्तिभए॰

श्लो॰ सिद्धिं वीक्ष्य विवेकाद्या हर्षं चक्रुश्च भूरिशः॥ सा
पुष्पवृष्टिः खाद्भ्रष्टा ह्ययोरुपरि पातिता॥१३॥

भा॰टी॰ - विवेकरूप रामजी आदि सज्जन अपनें कर्मोंकी सिद्धि देखिके बहुत हर्ष कर्ते भए॰ सोई रामलक्ष्मणके ऊपर फूलकी वर्षा आकाशतें होती भई॥१३॥

श्लो॰ किंचित्किंचित्स्वमरणे कुलानां संक्षये तथा॥

ासंप्रापदशग्रीवो विलापस्तस्य सस्मृतः ॥१४॥

भा॰टी॰ - रावणने आपने मरण में तथा कुलकी क्षयमें घोराधो राइर मानता भया॰ सोई रावणको विलाप हुआहै ॥१४॥

श्लो॰ हते मेघनादे कुनादे सुवादे गते प्रापिते लक्ष्मणेनैव मृत्युम् ॥ सुखं साधवस्सज्जना उपेदिरे वैमहीसर्वदानंदयुक्ता बभूव ॥१५॥

भा॰टी॰ - लक्ष्मणनें मेघनादको मारि डाला॰ षोटा बोलना॰ दुष्टजीवोंको नष्ट होगया सबजीवोंमें सुंदर बोलना होताभया॰ साधुजन भगवानका भजन रूप सुखको प्राप्तिभए तथा दयारूप पृथ्वी दयाको वृद्धिरूप आनंदकी प्राप्ति होतीभई ॥१५॥

श्लो॰ मेघनादं हतन्दृष्ट्वा पुत्रं प्राणसमंतदा ॥ जीवितांशाम्परित्यज्य स्वकर्मप्रीतिभावनाम् ॥१६॥

भा॰टी॰ - रावणनें मेघनादको मरा देखिके अपने कर्ममें प्रीति सोई रावणके जीनेकी आसा उस्को छोडिदिया जानाकि अब मैं नही जीवोंगा॰ ॥१६॥

श्लो॰ पूर्वोक्तैरस्त्रशस्त्रैश्च सैनिकैश्चापि संयुतः ॥ बभूव सुमहद्युद्धं रामरावणयोरपि ॥१७॥

भा॰टी॰ - पेस्तर वर्णन भईजो सेना तथा अस्त्र शस्त्र तिनकों लेके बडी युद्ध रामरावणकी होतीभई ॥१७॥

श्लो॰ असत्यादिशरैर्दुष्टो जघानरामवाहिनीः ॥ राघवौ च विशेषेण सुग्रीवं सविभीषणम् ॥१८॥

भा॰टी॰ - झूठ बोलना आदिजो अनेक बुरेकर्म हैं तिन्कों बाणबनायकें रामजीकी सेना सुंदर कर्मरूप तिस्कों काटताभया॰ तथा रामलक्ष्मण सुग्रीव विभीषण इनचारोंकोतो बहुत मारताभया ॥१८॥

श्लो॰ रामोपिसत्यादिशरैर्दशाननंविभेदसैन्यानपि तस्यचागतान्॥ हतामृतास्संस्खलिताश्वपूाधिता स्स्वकर्मभ्रष्टाश्शुभबुध्धयोऽभवन् ॥१९॥

भा॰टी॰ - तथा रामजी भी सत्यवचन आदि अनेक सुंदर कर्म्मरूप बाण करिके रावणको मारते भए॰ तथा रावणकी सेना दुष्ट कर्मों में प्रीतिरूप तिस्कों भी मारते भए॰ सेना कोईतो घायल हुई पृथ्वीमें पडीहै कोई मरिगई कोई भागिगई रावणकी सेना दुष्टकर्म छोडिके सुंदर कर्म्ममें बुद्धि लगाती भई सोई सेनाको मरणा॰ भागना॰ पड़ना भयाहै॥१९॥

इतिश्रीवेदान्तरामायणे युद्धकांडे शिवसहायबुध विरचितेसम्वर्तवरतन्तुसंवादे रामरावणकल्लोलयुद्ध वर्णनेपंचमोमोक्षोपानः॥५॥

---

श्लो॰ वरतन्तुरुवाच युद्धेपराजयम्प्राप्यरामे नरावणस्तदा॥ स्वकर्मनाशचिन्तायांरात्रौगः त्वाचजानकीम्॥१॥

भा॰टी॰ - वरतन्तु मुनि बोले रावणनें युद्धमें हानिको पायके रावणके कर्मके नाशकी चिंता सोई रात्रि भई है तिस रात्रिमें जानकीप्रति

श्लो॰ उवाचवचनंराजासामदामादिसंयुतं ॥ अहं चापिजगद्व्याप्तस्तस्यांशऽग्प्राणवल्लभे॥२॥

भा॰टी॰ - साम दामविभेद दंडरूप वचन बोलता भया॰ हे प्राणोंकी प्यारी जानकी संसारमें व्याप्तजो भगवान् तिस्को अंश मे भी हौं २

श्लो॰ कृपांकरिष्यसेचेत्वंतदामुक्तोभवाम्यहम॥ अस्मात्कुतर्कनिचयान्नोचेत्वांभ्रष्टभावनाम्॥३॥

भा·टी· - जोतूं भगवानकी भक्ति मेरेकों देगा ऐसी कृपा मेरेऊ पर करैगा तो यह संसारकी अनेक प्रकारकी कुतर्क केसमूहसें मे छूटिजाउगा· यह सामवचन· जोनही कृपा करैगा तौमें भ्रष्ट हो ईरह्याहूं पण तेरेकोंभी भ्रष्टकी प्रीतिमें ॥३॥

श्लो॰ गमयिष्यामिदास्यामिनिर्विघ्नंभजनंप्रभोः॥इ
त्याद्यनेकविधिनातेनोक्ताजनकात्मजा ॥४॥

भा·टी· - प्रापिकारि देवोगा यह दंडवचन जो कृपा करैगा तो भग· वानको भजन निर्विघ्न देऊंगा तेरे भजनमें विघ्न नहीं होने पावेगा क्योंकि इन्द्रियोंको राजा तौ मैंहूं यह दामवचन इन आदि और अनेक प्रकारके वचन जानकीसें रावण कहता भया· परंतु जानकी ४

श्लो॰ निरश्वकारतन्दुष्टंज्ञात्वापक्वत्हृदंसती॥अ
नेकजन्मभ्रष्टत्वंतत्तिरस्कारमुच्यते॥५॥

भा·टी· - रावणको अनादर करिदिया जानकीने विचार कियाकि यह मन रूप रावण अनेक जन्मको भ्रष्टहै इसकी त्हृदय बहुत· ज्ञानसें कच्ची है इसकों जोकुछउपदेशभी करें तो सुनितो लेवैगा पण मानैगा नही इसवास्ते अनादर करिदिया· मन बहुत जन्मसें बिगडि रह्याहै सोई रावणको अनादर है ॥५॥

श्लो॰ आजगामतदादुष्टस्स्वालयंस्वपराजयं॥ज्ञा·
त्वारामाद्ध्रुवंदुष्टस्तत्तस्यगमनालयम्॥६॥

भा·टी· - जानकीसें अनादर पायके युद्धमें हारि जाना· ऐसे अप· नेघरकों रावण चलागया· रावणनें रामजीसें आपनी हारि निश्चय सें जानि लिआ· सोई रावणको घरको जाना हुआ· ॥६॥

श्लो॰ गतेदशाननेदेवीब्रह्मभक्तिस्वरूपिणी॥चक्रे
विलापंसुमहद्दुष्टानाम्मोक्षहेतुकम्॥७॥

भा-टी- - रावण के गए पीछे ब्रह्मकी भक्ति रूप जानकी दुष्टोंकों मोक्ष होने वास्ते चिंतवन करती है सोई विलाप जानकी कर्ती भई है ॥७॥

श्लो॰ ज्ञानविज्ञानवैराग्यंमुक्तिदानंचराचरे॥आ
चारश्चविचारश्चत्रासोदुष्टस्वभावतः॥८॥

भा-टी- - ज्ञान १ विज्ञान २ वैराग ३ आचार ४ विचार ५ खोटे स्वभावसें डर राखना ६ ॥८॥

श्लो॰ अनाहर्षोलसोनित्यंश्रीमद्भगवदर्च्चने॥ कु
कर्मनाशनेयत्नंस्वचित्तनियमन्तथा॥९॥

भा-टी- - भगवानके पूजनमें हर्ष त्यागना नहीं ७ तथा आलस्य करना नहीं ८ खोटे कर्मोंकी नाश होने वास्ते उपाय करना ९ तथा आपने चित्तकों स्थिर राखना १० तथा और अनेक विभ्रसें चित्तको बनोबस्त राखना ११ ॥९॥

श्लो॰ एतेचैकादशामासाः मोक्ताजनकनंदिनी॥
स्थित्वाचरावणारामेविललापभृशंसती॥१०॥

भा-टी- - एही ग्यारह मास जानकी रावणकी बगीचामें टिकिके वारंवार विलाप करती भई॥१०॥

श्लो॰ पूर्वोक्तांरजनीन्दृष्ट्वाव्यतीतांरावणस्तदा॥पु
नर्युद्धंचरामेनकर्तुंप्रायान्महाबली॥११॥

भा-टी- -पेल्लर वर्णन भई जो रात्रि तिस्कों बीती देखिके रावणनें रामसें युद्ध करने कों फिरि आताभया॥११॥

श्लो॰ योगध्यानौशमदमौजीवानांसद्धिशिक्षणम्॥
परोपकारोमोक्षस्यचिंतनंसततंह्रदि॥१२॥

भा-टी- -योग ध्यान शम दम जीवोंकों सुंदर कर्म शिखाना दू-

सरेजीवको उपकार कर्ना रातिदिन मोक्ष होनेकी चिंतन कर्ना १२

श्लो॰ दुष्टत्रासस्सदामौर्नारामस्यैतेमहागुणाः॥ दुष्टानांकर्मणांभावस्तेषुरागोनिरंतरम्॥१३॥

भा॰टी॰ - दुष्टजीवोंसें भयमानना षोटेकर्म्मोंमें कोई बुलावै तौ बोलना नहीं एनवगुण रामजीके युद्धमें नवदिन भएहें तथा षोटे कर्म्मोंमें प्रेम उसी प्रेममें निरन्तर स्नेह कर्ना ॥१३॥

श्लो॰ अनृतंचञ्चलत्वंचसत्कर्मनाशचिन्तनम्॥ सत्कर्मणिमहालस्यंवेदनिंदनमेवच॥१४॥

भा॰टी॰ - झूठबोलना स्वभावकी चंचलता बहुत राखना सुंदर कर्मकी नाश कर्नेकी चिन्ता सदा राखना सुंदर कर्मौंमें सदा आलस्य कर्ना वेदकी निंदा कर्ना ॥१४॥

श्लो॰ जीवानांदुःखदायाशुसदोपायवितर्कनम्॥ प्रसह्यकरणंचैतेगुणारावण देहजाः॥१५॥

भा॰टी॰ - जीवोंको दुःख देनेवास्ते सदा उपाय कर्ना सब जीवोंसें जबरदस्ती करना एनवगुण रावणकी देहसें उत्पत्तिहै सोई युद्धमें नवदिन भएहै ॥१५॥

श्लो॰ एवमष्टादिनंयुद्धंरावण योरभूत्तदा॥ किंचिच्छेषान्निरीक्ष्यैवस्वसेनांराक्षसाधिपः॥ हतपुत्रप्रपौत्रांचसभ्रातृवर्गसंयुताम्॥१६॥

भा॰टी - इस प्रकारकोनवदिन रामजीका तथा नवदिन रावणके ए अठारह दिन रामरावणकी युद्ध भई तब रावण अपनी फोजमें देखा भ्राता-पुत्र-पौत्र संगरहनेवाले सब मरिगए अब थोरी फोजरहीहै॥१६॥

श्लो॰ विद्युत्संगरान्मूढोव्याकुलत्वंचप्लावनम्॥ स्व॰

भावंस्वगुरुंशक्रं पृष्ट्वायज्ञंसमारभत् ॥ १७॥

भा-टी- - ऐसी सेना देखिकै रावण व्याकुल होगया-सोई रावण-को संग्रामसें भागनांहै- से संग्रामसें भागिके रावण को स्वभाव - सोई रावणको गुरु शुक्राचार्यहै तिस्सें पूंछिकें यज्ञ कर्नेको प्रारंभ रावण कर्ताभया ॥१७॥

श्लो॰ केनोपायेनविजयोमेभवेदिनिचिन्तनम् ॥ शोकः कुंडंमहामोहोकाष्टमग्निर्वितर्कनः ॥ १८॥

भा-टी- - मेरीजय रामसें युद्धमें किसप्रकारसें होवै ऐसा रातिदिनरावण चिंतवन कर्ताहै सो चिंतवन रूप शोक सोई यज्ञमें होम कर्नेको कुंडभयाहै-षोटेकर्ममें रावणकी वडी मोहहै सोई होमकी लकडी भईहै तथा रामजीकों मैजीतोंगा कि रामजी मेरेकों जीतिलेवैगे ऐसा राति दिनरावण तर्क कर्ताहै सोई तर्क यज्ञमें अग्नि भईहै ॥१८॥

श्लो॰ पुत्रपौत्रप्रपौत्राणांसेनानामपिघातनम् ॥ एवंविषादाबहवोहोमसाहित्यमंडलाः ॥ १९॥

भा-टी- - पुत्रपौत्र भाई प्रपौत्र फोज इनसबका मरण देखिकै रावणकी हृदयमें बहुत दुःखभया- सोई दुःख होमकी अनेक प्रकारकी सामग्री भईहै ॥१९॥

श्लो॰ एवंयज्ञंचसंकर्तुंतस्थौराक्षससत्तमः ॥ तदागत्याशुकपयोभगवद्ज्ञानमाददुः ॥ २०॥

भा-टी- - ऐसी यज्ञ को कर्नेको रावणने एकांतमें बैठताभया- तब वानरोनें जलदीजायके रावणकों भगवानको ध्यानरूप ज्ञान देतेभए ॥२०॥

श्लो॰ तदेवयज्ञविघ्नंचकृतम्वानरसत्तमैः ॥ भगव

ब्रूज्ञानरूपंवैविघ्नंप्राप्यदशाननः॥ २१ ॥

भा-टी- - सोई ज्ञान देना वानरों करिके रावणकी यज्ञको नाश-कर्ना भया- शोकरूप यज्ञ रावणकी नाश होगई तब भगवान-को भजनरूप ज्ञान अपनी यज्ञको नाश रावण पायके ॥ २१ ॥

श्लो० किंचिद्रूज्ञानंचसंप्राप्यस्वकर्मस्मरणंकृतम्॥
रावणेनतदेवास्यविलापः प्रोच्यतेबुधैः॥ २२ ॥

भा-टी- - थोरा ज्ञानको प्राप्ति होके फिरि पीछे अपना जो बुराकर्म तिनका स्मरण किया- तौ पहिले तौ अज्ञानसें बुराकर्म अच्छा लागता रहा- अब थोरा ज्ञान प्राप्ति भया तौ वह बुराकर्म षोटा मालूमपड़ा तौ मन रूप रावण विलापकिया- यह विलाप शोकको भी-भया तथा परलोक वास्ते भी भया ॥ २२ ॥

श्लो० संकृत्वैवंविलापंचरामेनसंगरेहतः॥ सच्चि-
दानंदरूपस्यध्यानबाणेनतत्क्षणे॥ २३ ॥

भा-टी- - ऐसा विलाप करिके युद्ध करनेकों आया तब रामजीनें-परमेश्वरको ध्यानरूप बाण करिके रावणकों मारिडाले तब मनरूप रावण मरिगया ॥ २३ ॥

श्लो० एवंहतश्चरामेनसामात्यपुत्रपौत्रकः॥ ससैन्यः
सकुटुंबश्चसदासानुजसंयुतः॥ २४ ॥

भा-टी- - इस प्रकारसें मंत्री पुत्र पौत्र प्रपौत्र कुटुंब सेना दास-छोटाभाई सहित रावणकों रामजी मारिडाले- ॥ २४ ॥

श्लो० मंदोदर्यादिभिःस्त्रीभिस्त्यक्तंकर्मचपौर्विकम्
विलापश्चैवतासाम्भोकथितोमुनिसत्तम॥ २५ ॥

भा-टी- - हेमुनिजी मंदोदरी आदि रावणकी स्त्री है सो सबरा-क्षसी योनें पेस्तरको षोटाकर्म त्यागि देती भई सो राक्षसी योंः

कों रावणके मरेपीछे विलाप कर्नाभया ॥२५॥

श्लो- जनिष्यंतिपुनर्दुष्टादास्यंतिव्यसनंमहत्॥जीवानामेतदर्थेहिलंकाराज्यंविभीषणे॥२६॥

भा-टी- - रामजीने विचार कियाकि एदुष्ट लोग फिरिउत्पत्ति होवेगे उत्पत्तिहोके जीवोंकों दुःख देवैंगे- इसवास्ते लंकाको राज्यविभीषणकों ॥२६॥

श्लो॰ ददौपूर्वोक्तभावंचलंकाराज्यंरघूत्तमः॥ महानंदयुतोरामस्तदेव सैन्यजीवनम्॥२७॥

भा-टी- - पेस्तर दर्शन भयाजो लंकाकोराज सोरामजी विभीषणकों देतेभए- ओर बहुत भगवानकेरूपकों स्मरण करिके बडाआनंदकों प्राप्ति भए- सोई रामजीका सैन्याको जिआनाभयाहै॥२७॥

श्लो॰ चराचरस्यैव हतोरिपोतद्वारामेनसत्कर्म्मविनाशनेशठे॥ प्रापुस्सुखंसर्वचराचरात्मकाजीवाममनोरावणपातितेक्षितौ॥२८॥

भा-टी- - रामजीने चराचरको वैरी तथा सुंदर कर्मको नाश कर्नेवाला शठ ऐसाजो मनरूप रावण तिस्को रामजीनें मारि डाले- तब- सब चराचरजीव बडे सुखकों प्राप्ति होतेभए॥२९॥

इतिश्रीवेदान्तरामायणेयुद्धकांडेशिवसहायबुधविरचितसम्वर्तवरतंतुसंवादेरावणमरणरामविजयवर्णनेषष्ठोमोक्षोपानः॥६॥

---

श्लोक वरतन्तुरुवाच रामचंद्रेणनिहतस्सच्छिक्षासायकेनवै॥ कुवासनाम्परित्यज्यसंश्रितस्सुवासनाम्॥१॥

भा·टी· – वरतन्तु मुनि बोले सुंदर भगवानको कर्म मनरावण कों रामजी सिखाते भए उस सिखावन रूप बाण करिके रावण मारि जाता भया· रावणनें षोटे कर्मकी प्रीति कोंछोडिके सुंदर कर्म्मोंकी प्रीतिकों सेवन करनेलगा ॥१॥

श्लो॰ तदेवमरणंप्रोक्तंमनसोरावणस्यवै॥ अन्येषां चैवसर्वेषांराक्षसानामपीदृशम् ॥२॥

भा·टी· – सोई मनरावणको मरण भयाहै तथा औरजो पेस्तर वर्णन भए हैं गिनतीसें हीन षोटेकर्मरूप राक्षस वोभीसब बुरेकर्म कों छोडिके भगवानमें प्रीति कर्नेलगे· सोई सब राक्षसोंको मरण भयाहै॥ २॥

श्लो॰ मरणंशुद्धरूपंचबभूवमुनिसत्तम॥ मनसो रावणस्यैवदृष्ट्वामरणमद्भुतम्॥३॥

भा·टी· – तब बुरेकर्म रूपमलसें छूटिके शुद्ध रूप होते भए·सोई राक्षसोंको मरण भयाहै· मनरावणका मरण देखिके ॥३॥

श्लो॰ वेदशास्त्रपुराणोक्तास्सर्वेधर्म्मास्सनातनाः॥ स्वस्वकर्म्मणिनेसोरव्यंप्रापुः सुरवमनेकधा॥४॥

भा·टी· – वेदशास्त्र पुराणमें कथित जो सनातनधर्म हैं सो सब अपने२ कर्ममें अनेक प्रकारको सुरवपाते भए॥ ४॥

श्लो॰ तदेवदुंदुभेःशब्दंपुष्पवर्षणमेवच॥ सत्संग वृद्धिःसंजातासर्वयोनौचराचरे॥ सास्तुतीराम चंद्रस्यकृतादेवैर्मुनीश्वर॥५॥

भा·टी· – सोई दुंदुभीको वाजना तथा फूलोंकी वर्षा होती भई· चराचर योनिके जीवोमें सत्संगकी वृद्धि होती भई· सोई सब देवता आदिजीव रामजीकी स्तुति करतेभए॥ ५॥

श्लो· प्रीतिश्चराचराणांवैसत्संगेनिर्भयाभवत्॥
सर्वेषामेववैदेहपुत्रीरामसमागमः॥६॥

भा·टी· - सबजीवोंकी प्रीति मदसेंहीन सत्संगमें होती भई सो ईरामजीको तथा जानकीको लंकामें मिलाप होना भया·॥६॥

श्लो॰ धैर्योद्विचलनंरामस्सर्वेषाम्वैसुहुर्मुहुः॥ चराचराणाम्प्रददौदुःखितानाञ्चभूरिशः॥७॥

भा·टी· - हेमुनिजी अनेकजन्मसें मनरावण करिके दुःखीजोच· राचरजीव तिन सबजीवोंकों रामजीनें सुखी करिके॥७॥

श्लो· जन्मजन्मान्तराद्दिभ्रमनोरावणतापिनाम्॥
सुखान्वितानांस्वेनैवकृतानांरघुनन्दनः॥८॥

भा·टी· -धीरजमेंस्थिरकरिकै वारंवार वास देतेभएकिहे जीव धीरजहृदयमें धरिकै ईश्वरको भजनकरो दोनो श्लोकको अर्थमिलाहै सोयुग्महै॥८॥

श्लो॰ तदेवकपिवीराणामृक्षाणांचतथैवच॥ सलक्ष्मणस्यजानक्याः पुष्पकारोहणंस्मृतम्॥९॥

भा·टी· - सोई जीवोंकोधीरजमें स्थिरता देना वानरोंकों तथा ऋक्षोंकों लक्ष्मण जानकीकों पुष्पक विमानमें बैठनाभयाहै॥९॥

श्लो॰. मृतावशेषिनांचैवराक्षसानांमतिःशुभा॥
सर्वेषांराक्षसीनांचतद्रणस्थलदर्शनम्॥१०॥

भा·टी· - युद्धमें मरेनहीजोराक्षस राक्षसी तिनकीभी सुंदर कर्ममेंबुद्धि लगजातीभई सोई रामजीने पुष्पक विमानमें जानकीकों ऊपरसें युद्धकी भूमि देखाते भए॥१०॥

श्लो॰ सत्संगवर्द्धनन्दृष्ट्वादुष्टसंगक्षयन्तथा॥ पुनःस्वपुर्यागमनमेतद्रामस्यकथ्यते॥११॥

भा॰टी॰ - रामजीनें राक्षसोंका नाश भए पीछे सत्संगकी वृद्धि देखे तथा दुष्टोंकी क्षय देखते भए ऐसा देखना रामजीको सोई लंकासेफि रि सुमति रूप अयोध्यापुरीकों चलना भया॰ ॥११॥

श्लो॰ सर्वेषांविमलञ्चित्तंजीवानांसततंहृदि॥सत्क र्मवर्द्धनंप्रेमतद्वाममगमनंपुनः॥१२॥

भा॰टी॰ - नित्य सबजीवोंको चित्त हृदयमें मलहीन रहताहे तथा सुंदरकर्म्ममें सब जीवोंकेप्रेमकी वृद्धि भई एकमें रामजीको लंका॰ सें भरद्वाज मुनि के आश्रमपर आना भया॰॥१२॥

श्लो॰ स्थितिश्चरामचंद्रस्यभरद्वाजाश्रमेभवत्॥स- त्कर्मशत्रुहीनञ्चबभूवमुनिसत्तम॥१३॥

भा॰टी॰ - हेमुनिजी सुंदर कर्म जोहै सो वैरीसें हीन होगये सोई भरद्वाजके आश्रमपर रामजीको टिकना भयाहै ॥१३॥

श्लो॰ तदेववायुपुत्रस्यप्रेषणंभरतंप्रति॥राक्षसो॰ द्वेगरहितान्द्रष्ट्वाजनकनंदिनीम्॥१४॥

भा॰टी॰ - सो रामजीको भरद्वाजके आश्रम वास करनेको सुख॰ सो भरतकेपास रामजी हनुमानकों भेजते भए तथा रामजीने पर॰ मेश्वरकी भक्तिरूप जानकीकों राक्षसों के दुःखसें रहित देखिके

श्लो॰ इतिप्रीतिर्विवेकस्यद्वयोरुक्तिस्मसाभवत्॥ निर्मोहवायुसुतयोर्महदानंदमेवच॥१५॥

भा॰टी॰ - रामजीकी प्रीति परमेश्वरमें बहुत होतीहै सोई हनुमा नकी तथा भरतजीकी वार्ता होती भई निर्मोहरूप भरतके आश्रम कों देखिके हनुमानकों बहुत आनंद भया॰ तथा हनुमानसें राम॰ जीको कुशल सुनिकै भरतकों बहुत आनंद भया ॥१५॥

श्लो॰ तत्पुष्पकप्रयाणंचनंदिग्रामेमुनीश्वर॥दुःकर्म

णांविनाशश्चमोक्षस्यवर्द्धनंतथा ॥ १६ ॥

भा॰टी॰ - हे मुनिजी एई दोनोको आनंदजोहै सोई भरद्वाजके आ श्रमसें राम कोदल सहित पुष्पक विमान नंदिग्राममें आताभया॰ दु॰ ष्टकर्म्मो कोनाश तथा सत्संग को वर्द्धन होना ॥

श्लो॰ एषोहर्षः प्रजानांवै पूर्वोक्तपुरवासिनां। राक्ष सानांविनाशाय चक्रेरामोऽतिबुद्धिमान् ॥ प्रतिज्ञासा जटाबद्धारामेनजान्हवीतटे ॥ १७ ॥

भा॰टी - पेरुलर वर्णन भएजो पुरवासी तिनकों एई हर्ष भयाहै रा क्षसोंका नाश करनेवास्ते रामजीनें पेस्तर प्रतिज्ञाकियाहै सोई॰ प्रतिज्ञा रूप जटा गंगाके तटपर रामजी भ्राता सहित बांधेरहे है॰

श्लो॰ शृंगवेरपुरे ब्रह्मन् लक्ष्मणेनापि तत्तथा ॥ ग्रंथ॰ वृद्धिभयाच्चैवन्नात्रालिखितंमया ॥ १८ ॥

भा॰टी॰ - शृंगवेर पुरमें एक कथा वारंवार लिखिजावैगा तौ ग्रंथबडा होजावेगा इस भयसें मैनेजटा बांधनेकी कथा शृंगवेर पुरमें नही॰ लिखा॰ विचाराकि युद्ध कांडके अंतमें तो जटाउतारनेकी कथा आवे गा॰ इसवास्ते नही लिखा ॥ १८ ॥

श्लो॰ रामलक्ष्मणयोर्ब्रह्मन् जटायाबंधनंशुभम् ॥ रामस्यदुःखवृद्धिस्साजटाचैवंसहोदरैः ॥ १९ ॥

भा॰टी॰ - हे मुनिजी राम लक्ष्मणको जटाबंधन राक्षसोंकी नाश कर नेकी सुंदर पणहै तथा रामजीके दुःखकी वृद्धिसो भरत की शत्रुघनकी तथा भाईके पक्ष मानिकै लक्ष्मणकेभी जटाको बांधनाहै॰

श्लो॰ त्रिभिर्बद्धाचसेदानींपूर्णानष्टावभूवच ॥ प्रति॰ ज्ञारामचंद्रस्यदुःखवृद्धिश्चपौर्विका ॥ २० ॥

भा॰टी॰ - रावणके मरेपीछे रामजीकी प्रतिज्ञा पूर्ण होगई तथादुः

रवकी वृद्धिभी नष्ट होगई ॥२०॥

श्लो॰ तज्जनदाकृन्तनंतत्रभ्रातृणामभवन्मुने॥मोक्षे
च्छासर्वजीवानांवर्ततेह्यदयेनिशम्।तदेवरामचं
द्रायदत्तंराज्यंमुनीश्वरैः॥२१॥

भा·टी· - हेमुनिजी सोई रामलक्ष्मण भरत शत्रुघ्नको जराकोउतार
नाभया· जराउतारिके राजपुत्रोंको रूपधारण कर्त्ते भए· रातिदिन
सबजीवोंके मोक्ष होनेकी इच्छा होनें लगी· सोई सुमतिरूप अ-
योध्याको राज मुनिलोग रामजीकों देतेभए॥२१॥

श्लो· सत्कर्मचिन्तनसमाधिवनौषधेश्चरामस्यचक्रुर
भिमोदयुतामुनीशाः॥राज्याभिषेकमवनेः करुणा
भिनायाःसंरक्षणेसुमतिभूपशिरोमणिंच॥२२॥

भा·टी· - सुंदर कर्मोंको चिंतवन तथा परमेश्वरको ध्यान आदि और
सुंदरकर्म सोई वनकी दवाहै तिस दवाकरिके मुनिजनोनें रामजीकों
राज देनेवाले दयारूप भूमिके रक्षा करने वास्ते सुमति रूप अयो-
ध्यापुरीको राजा करनेवास्ते रामजीकों औषधीसें स्नान करवायके
राजगादीपर बैठायके राजदेतेभए·॥२२॥

श्लो· रामेभूतेसुमतिनृपतौसच्चिदानंदप्रीतिर्जीवे
जीवेसमभवदतिप्रेमसंवृद्धिकर्त्री॥सर्वस्वस्थंसु
खमयमहोसाधवस्तेबभूवुर्ज्ञानेमग्नासुचरित
सुधापूर्णचित्तासुचित्ताः॥२३॥

भा·टी· - सुमतिरूप अयोध्याकोराजा रामजी भए·तब परमेश्वरकी
प्रीति जीव जीवमें होतीभई तथा भगवानके प्रेमकी वृद्धिकरनेवा·
ली प्रीति होतीभई· तीन लोकचवदह भुवन भगवानमें चित्त लगाते
भए· साधुजन ज्ञानमे मग्नहोगए भगवानकोचरित सोई अमृत भ·

पाहै तिस्कों पीके भगवान के भजनमें आनंद होरहेहैं ॥२३॥

इतिश्री वेदान्तरामायणेयुद्ध कांडे शिवसहायबुधविरचिते संवर्तवरतन्तुसंवादे विवेकरामराज्याभिषेके सप्तमोमोक्षोपानः॥ ७॥ इतियुद्धकाण्डम्

## अथोत्तर कांड प्रारंभः

श्लोक वरतन्तुरुवाच स्वभावनिर्म्मलत्वंचसेवराज्यासनरस्मृतः॥ पुष्टिस्तस्यसमाख्यातास्थितिर्राज्यासनेमुने ॥१॥

भा-टी- – वरतंतु मुनि बोले हे मुनिजी स्कंदरकर्म्मोंमें रामजी के- स्वभावकी वृत्ति निर्म्मलहै सोई राजोंकों बैठनेवास्ते तषतहै- तिस निर्म्मल वृत्तिकी पुष्टई जैसा कभीनिर्म्मलवृत्तिभ्रष्ट नहीहोवै सोतखतपर बैठनाहै ॥१॥

श्लो- राज्यासनस्थंश्रीरामंपूर्वोक्तामुनयस्तथा॥आजग्मुर्द्रष्टुकामास्तम्पुरस्कृत्यमहामुनिम्॥२॥

भा-टी- -पेस्तर वर्णन भएजो मुनिजन सोसव राज्यासनपर बैठेजो रामजी तिनको दर्शन करने वास्ते आतेभए॥ २॥

श्लो- जीवस्वभावदीनंवैकुंभजंमुनिसत्तमाः॥ईश्वरेप्रेमनिर्विघ्नंपूजांचक्रेरघूत्तमः॥३॥

भा-टी- - जीवकोस्वभावगरीवहै सोई अगस्त्य मुनिहै- भगवान- मेंजीवोंको प्रेम रावणके मरेपीछे निर्विघ्नसें होता भया- सोई मुनियोंको पूजन रामजी कर्तेभए- ॥३॥

श्लो- पूजितामुनयः प्रोचुर्वचनं ब्रह्मकीर्तनम्॥ तेप्रापिताचयंधर्म्म अविविघ्नंरघुनन्दन ॥४॥

भा. टी. - हे रामजी अब हम सर्व विघ्नसें हीन ऐसा भगवान को- भजन रूप धर्मको प्राप्ति करते भए. ऐसी ब्रह्मकी कीर्तिरूप वचन राम जीसें पूजित जो मुनि हैं सो सब रामजीसें बोलते भए॥ ४॥

श्लो. मुनीनांवचनंश्रुत्वाकीर्तनम्परमात्मनः॥प्रोवा चकुंभजंरामोजीवानांसद्धिशिक्षणम्॥ ५॥

भा. टी. - भगवानकी कीर्तन रूप वचन मुनियोंकी रामजी सुनि के मनरावणके राजमें भ्रष्ट हुवे जो जीव तिन जीवोंकों भगवान को भजन सिखावन सोई वचन रामजी अगस्त्य मुनिसें बोलते भए ५

श्लो. विदेहजायाश्चोत्पत्तिंवालिसुग्रीवयोरपि॥वद त्वंश्रोतुमिच्छामिहृदयेचिरकालतः॥ ६॥

भा. टी. - हे मुनिजी जानकीकी उत्पत्ति तथा वालि सुग्रीवकी उत्प त्ति सुनवेकी इच्छा मेरेकों बहुत दिनोसें लगरही है सो आप कृ पाकरके कहो॥ ६॥

श्लो. रामचन्द्रवचःश्रुत्वाकुंभजोवाक्यमब्रवीत्॥ सन्तोषवर्द्धनंजीवेनिर्मोहंकुंभजेरितम्॥ ७॥

भा. टी. - जीवोंकी हृदयमें संतोषकी वृद्धि करना सोई रामकी- वचन है तिस वचनकों सुनिके जीवोंकी हृदयमें संसारसें मोह छुडाना सोई वचन अगस्त्य मुनि रामजीसें बोलते भए.॥७॥

श्लो. एकदामनरूपश्चरावणोरघुनंदन॥ चक्रेविचा रन्दुष्टात्मामुनयोदंडवर्जिताः॥ ८॥

भा. टी. - अगस्त्यमुनि बोले हे रघुनंदन एकदिन मनरूप रावण नै विचार कियाकि, सब जीवोंको मैंने दंड दियापण मुनिजन मेरे दंडसें बचे है॥ ८॥

श्लो. चिंतकाःपरमेशस्यसद्धर्म्मामुनयोमया॥ त्रा

सितास्तपसाहीना भक्षितास्श्चकृतामया ॥ ९ ॥

भा·टी· – रावणनें विचार कियाकि भगवानके चिंतवन कर्नेवाले सुंदर धर्मरूप मुनियोंकों मैंनेत्रास दिया तथाईश्वरके भजनरूप तपस्यासें हीन करिदिया· तथा ईश्वरके चिंतवन कर्नेसें बंद करिदिया· सोई वन्दकर्ना मुनियोंकों हमसें भक्षण कर्ना भया· ऐसी दुर्गति मुनिजनकी हमनें किया ॥ ९ ॥

श्लो॰ नद्रव्यदंडितास्तेचैतानद्यदंडयाम्यहम् ॥ एवंविचार्यदैत्येशउकिंचिद्ब्रह्मणिभावनम् ॥ १० ॥

भा·टी· – परंतु मुनि लोगोंसें कोईचीज नहीं दंडलियासें अब कोईचीज मंगवावेंगे· जबरदस्तीसें· किसीजन्मकी पुण्यसें रावणके चित्तमें उसवखत भगवानमें थोरा प्रेम भी उत्पतिभया सोईप्रेम मुनिलोगोंसेंकोईचीज मगाने कोरावणकोविचार भयाहे ॥ १० ॥

श्लो॰ राक्षसान्प्रेरयामासमुनीनांदुःखहेतवे ॥ तेगत्वाब्राह्मणान्नूचुःकिंचित्प्रेमबलंप्रभो ॥ तदेवप्रेपणन्तेषांगमनंतद्विवर्द्धनम् ॥ ११ ॥

भा·टी· – मुनिजनोंकों दुःखदेनेवास्ते राक्षसोंकों रावणनें भेजता भया· राक्षस जायके मुनियोंसें बोलते भए भगवानके चरणमें· थोरा रावणको प्रेम भया· उसी प्रेमकोबल राक्षसोंको भेजना भयाहे· प्रेमकेबलकी वृद्धिजोहे सोई राक्षसोंकों मुनि लोगोंकेपास जाना भयाहे ॥ ११ ॥

श्लो॰ बलसौख्यमभूत्तत्रराक्षसानांवचस्तदा ॥ युष्माकंचोत्तमंद्रव्यंदत्तराक्षससत्तमे ॥ १२ ॥

भा·टी· – प्रेमके बलको सुख सोई राक्षसोंकी वचन हुईहे मुनियोंसेंराक्षस बोलेंकि तुमारे सबके जोउत्तमचीजहे सोचीजराव

एनें मंगायाहै जलदीदेवो ॥१२॥

श्लो० श्रुत्वातेषांवचोविप्राज्ज्ञानाप्तंचैवरावणे। नदे
वचनंप्रोक्तन्तद्धर्षश्रवणन्तथा॥१३॥

भा-टी० - रावणको कछु ज्ञानकी प्राप्ति भई सोई राक्षसोंकी वचन है तथारावणके थोरा ज्ञान प्राप्ति होनेमें हर्ष मानना सोई राक्षसों-का वचनको मुनियोंसें सुनना भया ऐसी राक्षसोंकी वाक्यको मु-निलोगसुनिके ॥१३॥

श्लो० विचार्यमुनयस्तेतुकिंदास्यामोऽयरावणे॥रा
वणाद्दुःखसनंप्राप्तन्तन्मुनीनांविचारणम्॥१४॥

भा-टी० - मुनिजन आपसमें विचार करतैभए कि रावणको अभीक्या वस्तु देवें हमारे लोगोकेतो कुछ वस्तु हैनही० मनरावणाने मुनिजनों कोंदुःखदेता भया० सोई मुनिजनोंको विचार भयाहै॥१४॥

श्लो० स्वस्वदेहाद्भगवतोभजनात्प्रीतिजंरसम्॥सर्वे
निःकाश्यमुनयस्त देवरुधिरंस्मृतम्॥१५॥

भा-टी० - ईश्वरको भजन सोई मुनिजनोंकी देहहै ऐसी भजनरूप अपनी अपनोदेह और भगवानकी प्रीतिसें उत्पन्नजो हर्ष जैसेगद्गद शरीरमें होजाना० आदिलेके प्रेमसमूह सोरक्त भयाहै ऐसेरक्त कोंनिकाशिके॥१५॥

श्लो० सर्वेषांप्राणिनांविप्रशरीरंवर्द्धनाकरम्॥रुधि
रंचैतदर्थंहि दृष्टान्तोत्रसमीरितः॥१६॥

भा-टी० - सब प्राणियोंकी शरीरकी वृद्धि करनेमें रक्त खानिहै० रक्त सूषिगए पीछे शरीर नष्ट होजाताहै० इसवास्ते सुंदरकर्मोंको रक्त० को दृष्टांत वर्णन किया० गयाहै॥१६॥

श्लो० भगवद्भक्तिरूपस्यशरीरस्यविवर्द्धनम्॥भव

त्यनेनरक्तेनकुंभन्तन्निश्चयंमुने।। आच्छाद्याज्ञा
नवस्त्रेणदूतेभ्यः प्रददुर्घटम्।।१७।।

भा.टी. - भगवानके भजन रूप जो साधुजनोंकी देहहै तिस्की वृ-
द्धि इसी गद्गद आदिप्रेम रक्तोंसें होतीहै ऐसीनिश्चयसों घडाभया
है तिस घडामें पेस्तर वर्णनभयाजो रक्त सो भरिके राक्षसोंकों अ-
ज्ञानसो वस्त्रहै तिसवस्त्र करिके घडाकों ढापिके रावणके दूतोंको
मुनिजन देते भए.।।१७।।

श्लो० दूतैः पृष्टाः किमस्मिन्भोरक्तमस्माकमद्भुतम्।।
किंभविष्यत्यनेनैवरावणस्यकुलक्षयः।।१८।।

भा.टी. - दूत पूछते भएकि हे मुनिजनों इस घडेमें क्याचीजहै त-
ब मुनिबोले हमारासबकाबडा आश्चर्यरक्त है दूतबोले इसरक्तसें
क्या होवेगा. तब मुनिबोले रावणके कुलको नाश होगा.।।१८।।

श्लो० महदज्ञानहर्षंचरक्षसाम्प्रश्नमुच्यते।। भगव-
द्भक्तिजंज्ञानंमुनीनांवचनंचतत्।।रक्तांकुरायान्द्रो
हंचरावणस्यकुलान्तकम्।।१९।।

भा.टी. - राक्षसोंकेह्रदयमें बडा अज्ञान तथा उसी अज्ञानमें हर्ष
सोई राक्षसोंको मुनिजनोंसें पूंछना भयाहै. तथा मुनियोनें विचार
कियाहैकि, एही रक्तसें भगवानकी भक्ति उत्पत्ति होवेगा. ऐसाविः
चार सो मुनिजनोंको राक्षसोंसें बोलनाभया. तथा रक्तसें उत्पत्ति.
भईजो परमेश्वरकी भक्ति तिस्में द्रोह कर्ना सो रावणके कुलकोना
शभयाहै।।१९।।

श्लो० तद्गृहीत्वागतास्तेतुप्रोचुःसर्वंचरावणे।।त्रास
निश्चयम्लानादिग्रहणादिनिगद्यते।।२०।।

भा.टी. - दूतोंनें घडाकों लेके रावणके सामनें आपके सबमुनियों

को चरित्र रावणसें कहते भए· मुनिजनोंकी वाक्यकों सुनिके दूत डरि गए· सोई घडाको ग्रहण कर्नो भयाहै· दूतोनें निश्चयसें जानि लेते भ· एकि रावणकी नाश होगा· ऐसा जानना रावणके पास दूतोंको जाना भया है तथा दूतलोग अपनी नाश जानिके उदास होगए सोई रावणसें दूनों को मुनिजनोंके चरित्रको कहना भयाहै ॥ २० ॥

श्लो॰ श्रुत्वाजनकजीवस्यराज्येदीनस्वभावने। दया बुद्धिक्षितौकुंभंखानयित्वाचरावणः ॥ २१ ॥

भा॰टी॰ – दूतोंकी वचनकों रावण सुनिके जीवरूप जनक राजा तिसजीच राजाको गरीब स्वभाव सोई जीव जनककी राजहै तिस राजमें दयारूप भूमिकों खोदायके ॥ २१ ॥

श्लो॰ दयायांस्थापयित्वातंभूमावूर्ध्वंमृदाधिया। जीवस्यपूरयित्वाचस्वनाशेनिर्भयोभवत् ॥ २२ ॥

भा॰टी॰ – तिस घडाकों दयारूप भूमिमें धरायके ऊपरसें जीवकी बुद्धि सोई मृत्तिका करिकें पूर्ण करायकें अपने कुलके नाशकी भयछोडिकें लंकामें रावण आनंद कर्ने लगे· यह श्लोकको अर्थ यह हैकि घडाकों रावण जमीनमें गडाय लेताभया ॥ २२ ॥

श्लो॰ जीवस्यजन्ममरणंसुखदुःखाद्यनेकधा ॥ एतद्रूपेव्यतीतेचकालेमहतिचागते ॥ २३ ॥

भा॰टी॰ – जन्म मरण दुःख सुख आदिलेकें अनेक कर्मजीवरूप जनकराजाके होतेहैं सोई पल· घडी प्रहर दिन राति पक्ष मास वर्ष युग· प्रलय काल भए·है· ऐसे काल बडे बडे आए तथा गए घडा गाडे पीछे बहुत दिन बीतगए ॥ २३ ॥

श्लो॰ पंचेन्द्रियकृतंकर्मतथाहिगुणसंभवम्। पंचसुपंचरागाद्याश्चैत द्वादशवार्षिकम् ॥ २४ ॥

भा.टी. - पांच ज्ञानइंद्रियों करिके किये हुए जो पांच षोटाकर्म तथा रजोगुण तमोगुण करिके किये हुए दो षोटेकर्म तथा पांच इंद्रियोंके पांचकर्म में स्नेह आदि कर्ना जैसा वाक्य मानयुक्त बोलना. हातसें षोटा कर्म्म करना. इंद्रीसें बुराकर्म कर्ना. पगसें बुरी रस्ताको जाना सुंदरजगहपर मलकरिदेना. ए राग आदि पांचकर्म तथा पांचकर्म इन्द्रियोंको जिस्में राग आदि कर्म कर्ना तथा दोऊकर्म गुणको एही बारहकर्म बारह १२ वर्षभएहे ॥ २४ ॥

श्लो. एषु प्रीतिरनावृष्टिरभूज्जनकभूपतेः ॥ राज्ये पूर्वोक्तभावेतन्दृष्ट्वाऽभूत्सोऽपिव्याकुलः ॥ २५ ॥

भा.टी. - इनषोटे कर्म्मोमें जीवकी प्रीति सोई पेस्तर वर्णन भयाजो जीव रूप राजा जनकको राज तिस्में बारह वर्षवर्षानही होतीभई ऐसी वर्षा हीन अपने राजको जीवरूप राजा जनक देखिकेदुःखीहोगया २५

श्लो. पूर्वोक्तेर्ब्राह्मणैरुक्तश्चिकीर्षुर्ब्रह्मयाजनम् ॥ तद्धर्षलांगलेनैवचकर्षकरुणाम्महीम् ॥ २६ ॥

भा.टी. - पेस्तर वर्णन भएजो ब्राह्मण तिन्होकी सुंदर कर्मरूप वच-नमानिके षोटेकर्म्मोमें जीवकी प्रीति रूप अनावृष्टि नाश होनेवास्ते भगवानके विनय रूप यज्ञ कर्नेवास्ते उसीयज्ञमें हर्ष रूप सुवर्ण हे तिस्को हल बनायके दयारूप भूमिको जीवजनक जोतते भए. २६

श्लो. जीवस्ययजनेप्रेमलांगलन्तन्निगद्यते ॥ फालं चतत्सुखंज्ञेयंतद्याद्दीनभावनात् ॥ २७ ॥

भा.टी. - यज्ञमें जीव जनकको प्रेमबढ्नाहे सोई हलभयाहे. उसी ह-लमें सुखमानना सोई फाल भयाहे. जीवको स्वभाव गरीबहे सोई-फालकी अग्रभाग भयाहे. तिसअग्रभागसें ॥ २७ ॥

श्लो. पूर्वोक्तं निसृतंकुंभंतस्माज्जाताचबालिका ॥ ब्र

ह्मभक्तिः समाख्याता पालिता जनकेन सा ॥ अतः सा जानकी प्रोक्ता तवेयं प्राणवल्लभा ॥२८॥

भा०टी० – पेस्तर वर्णन भयाजो घडा सो निकसना भया. तिस घडेमें में एक लडकी उत्पत्ति भई उस्को ब्रह्मकी भक्ति सज्जन कहतेहैं जीवरूप जनक राजानें उस लडकी का पालना किए. इसवास्ते ब्रह्मकी भक्तिको जानकी नाम हुआ. सो जानकी यह आपकी प्राण. प्यारी है ॥२८॥

श्लो० एतां कथां रघुपतिर्मुनिवर्यगीतां संश्रुत्य हर्षमगमत्स सभस्समित्रः। सत्संगरागजननं च तदेव हर्षपप्रच्छ वालिशुभकण्ठजनेश्चरित्रम् ॥२९॥

भा०टी० – मुनिसें वर्णन भई सुंदर कथा कों विवेकरूप रामजी सभा मित्र सहित सुनिके सबजीवोंको सत्संगमें स्नेह बहुत उत्पत्ति हो. ताभया. सोई हर्ष भया तिस हर्ष कों प्राप्ति होते भए तथा रामजीनें वालि सुग्रीवके जन्मको चरित्र पूंछते भए ॥२९॥

इतिश्रीवेदान्तरामायणे उत्तरकांडे शिवसहायबुधविरचिते संवर्तवरतन्तुसंवादे जानकीसंभववर्णने प्रथमो मोक्षोपानः ॥१॥

---

श्लो० वरतन्तुरुवाच वालिसुग्रीवयोर्जन्मश्रोतुकामं रघूत्तमम् ॥ तयोस्स्नेहं च श्रवणं मुनिर्वाक्यमथाब्रवीत् ॥ सत्कर्म्माणि विवेकस्य संगो मुनिवचस्स्मृतः ॥१॥

भा०टी० – वरतन्तु मुनि बोले गुरुको वियोग रूप वालि तथा गुरुको उपदेशरूप सुग्रीव इन दोनोके जन्मकी कथाको सुनवेकी इच्छा

कियाहै जो विवेक रूप रामजी तिस्सें मुनि बोलते भए वालिसुग्रीव में रामजीको स्नेह है सोई रामजीको श्रवण कर्नाभया पेस्तर वालि सें रामजीका द्रोहथा सो महात्माहोगया वालिमरे पीछे तबराम जीको वालिसें स्नेह भया सुंदरकर्म्मों में रामजी को प्रेमहै सोई मु निको वचन भया ॥१॥

श्लो० निर्दयायाश्चमायायास्स्वभावोरघुनंदन॥ सैव ऋक्षराट्समाख्यातोदुरानंदकृतश्शठः॥२॥

भा०टी० – मायाको दयासे हीन स्वभाव सोई पेस्तर वर्णन हुए वा नर रिक्षोंको उत्पत्तिकर्नेवाला राजाहै राजाको राजानामहै तथागु रुको दादाकोभी राजा नामहै ऐसाजो वानररिक्षोंका दादा तिस्कों षोटे काममें आनंदमानना ऐसाजो ब्रह्मासो रवताभया ॥२॥

श्लो० बभ्रामसोदयाभूमौभ्रमणंजीवनापनम्॥ जीवानांतापनोपायेन्वैकस्मिन्दिवसेचसः॥३॥

भा०टी० –हेरामजी दयारूप भूमिमें रिक्षराज भ्रमण कर्ताभयाजी वोंको तापदेना सोई भ्रमण भया जीवोंको संताप देनेकी उपाय सोई दिन भयाहै उसीएकदिन॥३॥

श्लो० स्वेच्छाचाराशुभेकूपेजडभावजलाप्लुते॥जीवसंतापनेच्छांचददर्शाक्षमहाबली॥४॥

भा०टी० –बडाबलवान मायाको निर्दयी स्वभावहै सो अपनीइच्छा में आवै सोई कर्म करिलेना वेद पुराण और सज्जनकी वाक्य कों नहीमानना ऐसाजो अशुभकर्म सोई कुआ भया उसीरिक्ष को मूर्ख स्वभाव सोजलहै तिस जलकरिकै कूप भराहै ऐसाकू आमें अपनी छायाकोंरिक्ष देखताभया॥५॥

श्लो० छायांस्वस्यप्रकुर्वन्तीमृक्षस्यसदृशींक्रियाम्

कुकर्म्मांगारनेत्राभ्यांदृष्ट्वाक्रोधसमाकुलः ॥ ५ ॥

भा·टी· - कैसी छायाहै रिक्षके चित्तमें रातिदिन सबजीवोंको संताप देनेकी इच्छा वनी रहतीहै तथा जैसा कर्म कुआके ऊपर सेरिक्षकर्ताहै तैसे कर्म जलमें छाया करिरहीहै ऐसी छायाको खोटाकर्मोंको संग सोई रिक्षकी आंखिहै तिस आंखि करिकै देखिकै अज्ञान रूप क्रोधसें व्याकुल होगया· यह दोस्लोकको अर्थमिलाहै इसवास्तेयुग्म है ॥ ५ ॥

श्लो० महामानाभिसंयुक्तोमादृशोऽयंचकश्शठः ॥ एवंपपात कूपेसोमानान्धम्पतनंप्रभो ॥ ६ ॥

भा·टी· - हेप्रभो रामजी रिक्षराजनें बडाअभिमान करिकै विचार कियाकि मेरेशरीरके बलवान संसारमें दूसरा कोईनहींहै· यहमेरेसरीरके कौनहै ऐसाविचारि उसीकुआमें रिक्ष पडिगया· अभिमानसें अंधा होरहाहै रिक्षराज सोई उस्का कुआमें पडना भयाहै ॥ ६ ॥

श्लो० नापश्यत्तत्रतंचापिव्याकुलत्वमदर्शनम् ॥ पश्यन्स्त्रियंस्वमात्मानंमायाप्रीतिस्वरूपिणीम् ॥ कूपान्निर्गत्यसस्तूर्णंबभ्रामपूर्ववद्भुवि ॥ ७ ॥

भा·टी· - कुआमें ठसअपने शत्रुको नहीं देखा· तबरिक्षराज व्याकुलहोगया· सोई नहीं देखनाभया· तथा आपनी शरीरको मायामेंप्रीतिरूप सोई स्त्री भयाहै तिस्कूं देखिके जलदी कुआसें निकसिकेपेस्तर सरीरके दयारूप भूमिमें स्त्री होके भ्रमण कर्ताभया· ॥ ७ ॥

श्लो० भ्रमणान्तस्यक्रूरत्वमविचारोसतांसदा ॥ जीवत्रासेसतांचैव कूपात्सस्तद्विनिर्गमः ॥ ८ ॥

भा·टी· - रिक्षको स्वभाव क्रूरहैसोई रिक्षको भ्रमण कर्ना भया· तथा· मायाकोनिर्दईस्वभावरूप जोरिक्षराजहै तिन्कों ऐसाविचारनहींहै

कियहजीव षोटाहै इसको त्रास देवे तथा यहजीव साधुहै इस्को त्रास नहीं देना चाहिये ऐसा विचार नहीहै सोई कुम्भासें रिक्षका निकसना भयाहै ॥ ८ ॥

श्लो॰ नानाकुकर्माचरणास्तेतत्के शाश्च नीलिनः ॥
अविवेकशिरस्थाश्चजडभाव जलाद्रिणः ॥ ९ ॥

भा॰टी॰ - षोटेकर्मोको आचरण को रूप कालाहै रिक्षराज अनेकप्रकारको षोटाकर्मोके आचरणको करतेथे पुरुष रहे तब सोई आचरण नील सरीके कालाके शरिक्षके होते भए॰ स्त्रीरूपमें रिक्षकीहृदयमेंविवेक नहीहैं सोई अविवेक रिक्षको शिर भया॰ उसीशिर॰में केशरिके हैं॰ रिक्षको जडस्वभाव योजल है तिसजलकरिके केश आलाहोरहेहैं ॥ ९ ॥

श्लो॰ केशा दरोमंजनश्चवालयाचतयाकृतः ॥ मंज
नेपणबुद्धिश्चसःकार्योजानकीपते ॥ १० ॥

अर्थ॰ - रिक्षराज स्त्री होगया सोस्त्री आपने केशोंको आदरबहुत कर्तीहै सो वालेंको धोनाभया॰ आदररूप वालके धोनेमें प्रतिज्ञा सोई केशको धोना कर्नीहै इसप्रकारसें केशधोयकें ॥ १० ॥

श्लो॰ शोषयन्तीचतान्बाला केशान्सज्जन दुःखदान् ॥
सर्वेषांप्राणिनांदुःखंकेशशोषणमुच्यते ॥ ११ ॥

भा॰टी॰ - साधुजनोंको दुःख देनेवाले जो षोटेकर्म आचरणके श तिन्होकोंधोएपीछेसोस्त्रीसुखाय रहीहै सबजीवोंकोंमायाके निर्दयपणसें दुःखहोना॰सोई केशको सूखवानाभयाहै ॥ ११ ॥

श्लो॰ कुधर्मस्सुरनाथश्चतान्दृष्ट्वा काम मोहितः ॥
एक त्वंतस्यतस्याश्चकामिनी दर्शनंचतत् ॥ १२ ॥

भा॰टी॰ - षोटाधर्म इंद्र पेस्तर बर्णन भयाहै सोरिक्षराज स्त्रीहो

गया तिस्कों देखिकें कामसें मोहित होगया· इंद्रकों तथा इसस्त्रीको एक लक्षण हे जैसाकिसी जीवको तप आदि सुंदरकर्म करने इंद्र देखैगातो जानैगाकि मेरा राज लेनेवास्ते यह तप करिरहाहै उस्कों अनेक यत्नसें भ्रष्टकरैगा इसी वास्ते इंद्रको षोटाधर्म कहताहै तैसेई उसस्त्रीको लक्षणहै सोई इन्द्रसें स्त्रीको देखनाभयाहै॥१२॥

श्लो॰ तस्यादुर्भावनंकामस्तेनग्रस्तश्शचीपतिः॥
यावदायातिरंतुताम्प्रीतिरागंचमैथुनम्॥१३॥

भा·टी· – तिस स्त्रीको दुष्टकर्म्ममें स्नेहहै सोई कामदेव भयाहै· तिसकामदेवकरिकें इन्द्र मोहित होके जबतक उसस्त्रीके संग रमणकर्नेको आनेलगा· स्त्रीमें इन्द्रकी प्रीतिको मोहवहुतहै सोईमैथुन भयाहै॥१३॥

श्लो॰ तावत्सपाततद्वीर्यस्कुकार्येर्षाप्रवंचनम्॥ तत्केशेपूर्वकथितेतस्माद्वालिंप्रजज्ञिवान्॥१४॥

भा·टी· – तबतक इन्द्रकोवीर्य उसस्त्रीके पेस्तर वर्णन भएकेशोंमें पडिगया· उसवीर्य तथा केशकेसंयोगसें वालि होताभया· सुंदर कर्मोमें इंद्रकी ईर्षा चनीरही है उसी ईर्षामें कपटसोई इंद्रको वीर्य होताभयाहै॥१४॥

श्लो॰ मायानिर्दयभावरूपवनिताकेशेषुजातोवली
दोःकर्म्मयान्विरणेषुवीर्यपतनादिंद्रस्यकाधर्मिणः॥
सत्कार्येर्ष्यप्रवंचनात्कपिपनिर्वालिर्वियोगोबलीजीवा
नांभवतारणस्यचगुरोर्योवैत्वयाघातितः॥१५॥

भा·टी· – मायाको दयासें हीन जो स्वभाव सोई स्त्री भईहै तिस्के षोटाकर्मको आचरणरूप केशमें षोटाकर्मरूप इन्द्रको वीर्यपडनेसें वालि होताभया· कैसावीर्यहै· सुंदर कर्ममें ईर्षा करिके कपट

रूप सोई वीर्यहै· कैसो वालिहै जीवोंकों संसारसें तारण कर्नेवाले जो गुरु तिस्का वियोगहै ॥ १५ ॥

श्लो॰ सतांचैवासतांवापिसनतंदुःखदायच ॥ तस्या विचारोजीवानांसद्वितीयोदिनस्मृतः ॥ १६ ॥

भा·टी· – मायाको निर्दय स्वभावरूप स्त्रीका नित्यरातिदिन ऐसा विचार रहताहैकि, सुंदरजीवोंको तथा दुष्टजीवोंको भी दुःख देना ऐसाविचार सोई दूसरादिन भयाहै ॥ १६ ॥

श्लो॰ तद्दिनेपूर्ववत्केशमार्जनंसाकरोत्सती ॥ आत्मप्रकाशः सविता दृष्ट्वातांकामतापितः ॥ १७ ॥

भा·टी· – तिसदिनमें पहिले वर्णनकुईस्त्री पहिले सरीके वालोंकों धोयकेंस्नाय रहीहै तिसस्त्रीकों आत्म प्रकाश रूप सूर्य देखिकेंकामदेवसें जरुने लगे ॥ १७ ॥

श्लो॰ सद्ज्ञानशिक्षणंतस्यैदातुंसूर्यमनोरथः ॥ तत्तस्यादर्शनंप्रोक्तमुपकारश्चमन्मथः ॥ १८ ॥

भा·टी· – सूर्यको ऐसाविचार होकिः इस स्त्रीकों हम सुंदर ज्ञान शिखावेंकितूं जीवोंके ऊपरनिर्दयपण छोडिदे· और दयाकरु ऐसोसूर्यको विचार सोई स्त्रीकों सूर्यको देखना भया· तथा जोसूर्यकी वाक्यकों वोस्त्री मानिलेवै· और मानिकें जीवमात्रपर दया करै तब सब जीव मोक्षको चलेजावैगे और बडा उपकार होवै सोई उपकार रूप काम भया· तिसकरिके सूर्य जलिरहे· वहचिंतवन रूप जलना है कार्यसिद्धि जबतक नहींहोता तबतक मनकों ताप होताहै काजभएपर आनंद होताहै ॥ १८ ॥

श्लो॰ एवंकामार्द्दितस्सूर्य्यो मैथुनंकर्तुमागतः ॥ तथासार्द्धंचनन्हर्षा मैथुनंगमनंसुखम् ॥ १९ ॥

भा·टी· - इसप्रकारसें जीवोंको उपकार रूप कामसें दुःखीहो के आत्मप्रकाशरूपसूर्य तिसस्त्रीके संग रममाणहोनेके वास्ते आते भए· उपकारमें हर्ष मानना सोई रममाणहोनाहे उस हर्षमें स्रुख मानना सोई स्त्रीके पास आत्मप्रकाश रूप सूर्य को आना भयाहै॥१९॥

श्लो॰ यावत्कर्तुंसमुद्युक्तोहर्षमैथुनमद्भुतम्॥ताव सपाततद्वीर्यंभगवत्प्रेमनिर्मलम्॥ग्रीवायांस्मृति रूपायांसंस्थाभगवतस्तदा॥२०॥

भा·टी· - सूर्य जबतक हर्षरूप क्रीडा तिसस्त्रीके संग करनेकों तयार भए तबतक भगवानके प्रेमरूप मलसेंहीन ऐसा जो- सूर्यको वीर्य है सो उसस्त्रीके ग्रीवामें पडिगया· तब स्त्रीभी क- भी कभी विचारतीहैकि में भगवानकी दासीहो ऐसी स्रुरति सो ई स्त्रीकी ग्रीवा भई है· ग्रीवा नाम गला॥२०॥

श्लो॰ ग्रहणंवीर्यपतनंतस्माज्जातोमहाबली॥गु- रूपदेशस्सुग्रीवस्सखायंतेरघूत्तम ॥२१॥

भा·टी· - हे रघुनंदन सूर्यकी शिक्षाकोंसो स्त्री ग्रहण कर्तीभ ई सोई ग्रहण सूर्यके वीर्यको पडनाभयाहै· उसीबीर्यसें गुरुको उपदेशरूप यह आपको मित्र तथा नर्क बाधासरीके अनेक शूर- वीरोंको नाश करनेकों बडा बलवान ऐसा स्रुग्रीवजन्मताभया·

श्लो॰ कपीशयोर्जन्मकथानकंत्विदंप्रोक्ताचरामा- यगतामुनीश्वराः॥ध्यानेस्रुखंतद्गमनंप्रकीर्तितंब भूवरामोऽपिसदाबलीदः॥२२॥

भा·टी· - वालि स्रुग्रीवके जन्मकी कथा रामजीसें मुनिजनोनें व- र्णन करिके भगवानके ध्यानके स्रुखमें मस्त होगए सोई मुनिजनों

को रामजीके पाससें अपने अपने आश्रमकों जाना भया- तथारा
मजीभी गुरुको वियोगरूप बालिको तथा गुरुको उपदेशरूप सुग्री
वकीजन्मकथा सुनिके भगवानके रूपमें मस्त होगए- सोई श्रवण
कर्नाभयाहे ।। २२ ।।

इतिश्रीवेदान्तरामायणेउत्तरकांडेशिवसहायबुध-
विरचितेसम्वर्तवरतन्तुसंवादेवालिसुग्रीवजन्मक-
थनेद्वितीयोमोक्षोपानः ।। २ ।।

---

श्लोक- वरतन्तुरुवाच कुधर्म्मांश्चकुकर्म्माणि
विधिनानिर्मितानिच ।। नाशमाप्तानिसर्वाणिसुम
तेराघवेनृपे ।। १ ।।

भा-टी- – सुमतिरूप अयोध्याकोराजा विवेकरूप रामजी भए
तब ब्रह्मा करिके रचे जेतने षोटेकर्म तथा षोटेधर्म सोसब नाशकों
प्राप्तिभए ।। १ ।।

श्लो॰ सर्वेजीवाःप्रकुर्वन्तिसत्संगादीननेकशः ।। प्रा
प्तास्तेसच्चिदानंदतेजोरूपमयंवपुः ।। २ ।।

भा-टी- – विवेक रूप रामजीके राजमें सबजीवोंनें सत्संग आदि
गिनती हीन सुंदर कर्म्म कर्ते भए- उसी सुंदर कर्म के प्रभावसें तेज
रूपजो ब्रह्मकीशरीर तिस्कों प्राप्ति होतेभए ।। २ ।।

श्लो- नशरीरंभगवतस्तेजश्चापिनज्ञायते ।। अनेकज
न्मनोभ्यासाद्दुर्गमन्तत्तथापिच ।। ३ ।।

भा-टी- – नभगवानके शरीरहे तथा तेज भीजीवों करिकै नहीमालूमहो
ता- बडा अद्भुत तेजभीहे- अनेकजन्मतक ईश्वरके तेजकों मालूमक
रनेवासे सत्संग आदिलेके अनेक सुंदर कर्म करे तौभी बडे कठिनसे

ईश्वरको तेज मालूम परेगा· ॥३॥

श्लो॰ मुमुक्षवोबभूवुस्तेसर्वेजीवाश्चराचरे॥ तद्विघ्न कारकानष्टाश्चैतद्राज्यंरघूत्तमः॥चक्रेप्रेमसदातेषा मीश्वरेतत्प्रजासुखम्॥४॥

भा·टी· - तीन लोक चवदह भुवनमें सब जीवोंकी मुक्ति होनेकी इच्छा होतीभई तथा मोक्षके विघ्न करनेवाले दुष्टजीव नष्टहोगए· एहीराज विवेकरूप रामजी कर्तेभए· सबजीवोंका प्रेम ईश्वरमें बहुत होताभया सो प्रजाको सुख भयाहै॥४॥

श्लो॰ कामादिशत्रवोनष्टास्तेष एमासामुनीश्वर॥जी वानान्निर्भयन्तेभ्यस्तत्तेषांगमनंस्मृतम्॥५॥

भा·टी· - काम क्रोध लोभ· मोह· मद· मत्सर एछ जीवोंके वैरीहै सो· रामजीके राजमें एछवो नष्ट होगये· सोई छमास भया· तथाइन छ· वो वैरियोसें जीवनिर्भय होगया· सोई छवो मांसको वीतना भयाहै· विवेकरूप रामजीको राज कर्ते इसप्रकारके छ महीनावीतिगया ५

श्लो॰ पूर्वोक्ताःकपयश्चापिभगवत्प्रेमनिर्भराः॥बभू वुः कृतवान्रामस्तत्तेषांचविसर्जनम्॥६॥

भा·टी· - पहिले वर्णन भएजो कपि रिक्षहै सोभी भगवानके प्रे· ममें मस्त होरहेहै· सोई रामजीनें कपि और सब ऋक्ष उनकोवि दाकर्तेभए॥६॥

श्लो॰ अनेकेतारिताजीवारामेणभुवनत्रये॥तए वयज्ञारामेण कृताश्चक्रमतोमुने॥७॥

भा·टी· - हेमुनिजी तीनलोक चवदाभुवनमें विवेकरूपरामजी· गिनतीहीन जीवोंको संसारसें उद्धार करिके मोक्ष कर्तेभए सोई क्र मतिरूप अयोध्यामें अनेकयज्ञ कर्तेभए॥७॥

श्लो० जीवेजीवेददौभक्तिंचेश्वरस्यारघूत्तमः॥स्वयं
चापिविरक्तोभूद्वेषस्तत्त्यागउच्यते॥८॥

भा·टी· – विवेक रूप रामजीनें जीवोंको उद्धार होने वास्ते दयाकरिकैं सबजीवोंको परमेश्वरकी भक्तिको दान कर्ते भए दानकर्ना यह हैकि सबजीवोंमें भक्तिको टिकाते भए तथा आपु भगवानके चरणोमेंर मितभए सोई जानकीको त्याग रामजी कर्तेभए॥ ८॥

श्लो० द्वौपुत्रौरामचन्द्रस्यजानक्यांचबभूवतुः॥ ज्ञान
वैराग्य नामानौजीवोत्तारणकारकौ॥ ९॥

भा·टी· – विवेक रूपरामजीके ईश्वरकी भक्तिरूप जानकीमें दोपुत्र होतेभए· कैसे पुत्रहै एक ज्ञान· दूसरा वैराग्य कैसे है जीवोंकों सं सारसें उद्धारकर्ने वाले है॥ ९॥

श्लो· स्वपदंगन्तुकामस्य भगवद्रूपदर्शनम्॥विवेक
राघवस्यैवचिंतनोमुनिसत्तमः॥ दुर्वासागमनंतस्य
रामोत्साहस्वतत्पदे॥ १०॥

भा·टी· -परमेश्वरको दर्शन रूपजो विवेककोस्थान है तिस्कों प्राप्ति होनेको रामजी चिंतवन कर्ते हैकि मन रूप रावण आदि राक्षस नष्ट· होगए अब आपनेस्थान हमजावे ऐसो रामजीको विचार सोई दु र्वासा मुनिभएहै॥ १०॥

श्लो० आज्ञप्तोमुनिनातेनतद्रूपस्यावलोकने॥गंतुंत·
लक्ष्मणस्यैवमुनिवाक्यम्परस्परम्॥ ११॥

भा·टी· – रामजीको चिंतवन रूप दुर्वासामुनि रामजीको भगवानके दर्शनरूप जोस्थान तिसपरजानेकी आज्ञा दियाकि रामजी राक्षसोंका नाश होगया· अब तुम भगवानको दर्शनरूप जो तुमारास्थान तिस्कों जावो· ऐसी मुनिकी वाक्य सोई लक्ष्मणकी तथा दुर्वासामुनिकी सं·

वादभयाहै ॥ ११ ॥

श्लो० स्वस्वकर्मणिहर्षेणबभूवुर्लक्ष्मणादयः ॥ भ्रातरोरामचंद्रस्य वियोगस्सोयमुच्यते ॥ सर्वेषांलक्ष्मणादीनांभ्रातॄणांराघवस्यच ॥ १२ ॥

भा-टी- -विवेकरूप राम के तीनोंभाई लक्ष्मण संतोष- संतोषकीवृद्धिदेखिके हर्ष मानतेभए- निर्मोहरूप भरत निर्मोहकी वृद्धि देखिके हर्षित भए- सहन रूप शत्रुघ्न- सवजीवोंमें क्षमाकी वृद्धि देखिके खुशीभए- रामजीके भाइयोंको ऐसा हर्ष सो रामजीसें तीनों भाइयोंको वियोग होताभया- ॥ १२ ॥

श्लो० जानक्याप्रार्थिताभूमिर्दयारामेचनिश्चला ॥ स्थितिर्दत्ताचजानक्याविवरस्सैवकथ्यते ॥ १३ ॥

भा-टी- - दयारूप पृथ्वीको प्रार्थना जानकीनें किया- तब पृथ्वी रामजीमें अचलवास जानकीकों देतीभईसोई रस्ताभई है ॥ १३ ॥

श्लो० दयायांसर्वदाप्रीतिर्जानक्यास्साचप्रार्थना ॥ दयादत्तेन मार्गेण वासश्चक्रेचजानकी ॥ विवेकेनिश्चलत्वं चतस्यास्तद्गमनंस्मृतम् ॥ १४ ॥

भा-टी- - सदा दयारूप पृथ्वीमें जानकी की प्रीतिहै सोई पृथ्वीकी- प्रार्थना जानकीनें किया- दया पृथ्वीकरिके दीनजो रस्ता सो अचलवास रामजीमें जानकीको उसीरस्ता करिके विवेकमें जानकी अचल वास- किया सोई रामजीके पाससें जानकीको जाना भया- ॥ १४ ॥

श्लो० सर्वेषांलक्ष्मणादीनाम्भ्रातॄणांरघुनंदनः ॥ वियोगंहर्षरूपंचजानक्याश्चतथैवच ॥ दृष्ट्वाप्रवर्द्धनंतेषां तद्धर्षोदर्शनस्मृतः ॥ १५ ॥

भा-टी- -रामजीनें सब लक्ष्मण आदि लेकेअपने भाइयोंको हर्षरूपवि

योग देखिकै तथा जानकी कों देखिकै अपने सत्संग वाले सब जीवों
कों सबके कर्ममें हर्षकी वृद्धि सोई रामजीने भायियोंको वियोग देख
नाभयाहै ॥१५॥

श्लो॰ स्वपदं भगवद्रूपदर्शनं स्वात्मसंस्थितम् ॥ तस्मै
प्रापणं तस्य कथ्यते तं समुत्कः ॥१६॥

भा॰टी॰ - रामजीने अपनी हृदयमें विराजमानजो भगवानको दर्शन
रूपस्थान तिस्कों जानेके वास्ते आनंदमानते भए- सोई रामजीकोप
रंपदकोजाना भया- ॥१६॥

श्लो॰ कौंसल्याद्याश्च सम्मग्ना भगवच्चिंतने सदा ॥ तच्चा
सांगमनम्प्रोक्तं वैकुंठे भगवत्प्रिये ॥१७॥

भा॰टी॰ - कौंसल्या आदिलेकै रामजीकी सबमाताजोहै सो सबभग-
वानके चिंतवनमें रातिदिन मग्नहोरहीहै सोही तिन्होको भी भगवान
को प्याराजो वैकुंठ तिस्मे जानाभयाहै ॥१७॥

श्लो॰ कुमतेर्निर्भयांचक्रे स्कमतिं स्वाम्पुरीम्प्रभुः ॥ तदेव
रामचंद्रस्य पुरीत्यागोभिधीयते ॥१८॥

भा॰टी॰ - खोटीमतिकी त्रासतें स्कमतिरूप अयोध्याकूं रामजी निर्भय-
कर्ते भए सोई रामजीका अयोध्याकों त्यागनाभया ॥१८॥

श्लो॰ सर्वान्मोक्षस्य साहित्यान्धिवेको रघुनंदनः ॥ चका
रस्ववशेनित्यं प्रजाणां ग्रहणं त्विदम् ॥१९॥

भा॰टी॰ - मोक्षकी संपूर्ण सामग्री ज्ञान ध्यान आदिलेकै गिनतीसें हीन-
तिस्कों नित्य रामजी अपने वश्य कर्तेभए- सो प्रजाकों संगलेनाभया- १९

श्लो॰ तास्समादाय राजेंद्रो जगाम शरयूतटम् ॥ तस्मै
गमनं प्रोक्तं तज्जलेनिममज्ज ह ॥२०॥

भा॰टी॰ - पहिले वर्णन भई प्रजाकों रामजी संगलेकै भगवानमें निश्चल

मेमरूप सरयू के तटपर जाते भए· रूवासनारूप शरयूमें रामजी कोप्रेम सोई रामको सरयूतटपरयानाभया· अभिमानसें हीनक मेरूप सरयूका जलतिस्में प्रजा सहित रामजी गोता लगाते भए २०

श्लो॰ निर्मानभगवद्ध्यानंराममज्जनमुच्यते।।मज्जि त्वासर्वजीवेषुचिदंशेषुतदाप्रभुः।।वासंचक्रेतदेववै गमनंसत्पदेभवत्।।२१।।

भा·टी· विवेक रूपरामजी अभिमानसेंहीन होके ईश्वर कोध्यान कर्ते भए सोई रामजीको सरयूके जलमें स्नान कर्नाभया· ऐसाध्या· नरूप स्नानकरिके ईश्वर को अंशजो जीव अनेक प्रकार करिके अने· कशरीरमें दुःखपायरहा तिस सबजीवोंको मोक्षरूप देनेवास्ते सब जीवोंमें विवेकरूप रामजी टिकते भए· सोई प्रजासहित रामजीको परमपदको जाना भयाहै ।।२१।।

श्लो॰एवंरघूत्तमदशाननयोश्चरित्रंवेदांतसारगदितं चविश्रुत्यजीवः।। सम्यग्विचार्यगुरुणाचविशिक्ष्यनि त्यंमोक्षंप्रयातिरघुनंदनभावबद्धः।।२२।।

भा·टी· - इस प्रकारको विवेक रूपरामजीको तथा मनरूपरा वणको चरित्र वेदांतकोसारजो ज्ञानहै तिस्कों आदिलेके अनेक प्रकारके जो सुंदर धर्मरूपजो शास्त्रहै तिन्हों करिके कथितहु आहै ऐसे चरित्रकों जीव सुनिके तथा मनमें विचार करिके त था· गुरुके मुखसे ऐसे बहुत प्रकारसैं शिखिके विवेकरूपजोरा मजीहै तिस्को भावजो सत्संग तिस्में बंधनरूप प्रेम लगायके जी वमोक्षकों प्राप्ति होवैगा· ।।२२।।

इतिश्री वेदान्तरामायणे उत्तरकांडे संवर्तवरत· नुसंवादे शिवसहायबुधविरचिते रामचंद्रस्वप

दप्राप्तिवर्णने तृतीयो मोक्षोपानः ॥ ३ ॥

समाप्तश्चायमुत्तरकाण्डः

# श्रीमद्वेदांतरामायणस्समाप्ति

# मगमदयम्

बाण ५ ब्धि ४ रंध्र ९ शशि १ वत्सरवैक्रमीये चाषाढशुक्लरविवासर शम्भुतिथ्याम् ॥ श्रीमन्महेशकृपयादययाचनस्यग्रंथस्समाप्तिमयमेवमगात्सुपूर्णः ॥ १ ॥

श्रीमच्छंकरार्पणमस्तु.

---

अथप्रश्नः पप्रच्छुस्सज्जनामाम्वैजीवश्चैकश्चिदंशवान् ॥ सश्चराचरवर्त्तीचत्वयोक्तोभूरिशः कथम् ॥ १ ॥ अर्थ- सज्जनलोगहमसेंपूंछेकिभगवान्को अंशजीव १ हैं. तुमने इसग्रंथमें बहुतजीव वर्णनकियाहै इस्काकारण क्याहै ॥ १ ॥ उत्तर. जलद्रव्यन्यायाज्जीवाश्चानेकशः ॥ अर्थ. जैसा पानीको एकरंगहै पण जिस चीजमें मिलावोगे उसीचीजसरीके पानीको स्वरूप होजावेगा. दूधमे दूध. छाछमें छाछ. काजरमें काला. पीलेमें पीला. सक्कर में मीठा. कडूचीजमें कडू इसप्रकारगनतीसें हीन चीजोंमें मिलके वैसाही होजाताहै. तैसेई जीव १ है पण जिसयोनिमें जन्मैगा उसीप्रकारको होजावैगा. यहदृष्टांत महासांख्य- आदिशास्त्रोंकाहै. कपोलकल्पित नहीहै.

---